

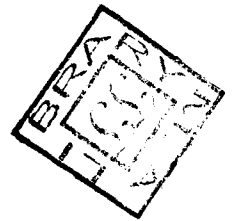
ब्रज तथा खड़ी बोली के संधिस्थलीय क्षेत्र का भाषा-सर्वेक्षण

:०:—:०:

आगरा विश्वविद्यालय की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध

शोधकर्ता :

मनोहरलाल गौड़



निर्देशक :

डॉ० कैलाशचन्द्र भाटिया पी-एच. डी., डी. लिट.

प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ ।



T779

T-779



29 JAN 1999


CHECKED-2002

CHECKED 1996-97

की बोली " (डा० रामस्वरूप बतुर्वीदी) " मथुरा की बोलियाँ (डा० चन्द्रमान रावत) के कार्य ही चुके थे, इस दृष्टि से मैं अपनी जिले बुलन्दशहर की बोली का अध्ययन प्रारम्भ करना चाहता था, तभी मुझे ज्ञात हुआ कि इस विषय पर डा० महावीर सरन जैन शोध कार्य में प्रसूत हैं। उस समय ही प्रयाग विश्वविद्यालय से डा० कमर बहादुर सिंह ने " अथर्वी और मौजपुरी " के संधिस्थलीय क्षेत्र का अध्ययन प्रस्तुत किया था। इस समय ही यह विचार आया कि क्यों न " पश्चिमी हिन्दी " की दो प्रमुख उप-भाषाओं- ब्रज तथा लड़ी बोली के संधि स्थलीय क्षेत्र पर कार्य किया जाय। यह संधिस्थलीय क्षेत्र बुलन्दशहर जिले से ही प्रारंभ होता है तथा बुलन्दशहर मेरी मातृभूमि भी है, अतएव इस जिले की बोली का ही मैं विशेष रूप से अध्ययन करना चाहता था लेकिन डा० महावीर सरन जैन जिन्होंने कि बुलन्दशहर जिले की दो तहसीलों का अध्ययन प्रस्तुत किया है, और डा० अम्बा प्रसाद सुमन ने अपनी डी० लिट् की थीसिस में असीगढ़ और बुलन्दशहर जिलों का तुलनात्मक अध्ययन कर बुलन्दशहर की बोली पर कार्य किया। ऐसी स्थिति में मैं अपना विचार बदल दिया और निश्चय किया - क्यों न इस मिश्रित बोली के सम्पूर्ण क्षेत्र का भाषा-सर्वेक्षण कार्य प्रस्तुत किया जाय।

शोध कार्य प्रारंभ होने पर, क्षेत्र की विशालता, शोध कार्य की गरिमा, मिश्रित बोली का महत्व और अपनी सीमाएं धीरे धीरे सामने आने लगीं। वस्तुतः यह कार्य योजना बद्ध रूप से ह किसी विश्वविद्यालय अथवा सरकारी या गैर सरकारी संस्था के द्वारा होना चाहिए, जिसमें भाषा-शास्त्र में निष्णात व्यक्तियों की टीम लगी हो। बोली विज्ञान से सम्बद्ध होने के नाते अच्छा तो यह होता कि भूगोल विभाग के सहयोग से कार्य किया जाय। लेकिन मैं इस कार्य

को प्रारम्भ कर चुका था । विश्वविद्यालय ने इस विषय को स्वीकृत कर, इसकी महत्ता को स्वीकार किया, जिसके लिए मैं बतयन्त बामारी हूँ। मुझे किसी प्रकार की वार्षिक सहायता भी प्राप्त नहीं हो सकी, लेकिन फिर भी मैं निरन्तर चार वर्षों तक इस कार्य में जुटा रहा ।

कार्य के प्रारम्भ में ही मैंने डा० जमर बहादुर सिंह से सम्बन्ध स्थापित करना चाहा जिससे कि उनको कार्य पद्धति से अवगत हो सकूँ, लेकिन तब तक वह भाषा विज्ञान के क्षेत्र में ही कार्य करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका जा चुके थे । जब वह यहाँ दो वर्षों उपरान्त लौटे तो दिल्ली में व्यक्तिगत रूप से कई बार उनसे मिलता और उनके नए अनुभवों से लाभान्वित हुआ जिससे मुझे अपना सर्वेक्षण कार्य सुचारु रूप से वायोचित करने में सफलता मिली ।

सर्वेक्षण की पद्धति का विस्तृत विवरण मैं तीसरे अध्याय में दिया है। सर्वेक्षण कार्य मैंने स्वयं "टैप-रिकार्डर" की सहायता से किया है। मैं अपनी सामग्री का विश्लेषण और अधिक वैज्ञानिक दृष्टि से प्रस्तुत करना चाहता था लेकिन मेरी सीमाओं के साथ विश्वविद्यालय की सीमा भी सम्बन्धित आई । बड़ी कठिनाई से विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने अवधि में ६ माह की वृद्धि की, इसके लिए मैं उनका बामारी हूँ। अन्यथा यह कार्य कच्चे रूप में पूरा होते हुए भी इस रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता था ।

सर्वेक्षण का क्षेत्र काफी लम्बा चौड़ा है, उसके देखते हुए जिन सीमाओं में मैंने कार्य किया वह दुस्साहस ही कहा जायगा।

फिर भी मैं चेष्टा की है कि अपनी इस लघु रूप से विज्ञान क्षेत्र के कोने-कोने को नाप सकूँ। वस्तुतः यह कार्य जाने सरकारी निर्देशन में किए जाने वाले कार्य की बाधार-भूमि हो सकता है, फिर भी मैं इस कार्य की बड़ी नम्रता से नमूने के रूप में ही विद्वन्मण्डली के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूँ। सर्वज्ञा के महासागर में भरा यह प्रयत्न बंधु-प्रेम है।

इस कार्य के पूर्ण करने में मुझे भारतीय तथा पश्चात्य विद्वानों की कृतियों से पर्याप्त सहायता मिली जिनके प्रति मैं आभारी हूँ। डा० बाबू राम सक्सेना, डा० बीरेन्द्र वर्मा, डा० उदय नारायण तिवारी, डा० हरदेव बाहरी तथा डा० भीमानाथ तिवारी की पुस्तकों से मुझे फा-फा पर सहायता मिली। बीसी-विज्ञान के क्षेत्र में किए गए कार्यों में डा० रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल, डा० महावीर सरन जैन से मैं पर्याप्त सहायता लेता हूँ। इन सबके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता-ज्ञापन करना चाहता हूँ।

पारिभाषिक शब्दावली अधिकांशतः भारत सरकार के पारिभाषिक शब्दावली आयोग द्वारा स्वीकृत शब्दावली से ली गई है। कहीं कहीं कुछ भिन्न शब्द भी मिले हैं- मैं समझता हूँ कि एकपक्षता की दृष्टि से यह आवश्यक है कि आयोग द्वारा स्वीकृत शब्दावली ही अपनायी जाये चाहे प्रारम्भ में कुछ कठिनाइयाँ ही क्यों न आएं। टाइप की सुविधाओं की ध्यान में रखते हुए बिहूँ अपनाए गए हैं, कहीं कहीं अन्तर्राष्ट्रीय बिहूँ से भिन्न हो गए हैं उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।

वन्त में मैं उन समस्त सूचकों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर सश्रमगी संकलन में सहायता प्रदान की, अन्यथा इस युग में कौन इतना समय निकाल पाता है कि वह निःस्वार्थ रूप से ज्ञान और शोध के क्षेत्र में कुछ योग दे। यह मेरा सौभाग्य है कि इस विशाल क्षेत्र के सूचकों ने सर्वत्र सहयोग प्रदान किया। श्री चन्द्रपाल सिंह ने सर्वेक्षण में मेरे साथ रहकर जो कष्ट सहन किए उनके प्रति भी मैं अत्यधिक आभारी हूँ।

यह नमूने का सर्वेक्षण कार्य परम श्रेष्ठ गुरुप्रवर डा० कैलाश चन्द्र भाटिया- अलीगढ़ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में भाषा-शास्त्र के प्राध्यापक- के निर्देशन में सम्पन्न हुआ जिनकी सतत प्रेरणा एवं पूर्ण सहयोग की प्राप्त कर उनके प्रति धन्यवाद के शब्द कह कर उनकी महत्ता और गुरुता को कम नहीं करना चाहता। यह कार्य निश्चित रूप से उनकी ही सद्-प्रेरणाओं एवं परिश्रम का परिणाम है।

विनीत,

दिनांक ३०७-६७

मनोहर लाल गौड़

अध्याय : १ : भूमिका

१. १ संविस्थतीय भाषा तथा बोली के सर्वेक्षण का महत्त्व १

१. १. ० बोलियों की सीमा

१. १. १ भाषा और बोली

१. १. २ मिश्रित बोली

१. २ विविध क्षेत्र १०

१. २. १ विविध क्षेत्र का विवरण

१. २. २ विविध क्षेत्र की सीमा

१. २. ३ विस्तार तथा क्षेत्रफल

१. २. ४ प्राकृतिक स्थिति

१. २. ५ सामाजिक स्थिति

१. २. ६ आर्थिक स्थिति

अध्याय : २ : २४

२. ०० संघरेखा पर स्थित जिलों की बोलियों का

महत्त्व-

२. १ बोलनवालों की जनसंख्या

२. १. १ रामपुर

२. १. २ बदायूं

२. १. ३ बरौली
 २. १. ४ मुरादाबाद
 २. १. ५ पोलीमोत
 २. १. ६ नैनीताल
 २. १. ७ भरठ
 २. १. ८ बुलन्दशहर

२. २ बरौली जिले की बरौली
 २. ३ बदायूं जिले की बरौली
 २. ४ नैनीताल जिले की बरौली
 २. ५ मुरादाबाद जिले की बरौली
 २. ६ रामपुर जिले की बरौली
 २. ७ भरठ जिले की बरौली
 २. ८ पोलीमोत जिले की बरौली
 २. ९ बुलन्दशहर जिले की बरौली

व्याख्या : ३ :

३. ०० संकलन- सामग्री

४. १ स्वर स्वनिम

४. १. १ स्वर

४. १. १. २ स्वर स्वनिम तथा उपस्वर्गों
का वितरण

४. १. १. १. २ स्वल्पान्तर युग्म

४. १. १. २ संध्यकार स्वर

४. १. २ अनुनासिक स्वर

४. १. ३ स्वरानुक्रम

४. १. ३. १ संगमावस्था के पूर्व या पश्चात्

४. १. ३. २ दो व्यंजनों के मध्य

४. १. ३. ३ स्वरानुक्रमों के सांके

४. १. ३. ४ स्वरानुक्रमों का दीर्घगत विवरण

४. १. ३. ५ स्वरानुक्रमों का चार्ट

४. १. ३. ६ अनुनासिक स्वरों का अनुक्रम

४. १. ४ स्वरानुक्रम तथा श्रुति

४. २ व्यंजन

४. २. १ व्यंजन स्वनिमों का वितरण

४. २. २ व्यंजन गुच्छ तथा व्यंजानुक्रम

४. २. २. १ व्यंजन गुच्छ आदि स्थिति में

४. २. २. १. २ वन्त्य आस्थिति में व्यंजन गुच्छ

४. २. २. २ व्यंजानुक्रम

४. २. २. २. १ एक स्थानीय व्यंजनों का अनुक्रम

४. २. २. २. २ भिन्न स्थानीय व्यंजन संयोग
 ४. २. ३ शब्द सम्पर्क संक्षेपरूपता तथा संधि
४. ३ वकार- निर्धारण
४. ४ बलाघात तथा संगम
 ४. ४. १ बलाघात
 ४. ४. २ संगम
४. ५ विदेशी शब्दों में स्वन- परिवर्तन
 ४. ५. १ फारसी- अरबी शब्दों में स्वन परिवर्तन
 ४. ५. २ अंग्रेजी शब्दों में स्वन परिवर्तन

अध्याय : ५ : शब्द-समूह तथा शब्द-संरचना

१२५

५. १ शब्द समूह
 ५. १. १ तत्सम शब्द
 ५. १. २ तद्भव
 ५. १. ३ देशज
 ५. १. ४ विदेशी वागत शब्द
 ५. १. ४. १ अरबी- फारसी
 ५. १. ४. २ तुर्की
 ५. १. ४. ३ पुर्तगाली
 ५. १. ४. ४ फ्रान्सीसी
 ५. १. ४. ५
 ५. १. ४. ६ डच
 ५. १. ४. ७ अंग्रेजी

५. १. ५ स्थानीय शब्दावली

५. १. ६ द्विरुक्ति

५. १. ७ अपशब्द

५. २ शब्द - संरचना

१६०

५. २. १ पूर्वव्युत्पादक प्रत्यय (उपसर्ग)

५. २. १. १ तत्सम

५. २. १. २ तद्भव

५. २. २ व्युत्पादक पर प्रत्यय

५. २. २. १. १ तत्सम

५. २. २. १. २ तद्भव

५. २. २. १. ३ देशज

५. २. २. २ विदेशी

५. २. ३ समास

अध्याय : ६ : रूपप्रश्रियात्मक अध्ययन

२२१

६. १ रचनात्मक उपसर्ग तथा प्रत्यय

६. १. १ उपसर्ग

६. १. २ प्रत्यय

६. २ संज्ञा

६. ३ सर्वनाम

६. ३. १ लिंग- निर्णय

६. ४ लिंग

६. ५ वचन

- ६. ६ कारकीय परसर्ग
- ६. ७ विशेषण
- ६. ८ क्रिया
- ६. ९ वच्य

बध्याय : ७ : वाक्य- रचना

280

- ७. १ पदक्रम, पदान्वति तथा पदादिकार
- ७. २ पदबन्ध
 - ७. २. १ संज्ञा पदबन्ध (विशेषण)
 - ७. २. २ क्रिया पदबन्ध
 - ७. २. ३ वच्य पदबन्ध
- ७. ३ लोकोक्तियां
- ७. ४ वाक्यों में रागात्मक तत्त्व

बध्याय : ८ : उपसंहार

281

परिशिष्ट :

282

- प १ बीली भूगोल
- प २ दीत्रीय नमूने
- प ३ लोकोक्तियों का स्थानीय विशिष्ट शब्दावली
- प ४ सहायक पुस्तक सूची
 - प. ४. १ अंग्रेजी पुस्तकों की सूची
 - प. ४. २ हिन्दी पुस्तकों की सूची

अध्याय : १ :

भूमिका

१. १ संधिस्थलीय भाषा तथा बोली के सर्वेक्षण का महत्त्व

१. १. ० बोलियों की सीमा :

बोलियों की सीमा निर्धारित करना, सरल कार्य नहीं। जहाँ कहीं भी सीमा- रेखा है वहीं विवाद होना स्वाभाविक है। बोलियों की सीमा अधिकतर भौगोलिक होती है। भूगोल का महत्त्व- अत्यधिक है, भूगोल से स्थान विशेष की धरती का ज्ञान हमको मिलता है। भौगोलिक सीमाओं में बँधी दो बोली भी एक दूसरे क्षेत्र में अतिक्रमण करती है, इस प्रकार किसी निश्चित रेखा पर बोली को मानना नितान्त असंभव है। दो भाषाओं की सीमा के लोगों की उपबोली का निर्धारण करना कठिन होता है, क्योंकि इस सीमा के दोनों ओर दोनों भाषाओं के तत्व मिलते हैं और इस बोली को "सीमावर्ती बोली" कहा जा सकता है। संधि- रेखा पर स्थित दोनों बोलियाँ अपनी- अपनी विशेषताओं को रखते हुए भी इस प्रकार जुट जाती हैं, कि उनको पृथक् करना संभव नहीं। दोनों बोलियों में पारस्परिक आदान प्रदान होता है और एक दूसरे की शब्दावली ग्रहीत करती है।

सीमा पर स्थित दोनों ओर के क्षेत्र को लेकर एक नयी बोली बनती है जिसको मिश्रित बोली की संज्ञा दी जा सकती है।

१- It is impossible to draw exact lines of demarcation between either dialects or languages, though at their frontiers they merge imperceptibly one into another.

१. १. १ भाषा और बोली -

भाषा और बोली के अन्तर्गत व्यावहारिक भेद मान लिया गया है। जब किसी बोली को साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक अथवा सांविधानिक आधार पर महत्त्व प्राप्त हो जाता है तो वही भाषा के स्तर पर पहुँच जाती और उसके साथ की अन्य बोलियाँ वहीं रह जाती हैं। फलस्वरूप वह अधिक विकसित तथा प्रौढ़ बनती जाती है।

“बोली” किसी निश्चित क्षेत्र में सार्थक ध्वनियों के उच्चरित समूह को कह सकते हैं जिसके बोलनेवालों के उच्चारण में, स्वर लहरी में, रूप-रचना एवं वाक्य-रचना में बहुत कुछ साम्य हो। “भिन्नता न हो” यह सम्भव नहीं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी निजी भाषा होती है। किन्हीं दो व्यक्तियों की बोली एक नहीं होती। इस दृष्टि अन्त बोलियाँ हो जायेंगी, पर व्यावहारिक दृष्टि से हम काफी बड़े भू-भाग की बोली को “बोली” की संज्ञा देते हैं। भू-भाग की लम्बाई चौड़ाई को भी हमारे यहाँ लोक-जीवन में बाँधने की चेष्टा की गई है :

चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी ।

बीस कोस पर फाड़ी बदले, तीस कोस पर पानी ॥

चार कोस या १० किलो मीटर पर पानी का स्वाद

- १- Two individuals of the same generation and locality, speaking precisely the same dialect and moving in the same social circles, are never absolutely at one in their speech habits. xxx In a sense they speak slightly divergent dialects of the same language rather than identically the same language.
Sapir, E- Language - 1949 page 147.

बदल जाता है, आठ कोस या २० किलो मीटर पर बोली के ढंग में कुछ परिवर्तन आने लगता है और बीस कोस या ५० कि० मी० पर जोड़ने कहने तथा फाड़ी लगाने का स्वरूप बदल जाता है और तीस कोस पर कप्पर काने की विधि भी कुछ न कुछ बदल जाती है। ”

इस दूरी का कोई कड़ा पैमाना नहीं है। ‘बोली में भेद स्थानगत होता है।’ यह स्वीकार किया जा सकता है जिस पर भौगोलिक स्थिति अपना प्रभाव डालती है। पर किसी निश्चित दूरी पर जाकर बोली का स्वरूप निश्चित रूप से बदल ही जायेगा यह सत्य नहीं। नदियों के इस पार और उस पार की बोली में भेद होता है, इस युग में पुलों के निर्माण तथा वावागमन के बढ़ते हुए साधनों के फलस्वरूप यह भेद मिटना जा रहा है। पहाड़ की चोटी के इस ओर और दूसरी ओर वावागमन के बाधन न होने के कारण दूरी अधिक न होते हुए भी दो भिन्न भिन्न बोलियों संभव हो सकती हैं।

बोलियों में भेद जातिगत भी होता है। एक ही स्थान पर कुछ दूरी पर ही रहने वाली दो जातियों में उच्चारणगत पर्याप्त भेद होता है। डा० उदय नारायण तिवारी के अनुसार ” किसी व्यक्ति के निर्धारित समय की वाक्-प्रवृत्तियों (स्पीच हैबिट) की समष्टि ही उपबोली है।

वास्तव में उपबोली के रूप में हम किसी समूह विशेष की वाक् प्रवृत्तियों का ही अध्ययन करते हैं। प्रत्यक्षा रूप से हम केवल व्यक्तियों की बोली को सुनते हैं या फिर किसी विशेष शैली में लिखित बोली के रूप को पढ़ते हैं।

१- डा० तिवारी, उदयनारायण- भाषा शास्त्र की रूपरेखा- प्र० सं०

भाषा एक प्रकार से इन उपबोलियों का संकलन मात्र है। जब एक साथ 'भाषा' और 'बोली' का प्रयोग किया जाता है तो हम बहुत कुछ प्रयोग महत्व की दृष्टि से कर देते हैं, वैसे भाषा-शास्त्री के लिए भेद की अपेक्षा भेद की स्थिति अधिक है।

भौगोलिक विस्तार में स्थानीय विशेषताओं का अध्ययन भी जब हम (किसी क्षेत्र की बोली) के संदर्भ में करते हैं तो यह अध्ययन भाषा-भूगोल के समीप पहुँच जाता है। 'भाषा भूगोल' और 'बोली-विज्ञान' इस दृष्टि से काफी समीप हैं। इसमें हम किसी क्षेत्र विशेष की बोली या बोलियों में स्वन, रूप, शब्द तथा वाक्य-गठन की दृष्टि से समानता तथा अन्तर देखते हैं। शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से तो व्यक्ति-व्यक्ति की भाषा में भेद है पर हम किसी निश्चित क्षेत्र में व्यक्ति भाषाओं में कोई स्पष्ट भेद नहीं पाते तो उस क्षेत्र की बोली को 'उपबोली' कह सकते हैं, थोड़े थोड़े अन्तर के होने हुए भी कई उपबोलियों एक 'बोली' में समाहित हो जाती हैं।

1. There is no intrinsic difference between language and dialect, former being a dialect which for some special reason, such as being speech form of the locality which is the seat of the Govt., as acquired pre-eminence over other dialects of the country.

Actually there is no clear cut reply to the question. Even a linguist shrinks from answering it and rightly.

- Mario Pei - Story of Language pp 46

वनेक उपबोलियों को एक बोली में समाहित कर लेने का आधार "बोधाम्यता" है। एक बोली को दूसरी बोली से पुष्क कर देने का आधार ही बोधाम्यता की सापेक्षिक कमी है। भाणा और बोली के भेद पर डा० ग्रियर्सन का मत द्रष्टव्य है :

" भाणा और बोली में प्रायः वही सम्बन्ध है जो पहाड़ और पहाड़ी में है। २ २ २ साधारण रूप से हम यह कह सकते हैं कि एक भाणा की विभिन्न बोलियों में समानता होती है और उस भाणा को बोलने वाली उसे समझ जाती हैं किन्तु अपनी मातृभाणा के अतिरिक्त अन्य भाणा को ग्रहण करने के लिए विभिन्न परिश्रम और अध्ययन की आवश्यकता होती है। " डा० ग्रियर्सन ने जागे चलकर उससे कुछ मन्त्रेद प्रकट करके हुए लिखा है कि " हम पारस्परिक बोधाम्यता के सिद्धान्त को स्वीकार करें तो यह भी ठीक न होगा । "

बोधाम्यता के आधार पर डा० बाहरी ने दो बोलियों में भेद किया है। उनका मत है : " यदि दो वाणियों में दुर्बोधता बहुत अधिक हो तो वे दो भाणारें हैं और बोधाम्यता हो तो वे दो बोलियाँ हैं। " — एक प्रयोगात्मक विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया है :

लगभग १०० प्रश्नित - दुर्बोधता - दो भाणारें

१० ,, - बोधाम्यता - दोभाणारें

२५

१- डा० ग्रियर्सन - भारत का भाणा सर्वेक्षण (हिन्दी अनुवाद) १९५६, पृ० ४२

२- डा० हरदेव बाहरी : ग्रामीण हिन्दी बोलियाँ- प्र० सं० पृ० १-२

लगभग २५-५० प्रतिशत बोधाम्यता - इन्हें माण्डार भी कह सकते हैं, बोलियाँ भी

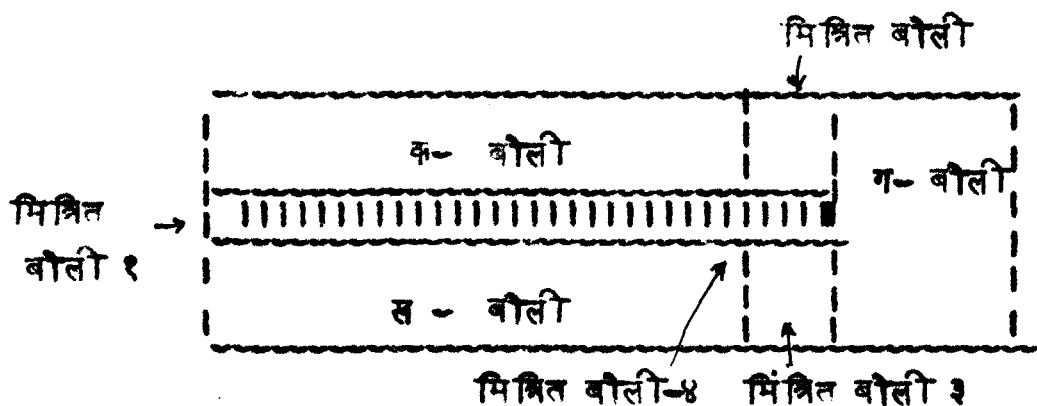
५०-७५ ,, बोधाम्यता - बोलियाँ

लगभग १०० ,, बोधाम्यता - एक ही बोली

पारस्परिक बोधाम्यता के अनिश्चित भाषा का व्याकरणिक गठन तथा जातीयता भी मुख्य आधार हैं। बोलियों में एक सामान्य सूत्र की ओर निर्देश करते हुए वाचार्य किशोरी दास वाजपेयी ने लिखा है कि " यह सामान्य सूत्र प्रायः प्रत्यय-विभक्तियों का ही होता है। " बोधाम्यता एक मात्र कसौटी नहीं है किन्तु यह एक महत्वपूर्ण कसौटी अवश्य है। ऐतिहासिकता तथा परम्परा का भी स्थान है। शब्द माण्डार की समानता भी इस दिशा में महत्व रखती है।

१. १. २

तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि समवाक् रेखाएँ कितने दूर में हैं। कुछ स्थल पर ये रेखाएँ अधिक समीप आ जाती हैं और कभी कभी मिल जाती हैं। इस सीमा के पास ही अन्तर प्रारम्भ होता है किन्तु दो बोलियों के मध्य स्पष्ट सीमा रेखा जैसी कोई चीज़ नहीं। " प्रायः दो रेखाओं के बीच एक ऐसी पतली पट्टी रहती है जिनमें दोनों बोलियों की विशेषताएँ रहती हैं। यह पतली पट्टी ही भाषा सर्वज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।



उदाहरणार्थ - क, स ग तीन उपबोलियाँ हैं, जिनकी सीमाओं पर चार मिश्रित बोली के दौत्र बनते हैं :

१- क तथा स की सीमा पर

२- ग तथा क की सीमा पर

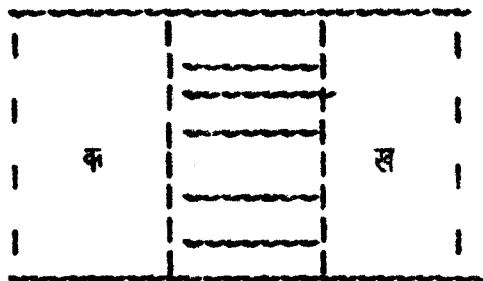
३- ग तथा स की सीमा पर

४- ग, क तथा स की सीमा पर

बोलियों की सीमाओं पर किस प्रकार के दौत्र बनते हैं इसका ^१हाकेट महोदय ने विशेष विवरण दिया है :

१- दो बोलियाँ किसी एक समान तत्व के साथ

समान तत्व



२- तीन बोलियाँ आपस में बोधगम्य होते हुए भी किसी समान तत्व का निर्माण नहीं करती ।

इस मिश्रण को हम बांध नहीं सकती क्योंकि ५ मील अथवा १० मील तक फैलाव है, कहीं यह फैलाव १ मील तक हो ही सकता है, और कहीं २०-२५ मील तक भी । सीमाएं, परम्परा तथा स्थान विशेष का महत्व इसमें सहायता देता है।

सीमा रेखा पर दोनों बोलियाँ अज्ञात रूप से दबाव डालती रहती हैं, यह आवश्यक नहीं कि निरन्तर एक बोली का ही दबाव पड़ता रहे , कुछ काल के बाद बदल सकता है, उदाहरणार्थ हमारी विवेच्य बोलियाँ " ब्रज " तथा " लड़ी " की सीमाओं पर निश्चित रूप से प्राचीन साहित्यिक परम्परा तथा मान्यता के कारण ब्रज भाषा ने लड़ी बोली को प्रभावित किया होगा और क्यों न किया हो जबकि " ब्रज " की भाषा की मान्यता भी गयी पर बाज हम स्पष्ट देख रहे हैं कि साहित्यिक, लड़ी बोली की मान्यता प्राप्त होने पर " बोली " होते हुए वह निरन्तर सीमा रेखा पर ब्रज और लड़ी को अधिकाधिक मिश्रित बनाती जा रही है।

सीमा रेखा पर स्थित इस बोली का वैसा ही महत्व है जैसा संगम पर त्रिवेणी का । त्रिवेणी में भी यह तीसरा प्रवाह संगम पर स्थित दोनों नदियों के जल से मिश्रित प्रवाह ही है। सीमा रेखा की इस उप-बोली का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

इस मिश्रित बोली के बोलने वाले भी किसी एक भाषा

१- " प्रयाग " की ही तरह " त्रिवेणी " शब्द का " वेणी " शब्द घपले का बन गया है " वेणी " का अर्थ है " प्रवाह " । वागे " नदी " का पर्याय लोगोंने " वेणी " की समझ लिया और कल्पे लगे कि तीसरी नदी (सरस्वती) सुप्त होगई है। < < <

दो नदियों के मिलने से तीन प्रवाह- तीन वेणियाँ- त्रिवेणी । एक प्रवाह तीन वेणियाँ- त्रिवेणी । एक प्रवाह गंगा का दूसरी प्रवाह यमुना और तीसरा प्रवाह सम्मिश्रित दोनों का । - बाचार्य किशोरीदास बाजपेयी, कुछ शब्दों के अर्थों में सामूहिक भ्रम " नई धारा " वर्ष १४ अंक ६-१०

की ध्वनि, रूप तथा सव्दावली के प्रति बाग़रही नहीं, रहते एक प्रकार से "दिमाणी" बन जाते हैं। "दिमाणी" व्यक्तियों की भाषा का अध्ययन अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। ये दोनों बातियाँ जब दो भिन्न भाषाओं की होती हैं तो अध्ययन एक भिन्न रूप ले लेता है।

इस दृष्टि से हमारे इस अध्ययन का महत्व है जहाँ हिन्दी (पश्चिमी हिन्दी) की दो प्रधान उपभाषाएँ "ब्रज" तथा "सड़ी" मिलती हैं। इस संधिरता के दोनों ओर एक भिन्न प्रकार की मिश्रित बोली की फट्टी है।

-
1. Weinreich, V. - Languages in Contact, Monton & Co.,
1963
Gleason, H.A. - An introduction descriptive Linguistics
1961.

१. २ विवेच्य दौत्र

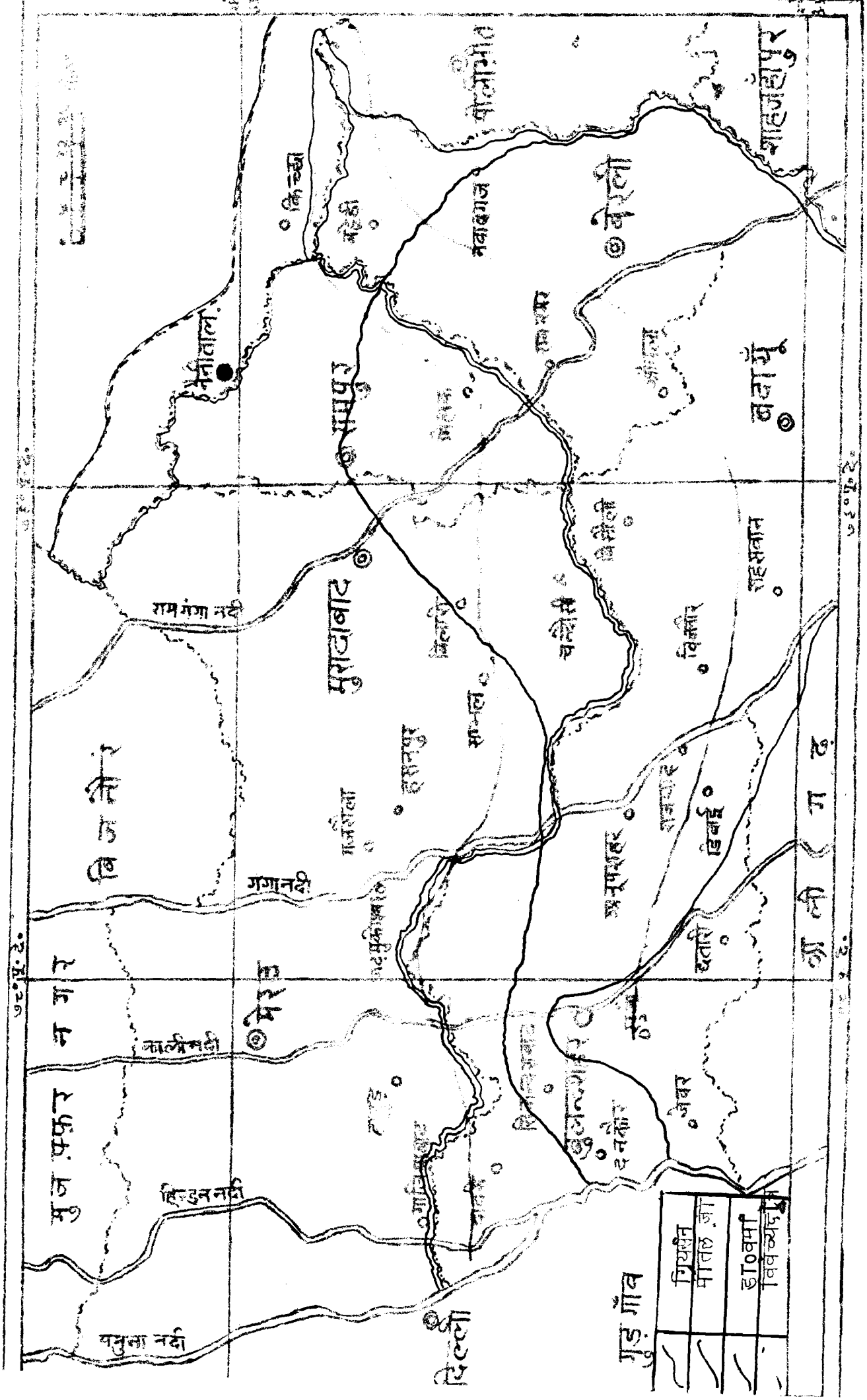
१. २. ०

ब्रज और सड़ी बोली का पृथक्-पृथक् अध्ययन तो अति विशद रूप में अनेकानेक विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किया जा चुका है। कतिपय दौत्र विशेषण को लेकर भी कुछ विद्वानों ने ब्रज तथा सड़ी बोली का अध्ययन ^{किया} है। वे दौत्र अत्यन्त सीमित हैं तथा उन्हीं के आधार पर उस सीमित सीमा के अन्तर्गत रहकर ही विवरण प्रस्तुत किए गए हैं, परन्तु ब्रज और सड़ी बोली को सीमा अत्यन्त विस्तृत एवं विशाल है। इतनी लम्बी सीमा पर दोनों बोलियों का मिलन निश्चय ही अनेकानेक परिवर्तनों को जन्म देगा और वे परिवर्तन निश्चय ही अनेक दौत्रों में हुए हैं। उदाहरणार्थ दोनों के सम्मिश्रण से स्वनिमात्मक, रूप प्रक्रियात्मक तथा अनेक व्याकरणिक परिवर्तन उपस्थित हो गए हैं।

१. २. १

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत हमें ब्रज और सड़ी बोली की सीमाओं का विवेचन उपस्थित करना है, उक्त बोलियों की सीमाओं का निर्धारण सर्वप्रथम वैज्ञानिक रूप से जार्ज ग्रियर्सन ने प्रस्तुत किया है। यद्यपि इससे पूर्व मिर्जा सां, लक्ष्मलाल आदि व्यक्तियों ने ब्रज भाषा की सीमाओं के संकेत दिए हैं परन्तु जार्ज ग्रियर्सन का वर्णन तथा सीमांकन ही अधिक महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण प्रस्तुत करते हुए सण्ड भाग प्रथम में ब्रजभाषा दौत्र का निम्नलिखित विवरण प्रस्तुत किया है :

“ यदि मथुरा को केन्द्र माना जाय तो दक्षिण में ब्रज भाषा जागरा, भरतपुर के अधिकांश भाग, घाँसपुर कराँली, ग्वांसियर



गुड गाँव	गिराईन
	मातल जा
	डावर्मा
	विवच्यहम

७८°५०'६"

७६°५०'६"

७८°५०'६"

के पश्चिमी भाग तथा जयपुर के पूर्वी भाग में बोली जाती है। उत्तर में यह गुड़गाँव के पूर्वी भाग में बोली जाती है। उत्तर-पूर्व, दोबाब में, यह बुलन्द शहर, अलीगढ़, एटा, मैनपुरी तथा गंगा पार के बदायूँ, बरेली तथा नैनीताल की तराई के परगनों में बोली जाती है। इसका कुल क्षेत्रफल २७ हजार वर्गमील तथा बोलीने वालों की संख्या ७६ लाख लगभग है।^{१.}

डा० धीरेन्द्र वर्मा जी ने ब्रज भाषा की सीमा के सम्बन्ध में लिखा है - " उत्तर प्रदेश के मथुरा, अलीगढ़, वागरा, बुलन्दशहर, एटा, मैनपुरी, बदायूँ तथा बरेली के जिले, पंजाब के गुड़गाँव जिले की पूर्वी पट्टी, राजस्थान में भरतपुर, धौलपुर, करौली तथा जयपुर का पूर्वी भाग, मध्य भारत में ग्वाल्थर का पश्चिमी भाग । " वागे चलकर उत्तर प्रदेश के पीलीभीत, शाहजहाँपुर, फरीदाबाद, हरदोई, हटावा और मानपुर के जिले भी ब्रज प्रदेश में सम्मिलित कर लिए हैं।

१- Taking Muttra as the centre, Braj Bhakha is spoken to the south in the district of Agra, in the greater part of the state of Bharatpur, in the states Dholpur and Karauli, in the Western part of Gwalior and in the east of Jaipur, To the north it is spoken in the eastern part of Gurgaon. To the North-east, in the Deob, in Bulandshahr, Aligarh Etah, and Mainpuri and, across the Ganges, in Budaon Bareilly, and the Tarai praganas of Nainital. xxx It covers, roughly speaking an area of 27,00½ sq. miles. It is spoken at home by in round numbers, 78,00000 people.

- Linguistic survey of India Vol. IX part I- page 69.

२- डा० धीरेन्द्र वर्मा- ब्रज भाषा- प्रथम संस्करण-१९५३ पृ० ३३

सर जार्ज ग्रियर्सन ने जो ब्रज के वस्तुगत नैनीताल की तराई की सम्मिलित कर लिया है उसे स्वीकार न करते हुए वर्मा जी ने लिखा है कि - " निजी जानकारी के अनुसार नैनीताल तराई की मंडियाँ के निवासी प्रायः लड़ी बोली क्षेत्र के हैं और तराई के अन्य लोगों में वे कुमायूँनी जम्मा घुटिया हैं, जो बाढ़ों में पहाड़ों से नीचे उतर कर अस्थायी रूप से वहाँ रहते हैं इसलिए यही ठीक होगा कि ब्रज भाषा क्षेत्र में नैनीताल के तराई भाग की सम्मिलित न किया जाय । "

डा० हरदेव बाहरी ने "ग्रामीण हिन्दी बोलियाँ" में मथुरा, वागरा, अलीगढ़ की शुद्ध ब्रज के रूप में स्वीकार किया है। काशीपुर, बरौली, बदायूँ, एटा और मैनपुरी में कम्भीजी सम्मिश्रित तथा बुलन्दशहर के दक्षिण में लड़ी बोली से सम्मिश्रित माना है।

ब्रज के सांस्कृतिक इतिहास में श्री मोतील का मत भी द्रष्टव्य है :

" हमारे मतानुसार ब्रजभाषा का निजी क्षेत्र पश्चिमी बंगाल उत्तर प्रदेश स्थित मथुरा, वागरा, अलीगढ़, एटा जिलों में तथा मैनपुरी जिला के अधिकांश और बुलन्दशहर जिला के कुछ भाग में, राजस्थान स्थित भरतपुर, धौलपुर और करौली जिलों के कुछ भाग में तथा पंजाब स्थित गुड़गाँवा जिला के कुछ भाग में है। इसके चारों ओर मिश्रित

१- वर्मा, धीरेन्द्र - ब्रजभाषा - प्रथम संस्करण १९५४ पृ० ३३

२- बाहरी, डा० हरदेव - ग्रामीण हिन्दी बोलियाँ- १९६६ पृ० ७६

३- मोतील, प्रमुदयाल - ब्रज भाषा का सांस्कृतिक इतिहास- १९६६ ई० पृ० १८

ब्रजभाषा क्षेत्र है। इसमें उत्तर में सड़ी बोली, पूर्व में कन्नौजी, दक्षिण में बुन्देल लण्ही और पश्चिम में राजस्थानी बोलियों से ब्रजभाषा का मिश्रित रूप मिलता है।

डा० हरदेव बाहरी ने सड़ी बोली की दक्षिण पूर्वी सीमा की ओर संकेत करते हुए लिखा है कि " शुद्ध कौरवी गंगा और जमुना के उत्तरी दोबाव क्योंकि देहरादून के मैदानों भाग, सहारनपुर मुजफ्फरनगर और मेरठ में पूरे जिले एवं बुलन्दशहर के उत्तरी अधिकांश में बोली जाती है।

मुजफ्फरनगर और मेरठ जिलों से परे, गंगा पार पूरे बिजनौर जिले की ओर मुरादाबाद तथा रामपुर जिलों के उत्तरी भाग की बोली भी कौरवी है, इसके दक्षिण और पूर्व में ब्रजभाषा बोली जाती है।

ब्रजभाषा के क्षेत्र के सम्बन्ध डा० अम्बाप्रसाद सुमन का मत है :

" अपने विशुद्ध रूप में यह वाज भी वागरा, बौलपुर, मथुरा और अलीगढ़ जिलों में बोली जाती है। इसे हम केन्द्रीय ब्रजभाषा के नाम से पुकार सकते हैं। केन्द्रीय ब्रजभाषा क्षेत्र की उत्तरी फट्टी से इसमें सड़ी बोली की सटक जाने लगती है। उत्तरी पूर्वी जिलों क्योंकि बदायूं और एटा जिलों में कन्नौजी का प्रभाव प्रारंभ हो जाता है। "

१- बाहरी, डा० हरदेव- ग्रामीण हिन्दी बोलियाँ- १९६६ पृ० ४४-४५

२- डा० सुमन- अम्बा प्रसाद - हिन्दी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप - १९६६ पृ० १५८- १५९ तथा १६१

“ जिला अलीगढ़ (उत्तर पूर्व में गंगा नदी की सीमा तक) बुलन्दशहर जिले का लगभग आधा दक्षिणी भाग (पूर्व में अन्नूपुर शहर की सीमा से लेकर) ।

“ जिला एटा तथा तहसील अन्नूपुर शहर एवं तहसील अतरौली की उत्तरी पट्टी को भाषा कन्माँजी से कुछ कुछ प्रभावित है। ”

उपर्युक्त विद्वानों ने ब्रज एवं लड़ी बोली के क्षेत्र निर्धारण में किन्हीं विशिष्ट स्थानों की ओर स्पष्ट रूप से, केवल जिलों की सीमाओं को छोड़कर और निर्देश नहीं किया, यद्यपि किन्हीं दो बोलियों की सीमा रेखा खींच कर सीमांकन निश्चय हो बड़ा कठिन एवं विवादास्पद भी है, ब्रज और लड़ी बोली का सीमांकन तो और भी कठिन है क्योंकि दोनों ही बोलियों का उद्गम स्रोत एक ही शीरसेनी उपग्रंथ है। दोनों ही पश्चिमी हिन्दी खण्ड की मेरुदण्ड रूपिणी बोलियाँ हैं। दोनों बोलियाँ एक दूसरे के क्षेत्र का निरन्तर अतिक्रमण करती रहीं हैं, इसलिए कोई निश्चित सीमा रेखा अंकित करना कठिन है परन्तु अपने निजी सर्वेक्षण के आधार पर सीमांकन की प्रवेष्टा की गई है।

सर जार्ज ग्रियर्सन ने जिन दिनों और जिन परिस्थितियों में सर्वेक्षण किया था । वह सर्वविदित है क्योंकि उनका सर्वेक्षण का आधार सरकारी मसौनरी थी । उन्होंने उसी आधार पर सीमा रेखांकन किया है। सर्वप्रथम इतने विशाल रूप में जो सर्वेक्षण का कार्य किया गया था वह निश्चय ही स्तुत्य है।

डा० बीरेन्द्र वर्मा जी के सीमांकन में और जार्ज ग्रियर्सन के सीमांकन में केवल नैनीताल के तराई भाग को छोड़कर, और कोई विशेष अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता । श्री प्रभुदयाल जी मोतल ने तो अपने मान चित्र में ब्रज और सड़ी बोली के मिश्रित क्षेत्र का भी स्पष्ट अंकन किया है। अब तक के सीमांकन में निश्चय ही यह एक अमि-नव चरणा कहा जायेगा । उन्होंने ब्रज की उत्तरी सीमा बुलन्दशहर के काफी उत्तर की ओर प्रवर्धित की है तथा मिश्रित क्षेत्र को भी दनकौर से लेकर सिकन्द्राबाद से बहुत ऊपर तक और उत्तर पूर्व में रामपुर शहर से भी कुछ ऊपर , बहेड़ी से पश्चिम, नबावगंज होते हुए बरौली के पूर्व होते हुए शाहजहाँपुर की सीमा में तक पहुँच गए हैं।

डा० अब्बा प्रसाद सुमन ने ब्रज भाषा की उत्तरी सीमा तहसील अद्वपशहर की सीमा से बुलन्दशहर के ददिाणी भाग तक मरनी है।

उपर्युक्त विद्वानों में से कतिपय के मान चित्र भी दिए गए हैं। अपने भाषा-सर्वेक्षण के आधार पर जी निकर्ण सीमा सम्बन्धी निकले हैं वे निम्नलिखित हैं ।

१. २. २ विवेक्य क्षेत्र की सीमा-

१. २. २. १ - दक्षिण पूर्वी सीमा

पश्चिम में जमुना नदी के सादर तहसील बुर्जा के ज्वर परगने से लगभग १० मील उत्तर तथा दनकौर से लगभग ५ मील दक्षिण से प्रारम्भ होकर बुर्जा से लगभग ५ मील उत्तर, काली नदी की गांव करियावली पर काटती हुई, अनूपशहर डिहार्ड के बीच होती होती हुई राजघाट के पास गंगा नदी को काटती हुई तहसील गिन्धौर के बबरासा तथा गिन्धौर के लगभग ५ मील दक्षिण से होती हुई, बरसो की तहसील बावसा के पास से, नवावगंज, बरहोरी से पूर्व में होती हुई, पोलीमीत सदर तहसील का उत्तरी-पूर्वी कोने तक गई है।

१. २. २. २ उत्तरी-पूर्वी सीमा-

पश्चिम में जमुना नदी और हिण्डन नदी से प्रारम्भ होकर लगभग ४ या ५ मील दक्षिण और दादरी से लगभग ६ या ७ मील उत्तर से तहसील गाजियाबाद, हाफुड के दक्षिणी भाग से होती हुई कौता, स्थाना की उत्तरी की उत्तरी सीमा, गंगा नदी को पार कर संमत, विलारी के नीचे से सीधी, मिलक तहसील जिला रामपुर के पास होकर जिला नैनीताल के किच्छा से कुछ नोच तक जाती है।

यदि हम संक्षिप्त रूप से सीमांकन का अध्ययन करें तो- उत्तरी पूर्वी सीमा - जमुना नदी से लेकर गाजियाबाद से नीचे होकर तथा स्थाना, कौता भी उत्तरी सीमा से होते हुए संमत

७८० फु. द.

मुजफ्फर नगर

विजौरी

० ४ ८ १३ २६ मील

यमुना नदी

हिन्दन नदी

कालीनदी

मेरठ

गंगानदी

रामगंगा नदी

गुजियाबाद

हापुड

गढमुक्तेश्वर

गजसैला

हसनपुर

मुरादाबाद

रामपुर

दिल्ली

चादरी

शिकन्दरबाद

बुलन्दशहर

दनकौर

जेवर

द्यतारी

डिबाई

राजवाड़ा

अनूपशहर

विजौरी

चन्दिनी

बिसौली

विलारी

सम्भल

मिलक

रामनगर

नवाबागज

बहेडी

किच्छा

बैनीवाल

बैरली

बदायूँ

सहस्रवान

अलीगढ़

शाहजहापुर

७८० फु. द.

७८० फु. द.

वितारी मिलक, और किच्छा तक जाती है तथा दक्षिणी पूर्वी सीमा पश्चिम में जमुना से दनकौर के नीचे से जुवाँ, डिबाई, बबराला, गिन्नीर बाँवला, बहेड़ी तथा पीलीभीत के उत्तरांचल तक जाती है।

१. २. ३ विस्तार तथा दौत्रफल-

अपनी विवेक्ष्य दौत्र पर मान चित्र में यदि दृष्टिपात किया जाय तो यह दौत्र पश्चिम से पूर्व की काफी लम्बाई में चला गया है परन्तु चौड़ाई अत्यन्त कम है। पश्चिम से ७७ घू० देशान्तर से ८० घू० देशान्तर तक तथा दक्षिण में २८ अक्षांश से उत्तर में २६ उत्तरी अक्षांश रेखाओं के ही अन्तर्गत फैला हुआ है।

लम्बाई-

जमुना नदी से गंगा नदी तक ५५ मील गंगा से राम गंगा तक लगभग ७० मील तथा राम गंगा से पीलीभीत के उत्तरांचल और नैनीताल तराई की दक्षिणी फूटी तक ५० मील के लगभग लम्बाई है। कुल मिलाकर १७५ मी० लम्बाई पश्चिम से पूर्व तक होगी।

चौड़ाई-

जमुना से गंगा तथा राम गंगा तक तो कहीं अधिक और कहीं कम लगभग २५ मील चौड़ाई होगी। राम गंगा से आगे चलकर तो दौत्र अत्यन्त सकरा होता गया है यहां तक कि अन्त में तो

४ मील से अधिक चौड़ाई नहीं बैठेगी । इस प्रकार कुल मिलाकर अनुमानतः २० मील चौड़ाई होगी ।

क्षेत्रफल -

४५०० वर्ग मील के लगभग होगा ।

१. २. ४ प्राकृतिक स्थिति

संपूर्ण क्षेत्र में तीन ती बड़ी नदियाँ बहती हैं, जमुना, गंगा और रामगंगा । छोटी - छोटी असंख्य नदियाँ बहती हैं। इस पूरे क्षेत्र में कोई पर्वत नहीं है। नदियों के द्वारा लाई गई मिट्टी से यहाँ भूमि उत्कृष्ट उपजाऊ होगई है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत पड़ने वाले जिले हैं - बुलन्दशहर, बदायूँ, बरेली तथा पीलीभीत और मेरठ, मुरादाबाद, रामपुर तथा नैनीताल ।

इन सभी का विस्तृत विवरण सरकारी गजेटियर्स में दिया गया है। रामपुर की मिट्टी के विषय में गजेटियर में लिखा है- यहाँ की मिट्टी की मुख्य किस्म (गुण) दुमट, भूड़, मटियार, कल्लर और रेग । दुमट मिट्टी सबसे अच्छी किस्म की है, गेहूँ, कपास, गन्ना की सब पैदावार बढ़ती । इसी प्रकार बुलन्दशहर जिले का सबसे अधिक भाग इस क्षेत्र में पड़ता है तथा । बुलन्दशहर की मिट्टी निश्चय ही अन्य जिलों की तुलना में अधिक उपजाऊ तथा अच्छी है।

-
1. The Principal varieties of soil found in the state are Dumat, bhar, Matiar Kallar and Reg. xxx

Dumat is the best kind of soil for the growth of wheat, cotton, sugarcane and Indian corn.

बदायूँ की मिट्टी में घूड़ बादि के तत्व मिले हुए हैं तथा खादर की धूमि में वन्तर है। बरेली और पौलीभीत रामपुर मुरादाबाद , भरठ बादि की मिट्टी में कोई विशेष वन्तर नहीं है जहाँ वन्तर है भी तो उसका कारण नदी बादि का खादर इत्यादि ही हो सकती हैं :

जलवायु-

जलवायु की दृष्टि से तीन भाग संपूर्ण क्षेत्र के किए जा सकते हैं :

१- जमुना से गंगा नदी तक- इस भाग में भरठ का दक्षिणांचल तथा जिला बुलन्दशहर का लगभग दो तिहाई भाग आता है। बुलन्दशहर की जलवायु गर्मियों में गर्म, सर्दियों में सर्द तथा बरसात में काफी वर्षा होती है। कुल मिलाकर इस भाग की जलवायु पूर्वी क्षेत्र से अच्छी है।

२- दूसरा भाग गंगा से राम गंगा तक - इस भाग में मुरादाबाद, रामपुर, बदायूँ तथा बरेली का कुछ भाग आता है। जलवायु की दृष्टि से पश्चिमी क्षेत्र की जलवायु से कोई विशेष वन्तर नहीं है।

३- तीसरा भाग है रामगंगा पार नैनीताल तराई तथा पौलीभीत का उत्तरांचल का । तराई भाग में वर्षा अधिक होती है। बरसात के दिनों की जलवायु ठीक नहीं रहती ।

1. The general distribution of said has already been shown in the fore going account. The three main divisions are loan, clay and bhur or said.....,

१.२.५ सामाजिक स्थिति-

जातियाँ-

प्रस्तुत क्षेत्र के तीनों भागों में अनेक जातियों का निवास है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा जाटव (बमार) नाई, लटीक, बीबी, धीमर, किन्हा (नैनीताल) में कुछ मोटिया जाति के भी लोग रहते हैं और इन्हीं भागों को जार्ज ग्रियर्सन ने "मुक्सा" कहा है। जाट गूजर, दादरी, सिरुन्दाबाद, तथा जाटों की संस्था ख्याना, अगीता तथा बुलन्दशहर में अधिक है। १९४७ के पश्चात् पंजाबी लोग आकर यहाँ बस गए हैं उन्हें पीतोभीत में सरकार ने भूमि प्रदान की है।

रहन सहन-

विवेच्य क्षेत्र के लोगों में विभिन्न जातियों के व्यक्तियों के बसने के कारण उनके रहन-सहन रीति रिवाजों में कहीं कहीं अन्तर भी दिखाई देता है। जैसे सम्भल, झिलारी, और रामपुर के मुसलमान तथा बुलन्दशहर बदायूँ के मुसलमानों का देखने से पता लग जायेगा। गाँवों में आज के इस वैज्ञानिक युग में भी भूत-प्रेत आदि की मनीसियां मकनाई जाती हैं। जानवरों में रोग फैलने पर लोग तंत निकाला करते हैं। "तन्त" एक ऐसी क्रिया है कि एक व्यक्ति मंत्र पढ़ता है तथा पूरे गांव की मंत्रों के द्वारा कील देता है। रात्रि में एक बकरा की चामड़ की बलि चढ़ाते हैं। एक सप्पर में सामग्री डालकर जलाते हुए तथा "हू-हूँ" की एक मयानक ध्वनि करते हुए प्रत्येक घर जाकर जी मिट्टी या बर्तन वहाँ पहले से ही रखा रहता है उसे डण्डे से लोड़ते हुए गांव से बाहर उस सप्पर की जमीन

में गाढ़ जाती हैं। इस प्रकार पशुओं का रोग माग जाता है ऐसी उनकी धारणा है। और जैकों प्रकार के रीति-रिवाज चलते हैं। भूत-भ्रतों के भगाने तथा मनाने के लिए "डॉरू" और "जागिन" बजाए जाते हैं। कहीं कहीं भूत भगाने के लिए धाली भी बजाई जाती है।

गांव के मुसलमान हिन्दुओं से ही मिलते जुलते रहते हैं। मस्जिद पर जाकर अधिकांश नमाज़ पढ़ते हैं। रोजा रखते हैं। ईद पर सभी लोग परस्पर मिलते हैं। हिन्दुओं में सभी त्यौहार बड़े उत्साह से मनाए जाते हैं।

इस प्रकार लोगों के सामाजिक जीवन में एक नवीन प्रकार की चेतना स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आगई है। पहनावे में जाट और गूजरों की स्त्रियाँ वही प्राचीन लहंगा और ओढ़ना और नीची कमीज का प्रयोग करती हैं। डिबाई के पास लोथे राजपूतों में बूढ़ी स्त्रियाँ लहंगा ओढ़नी का ही प्रयोग करती देखी गई हैं। साधारणतः स्त्रियाँ साड़ी या धोती ब्लाउज का ही प्रयोग करती हैं। कमीज का रिवाज अब नहीं रहा है। मुसलमान जो गांवों में रहते हैं उनकी स्त्रियाँ भी साड़ी पहनती हुई देखी जा सकती हैं। चुस्त पाजामा तथा कुर्ता और दुपट्टा का प्रयोग करती हैं। बुरका भी रिवाज है।

गहनों के पहनावे में स्त्रियाँ कानों में तड़की या "एरिंग" तथा नाक में "लॉग" जो सीने की होती है अथवा, गड़रिया, आदि को स्त्रियाँ नाक में "सेंटा" पहनती हैं। यह सीने का और आकार में काफी बड़ा होता है। हाथों में, लोथे राजपूत, गड़रिया, अथवा को स्त्रियाँ, बांदी या सीने के लहुवा पहनती हैं। पैरों में "तीड़िया" अथवा लहुवा का प्रयोग होता है। मुसलमान स्त्रियाँ कानों में काफी नीचे

तक लटकने वाली चांदी की बालियां पहनती हैं। पुरुषों के पहनावे में कोई विशेष वन्तर नहीं है।

१.२.६ वार्षिक स्थिति-

वार्षिक दृष्टि से पश्चिमी भाग पूर्वी भाग की अपेक्षा अधिक सबल है। बड़ी बड़ी मंडियां हैं। सुर्जा धी की बहुत बड़ी मंडी है जिसका समस्त भारत में व्यापार होता है। सिकन्द्राबाद और दादरी में भी अनाज की अच्छी मंडियां हैं। सम्भल, बिलारी, बिसौली में भी अनाज की अच्छी मंडियां हैं। लोगों का मुख्य धन्धा वैस तो कृषि है परन्तु अनेक लोग नगरों में नौकरी भी करते हैं। व्यापारी भी करते हैं। रामपुर में अब भी जानवर अधिक संख्या में काटे जाते हैं जिनका गोश्त तथा "खाल" का व्यापार होता है। कृषि कार्य नैनीताल की तराई में है वहां उन्नत किस्म की फसलें उगाई जाती हैं तथा फसलों में नाना प्रकार के नवीन प्रयोग किए जाते हैं। प्रायः रबी, खरीफ और "जायद" फसलें उगाई जाती हैं। मूँहू, चना, जो मटर की पैदावार पूरे क्षेत्र में अधिक मात्रा में होती है। कस्बों के आस पास, साग तरकारियां अधिक होती हैं। आलू की पैदावार भी अधिक अच्छी होती है।

सिंचाई के लिए अनेक बड़ी बड़ी नहरें तथा ट्यूबवैल लगे हुए हैं। गंगा नहर पश्चिमी प्रदेश को सिंचाई करती है, नहर को एक शाख दादरी, सिकन्द्राबाद होकर जाती है। नहर शाख अन्नपेशहर, काफ़ी विस्तृत भू भाग को सिंचाई करती है। इधर राजघाट नरौरा पर बांध बंध कर जो नहर बनाई थी वह अब तक सिंचाई लगभग ६४ मील तक नहीं कर पाती थी परन्तु सरकार अब करोड़ों रुपया व्यय करके उसे

उसे सिंचाई के योग्य बना रही है। रामगंगा से भी जल नहरें निकाल कर सिंचाई की जा रही है। सिंचाई के अच्छे साधन होने के कारण जमुना से रामगंगा तक का क्षेत्र निश्चय ही अत्यधिक उपजाऊ तथा लोगों की अधिक अच्छे उत्पन्न प्रदान करने वाला है। आर्थिक दृष्टि से पूर्वी क्षेत्र को छोड़कर सभी क्षेत्र अच्छी पैदावार के कारण समुचित ढंग से जीवन यापन करता है।

वावागमन के अच्छे साधन निरन्तर सरकार के प्रयत्न से बन गए हैं। रेल तथा सड़कों का इस प्रदेश में जाल सा बिछा हुआ है। माल ढोने में अधिक कष्ट नहीं होता ।

गांवों में आठवें दिन 'हाट' या 'पैठ' लगती है, जहाँ पर ग्रामीण लोग सौदा बेचते हैं और खरीदते हैं। कई प्रसिद्ध 'पैठ' लगती है, जैसे शुक्र की छतारी की 'पैठ' अधिक प्रसिद्ध है, बैतान , बबराला, तथा बिलारी की 'पैठ' भी अधिक प्रसिद्ध है। यहाँ गाय बेंत, भैंस बेंत और खरीदे जाते हैं। बहुत से ग्रामीण जिन्होंने कभी शहर नहीं देखा है वे लोग इस प्रकार की 'पैठ' की ही दिल्ली से कम नहीं समझते ।

उपर्युक्त विवेचन से यही निष्कर्ष सम्मुख आता है कि इस विवेच्य क्षेत्र की भौगोलिक , सांसाजिक तथा आर्थिक दशा अत्यन्त सुदृढ़ है। लोग सभी प्रकार से प्रसन्न हैं परन्तु कमर जोड़ मंछाई के कारण क्या कस्बों के और क्या गांवों के लोग परेशान हैं। किसान अपनी पैदावार पर निर्भर करता है इसलिए पैदावार, जमीन अच्छी होने के कारण अधिक अच्छी होती है। अतः सम्पूर्ण क्षेत्र समुचित ढंग से अपनी उन्नति की ओर अग्रसर है।

बध्याय :२:

संधिरेता पर स्थित जिला की बोलियाँ का महत्त्व

२.०० संघि रेखा पर स्थित जिलों की बोलियों का महत्व-

२. ००. संघि रेखा पर स्थित जिलों की स्थिति निम्नलिखित रूप से है।

उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर, बदायूँ, बरेली तथा पीलीभीत का उत्तरांचल जो नैनीताल के तराई भाग का स्पर्श करता है तथा दूसरी ओर सड़ी बोली क्षेत्र के मेरठ, मुरादाबाद, रामपुर तथा नैनीताल की तराई का दक्षिणांचल जो पीलीभीत की सीमा का स्पर्श करता है। सिद्धान्त रूप से यदि देखा जाय तो बोली का स्वरूप बारह कोस (२५ किमी मीटर) पर जाकर यत्किंचित रूप से परिवर्तित हो ही जाता है। कभी किसी सांस्कृतिक प्रभाव के कारण या जो लोग ४० या ५० साल से किसी दूसरे प्रदेश से आकर बस जाते हैं तो उनकी संतान धीरे धीरे स्थानीय तत्वों को ग्रहण करती हुई अपने पूर्वजों की बोली को भी लम्बे समय तक बनाए रखती है। अपने भाषा-सर्वेक्षण के आधार पर इस प्रकार के कई क्षेत्र मिले जिनमें उपर्युक्त स्थिति मिली। उदाहरणार्थ- सुर्जा नगर के पूर्व में एक गांव का नाम सेंहुड़ा है और उसके उत्तर पूर्व में लगभग एक या डेढ़ मील की दूरी पर स्थित बिजलीपुर सेड़ा नामक गांव है। इतनी अत्यल्प दूरी पर होते हुए भी सेंहुड़ा और बिजलीपुर दोनों गांवों की बोली में बहुत वन्तर मिला। उसका कारण है कि बिजलीपुर में रहने वाले जाट लोग लगभग ५० वर्ष पूर्व मेरठ या मुजफ्फरनगर के निकट से यहाँ आकर बस गए हैं। इतना लम्बा समय बीत जाने के पश्चात् भी उनको तथा उनकी संतान को पैतृक बोली में मेरठ के तत्व काफी मात्रा में समाहित हैं। इस-लिए बोली के वैभिन्न्य को और दृष्टिपात करने से स्पष्ट पता चलता है कि प्रत्येक व्यक्ति की बोली भी पृथक् होती है यहाँ तक कि प्रातःकाल

से लेकर सन्ध्या तक हम लोग बोलियों प्रकार की बोली का प्रयोग करने लगते हैं। उदाहरणार्थ - घर में बच्चों से, बाहर बाहर अन्तरंग मित्रों से, नाँकर से तथा दफ्तर से में अफसर से बातें करते समय हमारी शब्दावली में पर्याप्त भेद दृष्टिगोचर होता है। इसीलिए यह कहावत बोली के सम्बन्ध में पूर्णतया चरितार्थ होती है कि "कोस-कोस पर पानी बदले, बारह कोस पर बानी ।"

जब बोली का परिवर्तन दूरी के इस अनुपात से होता है तो सम्पूर्ण जिलों की तो बात ही दूसरी है। इस दृष्टिकोण से तो प्रत्येक जिले की बोली भी भिन्न ही होगी । यदि भरठ की कौरवी तथा मुजफ्फरनगर की कौरवी की ही लें तो उन दोनों में पर्याप्त भेद दिखाई देता है। यहाँ तक कि बिजनौर और रामपुर जिलों की कौरवी में भी अन्तर है। यही बात ब्रज भाषा के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। अलीगढ़ और बुलन्दशहर की ब्रज बोली के रूप में पर्याप्त अन्तर दिखाई देता है। जहाँ एक ओर अलीगढ़ की ब्रज बोली अनुनासिकता लिए हुए है तो बुलन्दशहर की बोली अनुनासिकता का परित्याग कर देती है जैसे-
में (हूँ जातुं) तो बुलन्दशहर और अलीगढ़ की सीमा पर ही अनुनासिकता समाप्त हो जाती है। इस प्रकार प्रत्येक जिले की बोली में हो सकता है कि लिपिगत अन्तर न भी हो परन्तु अन्तर अवश्य मिलेगा ।

एक या दो अथवा तीन-तीन जिलों की सीमाएँ भी परस्पर मिलती हैं निश्चय ही वह संधिस्थल एक नवीनता लिए हुए रहता है।

यदि हम सरकारी गैजेटियर्स की देखें तो उनमें प्रत्येक जिले की बोली के सम्बन्ध में प्रकाश डाला है। भरठ की बोली की गज-

टियर में पश्चिमी हिन्दी या हिन्दी-स्तोमी का वह रूप जो अरबी फारसी से मिश्रित है बताया है तथा नगरों में फारसी अरबी मिश्रित हिन्दी का प्रयोग बताया है।

रामपुर में दिल्ली और लखनऊ की उर्दू का प्रयोग होता है। बांधी जन संस्था मुसलमानों की होने के कारण यह स्वाभाविक है कि वे ठीक और नफ़ीस उर्दू का प्रयोग करें। रामपुर शहर से बाहर सम्पूर्ण जिले में पश्चिमी हिन्दी की वह बोली बोली जाती है जो साधारण से भिन्न नहीं है। पूर्वी हिन्दी को भी मिश्रित रूप बोला जाता है।

२. १ बोलने वाली की जनसंस्था-

सन् १९६१ की जनगणनानुसार रामपुर जिले की जनसंस्था निम्नलिखित रूप में है :

२. १. १ रामपुर-

कुल बोलने वाली की संस्था ७००००८ है जिनमें हिन्दी

1. The language ordinarily spoken in Rampur city is Urdu or Hindustani similarly to that spoken in such centres as Delhi and Lucknow. Since more than half the city population consist of Mohammadans. It is only natural that they should be able to speak urdu with accuracy and finency. xxx Throughout the greater portion of the state the common language spoken by the people is western Hindi, a dialect which though courrupted, does not differs much from ordinary urdu. However we find a considerable admixture of eastern Hindi also. - Gazetteer- Rampur - 1911- pp 52.

बोलने वालों की संख्या - ३६६८६६ है और उर्दू बोलने वालों की संख्या २०४११२ है, पंजाबी बोलने वालों की संख्या २६००० है। इस प्रकार हिन्दी बोलने वालों का प्रतिशत ५२, ३० प्रतिशत है, उर्दू बोलने वालों का प्रतिशत ४३, ३५ प्रतिशत है।

२. १. २ बदायूँ-

बदायूँ की जनसंख्या १९६१ के आधार पर इस प्रकार है :

हिन्दी बोलने वालों की संख्या	=	१२ ३१ २२१
तथा हिन्दी बोलने वालों का प्रतिशत	=	७६, ६० प्रतिशत
उर्दू बोलने वालों की संख्या	=	१७६४२३
प्रतिशत	=	१२, ७१ प्रतिशत
पंजाबी बोलने वालों की संख्या केवल -		५०० है।

२. १. ३ बरेली-

बरेली की जनसंख्या	=	१४७३७२०
हिन्दी बोलनेवालों की संख्या	=	११३२४८६
प्रतिशत	=	७६, ६० प्रतिशत
उर्दू बोलने वालों की संख्या	=	३२८२३१
प्रतिशत	=	२२, २० प्रतिशत

१- जन-संख्या के आधार १९६१ की जनगणना है। इसमें ही विभिन्न भाषाओं के बोलनेवालों की संख्या तथा प्रतिशत दिया जा रहा है :

Census of India 1961 Vol. I India Part II-c (ii)
Languages Tables.

पंजाबी संख्या = १३००० है।

२. १. ४ मुरादाबाद

मुरादाबाद की जनसंख्या १९६१ के आधार पर
निम्नलिखित है :

	= १६७१४५४
हिन्दी बोलने वालों की संख्या	= १३०५१८६
.. प्रतिशत	= ६६. १३ प्रतिशत
उर्दू बोलने वालों की संख्या	= ६५५२६८
.. प्रतिशत	= ३३. २० प्रतिशत
पंजाबी संख्या	= ११०००

२. १. ५ पीलीभीत

पीलीभीत की जन संख्या	= ६१००७६
हिन्दी बोलने वालों की संख्या	= ४८२०२१
.. प्रतिशत	= ७८. २२ प्रतिशत
उर्दू बोलने वालों की संख्या	= ११००५५
प्रतिशत	= १७. ८६ प्रतिशत
पंजाबी संख्या	= १८०००

२. १. ६ नैनीताल

नैनीताल की जन संख्या	= ५२ ४४६४
हिन्दी बोलने वालों की जन संख्या	= २३३०६२
प्रतिशत	= ४०. ४६ प्रतिशत
उर्दू बोलने वालों की संख्या	= ६३४०२
प्रतिशत	= ११. ०४ प्रतिशत
पंजाबी	= ६० ०००
कुमार्युनी संख्या	= १६८ ०००
प्रतिशत	= ३०६.५० २६ प्रतिशत

२. १. ७ मेरठ

मेरठ की जनसंख्या	= २७०५६१३
हिन्दी बोलने वालों की संख्या	= २२१०६०१
प्रतिशत	= ८१. ४६ प्रतिशत
उर्दू बोलने वालों की संख्या	= ४५० ७१२
प्रतिशत	= १६. ६१ प्रतिशत
पंजाबी संख्या	= ४४०००

२. १. ८ बुलन्दशहर

बुलन्दशहर की जनसंख्या	= १७३६१७१
-----------------------	-----------

हिन्दी बोलने वालों की संख्या	= १५५७७५२
प्रतिशत	= ८८.८६ प्रतिशत
उर्दू बोलने वालों की संख्या	= १७४४१६
प्रतिशत	= १०.०४ प्रतिशत
पंजाबी संख्या	= ४०००

२. २ बरेली जिले की बोली-

बरेली जिले की बोली के सम्बन्ध में गजटियर में भी काफी प्रकाश डाला गया है, उसी के अनुसार गाँवों में बोली जाने वाली सामान्य बोली पश्चिमी हिन्दी की ही एक प्रकार है जिसे ब्रज बोली के नाम से जाना जाता है। हिन्दोस्तानी या उर्दू का प्रयोग शहरों और बड़े बड़े कस्बों में होता है। और पूर्व में ब्रज का ही एक प्रकार कन्हाजी का प्रयोग होता है।

वन्तिम जनगणना के आँकड़ों के अनुसार ८८. ७ प्रतिशत पश्चिमी हिन्दी बोलने वालों की संख्या रही है।

-
1. The common tongue of the people in the rural tracts in a form of Western Hindi known as Braj. This merges on the west into Hindostani or Urdu, which is invariably spoken in the city and as a rule in the smaller towns and into the Kansujia dialect of the same language on the east. The returns of the last census showed that nearly 89.6 percent of the inhabitants spoke western Hindi-

२. ३ बंदायूँ की बोली- -----

बंदायूँ के गजेटियर के बाधारे पर पश्चिमी हिन्दी का ही प्रयोग होता है। बंदायूँ की पश्चिमी हिन्दी जो उर्दू या हिन्दो-स्तानी के नाम से जानी जाती है समस्त जनसंख्या का ६. ५ प्रतिशत लोग ही उसे शहरों और कस्बों में बोलते हैं। शेष ब्रज बोली का प्रयोग करते हैं। जो बरेली तथा पश्चिमी जिले और गंगा के पार बोलते जाते हैं। यहाँ इसका मिश्रण बुलन्दशहर मुरादाबाद की हिन्दुस्तानी से तथा पूर्व में शाहजहाँपुर की कन्नौजी से हो जाता है। वह ब्रज बोली का ही एक उपरूप है और दोनों में अत्यल्प अन्तर है। जो निम्नलिखित है :

" The language of the people is western Hindi. xxxxx The western Hindi of Budaun x usually takes the form known as Urdu of Hindostani in the case of dwellers in towns and the educated Musalman population generally, the proportion given under this head amounting to 9.5 percent of the whole population. The rest speak the dialect known as Braj, which is common to Bareilly and the districts to the South and west beyond the Ganges. It here blends with Hindostani, as in Bulandshahr and Moradabad and also with the Kanaujia from spoken in Shahjahanpur to the east . The latter is a practically a sub-dialect of Braj and in fact, there is very little difference between the two while the distinction between Braj and Hindostani is

merely of interest to the philologist.

- Gazetteer- Budmun pp 81 Vol. XV -1907

जार्ज ग्रियर्सन और डा० धीरेन्द्र वर्मा आदि ने बदायूं की ब्रज भाषा के अन्तर्गत रखा है जिसाकि उनके मान चित्रों से भी प्रकट हो रहा है।

बदायूं की तहसील गिन्नीर और बिसौली दोनों ही सम्पन्न, चन्दौसी की बोली से प्रभावित है। बदायूं में चन्दौसी प्रभाव स्पष्ट देखा जाता है और जब हम उत्तर की ओर बढ़ते हैं तो उत्तरी बोली का प्रभाव पड़ने लगता है। यहां के वहेरों की बोली और बुलन्दशहर के वहेरों की बोली में कोई विशेष अन्तर नहीं दिखाई दिया। हुंठा सेड़ा गांव तहसील बुर्जा में है। उस गांव में पूरी जनसंख्या वहेरों की ही उनके शादी व्यवहार भी गंगा पार बदायूं में होते हैं। लड़कियों का आदान-प्रदान भी इन शादियों के माध्यम से होता है। उनके बच्चे पैतृक बोली से प्रभावित रहते हैं। यह गांव शीखवां के गांव से २ मील पर ही स्थित है। उनकी बोली हमारी बोली से भिन्न नहीं लाती है। बदायूं का उत्तरी द्वार सम्पन्न आदि से प्रभावित है। चन्दौसी का सर्वेक्षण करते समय बदायूं की बोली और वहां की बोली में पार्थक्य का पाना असम्भव है। (दोनों में नमूने संग्रहीत हैं)। यद्यपि चन्दौसी, मुरादाबाद की तहसील बिलारी का एक बहुत बड़ा कस्बा है। बदायूं का उत्तरांचल और मुरादाबाद का दक्षिणांचल एक दूसरे से बोली में ही नहीं अपितु नाना रीति रिवाजों तक में पूर्णरूपेण भिन्न हुए हैं।

२. ४ नैनीताल की बीली-

जार्ज ग्रियर्सन ने नैनीताल के तराई भाग की ब्रजभाषा के अन्तर्गत परिगणित किया है परन्तु डा० धीरेन्द्र वर्मा ने स्पष्ट अवस्थिति प्रकट की है। नैनीताल के जो आँकड़े प्रस्तुत किए गए हैं उनमें २६ प्रतिशत बी कुमायूँरु बीलने वाले हैं कुछ हिन्दी और कुछ उर्दू। मुक्ता बीलने वाले भी हैं। वास्तव में तराई क्षेत्र में वाजकल कृषि फार्म हैं वहाँ पहाड़ी लोग को पं० गोविन्द वल्लभ पन्त जमीन सैती करने की दी थी वे पहाड़ी लोग ही वहाँ बस गए हैं। कुछ पहाड़ी लोग केवल जाड़े के दिनों में ही काम करने के लिए नीचे उतर जाते हैं जिनका निवास भी अस्थायी है। दूसरे पूर्वी जिलों में लोग फार्मों में काम करने के लिए बहुत बड़ी संख्या में रहते हैं। मैं जब वहाँ सामग्री संकलन के लिए गया ठीकी उपर्युक्त स्थिति ही मिली। किच्छा से ढाई मील की दूरी पर गाँव बँडिया है मैंने वहाँ से सामग्री का संकलन भी किया तथा देखा कि नैनीताल जिले का एक भी आदमी उस गाँव में २०-२५ वर्षों से पहले का नहीं है और वे भी नैनीताल जिले के नहीं थे। दो एक स्थानों पर देखा तो वे लोग पहाड़ी थे जिन्हें यहाँ जीतने के लिए जमीनें मिली हुई थी। उनकी भाषा बिल्कुल पहाड़ी थी। एक ठाकुर परिवार ऐसा अवश्य मिला जो लगभग २० साल से स्थायी रूप से वही रह रहा था। उसकी बीली अवश्य यहाँ की बीली के कुछ मिल गए थे जिससे उनकी भाषा लिचड़ी बन गई है। नैनीताल तराई में किसी एक बीली का निर्णय कर देना मेरे विचार से नितान्त असम्भव है।

२. ५ मुरादाबाद की बोली-

मुरादाबाद के उत्तरी भाग में शुद्ध कोंरवी बोली बोली जाती है। इस सम्बन्ध में किसी ने भी कोई विवाद उपस्थित नहीं किया है। जो कुछ भी विवाद है वह मुरादाबाद के दक्षिणी भाग की बोली पर है। सर जार्ज ग्रियर्सन तथा डा० थोरन्त्र वर्मा आदि ने जो ब्रजभाषा सम्बन्धी मानचित्र दिए हैं उनमें मुरादाबाद के समस्त जिले को ही शुद्ध कोंरवी रूप में अंकित किया है।

श्री प्रभुदयाल मीसल ने अपने ग्रन्थ 'ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास' पृ० १६ में जो मानचित्र प्रस्तुत किया है उसमें उन्होंने मुरादाबाद के दक्षिणी भाग को तथा रामपुर नगर से ऊपर तक का भाग सड़ी और ब्रज के मिश्रित क्षेत्र में रखा है। इनके अतिरिक्त अन्य किसी विद्वान् के विचार इस सम्बन्ध में देखने की नहीं मिले हैं।

अपने सर्वेक्षण के आधार पर मैंने मुरादाबाद का दक्षिणी भाग जिसमें सम्मल तहसील का लगभग आधा दक्षिणी भाग तथा तहसील बिलारी का भी आधा दक्षिणी पूर्वी भाग भी ब्रज और सड़ी के मिश्रण में रख लिया है। सम्मल और बिलारी के कस्बों में मुसलमान लोग प्रायः सड़ी मिश्रित उर्दू का प्रयोग करते हैं और हिन्दू लोग भी उनसे प्रभावित उर्दू मिश्रित सड़ी तथा बदायूँ से प्रभावित ब्रज का मिश्रण ही बोलते हुए सुने गए। गाँवों में ब्रज के जो जो बदायूँ में बोली जाती है उसका स्पष्ट रूप गाँवों में मिलता है। उस क्षेत्र के कुछ नमूने परिशिष्ट में संकलित हैं उन्हीं सहज में ही अनुमात लगाया जा सकता है।

२. ६ रामपुर-

रामपुर का सर्वेक्षण करते समय ब्रज का मिश्रित रूप तहसील मिलक (सास) से ऊपर कुम्भ नहीं किया गया मिलक से नीचे ही बरौली में बौली जाने वाली कन्नौजी से प्रभावित ब्रज का ही कुम्भ हुआ । श्री भीमल साहब रामपुर नगर से भी ऊपर तक ब्रज का मिश्रण मानते हैं जो भरे विचार से संगत नहीं लगता । यदि कहीं कुछ शब्द किसी भाषा या बोली के जव्वा किसी अन्य बोली में मिल भी जाय तो उससे उसे उस बोली का मिश्रण किसी प्रकार भी नहीं ठहराया जा सकता है।

२. ७ मेरठ जिले की बोली

मेरठ के गजेटियर^१ में कहा गया है कि कोई सास बोली जिले में नहीं बोली जाती है वपितु सामान्य प्रयोग में साधारण हिन्दी-स्तब्दनी जिसमें कि बरबी-फारसी का मिश्रण है प्रायः पढ़े लिखे लोग तथा शहरों में बोली जाती है।

मेरठ की बोली के सम्बन्ध में कोई विशेष विवाद नहीं है और न उसमें किसी प्रकार के मिश्रण की परिचर्चा ही सुनने में जाती है। मेरठ शुद्ध कौरवी बोली का क्षेत्र है तथा तहसील बागपत में शुद्ध कौरवी बोली बोली जाती है। मेरठ का वह भाग जहाँ बुलन्दशहर जिले की सीमा स्पर्श करती है । धौलाना के दक्षिण में, शुद्ध कौरवी का रूप नहीं मिलता

-
1. There are no peculiar dialects spoken in the district. The language in common use among the mass of the people is the ordinary Hindostani, a form of western Hindi with an inter mixture of persian and Arabic, the latter being more noticeable among the educated classes of the city of Meerut.

- Gazetteer of Meerut- Vol. IX . 1904.

उसमें दादरी, सिकन्द्राबाद, मुसावटी बादि का सा ही उच्चारण सुनाई देता है।

२. = पीलीभीत जिले की बोली- -----

पीलीभीत के गजटियर के बाधारे पर- पीलीभीत में बोली जाने वाली गांवों की बोली पश्चिमी हिन्दी का ही एक प्रकार है। कई जिलों का सीमा प्रदेश होने के कारण यहाँ की बोली में भी कई बोलियों का मिश्रण है। जन-गणना के बाधारे पर ६६. ६७ प्रतिशत लोग पश्चिमी हिन्दी का ही एक प्रकार का प्रयोग करते हैं। ६७ प्रतिशत उर्दू और ०.३ प्रतिशत अन्य भाषाएँ जैसे अंग्रेजी, कुमायूँ और पंजाबी का प्रयोग करते हैं।

पीलीभीत में निश्चय ही कई बोलियाँ बाकर मिलती हैं, पूर्व से कन्नाड़ी, बदायूँ, बरेली से कन्नाड़ी मिश्रित ब्रज तथा उत्तर

1. Pilibhit is included in the tract in which the current dialect is some form of western Hindi, but so far as the actual sub-divisions are concerned it may be described as a border land. xxxxxx The Census classification is therefore to be regarded as some what arbitrary. It shows that 99.97 % of the people ordinarily use some kind of western Hindi, 9.27 percent of the whole speaking Urdu, while the remainder, 0.3 %, some under various heads such as English, Kumauni and Panjabi these being in no sense the vernaculars of the permanent residents.% Pilibhit ,Gazetteer Vol. XVIII- 1909pp99-100

की वीर से नैनीताल तराई की बोली । विवेक्य क्षेत्र में पोलीमीत का उत्तरी भाग ही जाता है जो नैनीताल की तराई की बोली से प्रभावित है।

२. ६ बुलन्दशहर की बोली-

बुलन्दशहर के गजेटियर के वाक्य पर कहा जा सकता

1. Nor is there anything peculiar to remark on the language spoken in this district. The common speech of the people is the form of western Hindi known as Braj, although in the northern part of the district, as in Meerut, the ordinary Hindostani or Urdu is commonly spoken and every where the two forms are mixed. The proximity of Delhi must have had a considerable influence on the language of the district, as is the case in all the districts of this division. At the same time, though there is no peculiar dialect, we find local variations in almost all pergunas. For instance, the Gujars of the western tract have a broader speech, pronouncing that long 'a' something like 'o' while the Jats of siyana and Agauta still retain a curious pronunciation of the pronouns, which is said to have been introduced by their fore fathers from their original home in Hariyana.

कि इस जिले की बोली में कोई विशेष बात नहीं है। साधारण जनता पश्चिमी हिन्दी का ही प्रकार जिस ब्रज कहते हैं बोली जाती है। भरठ के समान ही उर्दू से मिश्रित तथा साधारण दो प्रकार प्रत्येक स्थान पर मिलते हैं। दिल्ली के निकट होने के कारण उसकी भाषा का प्रभाव जिले की बोली पर पड़ता है जैसाकि सभी जिलों और उनके संभागों में होता है। यद्यपि कोई सास बोली नहीं है। प्रत्येक परगने में अलग अलग हैं। उदाहरणार्थ पश्चिम के गुजर सीमा रेखा की बोली का दीर्घ 'वा' को 'वो' की तरह और जबकि स्थानों और कौता के जाटों का उच्चारण ज्यों का त्यों है। इसका कारण यह कि उनके पूर्व हरियाना से आए हुए थे उन्होंने का उच्चारण अभी तक बना हुआ है।

बुलन्दशहर की बोली तथा उसका क्षेत्र विवादास्पद होगया है। सर जार्ज ग्रियर्सन ने लिखा है- " बुलन्दशहर और बदायूं जिलों की बोली यों तो सामान्य रूप से साधु ब्रज भाषा है, किन्तु दोनों क्षेत्रों में यह उत्तरी दीबाब और पश्चिमी रुहेलखण्ड भी हिन्दुस्तानी से अत्यधिक मिश्रित हो जाती है।^१"

डा० धीरेन्द्र वर्मा लिखते हैं कि " बुलन्दशहर के उत्तरी भाग की बोली उड़ी बोली क्षेत्र के अधिक निकट होने के कारण पड़ोस की इस बोली के रूपों से मिश्रित है। इसके अतिरिक्त गुजरात की अधिक संस्था होने के कारण, जिनकी बोली में कुछ विशेष भाषागत विशेषताएँ होती हैं, इसजिले की बोली में कुछ अन्य विषमताएँ भी मिलती हैं।^२"

डा० धीरेन्द्र वर्मा ने इस जिले की बोली में भाषागत

१- तिग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया - खण्ड ६ भाग १

२- डा० वर्मा, धीरेन्द्र - ब्रजभाषा - १९५४ पृ० ३५

विशेषताओं तथा कुछ विषमताओं को और स्पष्ट संकेत किया है। दादरी, सिकन्दाबाद में गूजरां की जन संख्या अधिक होने के कारण निश्चय ही उनकी अपनी निजी उच्चारणगत विशेषताएँ हैं जो भरठ की कौरवी में नहीं मिलती जिस क्षेत्र में कौरवी से समता दृष्टिगत हुई है मैंने वह क्षेत्र शुद्ध कौरवी के अन्तर्गत रखा है और जहाँ ब्रज की प्रकृति एवं प्रवृत्ति के अनुसार कुछ साम्य दिखाई दिया है उसी क्षेत्र को मिश्रित बीली के अन्तर्गत ग्रहीत किया है। बुलन्दशहर की बीली के सम्बन्ध में डा० उदयनारायण तिवारी ने लिखा है :-

“ अलीगढ़ के उत्तर में बुलन्दशहर है, जहाँ भाषा में सड़ी बीली का अत्यधिक सम्मिश्रण होजाता है। ”

प्रकारान्तर से सभी विद्वानों से बुलन्दशहर में सड़ी और ब्रज का मिश्रण ही माना है। डा० हरदेव बाहरी भी बुलन्दशहर के उत्तरी अधिकांश में सड़ी बीली को स्वीकार करते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि वे ब्रज के क्षेत्र और बुलन्दशहर में अधिक मानते हैं। किसी समय ब्रज बड़ा व्यापक प्रभाव रहा था। इसी सम्बन्ध में वे लिखते हैं :-

“ ऐसा लगता है कि किसी काल में कुरु प्रदेश के एक बहुत विस्तृत भाग में ब्रज भाषा व्याप्त थी। ब्रज भी ‘ऊ’ तोड़ती है “ ‘उन्ने करो’ , ‘ जो छवरा री है ’ , तुम्हें , परी, सूषी, जैसे रूप भरठ तक की बीली में मिल जाते हैं। ”

जब भरठ तक की बीली में ब्रज के तत्त्व किसी मात्रा तक समाहित हो सकते हैं तब तो दादरी और सिकन्दाबाद, स्थाना,

१- तिवारी, उदयनारायण- हिन्दी का उद्गम और विकास, प्रथम संस्करण , पृ० २३८- ३६

२- बाहरी, डा० हरदेव - ग्रामीण हिन्दी बीलियाँ - १९६६ पृ० ४२

बगीचा, बुलन्दशहर, जूहपूर, लुर्जा में बादि में सड़ी बीली के तत्व भी समाविष्ट हो सकते हैं। सड़ी बीली से भी शिफा का माध्यम रही है।

डा० बन्धा प्रसाद सुमन के दो स्थानों पर दो भिन्न मत हैं : एक में वह जूहपूर में ब्रज भाषा की सड़ी बीली से प्रभावित मानते हैं तो दूसरे में कन्नौजी से प्रभावित स्वीकार करते हैं। आपके दोनों मत द्रष्टव्य हैं।

“ जिला बुलन्दशहर की तहसीलों में लुर्जा और जूहपूर में ब्रज भाषा ही बोली जाती है। किन्तु वह ब्रजभाषा कुछ कुछ सड़ी बीली से प्रभावित है। ”

“ तहसील जूहपूर एवं तहसील अतरौली की उत्तरी पट्टी की भाषा कन्नौजी से कुछ-कुछ प्रभावित है। ”

दोनों ही मतों को पढ़कर प्रम उत्पन्न हो जाता है, वस्तु स्थिति यह है कि जूहपूर में कन्नौजी का प्रभाव नहीं है वरन् कन्नौजी का जो कुछ भी प्रभाव परिलक्षित होता है वह गंगा पार जिला बदायूं में है। गंगा के इस पार कन्नौजी प्रभाव नहीं है।

मैं अपने भाषा-सर्वेक्षण के आधार पर कह सकता हूँ कि जूहपूर से आगे गंगा पार करके जिर्जाड़ा, सिर्गाँली बादि में कन्नौजी मिश्रित बीली बोली जाती है। रही जूहपूर की पूर्वी पट्टी जहाँ राजघाट नरौरा तथा रामघाट हैं वहाँ भी कन्नौजी का प्रभाव नहीं दिखाई देता ।

१- सुमन- डा० बन्धा प्रसाद- हिन्दी भाषा, अतीत और वर्तमान-

१९६५- पृ० १८४

२- सुमन- डा० बन्धा प्रसाद - हिन्दी और उसकी उपभाषाओं का

स्वरूप- १९६६ पृ० १६१

यदि वैज्ञानिक दृष्टि से भी देखा जाय तो कन्नाजीक का प्रभाव बदायूं पर पड़ा है और बदायूं के प्रभाव को गंगा नदी समाप्त कर देती है। अतः भौ विचार से अनुपशहर में कन्नाजी का प्रभाव मानना न्याय संगत नहीं लगता ।

उपर्युक्त विवेचन पर यदि सम्यक् दृष्टि से विचार किया जाय तो जो मानचित्र ब्रज और सड़ी बोली के संबंध स्थित को प्रस्तुत किया है, उसके सम्बन्ध में एक तथ्य सम्भूत जाता है कि ब्रज भाषा जो कि अधिक लम्बे समय से भी पर छापी रही उसका प्रभाव जिस प्रकार बढ़ता गया उसी प्रकार अब सड़ी बोली के प्रभाव के कारण घटता जा रहा है। जहां तक मेरा व्यक्तिगत अनुभव है सड़ी का प्रभाव अलीगढ़ जिले की सीमा पार करते ही प्रारम्भ हो जाता है यद्यपि कि उसे स्पष्ट नहीं देखा जा सकता । एक बात तो बुलन्दशहर की सीमा में प्रवेश करते ही स्पष्ट हो जाती है कि जो नाक के स्वर (अनुनासिकता) अलीगढ़ में मिलती है- जैसे- वांमुं, जांमुं, उसका पूर्णतः लोप हो जाता है। हतारों जो अलीगढ़ की सीमा से केवल तीन ही मील है उसे उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है।

भौ विचार से इस प्रकार का भी एक क्षेत्र बन सकता है जहां पूर्ण रूप से मिश्रण नहीं हुआ । ऐसा यदि बनाना हो पड़े तो सुजां तहसील का दक्षिणी पूर्वी भाग लिया जा सकता है। एक अधिक मिश्रित - दूसरा उससे कम मिश्रित । इस प्रकार का प्रभाव सर्वदाण के आधार पर स्पष्ट हो जाता है। शीघाथीं स्वयं उसी क्षेत्र का निवासी है। इसी कारण यह बात काफी दृढ़ता से प्रस्तुत की जा रही है।

निष्कर्ष रूप में वस्तु में कहा जा सकता है कि अपने विवेच्य क्षेत्र में ब्रज और खड़ी का ही वस्तुपूर्व मिश्रण है। इस प्रकार का भाषाओं का संगम ही निश्चय ही एक अमिथ ब्रह्मा की जन्म देते हैं। जिस प्रकार दो नदियों की धाराओं का पुण्य मिलन मंगलदायक होता है उसी प्रकार दो बातियों का मिलन भी अपने में सुन्दर लगता है। इस सम्बन्ध में राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' के विचार प्रस्तुत किए जा सकते हैं :

“ जहाँ भी दो नदियाँ जाकर मिल जाती है, उस स्थान को अपने देश में तीर्थ कहने का रिवाज है, और यह केवल रिवाज की बात नहीं है, हम सबमुख मानते हैं, सबसे अलग अलग नदियों में स्नान करने से जितना पुण्य होता है, उससे कहीं अधिक पुण्य संगम स्नान में है। किन्तु भारत आज जिस दौर से गुजर रहा है, उसमें असली संगम के स्थान के समारें तथा के मंच हैं, जिन पर एक से अधिक भाषाएं एकत्र होती हैं। नदियों की विशेषता यह है कि वे अपनी धाराओं में अनेक जनपदों का सौरभ, अनेक जनपदों के जाँसू और उल्लास लिए चलती हैं और उनका पारस्परिक मिलन, वास्तव में नाना जनपदों के मिलन का ही प्रतीक है। यही जल भाषाओं का भी है। उनके भीतर भी नाना जनपदों में बसने वाली जनता के जाँसू और उमंग, भाव और विचार तथा वाशा और शंका समाहित होती हैं। अतएव जहाँ भाषाओं, का मिलन होता है, वहाँ वास्तव में विभिन्न पदों के छुट्टे ही मिलते हैं, उनके भावोंके और विचारों का ही मिलन होता है तथा मिश्रताओं में छिपी हुई एकता वहाँ कुछ अधिक प्रत्यक्ष ही उठती है। इस दृष्टि से भाषाओं के संगम आज सबसे बड़े तीर्थ हैं और इन तीर्थों में जो भी भारतवासी अर्द्धा से स्नान करता है, वह भारतीय एकता का सबसे बड़ा सिपाही और संत है। ”

इसी संदर्भ में यदि हम ब्रज और लड़ी के संगम की
 ओर विचार करें तो निश्चय ही दोनों का मिलन सदैव भावनाओं और
 विचार धाराओं के साथ ही साथ प्रेरणा-प्रदायक मोड़ होगा ।

अध्याय :३:

सामग्री-संग्रह
~~~~~



### ३ ०० सामग्री संकलन-

#### विवेच्य दौत्र के नमूनों का संकलन-

सामग्री संकलन के अन्तर्गत नाना प्रकार की बातों का ध्यान रखकर ही कार्य प्राप्त किया गया । प्रारम्भ में किसी न किसी प्रकार की एक रूपरेखा तैयार करनी पड़ती है। सूचक से सामग्री संकलन करने में किन किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है, ऐसी बातों को सूचकर ही कुछ रूप रेखा बनाकर कार्य करने की चेष्टा की। सूचक से उसका नाम पता, जाति आदि का सभी विवरण पूछ कर तथा लिख कर , कहानी तथा लोक कथाएँ किसी भेल आदि कावर्णन, कहावतें और मुहावरें साथ ही लोक गीतों का संकलन करके का प्रयत्न किया । एक ही दौत्र में रहने वाली विभिन्न जातिगत बोलियों का भी ध्यान रखा गया है। साथ ही यह भी सूचा गया कि जहाँ तक ही सामग्री का संकलन ग्रामों में से ही हो । वस्तुतः ऐसा ही किया गया है। आगे उन सभी बातों पर विचार किया गया है जो सर्वेक्षण के समय उत्पन्न हुई तथा कैसा परिणाम निकला ।

#### सामग्री-संकलन में व्यावहारिक कठिनाई-

किसी भी भाषा एवं बोली के सर्वेक्षणान्तर्गत सामग्री संकलन का कार्य निश्चित रूप से अत्यन्त मुश्किल है। सर जार्ज ग्रियर्सन से लेकर अद्यतन तक के विद्वानों ने इस कठिनाई का प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया है। आधुनिक युग में आवागमन के साधन यद्यपि उपलब्ध हैं किन्तु

फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात की सुविधाएं बाज भी प्राप्त नहीं हैं। इसका प्रत्यक्ष अनुभव मुझे अनेक बार हुआ है। कभी-कभी तो १५ मील तक पैदल हो चलकर रात्रि में आश्रय सुलभ हो सका ।

सर जार्ज ग्रियर्सन की सर्वेक्षण पद्धति में और हमारी इस सर्वेक्षण पद्धति में महान् अन्तर है। उन्होंने सरकारी मशीनरी का उपयोग किया जो एक ग्राम के पटवारी से लेकर कमिश्नर तक जाती थी परन्तु इतने पर भी उन्होंने बड़ी कठिनाई का अनुभव किया ।

अपने विवेच्य क्षेत्र का माणा सर्वेक्षण करते समय मुझे कैसी कैसी और कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, यह इसी से ज्ञात हो जायेगा कि विवेच्य क्षेत्र की २०- २५ मील चौड़ी पट्टी जो लम्बाई में पश्चिम से पूर्व १७५ मील तक लगभग चली गई है। उसके लिए समय, धन, श्रम-साध्यता आवश्यक है। आधुनिक युग में सबसे जटिल प्रश्न समय का है। इतने विस्तृत एवं विशाल क्षेत्र में सर्वेक्षण कार्य निश्चय ही बड़ा कठिन हो गया, एक बार तो इन्हीं दुरूहताओं का प्रत्यक्ष अनुभव कर सर्वेक्षण का विचार ही त्यागने का निश्चय करना पड़ा, परन्तु फिर सोचा कि इस प्रकार बच निकलने की प्रवृत्ति ही तो पलायनवाद है।

जैसा कि मैंने समय के सम्बन्ध में कहा है कि सर्वेक्षण कार्यों में पर्याप्त समय उपलब्ध है इसी और संकेत करते हुए डा० अमर बहादुर सिंह ने लिखा है कि - " कभी कभी एक व्यक्ति एक समुदाय की कई बातियों अथवा एक भाषा की कतिपय बातियों का तुलनात्मक

अध्ययन करना चाहता है। इस प्रकार की स्थिति में यदि वह स्वयं सामग्री-संकलन का कार्य सर्वत्र करता फिरे तो सर्वेदाण कार्य में ही अधिकांश समय निकल जायेगा । ”

दूसरी ओर यह भी निश्चित है कि जब तक शोधकर्ता स्वयं उन अशिक्षित ग्रामीणों से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित न करेगा तो उनके वास्तविक उच्चारण, स्वराघात आदि का ठीक ठोक ज्ञान नहीं कर सकता । दूसरों के द्वारा सामग्री संकलन तो एक निजीवि ढायरी के समान है जिसमें केवल आँकड़ों को छोड़कर और कुछ भी तो नहीं होता इसके विपरीत यदि शोध कर्ता स्वयं ही सामग्री का संकलन करता है तो उसके द्वारा किए गए प्रत्येक नमूने में उसकी वात्मानुभूति तथा प्रत्यक्ष बार-बार कानों द्वारा सुनी हुई ध्वनि तत्कालीन परिस्थिति के साथ ही साथ उसके हृदय- फुल्ल तथा मस्तिष्क में घुमड़ती रहेंगी । और जिस समय वह उस संकलित सामग्री का विश्लेषण प्रस्तुत करेगा तो सूचक की उच्चारण काल में मुद्रित प्रत्येक मुद्रा तथा उच्चार एवं उच्चारण की प्रत्येक सूक्ष्मातिसूक्ष्म परिस्थिति तथा स्वर- लहर उसके कानों में गूँजती रहेंगी । नेत्रों के समुत्पन्न चलचित्र के परदे पर संक्रिया संपन्न करते हुए पात्रों के समान सूचक की सामग्री घूम जायेगी, जिसमें सामग्री के अध्ययन एवं विश्लेषण में महान् सहायता मिलती है, और फिर यह तो एक मनीवैज्ञानिक तथ्य है कि अपना निज का प्रत्यक्ष अनुभव तथा दूसरों के अनुभव पर निर्भर होकर अभिव्यक्ति की गई विचारधारा में महान् अन्तर सदैव रहता है।

१- सिंह, डा० जमशेर बहादुर - भाषाशास्त्रीय सामग्री संकलन पृ० १३३

हिन्दुस्तानी त्रैमासिक, अगस्त शोध पत्रिका- जून १९६५

### प्रस्तुत सर्वेक्षण की कार्य-पद्धति-

जैसे ही इस सर्वेक्षण से सम्बन्धित विषय की स्वीकृत होने की सूचना मिली तो सर्वेक्षण का कार्यक्रम शीघ्र ही बना लिया गया, तथा सिकन्द्राबाद और दादरी में सामग्री संकलन का कार्य प्रारम्भ कर दिया, उस समय तो प्रारंभ में कोई विशेष कठिनाई का अनुभव नहीं हुआ। साइकिल के द्वारा ही वास पास के गांवों में जाकर, सामग्री संकलन कार्य सुचारु रूप से चला। उन दिनों में मेरे पास "टैप-रिकार्डर" भी नहीं था परन्तु जिस किसी गांव में सामग्री संकलन किया वह गांव अपने किसी न किसी ह्रात्र से सम्बन्धित रहा, इसलिए परिचय होने के कारण किसी प्रकार की व्यवस्था नहीं हुई। इसी वजह से स्थिति में के कारण कार्य अधिक आगे नहीं बढ़ सका।

### सामग्री-संकलन की पद्धति-

मैंने अपने सर्वेक्षण में आधुनिक यंत्र "टैप रिकार्डर" का उपयोग किया जिससे किसी भी बोली की उच्चारणगत विशेषताओं का यथार्थ उक्त किया जा सकता है। यन्त्र तथा अन्य उपयोगी सामग्री को साथ लेकर एक प्रकार लोट- डील कंधे पर डाल गांव- गांव, नगर-नगर बिना सदी- गमों की चिन्ता के घूमता डौला।

सबसे प्रथम मैं चन्दासी को केन्द्र मानकर कार्य प्रारंभ किया। कभी कभी तो प्रातःकाल चलकर रात के दस बजे तक वापस आना पड़ता था तथा दिन में टैप की गई सामग्री को लिपिबद्ध करने का प्रयत्न किया जाता।

गाँव के लोग हमारे इस कार्य को समझ ही नहीं पाते थे फिर इसके महत्व की बात बड़ी दूर। सी० आई० डी० होने का संदेह भी करते। यहाँ तक कि लोग ऐसा समझते कि ही सकता है कि ये कोई टैक्स इत्यादि छुफिया तरीके से लगाने तो नहीं आए हैं, तभी तो ये घर की सभी वस्तुओं के नाम इसी बहाने से पूछ रहे हैं।

सामग्री संकलन में सबसे बड़ी कठिनाई पूर्वी क्षेत्र में उपस्थिति हुई। क्षेत्र की विशालता एवं व्यापकता देखकर पचड़ाहट होने लगी। क्योंकि प्रस्तुत क्षेत्र का पश्चिमी द्वार जमुना की कंधारों में है तो पूर्वी किनारा नैनोताल की तराई की स्पर्श करता है। "टेप रिकार्डर" साथ लेकर प्रमण करना निश्चय ही मय से मुक्त नहीं था। उन्हीं दिनों एक समाचार भी पढ़ने को मिला कि एक विद्वान् प्रो० महीदय, (गुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) एक बहुमूल्य "टेप रिकार्डर" के साथ भाषायी सर्वे के लिए गए थे परन्तु आगे उनका किसी को भी कुछ पता नहीं चल सका कि वे बेचारे कहाँ गए? वे कहीं मृत्यु की प्राप्त होगए या कहीं कोई जानवर ही मार के खा गया अथवा किन्हीं डाकुओं और लुटेरों ने ही उन्हें स्वर्ग भिजवा दिया। वस्तु इस समाचार के पढ़ते ही मला में हो क्या? अन्य व्यक्तियों का भी सर्वेक्षण कार्य करने का उत्साह ठण्डा पड़ सकता है। अकेले निकलना भी आज के लोकतन्त्र में एक जटिल समस्या बनी हुई है क्योंकि सुरक्षा का तो जैसा अभाव सा ही होगया है, इसलिए आगे का कार्यक्रम उस समय तो स्थगित ही करना पड़ा।

जब उन ग्रामीणों की यह बात समझायी जाती कि हमें तो केवल तुम्हारी बोली को ही जानना है तब कहीं ये लोग कुछ

सुनाने की प्रस्तुत होती । कभी कभी तो " टेप रिकार्डर " बिना सूचक की बताए ही खीस दिया जाता और उससे मैं वार्ता प्रारम्भ कर देता तो ऐसी स्थिति में उसके उच्चारण में किसी प्रकार की कृत्रिमता नहीं आती थी और जब उसे वे सभी बातें रिकार्ड की हुई सुनाई जाती तो उसे बड़ा वाश्चर्य होता । मैंने उनके अवसरों पर ऐसा किया । उसका कारण यह था कि उनसे कुछ सुनाने के लिए कही तो सुनाने की तैयार ही नहीं होती यदि होती भी तो बोली का स्वाभाविक प्रवाह ही नष्ट हो जाता ।

मैंने फैजपुर बंटा तहसील बिसौली ( बदायूं ) के बेनोराम की जी जाति का कहोर था यह कहकर कि तुम्हें गाने सुनवा दूँगे तब तक एक कहानी ही सुनादी । वह कहानी कहने लगा , परन्तु दस मिनट के पश्चात् बोला कि - " जी का गाइरई ए ? " मैंने कहा कि पहले इसे पूरा कर लो तब गावेंगी , तो बड़ा निराश हुआ और बोला " नाह, जी अब नाह गावेंगी । " बाद में जब उसे उसी की वही कहानी उसी की जबानी सुनवाई गई तो उसका इतना उत्साह बढ़ा कि दूसरी कहानी स्वतः सुनाने लगा ।

मैंने डा० हरदेव बाहरी को एक सूची के आधार पर संकेतन सामग्री एकत्र करने वाली सूची बना ली थी परन्तु जहाँ तक मेरा विचार है वह सूची अधिक कारगर सिद्ध नहीं हुई क्योंकि बार बार सूचक से यह कहने से कि तुम्हारे यहाँ इसे क्या कहते हैं ? वस्तु को कैसे बोलेंगे तो उसका प्रतिकूल ही परिणाम होता । उसको अपनी बोली की स्वाभाविकता स्वतः नष्ट हो जाती तथा निर्मित सामग्री का उच्चारण

भी उसी में समाविष्ट हो जाता । स्वाभाविक प्रवहमान वाणी और नियमावली से आवद्ध वाणी में महान् अन्तर आ जाता है। जब सूचक से कहा जाता कि अमुक वाक्य तुम अपनी बोली जो यहाँ बोलते ही बोली तो वह कहने लगता कि साब " स्मिऊँ ऐसे ही बोलते हैं कु ककु फरिफु बांरें " तो मुझ ऐसा लगता कि जो वाक्य मैंने उसे अनुवाद के लिए दिया था उसका अर्थाना जो उससे इतर उसने अपनी प्रतिदिन की शब्दावली का प्रयोग किया वह अधिक प्रामाणिक तथा वहाँ की वास्तविक बोली का प्रतिनिधित्व करती दृष्टिगत हुई । इस सम्बन्ध में डा० उदय नारायण तिवारी का मत द्रष्टव्य है :

“ कभी कभी अन्य भाषा के वाक्यों को अनुदित करते समय सूचक भ्रम में पड़ जाता है, क्योंकि वास्तव में इस प्रकार के कार्य का उसे कुछ भी अनुभव नहीं होता । ”

जिस वाक्य को अनुवाद के लिए दिया जाता है वह अनुदित होता है उसमें उसकी भाषा की मूल प्रकृति एवं प्रवृत्ति का पता कठिनाई से ही लग जाता है।

मैंने प्रारंभ में शब्द, फिर वाक्य तथा कहानियाँ, कहलवाई । कुछ शब्दावली मार्ग में चलते समय बसों, कड़ुईं वादि पर भी रुकत्र की क्योंकि जब वही के लोग परस्पर अपने ही लोगों से बात करते हैं तो बोली का स्वाभाविक प्रवाह तथा उच्चारण की शुद्धता बरानर बनी रहती है।

१- डा० तिवारी, उदयनारायण, भाषा शास्त्र की रूपरेखा सं० २०२०

वि० पृ० ६५

सम्पन्न में सामग्री संकलन करते समय कनेक बाते सम्पुल बाई । वहां के मुसलमानों की बोली ग्रामी में इरहने वाले मुसलमानों से पृथक् थी साथ ही गांवों में रहने वाले हिन्दुओं के वति निकट थी। हिन्दुओं पर भी उनकी बोली का प्रभाव पड़ा दिखाई दिया ।

मैंने एक व्यक्ति से बन्दीसी के पास बाते करते हुए ही कहा कि तुम कोई किस्सा ही सुना दो, बहुत देर तक तो मैं उससे कहलवाने के लिए धूमिका ही तैयार करता रहा था । मेरे कहने पर वह बोला कि - " एक बात के सोर रुपया लगते हैं " । सी रुपया देउ तो सुनावेंबी । " सर्वेदाण के समय इस प्रकार की संकड़ीं घटनाएं घटी, कोई तो जिससे सफर में बाते करते हुए कुछ शब्दावली नोट करते थे, तो वह भी यही कहता कि साब तुम वहां जाते किरार के कम से कम जाने जाने में ५ रु० लगते । तुम्हारे पैसा मेरे यहां बचा देने से बच गए । इसलिए किरार भाड़े के जाये रुपये तुम मुझे वहीं देवो दो ।

बांवल, बड़ेडी तथा पोलीभीत भी इसी प्रकार की सभी बाते दुहराई गई किन्हा फार्म पर जहां मेरा भस्तीजा था उसने तहसील मिलक जिला रामपुर तक का सर्वेदाण अपनी जोष द्वारा करवा दिया था । उसमें वह मेरे साथ था किसी प्रकार की भी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा । इधर बिलारी में भी लोगों की एक प्रकार का तमाशा -सा ही आता तथ्य की बात कोई भी करने की तैयार नहीं होता था । फिर भी कनेक कठिनाईयां सहन करते हुए भी सामग्री संकलन के अपने दृढ़ निश्चय से विमुक्त नहीं हुए । वहजोई में रिक्शा फस्ट जाने से टेप रिकार्डर भी सराब होगया था किसी प्रकार उसे काम चलाऊ



कराया गया । सर्जा ती स्वयं शोधकर्ता भी अपनी तहसील है तथा बुलन्द-शहर, दादरी, सिरुन्दाबाद, स्याना और अगाँता का सर्वेक्षण पहले ही कर लिया गया था । तहसील जूँपशहर में भी काफी समय संकलन में लगाना पड़ा ।

इस प्रकार के सर्वेक्षण के अतिरिक्त अपने इस कार्य के समानान्तर कार्य करने वाले विद्वानों से भी सम्पर्क स्थापित किया गया । डा० अमर बहादुर सिंह जिन्होंने कि अवधी और भोजपुरी की सीमाओं का भाषा सर्वेक्षण किया है, उनसे उनके निवास स्थान रूप नगर, दिल्ली में मिला । उनसे अनेक सुझाव भी लिए तथा उनसे अपना शोध प्रबन्ध दिलाने के लिए भी आग्रह किया परन्तु उसे कोई सज्जन लेगर था इसलिए उसका अध्ययन सुलभ नहीं हो सका । अनेक अधिकारी विद्वानों से सम्पर्क बनाने की भी चेष्टा की गई और उनके सुझावों से लाभ भी हुआ ।

जहाँ तक सूचकों की बात है मैंने प्रत्येक आयु वाले सूचकों का सहयोग लिया । जिनमें २० वर्ष से लेकर ७० वर्ष तक की अवस्था के व्यक्ति सम्मिलित हैं। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है कि सूचकों से कहीं सहयोग मिला और कहीं सहयोग नहीं मिला । फिर भी कुशलता से सभी कार्य विधिवत् सम्पन्न होगया ।

सबसे अधिक "टैप रिकार्डर" लाभदायक सिद्ध हुआ क्योंकि उसके कारण उच्चारण का वास्तविक रूप जानी जागया । यद्यपि तो तथ्य है कि सूचक जिस गति से कोई बात कहता है तो उसे उसी गति से लिपिवद्ध करवाना मैं समझता हूँ कि अत्यन्त कठिन कार्य है क्योंकि मैंने स्वयं इसका भी प्रत्यक्ष अनुभव किया है। "टैप रिकार्डर"

से भी लिपिबद्ध करने के लिए एक- एक बात को कई कई बार सुनना  
पड़ा है।

सर्वेक्षण करते समय रात्रि को ठहरने की भी कभी  
कभी समस्या उत्पन्न हुई। क्योंकि कहीं तो ठहराने की भी तैयार न  
हुए, तो कहीं ऐसी जातियों के लोग रह रहे थे जहाँ ठहरना हमसे  
अधिक उन्हें आपत्तिजनक था। एक नगला जो बदायूँ में है वहाँ के सभी  
लोग जाटव थे, वहाँ चर्चा पर ही रात्रि व्यतीत करने की बाध्य होना  
पड़ा।

सर्वेक्षण का कार्य निश्चय ही समय, धन और कष्ट  
साध्य है जिसकी कि मैं प्रारम्भ में ही चर्चा की थी। इसलिए प्रत्येक  
शोधकर्ता अपने कार्य को शीघ्रातिशीघ्र तथा अत्यल्प समय में पूर्ण करना  
चाहता है परिणाम यह होता है कि निर्दिष्ट बीलों के साथ न्याय  
नहीं हो पाता है। इसलिए अधिक समय का लगना स्वाभाविक भी होता  
है।

मैंने सर्वेक्षण करते समय सदैव इस का ध्यान रक्खा  
कि ऐसे क्षेत्र को लिया जाय जो शहरी प्रभाव से मुक्त हों क्योंकि जो  
क्षेत्र बाह्य सम्पर्कों से अपनी भौगोलिक स्थिति के अनुसार जितना असम्पृक्त  
होगा वहाँ की बीली उतनी ही मौलिक, मानक एवं परिनिष्ठत सामग्री  
प्रदान करेगी।

जिन- जिन स्थानों पर सर्वेक्षण के समय ठहरना  
या जाना पड़ा वहाँ की स्मृतियाँ अधिक लम्बे समय तक रहेंगी। दादरी,

सिकन्दराबाद आदि के लगभग 30 गांवों में, में स्वयं गया और वहां नमूने लाया तथा स्थाना, आता, बुलन्सहर, बुर्जा, जहांगीराबाद, कूप-शहर, ऊदार, डिबाय, राजघाट, कुराला, गिन्नीर, चन्दीसी, मकनपुर, फैजपुर बेटा, सहस्रबान, वांवला, नवाबगंज, बहेड़ी, पोलीभीत किष्का, मिल्क, रामपुर, विलारी, सम्भल, हसनपुर तथा बहजौई आदि स्थानों पर सामग्री संकलन कार्य किया तथा प्रत्येक कस्बा में पास के बहुत से गांवों से सामग्री का संकलन किया। इस कार्य में कितनी कठिनाइयां आई हैं उनमें से कुछ को चर्चा ऊपर भी कर दो गई है।

अन्त में भागा के गम्भीर अध्ययन तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण तथा उसकी प्रकृति एवं प्रवृत्ति के उद्घाटन के लिए भागा-शास्त्रीय सामग्री संकलन का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है यदि इस प्रकार के सर्वेक्षण आदि कार्य अधिक कुशलता से हों तो इस प्रकार के अध्ययन निश्चय ही बड़े दीर्घ जीवी तथा महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

विवेच्य दीत्र से संकलित सामग्री के कुछ संपादित नमूने पीछे परिशिष्ट में संकलित किये गये हैं।

## अध्याय : ४

स्वनिर्मात्मक अध्ययन

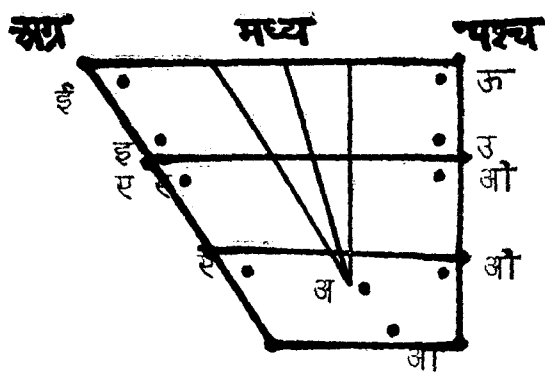
## ४.०० स्वनिमात्मक अध्ययन

विवेच्य दौत्र की बोली का स्वनिमात्मक अध्ययन यहाँ प्रस्तुत है । स्वानिमिक व्यवस्था के अन्तर्गत किसी भाषा के स्वनिम आते हैं और उन स्वनिमों का संयोजन भी इसी व्यवस्था का विषय है । संक्षेप स्वनिमों को छोड़कर शेष स्वनिम स्वर तथा व्यंजन हैं बँट जा सकते हैं ।

### ४.१. स्वर स्वनिम :

स्वर स्वनिमों के प्रधान उपस्वनों को मानस्वर के तदर्थ में लक्षित करते हुए इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :

### स्वर-स्वनिमों का घाटी :



## ४. १. १. १ स्वनिम तथा उपस्वनो का वितरण

स्वनिमों का वितरण और उनके उपस्वन निम्न-  
लिखित रूप से प्रस्तुत किए जा सकते हैं :

। ई । यह संस्कृत अक्षर स्वर है। इस अक्षर संवृत दीर्घ स्वर  
स्वनिम के दो प्रधान उपस्वन हैं, जिनका वितरण  
इस प्रकार है :

[ ई ] वह उपस्वन शब्द की वादि, मध्य, तथा व्यंजन  
के साथ वन्तिम स्थिति में आता है, यथा-

|         |             |            |               |
|---------|-------------|------------|---------------|
| । ईत् । | वादि स्थिति | मध्यस्थिति | वन्त्य स्थिति |
|         |             | सलीमा      | कौली          |

[ ई १ ] यह [ ई अ की औपधाकृत कम दीर्घ तथा ईणत्-  
पश्च है। यह उपस्वन शब्द की वन्तिम स्थिति में  
स्वतन्त्र आता है और यह वद्वार निर्माण करता  
है जबकि उपान्त्य वद्वार का स्वर दीर्घ हो,  
यथा-

( पाई , साई )

[ ई २ ] यह । ई । की औपधाकृत शिथिल द्रस्व तथा ईणत्-  
पश्च है । ही ( ई और इ ) की मध्य स्थिति में  
उच्चरित की जाती है - यथा

---

१- ईत् : ईत् एक प्रकार का चींटी, घी और , सुरहरी वादि भी  
किस्म का कीड़ा होता है। प्रायः यह बरसात में अधिक  
निकलती है। इसका रंग लाल होता है तथा काटती भी है।

( कुँह ( कही ) मई , नई ) इत्यादि

२ - १६।

यह स्वनिम कम अर्ध संवृत पश्चात्कृष्ट ह्रस्व है,  
वितरण के बाधार पर इसके दो उपस्वन हैं,

[६]

यह कम उच्च स्थानीय अर्थात् कम ह्रस्व अर्धसंवृत स्वर  
है तथा अनकारात्मक भी है। यह शब्द की मध्य  
स्थिति में स्वर के पश्चात् जाकर मध्यकार का  
निर्माण करता है। जैसे - सइया, पइया, गइया  
सइया , लइया ।

[७]

यह अर्ध संवृत द्रस्व है। यह स्वर शब्द की सभी  
स्थितियों में जाता है। वादि स्थिति में व्यंजन के  
पश्चात् मध्य स्थिति और शब्द की अन्तिम स्थिति  
में जाता है तथा स्वर संयोग में भी जाता है।

वादि

मध्य

अन्त्य

इत्की

फटलिया (फटला-सुहागा ) लाइ, साइ, पाइ, माइ

स्वर संयोग में :

प + इ + औ + र + ए = पिर्वाँर

नृ + इ + औ + र + ए = ( खुशामद करना )

कृ + इ + औ = ( कपड़ा धोते समय धोबी  
जिस शब्द का उच्चारण  
करते हैं वह ध्वनि " कियो"  
कहलाती है। )

३-

[ए ]

यह अग्र अर्द्ध संवृत दीर्घ स्वर है। इस सर्वनाम के दो उपस्वन हैं ( ऐँ, ए ) इनका वितरण निम्नांकित रीति से किया जा सकता है :

[ऐँ ]

यह अग्र अर्द्ध संवृत तथा (ए) की अपेक्षाकृत कम दीर्घ है, जैसे - बैँरा ( बैहरा ) पैँरा ( पहरा ) सैँरा, सैँरा<sup>१</sup>, कैँरा ( कैला ) ।

१४०१

अन्तिम स्थिति में - बहऐँ, लहऐँ, फहऐँ, रोऐँ आदि

[ए ]

यह अग्र संवृत दीर्घ स्वर है तथा शब्द की प्रत्येक स्थिति में जा सकता है, जैसे -

| आदि स्थिति | मध्य स्थिति                            | अन्त्य स्थिति                          |
|------------|----------------------------------------|----------------------------------------|
| एटा        | मैँरा, बटेरा<br>कैँरा, सबेरा,<br>खैँरा | पन्हैँरा, सुन्हैँरा<br>सुधैँरा, धनैँरा |

४-

[ऐ ]

यह अग्र अर्द्ध विवृत स्वर है। इसके दो उपस्वन हैं, जैसे - ( ऐँ ) एवं ( ऐ )

[ऐँ ]

इसकी स्थिति ( ऐ ) और (ऐ) के बीच की है :

| आदि स्थिति | मध्य स्थिति               | अन्त्य स्थिति |
|------------|---------------------------|---------------|
| ऐँना       | पैँना, सैँना <sup>३</sup> | बहऐँ          |

१- सैँरा - सहरा । वर के बहरे पर शादी के समय जो सैँहरा पहनाया जाता है उसे ही । ह । के लोप के साथ " सैँरा " कहते हैं।

२- " कैँरा " डिवाई स्टेशन के पास एक गाँव का नाम है।



|      | वादि स्थिति       | मध्य स्थिति  | अन्त्य स्थिति |
|------|-------------------|--------------|---------------|
| [रे] | रेवा <sup>१</sup> | वैसा<br>कैसा | वै<br>कै      |

५-

[व] । यह ऊर्ध्व विवृत मध्य स्वर है

[व] । स्वनिम के तीन उपस्वन हैं :

[वी] यह कृत्रिम मध्य स्वर है। यह शब्द की वादि स्थिति में भी मिलता है जैसे "वज्रवै<sup>२</sup>"

[वे] ऊर्ध्व मात्राकालीन मध्य स्वर है। इस उपस्वन का अस्तित्व तब होता है जब संध्यकार स्थिति में हो, जैसे-

( व०व ग ऊ० या ) = ग०ह या = गाय

( क ऊ० उ वा ) = क०उ वा = कौवा

[व] इत्स्व, मध्य स्वर, शेष सभी स्थितिओं में इसका प्रयोग सम्भाव्य है। यथा :

( क र ) ( घ र )

( क ह त )

( ग वी )

१- "हँ वी" का अर्थ ( यही था ) होता है - सुर्मा में - "ये तो मैंने पैलेई वाह बताइ दई कै" हँ वी " वी बदमाश जी बीज़ चुराह कै लेगयो वी ।"

२- "वज्रवै" वाक्यो हात फूलवो । " बिसीली ( बदायूं ) सेलिया गया नमूना ।

- १) शब्द के अन्त में इस ( व ) का उच्चारण सुनायी नहीं होता । शब्द के मध्य में भी ऐसी ही कुछ असंगत स्थिति भाषा परिवर्तन के कारण उत्पन्न हुई है-

“ पलटा ” और “ पल्टा ” । दोनों ही “ ल ” समान समय में उच्चरित होते हैं परन्तु एक अल्पतम स्वर सहित और दूसरा स्वर रहित सुनाई पड़ता है। उच्चारण में “ बनना ” और “ बन्ना ” में विशेष अन्तर नहीं है परन्तु अर्थात् भेद है।

- २ ) शब्दान्त में इ, उ, का भी लोप इ, उ की दीर्घता में, बातियाँ में होता जा रहा है, यथा « कान्ति - कान्ती » , « कवि-कवी » , « साधु - साधू » ।

प्रायः गाजियाबाद के कुछ पूर्व सेकर लगभग गंगा तक ह्रस्व “ ई ” और “ उ ” के लोप भी प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। गंगा पार से राम गंगा तथा उसके पार पीलीभीत तक इस लोप प्रक्रिया का किसी सीमा तक अनुभव नहीं हुआ विशेष विवरण के लिए संगृहीत नमूने परिशिष्ट में संकलित हैं।

६-

। वा । पश्च विवृत दीर्घ स्वर है। यह शब्द भी प्रत्येक स्थिति में वा सकता है। यथा :

१- वादि - वार ( लोहे का एक चीवा जो किसान लोग अपने पना में बैलों की हाँकने के लिए गढ़वा लेते हैं ) ।

२- मध्य- हार ( सेत- जिस दिशा में किसान के अधिक सेत रहते हैं, उस दिशा को भी “ हार ” शब्द से व्यक्त करते हैं- जैसे “ कल्लि तो पछाँर हार में खूबई और परे हैं । ” “ हर पुमाए हार में गए हैं ) ।

३- वन्त्य - रहलुवा - ( बैल तांगा - इसे "लैहड़" भी कहते हैं लैहड़ का सम्भवतः अर्थ लुढ़कने वाला ही सकता है। )

७- [ ऊ ] यह संवृत पञ्च दीर्घ स्वर है। इस स्वनिम के दो उपस्वन हैं।  
यथा-

(ऊ) यह उपस्वन ( ऊ ) की अपेक्षाकृत शिथिल ब्रह्म और ईणात् <sup>पञ्च</sup> स्वर है। यह शब्द की अन्तिम स्थिति में स्वर के पश्चात् आता है- यथा :  
काऊँ , व्याऊँ ( शीघ्र ही ध्यान वाली ) बीऊँ ,  
गमारऊँ इत्यादि ।

(ऊ) यह उपस्वन शब्द की सभी स्थितिओं में प्रयुक्त होता है । यथा :

| स्थिति  | उदाहरण                      | अर्थ                                                |
|---------|-----------------------------|-----------------------------------------------------|
| आदि-    | ऊल्हरी <sup>१</sup>         | ( ऊपर की कुब्ज- सा निकला हुआ भाग )                  |
| मध्य-   | सूप <sup>२</sup>            | अनाज फटने वाली वस्तु जिस कहीं कहीं हाज भी कहते हैं) |
| अन्त्य- | भलेऊँ <sup>३</sup><br>कलेऊँ | ( भले बादमी )<br>( प्रातः का नाश्ता )               |

१- ऊल्हरी- "बीक उल्हरी" है बी रे । यह शब्द बढायूं तथा रामगंगा के पार सादर में अधिक बीला जाता है।

२- सूप - इसका प्रयोग बुलन्दशहर, सुर्जा, अनूपशहर, झतारी आदि में होता है।

३- व भलेऊँ - ऐसे शब्दों का प्रयोग तहसील बिसौली जिला बढायूं में काफी दूर तक बीला आता है।

८-

[उ ]

यह स्वनिम । ऊ । की अपेक्षाकृत उच्च संवृत पञ्च स्वर है। इसका एक प्रधान उपस्वन है

[उ ]

यह उपस्वन शब्द की प्रत्येक स्थिति में जा सकता है।

| स्थिति<br>वादि | उदाहरण <sup>१</sup><br>उपाड़       | वर्ण<br>( सत में पानी लगाकर पहली<br>बार जीतने की उपार<br>कहते हैं। )                                                 |
|----------------|------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
|                | उपल                                | ( कंठे या गी से भी कहते हैं )                                                                                        |
|                | उमस                                | ( वर्णा होने के बाद की गमी )                                                                                         |
| मध्य-          | मिहुका <sup>२</sup>                | ( मेंढक )                                                                                                            |
|                | जुरी                               | ( जुड़ा हुआ )                                                                                                        |
| अन्त्य-        | रंजु }<br>जाउ }<br>देउ }<br>ले उ } | दुःख }<br>जावी }<br>दे दी }<br>ले ली }<br>बंजा शब्दों में प्रायः<br>दीर्घीकरण की प्रवृत्ति<br>बहुलता से मिलती<br>है। |

९-

[बी ]

यह स्वनिम अर्धसंवृत पञ्च- दीर्घ स्वर है तथा शब्द की प्रत्येक स्थिति में जा सकता है। इसके तीन उपस्वन हैं।

१- उपार - पूरे बुलन्दशहर जिले में तथा दादरी-सिकन्द्राबाद की ओर 'उपाड़' की तरह उच्चरित होता है।

२- इसका प्रयोग तख्तोल- बिसौली अर्थात् में कई स्थानों पर मैंने सुना है तथा नमूनों में भी देखा जा सकता है जो टेप रिकार्डर से लिख गए हैं।

|       | स्थिति | उदा०   | अर्थ                         |
|-------|--------|--------|------------------------------|
| [वी ] | वादि-  | बीसराँ | बारी या बार-पारी             |
|       |        | बीसर   | वह गाय जो प्रथम बार व्यावै । |

माध्य मोहं, मोहूँ मेरे लिए

वन्त्य उसकी, गवी उसके लिए- गया

[वीँ ] वनादारिक, यदि उसी बजार के पर भाग में " र " हो । यथा :  
बैला ( कोरला )  
गयीँ , पायीँ<sup>३</sup>

[वीँ ] दीर्घ, पश्च स्वर, वादाारिक है इसका प्रयोग सर्वत्र किया जाता है यथा :

हालवीँ ) हाली ( बबराला, गिन्नीर,  
सतावीँ ) बिसौली, बावला,  
बहेड़ी वादि में इसका उच्चारण इसी प्रकार किया जाता है।

दुल्लीँ ( दुतारी ) प्रयोग- दादरी में  
बीसरी ( काज कूटने की वस्तु )  
पीट्ट प्रयोग - सिकन्दराबाद वादि में

१- बुजाँ, कूपसहर, ठिबाई, जहांगीराबाद, इतारप, पहासू वादि दीत्रों में - " वी " का उच्चारण- वी - वी के बीच में होता है जैसे- गयी- गयी- गवी - ब्रज में- गयी - गंगापार - कन्नीजी से प्रभावित- गवी, वीर उपर्युक्त दीत्र में सर्वत्र गयी का उच्चारण होता है । मैन टेप रिकाडीर से इस वन्तर की वीर अधिक समझने की चेष्टा भी की है।

# ४. १. १. २ स्वल्पान्तर युग्म-

## स्वर-

|              |          |                                 |
|--------------|----------|---------------------------------|
| । इ । । ई ।  | । तिल् । | तिलना का चातु रूप               |
|              | । सील् । | चावलीं से बनी हुई               |
|              | । सिल ।  | मसाला पीसने के लिए पत्थर की बनी |
|              | । सील ।  | मीहर                            |
| । ए । । ऐ ।  | । नेक ।  | जञ्हा                           |
|              | । नेक ।  | थोड़ा                           |
|              | । पेद् । | पेरना                           |
|              | । पेर ।  | टाँगै                           |
| । उ । । ऊ ।  | । बुरा । | विशेषण जञ्हा का विलीम           |
|              | । बूरा । | फदार्थ जी मीठा होता है          |
| । व । । वा । | । झल ।   | कपट                             |
|              | । झल ।   | पेड़ की झल                      |
|              | । झु ।   | झकना                            |
|              | । झक ।   | कल्लिऊ                          |
| । वा । । ई । | । शीरा । | पु०                             |
|              | । शीरी । | स्त्री०                         |

। ओ ।। औ । । कील ।

। कील ।

। सील ।

( सील ।

ऊपर का वक्ता

पानी गरम होने की प्रक्रिया

। अ ।। वा ।। औ ।। औ । । कल ।

। कल ।

। कील ।

। काँल ।

। इ ।। ई ।। औ ।। औ । । किल ।

। कील ।

। कील ।

। कील ।

। ई ।। ए ।। ऐ ।। औ ।। औ । । पीला ।

। पैल ।

। पैल ।

। उ ।। ऊ ।। औ ।। औ । । लुट ।

। लुट ।

। लीट ।

। लीट ।

### ४. १. १. २ संध्यदार

### ४. १. १. २. ०

संध्यदार से तात्पर्य दो स्वरां के संयोग से है परन्तु उनसे एक ही अक्षर का निर्माण होता है। जहाँ दो अक्षर दो स्वरां के संयोग से निर्मित होते हैं वहाँ "स्वर-संयोग" की स्थिति कहलाती है। दो स्वर एक अक्षर का आधार बनते हैं। वस्तुतः संध्यदार एक ध्वनि है जिसके उच्चारण में श्वास के उत्थान-पतन की सम्भावना नहीं रहती। "वस्तुतः" पूर्ण स्वरीय गुच्छ ही संध्यदार हैं।

संध्यदार के भेद इस आधार पर किए जा सकते हैं कि उसके स्वरांशों में कौनसा अक्ष अधिक मुखर है।

१- वारीही संध्यदार

२- अवारीही संध्यदार

३- कृजु संध्यदार

जब संध्यदार का प्रारम्भिक अक्ष उसके अन्त की अपेक्षाकृत कम मुखर होता है तब वारीही संध्यदार होता है। इसके विपरीत जब उसका प्रारम्भिक अक्ष अधिक मुखर होता है तो वह अवारीही संध्यदार कहलाता है।

### ४. १. १. २. १

अपने विवेच्य क्षेत्र की बोलियों के ढाँचे तथा गठन के आधार पर संध्यदार का निर्माण कई प्रकार से होता है :

१- शब्द के अन्तिम अक्षर में स्वर + य् अक्षर

वृ स्वर श्रुतियों के क्रम के रूप में ।



२- स्वर + वृ, इ, उ में से कोई एक स्वर ।

१- अवरोही संध्यकार का निर्माण स्वर + य्  
 वक्ष्वा वृ स्वर भुति के रूप में होता है। यदि "य्" वक्ष्वा "वृ"  
 स्वर पूर्व स्थिति में आते हैं तो उन्हें वही स्वर के रूप में स्वीकार करना  
 चाहिए । य् वक्ष्वा वृ स्वर पूर्व स्थिति में, व्यंजन गुच्छ रूप में भी  
 आते हैं।

२- जि स्थितियों में । अ, इ, उ । स्वर  
 स्वनिग्राम अकार निर्माण नहीं कर पाते हैं उन स्थितियों में ये अकारात्मक  
 वनकर संध्यकार का रूप धारण कर लेते हैं। शब्द की निम्नलिखित स्थितियों  
 में । अ, इ, उ :- स्वर स्वनिग्राम अकार निर्माण कर सकते हैं। शब्द की  
 प्राथमिक स्थिति में आकर ।

## ४.१.१.२.२.१. आरोही संध्यक्षर स्वर :

### आरोही - १ :

निम्नलिखित प्रस्वर स्वर से प्रारम्भ होने वाले आरोही संध्यक्षर स्वर हैं :

१. अउ ।

। अ - अउ - या । मइया

। इ - अउ - या । लइया - बिछीना

। ए - अउ - या । लइया - इन दोनों शब्दों का प्रयोग

। ह - अउ - या । हइया सा मुहावरे के रूप में होता

है, जैसे लइया ई नारं

ती हइया ई कां ते

होइगी ।

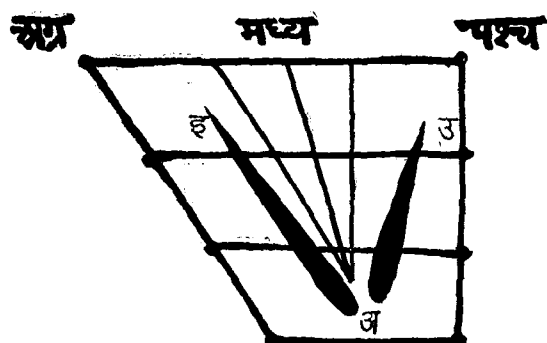
२. अउ ।

। इ - अउ - वा । हउवा

। ए - अउ - वा । पउवा

। अ - अउ - वा । नउवा

नोट: उपयुक्त उदाहरणों में य-श्रुति तथा व-श्रुति हो गई है ।  
आरोही-१ संध्यक्षर स्वरों का चार्ट :



बारौही-२ :

निम्नलिखित दार्ध स्वर से प्रारम्भ होने वाले बारौही  
संध्यदार स्वर हैं :

१. ।आउ।

।टि-आउ। टिकाउ

।बि-आउ। बिकाउ

।पि-आउ। पिआउ

।सि-आउ। सिआउ

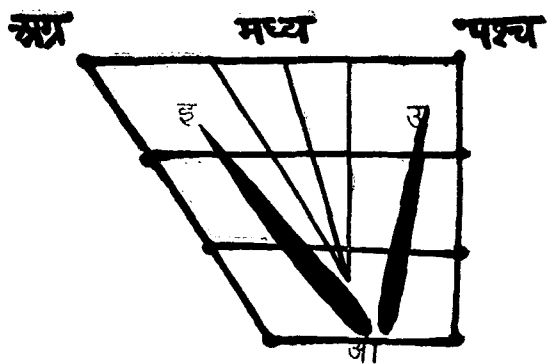
।हि-आउ। हिआउ

२. ।आह।

।बाह-ओ। बाह्यौ - य-श्रुति का आगम

नोट :

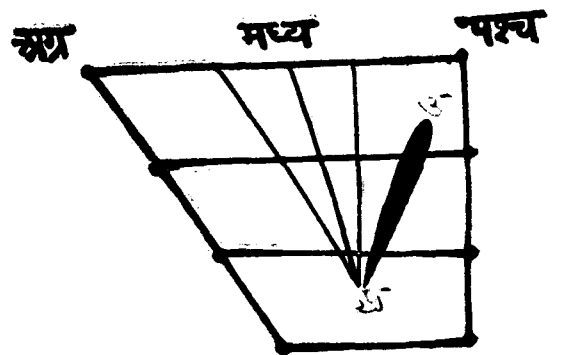
यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जब धीमी गति से इन शब्दों का उच्चारण होता है जव्वा द्वितीय अक्षर पर बलाघात होता है तो इन शब्दों का उच्चारण दीर्घान्त हो जाता है और फिर संध्यदार के स्थान पर 'आ-ऊ' तथा 'आ-ई' का स्वरानुक्रम हो जाता है ।

बारौही-२ संध्यदार स्वरों का चार्ट :

### ४.१.१.२.२ अवरोही संध्यदार स्वर :

१. |उअ|      |फ-उअ-रिया|      फूहड़ स्त्री ।  
           |उअ|      |ड-उअ-रिया|      दोबरी के लिए  
                   |थ-उअ-रि|      एक वृद्धा विशेष

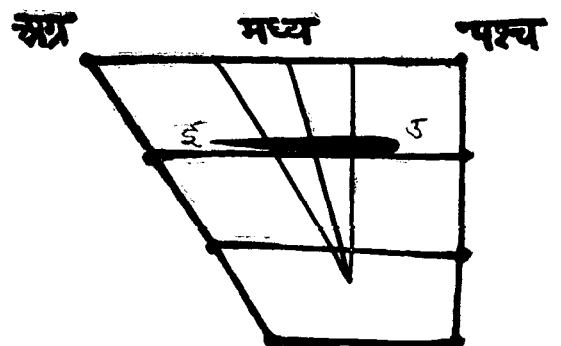
### अवरोही संध्यदार स्वर का चार्ट :



### ४.१.१.२.३ ऋजु संध्यदार स्वर :

१. |उइ|      |च-उइ-आ|      - चुइया      -य-भुति का आगम  
           |पू-उइ-आ|      पुइया

### ऋजु संध्यदार स्वर का चार्ट :



## ४. १. २ अनुनासिक स्वर-

### ४. १. २. १. १ मध्य स्थिति

सभी स्वरों के अनुनासिक रूप भी मिलते हैं जिनका शुद्ध स्वरों से व्यतिरेकीक सम्बन्ध है, जैसे-

१, २, ३, ४, ५

अनुनासिक स्वर सन्धि शुद्ध स्वर

वँ - ( — )

### ४. १. २. १. १ वादि स्थिति

|            | शुद्ध | वर्ण     |
|------------|-------|----------|
| १- व-वँ    | वँवाँ | वंधा     |
|            | वधी-  | नीचे     |
| २- वाँ-वाँ | वाँधी |          |
|            | वाधी  | वाधा भाग |
| हं-        | हँच   |          |
| हँ-        | हँधन  |          |
| ३- उँ-उँ   | उँगली | कुंगली   |
|            | उगली  | उगल देना |
| ऊँ-        | ऊँधी  |          |

४- ऐं-

ऐँड़ ( जकड़ने के अर्थ में ही प्रयोग करते हैं )

-एड़- घोड़े को चलाते समय पैर की एड़ी का प्रयोग करते हैं।

हैं-

हैंठ जकड़

हठ ( या दिंयां- इस स्थान पर )  
जैसे हठ बाजा

५- औं-

औँग ( गाड़ी की धुरी पर चढ़ाया जाता है )

औग- ( हस्त के पीछे पतिहारी में लगने वाला एक लकड़ी का फाना )

औं-

औँग- ( नींद के लिए प्रयुक्त होता है)

औग ( दादरी तथा सिकन्द्राबाद में आग के लिए इस शब्द का उच्चारण करते हैं जैसे पानी के स्थान पर पीणी का उच्चारण वहाँ के गूजरी में बहुतायत से पाया जाता है। )

४. १. २. १. २ मध्य स्थिति अनुनासिका-

वा-

साँग-

एक हथियार विशेष

साग

सब्जी

इं -

पीठ-

पीठ

जै- विषापीठ

हं-

पेठा

एक फल

पैठा

धुआ

बीं-

घाँटा-

घाँट देना

घोटा-

घोती की किनारी पर टाँकी  
वाला

पौंगा-

ढीला ढाला मूर्ख सा

पीगा-

ईस की पीई के लिए दादरी में  
बोलते हैं।

पौँडा

पौड़ा-

बैठ गया

कुनासिकता लिए हुए और निरनुनासिकता हुए युग्म

बनु

साँई

=

साना का स्त्रीलिंग = "तुम बाई  
बानाई साँई ?

नि०

साई

=

किखान जी सेत काटने के पश्चात्  
मजदूरी के

बनु०

काई

=

कन्नी काटना ( मुहा० काई काटना-  
बचकर निकलना )

- नि० काई = एक पदार्थ घास जो पानी में होती है
- अनु० नाँई = नहीं
- नि० नाई = नाऊ
- अनु० दाँई = सीधी मुजा
- नि० दाई = नर्स
- अनु० बाँई = दक्षिण मुजा
- नि० बाई = साधुनी को बाई कहते हैं
- अनु० साँई = स्वामी = साईं महान्मा
- नि० साई = अग्रिम कुछ देकर त्य करना
- नि० सड़ साई = साली = "ल" का लोप होकर ई का वागम छनारी के पास इसका प्रयोग होता है।
- अनु० स ताँई = लिए
- नि० ताई = ताऊ की पत्नी
- अनु० काँई = कहाँ थी ( वो परात काई = वह परात कहाँ थी ?
- नि० काई = (थ) ( गु कल्लि जाई काई ) तुमने नाइ देसी ( वह कल जाई थी, तुमने नहीं देसी ?
- अनु० बाँंग = नींद
- नि० बांग = हल का फाना



बनु० सीक = माछ की सीक

नि० सीक = सीस ( सिसाना )

४. १. २. २

|      | वादि      | मध्य   | अन्त्य            |
|------|-----------|--------|-------------------|
| कै-  | कैधी      | कैधा   | -                 |
| वाँ- | वाँधी     | वाँग   | दिनाँ             |
| है-  | है        | दिगा   | -                 |
| है-  | हैधन      | पैठ    | गहै               |
| उँ-  | हँस उँचाई | वाउँगी | रातिउँ ( रात मर ) |
| ऊँ-  | ऊँची      | मुँहगा | रोऊँ              |
| है-  | है        | गहँबा  | चहँ               |

( हँदरी = बदारूँ में )

|      |                           |                 |         |
|------|---------------------------|-----------------|---------|
| है-  | हैठ                       | मैठ             | है- मँह |
| वाँ- | वाँठ                      | हॉठ- हॉट        | सोखवाँ  |
| वाँ- | वाँग ( नौद की )           | पौड़ा ( गन्ना ) | कहाँ    |
|      | भाफकी जाना )              |                 |         |
|      | वाँगा - ( एक पेड़ विशेष ) | लौड़ा ( लड़का ) |         |

### ४. १. ३ स्वरानुक्रम-

४. १. ३. ०

जब दो स्वर वापस में सटे हुए आते हैं तथा पृथक् पृथक् दो अक्षरों का निर्माण करते हैं तो उनको स्वरों का अनुक्रम कहा जाता है। स्वर + स्वर तथा जिनके मध्य कल्प विवृत का भी प्रवेश हो सकता है। प्रस्तुत दौत्र की रचना प्रणाली की दृष्टि से अधिकतर केवल दो स्वरों का अनुक्रम ही मिलता है। तीन स्वरों के अनुक्रम कम मिलते हैं। जब तीन स्वनिम एक साथ आते हैं तो ध्वन्यात्मक दृष्टि से निम्नलिखित परिवर्तन :-

मध्य स्वर पूर्व स्वर के साथ सम्बद्ध होकर गुच्छ रूप में संध्यक्षर का निर्माण करता है। यथा :

गइवा - गइया ( गइवा - गइवा )

इस दौत्र की बोलियों में शब्द भी प्रत्येक स्थिति में स्वरा-  
नुक्रम के उदाहरण समान रूप से मिलते हैं।

४. १. ३. १ संगमावस्था के पश्चात् तथा पूर्व भी मिलते हैं :

+ आई

आई +

### ४. १. ३. २ दो व्यंजनों के मध्य-

लिखाविगा

यद्यपि सभी स्वरों के अनुक्रम उदाहरण मिलते हैं, परन्तु ये प्रत्येक क्रम से संयोजित नहीं होते। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित नियम

हैं :

४. १. ३. २. १

स्वर अपने सजातीय स्वर के साथ संयोजित नहीं होते हैं क्योंकि व + व , वा + वा इत्यादि प्रकार से स्वर-संयोग के उदाहरण या तो हैं ही नहीं या फिर वन्त्यल्प संख्या में अपवाद स्वरूप ही उपलब्ध होते हैं। यथा-

। वा वा । चाचा के अर्थ में

“ वा वा ” का उच्चारण भी जब चाचा के स्थान पर तब होता है जब कोई व्यक्ति शीघ्रता में इस शब्द का उच्चारण करता है।

४. १. ३. २. २

स्वर अपने दीर्घ स्वरों के साथ संयोजित नहीं होते हैं क्योंकि व + वा , इ + ई , उ + ऊ , ए + ऐ तथा ओ + औ के स्वरानुक्रमों के उदाहरण लगभग प्राप्त नहीं हैं।

४. १. ३. २. ३

स्वर संयोगों के पहले सदस्य के रूप में कोई भी स्वर स्वनिम वा सकता है किन्तु स्वर संयोगों में । व, इ, उ । स्वर स्वनिम द्वितीय सदस्य के रूप में प्रन्निबन्धन रूप में जाते हैं :

१- अनुनासिक बनकर

। वँ , हैं , उँ ।

यथा- । जाउँगा - जाउँगी ।

। जाउँगा - जाउँगी ।

२- यदि शब्द के अन्तिम अक्षर के रूप में वावे । इस स्थिति में व्यंजन पूर्व वाक्छर अक्षर निर्माण करते हैं। यथा :

। धू व र ।

यह उदाहरण निश्चित रूप से दो स्वरों के अनुक्रम का है ।

४. १. ३. ३ स्वरानुक्रमों का समान संचि

पहले हम ऐसे स्वरानुक्रमों का वर्णन करेंगे जो लगभग ब्रज और लड़ी के संधि स्थल पर समान रूप से उपलब्ध होते हैं। ऐसे स्वरानुक्रमों का विवरण जो विशिष्ट केन्द्रों पर ही मिलते हैं। बाद में दिया जायेगा ।

४. १. ३. ३. १ वादि स्वरानुक्रम

। वा + ई - । । वाई ।

। वा + ए - । + वाए क

व्यंजन के साथ भी स्वरानुक्रम के उदाहरण प्राप्य हैं। यथा-

। जाई । पाई , खाई , गाई , चाई , लाई ,  
छाई , वाई , दाई , साई इत्यादि

। जाए । पाए , खाए , गाए इत्यादि

#### ४. १. ३. ३. २ माध्यमिक स्थिति में स्वरानुक्रम

इस स्थिति में निम्नलिखित स्वरानुक्रम  
मिलते हैं : जैसे

।- ऊ + व - । । सू व र । । धू व र ।

- । उ + वा - । - । कु वा र । -

#### ४. १. ३. ३. ३ वन्तिम स्थिति में स्वरानुक्रम

इस स्थिति में निम्नलिखित स्वरानुक्रम उपलब्ध हैं :

। - वइ + ई । । प ई । एक कीड़ा जो गेंहूँ  
में ला जाता है।

। व + ए । - । स ए । - । र ए ।

।- वा + ई । । फिट्टाई ।

।- वा + ए । - । लिवाए । -

- । वा + ऊ ।

-काऊ ।-

। ए + ई ।

। तुम्हारेह ।

- । औ + ई ।

- । रोई ।

### ४. १ . ३. ४ वैशिष्ट्य लक्षण-

यहाँ हम ऐसे स्वरानुक्रम का वर्णन करेंगे जिनमें दोत्रगन विभिन्नतार हैं :

### ४. १. ३. ४. १ आदि स्थिति में स्वरानुक्रम

। वा + ए- ।

। वायेगा ।

दादरी, सिक्न्दाबाद

। वा + औ- ।

- । आओगी ।

गाजियाबाद से लेकर

हाफुड से नीचे स्थाना

तक यही रूप मिलेगा ।

। आओगा । सम्मल त० मुरादाबाद

। वा + औ- ।

। आओगे ।

खुर्जा, दनकौर, अठ्पशहर

कुतारी, बिसौली, बाविला

( बरेली में )

### ४. १. ३. ४. २ माध्यमिक स्थिति में स्वरानुक्रम

।- इ + वा ।

। लिवावेगा -

लियावेगी ।-

(स्थाना

आवेगा , शि०

। ऐ + वा- । । लैवावेगी । सु० प० जे

-। लैवावेगी । - बिसौली, गिन्नौर, बबराला  
( बदार्थ ) पीलीभीत

। लैवावेगा-। सम्भल , रामपुर, हसनपुर  
( मुरादाबाद ) मेरठ जिला का  
दक्षिणी भाग गाजियाबाद,  
हापुड

। वा + वी- । । ला वी गे । बु० शहर

। वा वी गो । बदार्थ, वाँवला, दादरी,  
सिकन्द्राबाद

निर्यक् रूप - । लावेगा । - मुरादाबाद, रामपुर

। लावेगी । सुरजा, गाजियाबाद, हापुड,  
प० ब० सम्भल

-। वा + ए । । जाएगा । बुलन्दशहर

। जाएगी ।- बिसौली तहसील, गिन्नौर  
तहसील , तहसील वाँवला,  
पीलीभीत, किच्छा से सटा हुआ  
भाग

वन्डिया ( नैनीताल )

निर्यक् -। जावेगा । य सम्भल, रामपुर, गाजि० दा० सि०

-। जाउगी । डिबाई, लोधी राजपूतों की बोली में  
इस प्रकार का उच्चारण मिलता है।

### ४.१.३.५ स्वरानुक्रमों का चार्ट :

| प्रथम स्वर | द्वितीय स्वर |   |   |   |   |   |   |   |   |
|------------|--------------|---|---|---|---|---|---|---|---|
|            | आ            | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ |
| अ-         |              |   | + |   | + | + | + | + |   |
| आ-         | +            | + | + | + | + | + |   | + |   |
| इ-         | +            |   |   |   |   | + |   | + | + |
| ई-         | +            |   | + |   | + | + |   | + |   |
| उ-         | +            |   | + |   |   | + |   | + |   |
| ऊ-         | +            |   | + |   |   | + |   |   | + |
| ए-         | +            | + | + | + | + | + |   | + |   |
| ऐ-         | +            |   |   |   |   |   |   | + |   |
| ओ-         | +            |   | + | + | + | + |   | + |   |
| औ-         | +            |   | + |   | + | + |   | + |   |

अ = पर्ह । एक कीड़ा जो केहूँ में लग जाता है ।, गऊ । गाय ।, ए । रहे  
सबो । सहो-सहा ।

आ = चाचा । चाचा, लाइ ।, लाने के अर्थ में, पिटाई  
लाऊ । लानेवाला, आर, स्वाजी ।

इ = लिवा ।, चहर, पिखी, पिखी रे ।

ई = लीवा । लेलिया । पीई, रीऊ, पीरे । पीने का बहु०, लीखी

उ = फुवा ।, सुई, मुर, कुखी

ऊ = सूवा, सुई, पूर, कूखी ।

ए = लेवा, लेइ, सेई, देउ, लेऊ, सेर, लेखी

ऐ = सेवा, लेखी

ओ = लोआ । पूणिमासी जो आटे के लार बनाकर गाय को खिलाते हैं, लोई । रीऊ ।  
पीर, पीखी ।

औ = होआ, चौई, चोर, पीर, चौखी ।



### ४.१.३.६ अनुनासिक स्वरों का अनुक्रम :

४.१.३.६.१

निरनुनासिक स्वर

|     |   |   |   |
|-----|---|---|---|
|     | ह | ई | ए |
| वाँ | - | - | - |

वाँह - पाँह

वाँई - दाँई, बाँई

वाँए - काँए

४.१.३.६.२

अनुनासिक स्वर

निर० स्वर

|    |    |    |
|----|----|----|
|    | ऊँ | ऐँ |
| ह  | -  | -  |
| वा | -  | -  |

हऐँ = हहऐँ

वाऊँ = रौऊँ, सौऊँ, होऊँ।

४.१.३.६.३

अनुनासिक स्वर

अनुनासिक स्वर

|     |        |      |       |
|-----|--------|------|-------|
|     | वाँ    | ईँ   | ऊँ    |
| वाँ |        | सौईँ |       |
| ऐँ  | सैंवाँ |      | रैंऊँ |

### ४.१.३.७ तीन स्वरों का अनुक्रम :

व = अहजी

जा = आहजी

ह = पिआजी

ई = पीहजी

ऊ = रूहजी

## ४. १. ४ - स्वरानुक्रम तथा श्रुति

### ४. १. ४. ०

श्रुति का शाब्दिक अर्थ है- वह जो सुनायी दे ।  
श्रुति का शास्त्रीय विवेचन करते हुए डा० विश्वनाथ प्रसाद अपना मत इस प्रकार देते हैं :-

“ एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय संसर्पण की जो ध्वनि निकलती है, वह अनिवार्य है। हारमोनियम में पटरी से दूसरी पटरी पर उंगली से जाने से संसर्पण की ध्वनि मिला ही न निकले क्योंकि उसकी सभी पटरियाँ पृथक् - पृथक् रहती हैं- पर सितार आदि तन्त्री- वाद्यों पर एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय गमक की जो मधुर ध्वनि निकलती है, उसका कलात्मक महत्त्व अल्प है। दो स्वरों के बीच जो संसर्पण या श्रुति- ध्वनि उठती है, माष्णा की दृष्टि से उसका भी गमक वैसा ही रागात्मक महत्त्व है। ”

१- य - श्रुति सहित स्वरानुक्रम

२- व - श्रुति सहित स्वरानुक्रम

कहीं कहीं ऐसे स्थानों में भी “ य ” तथा “ व ” का प्रयोग किया गया है जहाँ प्रचलित वर्तनी में प्रायः ( य । व ) का नहीं अपितु शुद्ध स्वरों का ही प्रयोग किया जाता है जैसे ‘हुई’ के स्थान पर ‘हुयी’ ‘वीर रोई’ के स्थान पर ‘रोयी’ ‘हुआ’ के स्थान पर ‘हुवा’ आदि ।

१- डा० विश्वनाथ प्रसाद - यकार और वकार के रागात्मक रूप-

भारतीय साहित्य - अप्रैल - १९५७ पृ० ५५

४. १. ४. १ य- भुक्ति सहित स्वरानुक्रम

४. १. ४. १. १ ज , जा , और जो , के परे ए जैसे

ज ए - गये , नए

जा ए - जाये , बनाये , जायेगा । लेकिन , जावे,  
जावे रूप भी प्रायः बोलियों में मिलते हैं।  
कहीं कहीं जहाँ वास्तविक उच्चारण में  
उसका व्यवहार क्षीण भी है वहाँ भी  
उसके लिखने की प्रकृति दिखाई देती है जैसे-  
लताये, भाषाये ।

जो र् - जाये, लीये । परन्तु संभाव्य भविष्यत्  
मध्यम या वन्ध पुरुषा एकवचन में, जावे,  
जावे जादि भी मिलते हैं। सामान्य भविष्यत्  
में जावेगा रूप चलता है।

४. १. ४. १. २

इकार के परे ज, जा, जो या ए

इ ज - पीय , सीय

इ जा - दिया , किया

इ ए - दिए , किए

इ जो - भाइयो , साथियो

४. १. ४. १. ३

इकार से परे ज, जैसे - सेया , सेया

४. १. ४. १. ४

किसी असमान स्वर के परे हकार जैसे - अ, इ

अ ई - गयी , नयी

वा ई - लगायी , बायी

उ ई - लुयी , मुयी

ए ई - लैयी , सैयी

ओ ई - लौयी , सौयी

४. १. ४. २ व- श्रुति

\* व \* की छोड़ कर शेष पञ्च स्वरों के बाद अ या  
वा - जैसे

४. १. ४. २. १ ओ व - धीवन

ओ वा - लौवा , कोवा, परन्तु ओ के पर वा के

वतुक्रम में य- श्रुति के भी उदाहरण क्रिया

पदों में मिलते हैं - जैसे लौया, रौया वादि

उ व - सूवर

उ वा - लुवा , लुवा

४. १. ४. २. २

वाकार के परे उकार

वा उ - राउत , राजपुत्र

४. १. ४. २. ३

उकार के पर ए

उ ए - हुवे , हुवे , सुवे वादि हुये , हुये वादि  
रूप चिन्त्य प्रतीत होते हैं।

४. १. ४. २. ४

इकार की ढीढ़कर अन्य किसी असमान स्वर के पर  
वी जैसे -

वा वी - वावी , जावी

उ वी - हुवी , सुवी ।

ए वी - खवी , सेवी

४. १. ४. २. ५

ए के पर व ।

ए व - केवड़ा , नेवला

समान स्वरों के अनुक्रम - वागे देखिए

### ४.१.४.३ स्वरानुक्रम तथा श्रुति :

स्वर -१

स्वर -२

|     | व   | वा  | ह | उ | ए   | औ |
|-----|-----|-----|---|---|-----|---|
| व-  | य   | याव | य |   | य   |   |
| वा- | याव | याव | य | व | याव | व |
| ह-  | य   | य   |   |   | य   | य |
| उ-  | व   | व   | य |   | व   | व |
| ऊ-  |     |     |   |   |     |   |
| ऐ-  |     | य   | य |   | याव | व |
| औ-  | याव | याव | य |   | याव | व |

## ४.२ व्यंजन :

### ४.२.१ व्यंजन स्वनिर्मा का वितरण तथा उनके उपस्वन :

१. [क] [क] का एक प्रधान उपस्वन [क्] है। यह अघोष ,अल्पप्राणा कंड्य स्पर्श व्यंजन है :

वितरण :

। करी , कैकड़ी , तमक् ।

२. [ख] [ख] का एक प्रधान उपस्वन [ख्] है। यह अघोष कल्पप्राण महाप्राण कंड्य स्पर्श व्यंजन है :

वितरण :

। खरी , तखड़ी , मानिख ।

३. [ग] [ग] का एक प्रधान उपस्वन है - [ग्] । यह सघोष अल्पप्राण कंड्य स्पर्श व्यंजन है :

वितरण :

। गन्दा , लागड़ । पाग् ।

४. [घ] [घ] का एक प्रधान उपस्वन [घ्] है । यह सघोष महाप्राण कंड्य स्पर्श व्यंजन है,

वितरण :

। घाल , बोधट , बाघ् ।

५. [ङ] [ङ] का एक प्रधान उपस्वन [ङ्] है । यह अल्पप्राण अघोषद्वयोष्प्य स्पर्श व्यंजन है,

वितरण :

। पलैया , रहपटा , सियांप् ।

६. [फ] [फ] का एक प्रधान उपस्वन [फ्] है । यह महाप्राण अघोष द्वयोष्प्य स्पर्श व्यंजन है,

वितरण :

। फड़ , लम्फाड़ी , लिहाफ् ।

७.।ब। ।ब। का एक प्रधान उपस्वन [ब] है । यह अल्पप्राण सघोष द्वयोष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है तथा प्रत्येक स्थिति में आ सकता है,

वितरण :

।बकल<sup>१</sup> , लबरा<sup>२</sup> , सब ।

८.।भ। ।भ। का एक प्रधान उपस्वन [भ] है । यह महाप्राण सघोष द्वयोष्ठ्य स्पर्श व्यंजन है तथा शब्द की प्रत्येक स्थिति में आ सकता है,

वितरण :

।भारु<sup>३</sup> , भवम्भौ , लम्भ ।

९.।त। ।त। का एक प्रधान उपस्वन [त] है । यह अघोष अल्पप्राण दन्त्य स्पर्श व्यंजन है,

वितरण :

।तलाब , पता , हात ।

१०.।थ। ।थ। का एक प्रधान उपस्वन [थ] है । यह अघोष महाप्राण दन्त्य स्पर्श व्यंजन है,

वितरण :

।थाप , जत्था , नाथ<sup>४</sup> ।

११.।ड। ।ड। का एक प्रधान उपस्वन [ड] है । यह सघोष अल्पप्राण दन्त्य स्पर्श व्यंजन है,

वितरण :

।दाव , उम्दा , दाड ।

१२.।ध। ।ध। का एक प्रधान उपस्वन [ध] है । यह सघोष महाप्राण दन्त्य स्पर्श व्यंजन है,

वितरण :

।धार , उधार , धुंध । धुन्द ।

१. इस शब्द का प्रयोग सम्मल, में होता है इसी का ब्रजदेश में उच्चारण 'बकुल' होता है । कहीं-कहीं बकल भी कहते हैं, जैसे रामपुर में ।

२. मुरादाबाद, रामपुर, में इसे ही 'लबड़ा' कहते हैं ।

३. भड़भूजा जिसमें अनाज के दाने भूनता है उसे 'भारु' कहते हैं ।

४. नाथ - बेलों की नाक में जो रस्सी डाली जाती है उसे कहते हैं ।



१३.।ट। ।ट। का एक प्रधान उपस्वन [ट] है । यह अल्पप्राण,अधोऽण मूर्द्धन्य स्पर्श व्यंजन है,

वितरण :

।टाट , सिपट्टर , साट ।

१४.।ठ। ।ठ। का एक प्रधान उपस्वन [ठ] है । यह अल्प महाप्राण सधोऽण मूर्द्धन्य स्पर्श व्यंजन है

वितरण :

।ठाली, बेठी , लट्ठ ।

१५.।ड। ।ड। के मुख्य रूप से दो उपस्वन हैं,

[ड] यह अल्पप्राण सधोऽण मूर्द्धन्य स्पर्श व्यंजन है ।

[डू] यह अल्पप्राण सधोऽण मूर्द्धन्य उत्तिदाप्त व्यंजन है ।

[ड] शब्द के आदि, मध्य में देशी विदेशी शब्दों,संयुक्त व्यंजनों के साथ तथा अन्त में विदेशी शब्दों तथा संयुक्त व्यंजनों के साथ आता है । इस वतावरण में इसका [ड] के साथ कोई व्यतिरेक नहीं है ।

[डू] शब्द के मध्य तथा अन्त में इससे भिन्न परिस्थिति में आता है

संज्ञ स्वनिर्मा के रूप में निम्नलिखित देशी शब्द उपलब्ध हैं ,

ओरुस , निडर, पोंडा, पड्डू आदि । इनमें से

कुछ में अनुवासिकता का प्रवेश भी हो गया है । कहीं-कहीं अल्प संगम का प्रवेश भी हो गया है,जैसे नि-डर,अतस्व इन शब्दों का दोनों रूपों में एक उच्चारण मिलता है ।

नोट : अंग्रेजी से गृहीत शब्दों में,जैसे रेडियो, रोड, सोडा आदि । इन शब्दों का व्रज-प्रभावित क्षेत्र में दूसरा उच्चारण रेडियो, सोड़ा तथा रोड़ भी मिलता है ।

१६.।ढ। ।ढ। के दो मुख्य उपस्वन हैं,

[ढ] यह महाप्राण सधोऽण मूर्द्धन्य स्पर्श व्यंजन है । यह शब्द को आदि स्थिति तथा मध्य में दूसरे व्यंजनों के साथ आता है,

आदि

मध्य

ढकना

गड्डा

[ढू] यह महाप्राण सधोऽण मूर्द्धन्य उत्तिदाप्त व्यंजन है ।

यह व्यंजन [ढ] के वितरण के अतिरिक्त जाता है,

मध्य अन्त

। मढ़ियो बाढ़ ।

अनुनासिक स्वरों के पश्चात् जाने पर दोनों उपस्वन मुक्त-परिवर्तन में वितरित होते हैं,

।माँढ़ - माँढ़् ।

१७. [वृ] । [वृ] के वितरण में यही कहा जा सकता है कि इसका एक प्रधान उपस्वन [वृ] है । यह अल्पप्राण अघोष वर्त्स-तालव्य स्पर्श-संघर्षी व्यंजन है ।

वितरण :

। चच्चा , बच्चा , सच्चा ।

१८. [ख] । [ख] स्वनिम का एक प्रधान उपस्वन [ख] है, यह महाप्राण अघोष वर्त्स-तालव्य स्पर्श-संघर्षी है ।

वितरण :

। हाकट् , पक्का । बोटो कटार ।

१९. [ज] । [ज] स्वनिम का एक प्रधान उपस्वन [ज] है, यह महाप्राण अघोष वर्त्स-तालव्य स्पर्श-संघर्षी है,

वितरण :

। जट्टा , बिजरी, बाजू ।

२०. [फ] । [फ] स्वनिम का एक प्रधान उपस्वन [फ] है, यह महाप्राण अघोष वर्त्स-तालव्य स्पर्श-संघर्षी है,

वितरण :

। फाढ़ , फंका ,

२१. [म्] । [म्] स्वनिम का प्रधान उपस्वन [म्] है । यह द्वयोष्ण नासिक्य व्यंजन है ।

वितरण :

। माला , कमाल, काम् ।।

२२. [न] । [न] स्वनिम के चार प्रधान उपस्वन हैं :

[ज] यह वर्त्स-तालव्य नासिक्य व्यंजन है जिसका वितरण केवल वर्त्स-तालव्य स्वरों के पूर्व होता है ।

॥३०॥ यह कंट्य स्पर्श नासिक्य व्यंजन है जो कंट्य स्पर्श ध्वनियों के पूर्व जाता है ।

॥३१॥ यह मूर्धन्य नासिक्य व्यंजन है जो मूर्धन्य व्यंजनों के पूर्व जाता है । केवल बुलन्दशहर के उत्तरी भाग में इसका पृथक् स्विमात्मक महत्त्व है । मानचित्र में इसका वितरण दिखाया गया है ।

॥३२॥ यह वत्स्य नासिक्य व्यंजन है तथा अन्य सभी स्थानों पर जाता है । जैसे, बिनन, सबन, तब् ।

॥३३॥ के साथ इसका मुक्त वितरण भी है

क प्रणान् - प्रनाम् ।

। पण - पन ।

। प्राण - प्रान ।

२२. ॥३४॥ ॥ल॥ का एक प्रधान उपस्वन ॥ल॥ है । यह वत्स्य तत्त्व सघोष पार्श्विक व्यंजन है । नोट : कुछ उत्तरी भाग में दूसरा उपस्वन ॥ल॥ भी मिलता है जो वितरण : मूर्धन्यता लिये हुए है ।

। लोट, बाल्ढाल, लाल् ।

२४. ॥३५॥ ॥र॥ का एक प्रधान उपस्वन ॥र॥ है । यह वत्स्य लुठित सघोष व्यंजन है ।

वितरण,

। रस्ता, लव, उप्पर ।

२५. ॥३६॥ ॥स॥ का एक प्रधान उपस्वन ॥स॥ है यह वत्स्य अधोष संघर्ष व्यंजन है । इस उपबोली के दक्षिणी भाग में ॥स॥ के स्थान पर भी यही है ।

वितरण :

। सन्तरा, मस्सा, मुस ।

२६. ॥३७॥ ॥श॥ का एक प्रधान उपस्वन ॥श॥ है यह वत्स्य तालव्य संघर्ष व्यंजन है जिसका शुद्ध उच्चारण मुरादाबाद, मेरठ, रामपुर तथा बैरली में होता है । ब्रज से प्रभावित दक्षिणी बोली में यह 'स' के रूप में ही उच्चारित होता है ।

२७. ॥३८॥ ॥ह॥ स्विम के दो उपस्वन हैं :

॥३९॥ यह काकत्य अधोष संघर्ष व्यंजन है जो शब्द की आदि स्थिति मध्य में स्वर तथा व्यंजन तथा व्यंजन और स्वर के मध्य जाता है :

। हल, माह ।

।इ। काकत्य सघोण संघर्णी है । यह दो स्वरों के मध्य आता है, जैसे

महिला, महीना

प्रायः शब्दों के अन्त में हे का लोप भी होता जाता है और केवल स्वर मात्र ही सुनाया पड़ता है । यह प्रवृत्ति इस दोत्र की बौली में विशेष है ।

२८. ।व्। ।व्। स्वनिम के उपस्वन है

।व्। द्यौष्पत्य सघोण अर्धस्वर व्यंजन है जो आदि स्थिति में व्यंजन-गुच्छ के दूसरे सदस्य के रूप में आता है,

।दापर, दार, क्वारा ।

।व्। दन्तोष्पत्य सघोण व्यंजन है जो अन्यत्र आता है,

। वेसा, सवाल, ताव् ।

२९. ।य्। ।य्। स्वनिम का प्रधान उपस्वन ।य्। है जो तालव्य सघोण अर्धस्वर है ।

वितरण :

।यार, प्यार, पाय ।

स्वर-पश्चात् तथा उसके साथ सन्निहित होने पर य तथा व सन्ध्यकार का निर्माण करते हैं जिसका विवेचन पीछे किया जा चुका है ।

टिप्पणी :

उर्दू वगुठ दोत्र में ।क्, ख, ग, ज, फ़ । के स्वनिम की दृष्टि विवेचन अपेक्षित है । इस दोत्र की सड़ीबौली में इनका स्वनिमात्मक महत्त्व है जबकि दक्षिणी उपबोली में ये क्रमशः ।क, ख, ग, ज, फ़। के समान ही उच्चारित होते हैं ।

-----

४. २. २ व्यंजन गुच्छ तथा व्यंजनानुक्रम-

४. २. २. १ व्यंजन गुच्छ

४. ३. ३. १. १ आदि स्थिति में

क- । क्- । । क्यौली । क्यारी । । क्या ।

। क्व- । । क्वार ।

। क्त । । क्तैस ।

ख- । ख्- । । खाव ।

। ख्य- । । ख्याल ।

ग- । ग्- । । ग्यारह । । ग्यामन् । । ग्यान् ।

। ग्व- । । ग्वाल<sup>१</sup> । । ग्वाला ।

। ग्ल- । । ग्लानी ।

घ- । घ्य- । । घ्यायी<sup>२</sup> ।

१- ग्वाल- इस शब्द का प्रयोग- बु० शहर(कतारी, पहास, लुजा, दादरी, अदुपशहर और बदायूं में ( बबराता, गिन्नीर, बिसौली तथा बरेली में ( बाँवला आदि स्थानों में होता है- इसी की ब्रज दीत्र में सुती भी कहा जाता है।

२- घ्यायी- घी का काम करना- जैसे "रमुजिया ती घ्यायी करतै" "

च- । च्य- । । च्यार- च्यार = चार - चार ।

। च्यास<sup>१</sup> ।

छ- । छ्य- । । छ्यानवै ।

ज- । ज्य- । । ज्यादा ।

। ज्व- । । ज्वारी । । ज्वार । । ज्वाला ।

ट- । ट्य- । । ट्यूसैल । । ट्यूस ।

ठ- । ठ्य- । । ठ्यादी । । ठामा । - ( अंग्रेजी से आगत )

त- । त्य- । । त्यागी<sup>२</sup> । । त्याग ।

। त्र- । । त्रिगुन ।

द- । द्य- । । द्यौराली ।

। द्व- । । द्वार । । द्वाई ।

ध- । ध्य- । । ध्यान । । ध्यावै ।

। ध्र- । । ध्रुव ।

१- च्यास = किसी बात की पहले से ही खबर रखना- "अजी वी तो पहले से छिः०खबर०रखवई रसती रहे रे ।"

२- भरठ वीर बुलन्दशहर में त्यागी ब्राह्मणों की संस्था गौड़ ब्राह्मणों के ही करावर है।

न- । न्य- । । न्यार । । न्यार<sup>१</sup> । । न्यीला ।  
। न्यायीवामन । । न्यारे<sup>२</sup> । । न्याय ।

प- । प्य- । । प्याला । । प्यास । । प्यार ।  
। प्र- । । प्रम् ।  
। प्ल । । प्लान् ।

ब- । ब्य- । ब्याह । । ब्यातर । ब्याबर ।  
। ब्याज ।

। ब्र - । । ब्रलीज । ( अंग्रेजी से आगत )

म- । म्य- । । म्यास्<sup>३</sup> ।

म- । म्य- । । म्याजें । । म्यान ।  
। म्ल- । । म्लच्छ ।

फ- । फ्रा- । । फ्राक् । ( अंग्रेजी से आगत )

१- न्यार = यह शब्द क्तारी, पहासू, कूपशहर, जहांगीराबाब आदि स्थानों पर "नार" के अर्थ में बोला जाता है।

२- न्यारे - निहारे के स्थान पर कहीं कहीं प्रयुक्त होता है।

३- ब्याबर तथा ब्यातर शब्दों का प्रयोग- जो मैस या गाय शीघ्र ब्यानि वाली होती है उसे कहते हैं तथा कभी नार- कः दिन को व्यायी लुई को कहते हैं।

|    |         |                         |                          |
|----|---------|-------------------------|--------------------------|
| व- | । व्य्- | । व्य्य् ।              |                          |
| स- | । स्य्- | । स्थार ।               | । स्थाँडे <sup>१</sup> । |
|    | । स्व-  | । स्वात् ।              | । स्वाद् । । स्वतंतर ।   |
| ज- | । ज्य्- | । ज्यादा ।              | । फारसी के माध्यम से ।   |
| ल- | । ल्य्- | । ल्यार <sup>२</sup> ।  |                          |
| श- | । श्य्- | । श्याम् ।              |                          |
| ह- | । ह्य्- | । ह्यारी <sup>३</sup> । |                          |

#### ४. २. २. १. २ वन्त्य स्थिति में व्यंजन-गुच्छ

वन्त्य स्थिति में व्यंजन- गुच्छ पर्याप्त संस्था में मिलते हैं विशेष रूप से उर्दू- बहुत दौत्र रामपुर, मेरठ, मुरादाबाद, के दक्षिणी भाग में तथा बरेली के पश्चिमी भाग में। ब्रज से प्रभावित दौत्र में जहाँ स्वरान्त शब्द अधिक मिलते हैं, व्यंजन-गुच्छ कम हो जाते हैं। फिर भी कुछ गुच्छ तो ऐसे हैं जो सर्वत्र मिलते हैं, जैसे-

वन्त , प्तान्त , घुन्त , बन्त , आट साट , काठ ,  
सरव र्द , शब्द , दस्त , पस्त , मद्द  
आदि ।

१- म्यास- का प्रयोग- मालूम पड़ने के अर्थ में होता है। जैसे- मोह तो पैलें म्यास गई ही कि ऐसी होइगी ।

२- स्थाँडे - का प्रयोग साँडे या साले के अर्थ में हापुड़ , गाजियाबाद, गुलावटी, दादरी, सिकन्द्राबाद आदि में ही हो- लड़ा रह म्हार स्थाँडे के ।



### ४. २. २. २ व्यंजनानुक्रम-

### ४. २. २. २. १ स्थानीय व्यंजनों का क्रम-

स्पर्श व्यंजन स्वनिम + स्पर्श व्यंजन स्वनिम

|              |               |             |                 |
|--------------|---------------|-------------|-----------------|
| ।- प + प - । | । लप्पहू ।    | । फाप्पहू । | । रहप्पट् ।     |
| ।- ब + ब - । | । ब्रैब्रवर । | । बबुवा ।   |                 |
| ।- म + म - । | । मम्भरि ।    | । सम्भत ।   |                 |
| ।- क + क - । | । कुक्कफा ।   |             |                 |
| ।- त + त - । | । कित्ता ।    | । मितार्ह । | । लता ।         |
| ।- द + द - । | । दद्दा ।     | । गद्दी ।   | । नद्दी ।       |
| ।- ट + ट - । | । फट्टी ।     | । कुट्टी ।  | । हस्फट्टर ।    |
| ।- ङ + ङ - । | । गङ्गा ।     | । कङ्गा ।   | । माङ्गारङ्गी । |
| ।- च + च - । | । चच्चा ।     | । बच्चा ।   | । सच्चा ।       |
| ।- ज + ज - । | । जिज्जा ।    | । जिज्जी ।  | । हुज्जत ।      |
| ।- झ + झ - । | । फिक्कर ।    | । मक्कड़ ।  |                 |
| ।- ण + ण - । | । जग्गी ।     | । लाग्गा ।  |                 |

नासिक्य व्यंजन स्वनिम + नासिक्य व्यंजन स्वनिम

| -म् +म् - । | मम्भा । | उम्भीद् । | बम्भा ।

| पजम्भा ।

| नृ + न- । | नान्मा । | पुन्मा । | गबन्नर ।

पाश्विक व्यंजन स्वनिम + पा० + व्यं स्व०

| - लृ + लृ - । | लल्ला । | विल्ली । | गिल्लाह ।

संघर्णी व्यंजन स्व० + संघर्णी व्यंजन स्व०

| -ई + स- । | कस्सी । | बस्सी । | रस्सी ।

| वास्साय ।

लुंठित व्यंजन स्व + लुं० व्यं० स्व०

| - र + र- । | ब्रू रा । | कूरी ।

स्पर्श अल्प प्राण + स्पर्श महाप्राण-

| - लृ + थ- । | कित्थ । | पत्थर । | मत्था ।

| -द् + ठ- । | पट्ठा । | लट्ठा । | चिट्ठा ।

| -हृ + हृ- । | गह्ठा । | साह्ठा ।

|               |                |           |
|---------------|----------------|-----------|
| ।-ग् + घ् -।  | । बग्घी ।      |           |
| ।-क् + ख् - । | । कक्खा ।      | । रक्खा । |
| ।-ञ् + ञ् - । | । मञ्ज्ज ।     | । लञ्जी । |
| ।-ज् + झ् -।  | । मज्झ ।       |           |
| ।-प् + फ् -।  | । कप्फत्तान् । | । कप्फन । |
| ।-ब + भ् - ।  | । भव्भ ।       | । ख्खभ ।  |

४. २. २. २. २ मित्थ स्थानीय व्यंजन संगीग

स्पर्श व्यंजन स्वनिम + व्यंजन स्वनिम

स स्पर्श + स्पर्श

|               |                |             |
|---------------|----------------|-------------|
| ।-प् + त् ।   | । कप्पत्तान् । |             |
| ।-प् + ट् - । | । चप्पट् ।     | । कप्पट् ।  |
| ।-प् + क् - । | । सुक्का ।     | । टप्का ।   |
| ।-ञ् + द् - । | । वज्जुत्ता ।  | । सव्द ।    |
| ।-ञ् + द् - । | । सुव्ज्जट् ।  |             |
| ।-ञ् + ज् - । | । कव्ज्जा ।    | । सव्ज्जा । |
| ।-ञ् + क् - । | । दुव्ज्जा ।   | । सव्ज्जा । |
| ।-ट् + क् - । | । मट्का ।      |             |

।- च + क- ।            । पिचुकी ।            । शिचुकी ।

।- ल + त् - ।            । सुल्तान ।            । मुल्तानी मिट्टी ।

### स्पर्श + नासिक्य

।- त् + म्- ।            । महात्मा ।

।- म् + न् - ।            । सुप्ता ।

### स्पर्श + संधर्णी

।- फ् + सृ - ।            । अफसर ।

।- क् + स- ।            । नुक्ता ।

### स्पर्श + सुंठित

।- त् + र- ।            । पट्टा ।

### संधर्णी व्यंजन स्वनिम + व्यंजन स्वनिम

### संधर्णी + स्पर्श

।- सृ + ब्- ।            । कस्बा ।

।- सृ + त् - ।            । रस्ता ।            । बस्ता ।

।- सृ + क् - ।            । चुस्की ।            । बस्का ।

।- सृ + ग्- ।            । पैली ।

### संघर्षी + नासिक्य

।- स् + म्- । । तस्मा ।

।- स् + न्- । । वस्ना ।

### नासिक्य व्यंजन स्वनिम + व्यंजन स्वनिम्

।- म + प्- । । चम्पा ।

।- म् + फ- । । लम्फड़ । । जम्फर ।

।-म् + ब्- । । लम्बरदार ।

।- म् + द- । । लम्दा । । उम्दा ।

।- म् + ध- । । सम्पधन् ।

।- म् + ट्- । । बीम्टा । । सिम्टा ।

।- म् + न्- । । चम्धी ।

।- म् + क्- । । मुक्की ।

।- न् + ब्- । । कुम्बा ।

।- न् + त्- । । जन्ता ।

।- न् + इ- । । नन्द ।

।- न् + ष्- । । सौगन्ध ।

।- नृ + ट - । । बन्टा ।

।- नृ + ढ- । । कन्ठा ।

।- नृ + र् - । । सन्डा । । मुसन्डा ।

।- नृ + च- । । वन्तल ।

।- नृ + ज्- । । वन्जन ।

।- इ० + क्- । । संका ।

।- इ० + स- । । पंसा ।

।- इ० + ग्- । । संग ।

।- इ० + घ- । । कड०घा ।

नासिक्य + संघर्णी

।- नृ + स- । । कन्स । । जिन्स ।

नासिक्य + पार्श्विक

।- नृ + ल्- । । <sup>१</sup>वम्सा । । गम्सा ।

पार्श्विक व्यंजन स्वनिम + व्यंजन स्वनिम

पार्श्विक + स्पर्श

१- वम्सा = अधिकतर इस शब्द का प्रयोग सम्मल, मुरादाबाद, रामपुर बुलन्द शहर में ( क्तारी, पहासू- जहांगीराबाद ) में होता है जैसे- " वम्सा का वम्सा चढ़ा आवे रे " अर्थात् एक मीढ़ की ओर संकेत है।

|                |                        |            |
|----------------|------------------------|------------|
| ।- लृ + क्ष- । | । तल्वा ।              | । मल्वा ।  |
| ।- लृ + थ- ।   | । उल्था ।              | । पाल्थी । |
| ।- लृ + द् - । | । हल्दी ।              | । बल्द ।   |
| ।- लृ + द् - । | । सिल्ट <sup>१</sup> । | । पल्द ।   |
| ।- लृ + इ - ।  | । डाल्ठा ।             |            |
| ।- लृ + ख- ।   | । कल्की ।              |            |

#### पार्श्विक + संघर्षी

|               |           |
|---------------|-----------|
| ।- लृ + लृ- । | । कल्सा । |
|---------------|-----------|

#### पार्श्विक + अर्द्ध स्वर

|                 |             |              |
|-----------------|-------------|--------------|
| ।- लृ -। वृ - । | । सिल्वाइ । | । सिल्वारू । |
|-----------------|-------------|--------------|

#### नासिक व्यंजन स्वनिम + व्यंजन स्वनिम्

|                |                           |
|----------------|---------------------------|
| ।- म + प् - ।  | । चम्पा ।                 |
| ।- म् + फ् - । | । लम्फड़ ।      । जम्फर । |

१- सिल्ट : इसका प्रयोग ब्रज क्षेत्र से बिल्कुल सटे हुए प्रदेश में होता है। इसका अर्थ है कि कार्य समाप्त कर दिया है। जैसे-  
"कहो सिल्ट जाए" अर्थात् काम सत्य करके जाए ।

|                |                         |
|----------------|-------------------------|
| ।- स् + वृ - । | । लम्बिरदार ।           |
| ।- स् + द - ।  | । लम्दा । । उम्दा ।     |
| ।- स् + घृ - । | ००सम्बन्धव । सम्बन्धु । |
| ।- स् + टृ - । | । वीम्टा । । सिम्टा ।   |
| ।- स् + बृ - । | । चम्बी ।               |
| ।- स् + कृ - । | । कुम्की ।              |
| ।- नृ + वृ - । | । कुन्ना ।              |
| ।- नृ + तृ - । | । जन्ता ।               |
| ।- नृ + इ - ।  | । नन्द ।                |
| ।- नृ + घृ - । | । सांगन्ध ।             |
| ।- नृ + ट - ।  | । ऊन्टा ।               |
| ।- नृ + हृ - । | । कन्ठा ।               |
| ।- नृ + इ - ।  | । सन्डा । । मुसन्डा ।   |
| ।- नृ + वृ - । | । जन्विल ।              |
| ।- नृ + जृ - । | । जन्जि ।               |
| ।- इ० + कृ - । | । सइ०का ।               |
| ।- इ० + स - ।  | । पइ०का ।               |



।-इ० + ग्- ।                      । सैइ०ग ।

सुंठित व्यंजनस्वनिम + व्यंजन स्व०

।-इ + प्- ।                      । सुपी० ।

।-इ + फ्- ।                      । क्साफी० ।

।-इ + त्- ।                      । भुता० ।

।-इ + थ्- ।                      । महार्थी० ।

।-इ + द्- ।                      । सुद० ।                      । सद० ।

।-इ + च्- ।                      । लच० ।                      । फचा० ।

।-इ + छ्- ।                      । वली० ।

।-इ + ज्- ।                      । जजी० ।

।-इ + झ्- ।                      । तार वकी० ।                      । सिकी० ।

।-इ + ष्- ।                      । चली० ।

।-इ + श्- ।                      । मुगी० ।

सुंठित + संघर्णी

।-इ + स्- ।                      । कसी० ।

सुंठित + नासिक्य

।-इ + म्- ।                      । शर्मा० ।                      । सुर्मा० ।

### संठित + अर्द्ध स्वर

।- र + व्- ।                      । कर्वा ।                      । सर्वा ।

कुछ विशिष्ट व्यंजन जो क्षेत्रगत विशेषताओं से परियुक्त हैं।

।-प् + फ्- ।                      । कप्फन । बुलन्दशहर, बदायूँ, बरेली, इसे  
ही मुरादाबाद, रामपुर में मुसलमान  
।कफ़न । बोलते हैं। तथा देहात में ।

। कप्फन । ही बोला जाता है।

।-ड् + क्- ।                      । बुड् का । बुलन्दशहर में तथा दादरी, सिको  
सम्भल, जांवला, बिसौली कहीं २  
। बुद्धका । भी बोलते हैं।

।स् + प् ।                      । निस्पत । दादरी, सिको , गुलावटो,  
हापुड़ का वह भाग जो बुलन्दशहर की  
सीमा को स्पर्श करता है ।  
मुरादाबाद, रामपुर, बरेली में यहाँ  
शब्द । रिश्बत।के रूप में बोला जाता  
है।

।-स्-। ड्- ।                      । तस्दीक । बुलन्दशहर, सम्भल, रामपुर,  
बदायूँ कहीं २ इसका दूसरा रूप।  
।तस्तीक । भी बोला जाता है।

।- ह + प- । । सुल्पा ।

।- ह + फ- । । सुल्फा । सभी कीत्र में बोल जाते हैं।

### ४. २. ३ शब्द संपर्क से स्वरूपता तथा संधि

१- अन्त्य अघोष स्पर्श व्यंजन के परे सवर्ण या असवर्ण अघोष स्पर्श व्यंजन आए तो उसका भी अघोषीकरण हो जाता है। जैसे-

बहुत देर हो गई ७ बहुद्देर ७ ( मीदेर )

पाक गजी ७ पक्क गजी

हाथ दी ७ हाड् दी

२- यदि अन्त्य व्यंजन अघोष स्पर्श हो और परवर्ती व्यंजन अघोष हो तो अघोष व्यंजन का भी प्रायः अघोषीकरण हो जाता है।

लगकर ७ लक्कर

जगकर ७ जक्कर

सब पर है ७ सप्पर है

३- यदि अन्त्य स्पर्श व्यंजन के पूर्व अर्धानुनासिक रहता है तो अर्धानुनासिक सहित वह व्यंजन परवर्ती सवर्ण व्यंजन के साथ पूर्ण अनुनासिक के रूप में उच्चारित होता है। जैसे-

पहुंच जाओ ७ पहुँच्जाओ

तुम् सा ७ तुस्सा

सात से ७ सास्से

बाधा सेर ७ आस्सेर

८- वन्त्य त, थ, द, ध के परे च, छ, ज, झ और स आर्य  
ती त वर्ग के व्यंजनों के उच्चारण में पश्चिमी समीकरण की  
प्रक्रिया का आभास मिलता है और वे परवर्ती व्यंजन के स्वरूप सुनाई  
पड़ते हैं : जैसे

मत जावी ७ मज्जावी

बहुत से ७ भास्से

रतजा ७ रज्जा

सातजनम में ७ साज्जनम में

९- " त " के आगे ट, ड और ल के साथ भी संधि की ऐसी ही  
प्रवृत्ति पाई जाती है जैसे-

यहां से तुम मत टरो ७ मट्टरो

मत डाल ७ मड्डाल

१०- पुरोगामी प्रभाव के भी कुछ दृष्टान्त मिलते हैं :

पल रही है ७ पल्लई है

खोल रही है ७ खोल्लई है

मंगल कल ही है ७ मंगल कल्लई है

कर ली है ७ कल्लई है

सल लई ७ सल्लई ( सुधि लेना )

४- बदायूं की कन्नाड़ी से प्रभावित बोली में अन्त्य स्पर्श व्यंजनों का परवर्ती सवर्ण अनुनासिक 'न' या 'म' के साथ प्रायः द्वित्व अनुनासिक हो जाता है :

लीम मत करो    >    लीम् मत करो ।

५- अन्त्य 'र' के बाद यदि ड, ल, न या, ज, ही, तो उनकी संधि में भी पश्चगामी समीकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है। जैसे-

पार डाल    >    पाड़डाल  
लार डाल    >    लाड़ डाल  
कर लाओ    >    कल्लाओ

घर जाता है    >    घण्जल्ला है  
घरदओ    >    घदुदओ

६- बदायूं आदि गंगा पार की बोली में 'ड़' के बाद र और ल वाने पर या र के साथ ब वर्ग तथा ल वर्ग स्पर्शों की संधि में भी ऐसी ही प्रवृत्ति पाई जाती है। जैसे-

फोड़ ला    >    फोल्ला

जोड़ ला    >    जोल्ला

सडर बीरे    >    सडूरबीरे

७- सू का संघर्षीं अंश कभी कभी पूर्ववर्ती दन्त्य तथा वर्त्स व्यंजनों की आत्मसात् कर लेता है :

### ४. ३ अक्षर-निर्धारण

४. ३. ०

भाषा के उच्चारण प्रवाह में एक स्वर अथवा व्यंजन-युक्त स्वर का जो उच्चरित लण्ड स्पष्टतया पूर्ण प्रतीत होता है उसे अक्षर कहते हैं। "अक्षर" कौरा स्वर, स्वर तथा व्यंजन ई या अनुनासिकता सहित स्वर हो सकता है। "अक्षर" से तात्पर्य उस स्वन-समुदाय से लिया जाता है जो एक वाधात या फटके में उच्चरित होता है तथा जिसमें एक स्वर या स्वरवत् व्यंजन रहता है। उसी स्वर के पूर्वांग या परांग बनकर और व्यंजन रह सकते हैं। अक्षर का मरुदण्ड स्वर है। स्वर ही अक्षर का स्पन्दन घीणित करता है। नारदशिष्या के अनुसार व्यंजन किसी भी भाषा में मोतियों के तुल्य है जबकि अक्षर का निर्माण करने वाला तत्त्व स्वर उस डीरे के समान है जिसमें सभी मोती पिरोये रहते हैं। एक श्वासावात में भाषा की जितनी ध्वनियाँ सिमट कर इकाई बनाती हैं उस इकाई को अक्षर कहते हैं।

४. ३. १

विवेच्य क्षेत्र में निम्नलिखित आधारिक साँचे मिलते हैं :

( स्वर = अ तथा व्यंजन = ह )

साँचा । अ । ( दीर्घता के साथ ) = वा ( वाना क्रिया के अर्थ में )  
जैसे - वू वहाँ जाइके वा )  
( ई - थी ) " गुई सी बली गई "

= ई ( ई - य ह ) सर्वनाम - ई तो तेरी बड़ी  
मुंडी बात ए ।

= ऊ ( ऊ - वह ) ऊ तो तबई ग बी ।

= ए । ऐ ( ऐ - है ) गु अपने गाम जाइयौ ऐ )

= औ ( औ - था ) " गु औ औ रोयन्गी "

( कृनासिक्ता के साथ भी )

= वाँ ( स्वीकारोक्ति के अर्थ में - जैसे -  
वाँ हाँ में जाइ रहीऊँ ।

= ईँ

= ऊँ ( ऊँ - हूँ - जैसे - " याई ते में  
रोइ रहँ ऊँ । )

= एँ । ऐँ ( ऐँ - है ) ज जाइ रए ऐँ ।

= औँ -

सांचा -

।व ह । ( व्रस्व स्वर के साथ )

= अब

= इन

= उन

( दीर्घ स्वर के साथ )

= वाम , वाक ( एक पीन्ना )

= हित , हित ( एक कीड़ा विशेष )

= ऊब , ऊत ( ऊऊत - पितरों की कहते हैं)

= एब

= बीस, बीग ( छत में लगनेवाला लकड़ी का एक फाना )

( वसुनासिकता के साथ )

= वाँत

= ईट

= ऊँट

= ऐँच

= बीँग ( गाड़ी के पहियों में तेल बीर सनका बीँग लगाया जाता है )

साँचा ( वह ह )

कुछ वरबी- फारसी के

हश्क , जर्क

साँचा ( हव । ( ह्रस्व स्वर के साथ )

= न

= कि

= गु

( दीर्घ स्वर के साथ ) = ना, का

= पी , लो

= हू लू

= ल

= कै



= ती

= ली

( अनुनासिकता के साथ ) = ताँ

= लीँ

= वूँ

= धँ

= तँ

= चीँ

साँचा । ह व ह । ( ह्रस्व स्वर के साथ )

= चल , कर

= तिन

= रुक , चुक

( दीर्घ स्वर के साथ )

= बात , सात

= बीत

= दूध

= दैत

= बीत

( अनुनासिकता के साथ ) = साँकूँ

साँचा ( ह ह व ह ) इस साँचे में सीमित शब्दावली है

ह्रस्व स्वर के साथ

दीर्घ स्वर के साथ = ध्यार

सांचा ( ह व ह ह ) इस सांचे की शब्दावली अत्यधिक कम है , पर  
रामपुर, मुरादाबाद, बरेली में अरबी- फारसी  
प्रधान भाषा के कारण इस सांचे के शब्दों का  
आधिक्य है । जैसे -

गश्त , मस्त  
लोक भाषा में भी इस सांचे के शब्द हैं- जैसे  
बल्त

४. ४. २

द्वयदारी सांचों में सभी प्रकार के सांचे मिलते हैं।  
विशेषता यह है कि इस्व स्वरान्त सांचे भी मिलते  
हैं।

४. ३. २

जाह, देह , पीह  
करि, मौलि, रोह, दलि  
एकु

दीर्घ स्वरान्त

बच्चा  
कई , बाकी , रह

सादू , कोऊ

वाके

करी

रीखी

अनुनासिकता के साथ -

मीहूँ , गीहूँ  
तोरें , नारें

## ४.४ बलाघात तथा संगम

### ४.४.१ बलाघात

४.४.१.० संसार की कदाचित् कोई भाषा भले ही ऐसी हो जिसमें बलाघात की स्थिति न हो, परन्तु प्रायः सभी भाषाओं में बलाघात पाया जाता है। यह बात दूसरी है कि प्रत्येक भाषा के उच्चारों की कड़ी में वाघानों की भिन्नता मिलती हो। प्रायः ऐसा देखा गया है कि प्रत्येक भाषा में सभी अक्षरों में वाघान समान रूप से नहीं पड़ता, परन्तु कल्पित अपवादों को छोड़कर प्रत्येक भाषा में वाघानों की भिन्नताएँ इस प्रकार संयोजित नहीं होती कि उच्चारों में व्यतिरेक उत्पन्न कर सकें।

साधारणतया बलाघात वक्ता के बोलने पर अधिक निर्भर करता है। कभी कभी हम किसी वाक्य अथवा शब्द को जोर देकर बोलते हैं। कभी किसी वाक्य अथवा शब्द पर बल न देकर केवल किसी अक्षर पर ही बल लगाकर बोलते हैं। इसी कारण वक्ता और श्रोता दोनों में ताल मेल नहीं बैठ पाता - जैसे "बतासालि"। इसी वाक्य को लें तो हम देखते हैं कि यदि हम "बता" के ऊपर बल लगाएँ तो श्रोता क्या समझेगा ? यहाँ तक कि इसे सुनकर लड़ने-फगड़ने को प्रस्तुत हो जायेगा।

बलाघात का सीधा सम्बन्ध अक्षर से है। यही कारण है कि एक ही शब्द द्वितीय बोलियों में अनेक उच्चारण धारण करता है जैसे - मयी, मयी, मयी और मयी आदि में स्पष्ट देखा जा सकता है यद्यपि इनमें बलाघात का सीधा सम्बन्ध नहीं है क्योंकि इनमें- ओ, ऑ, औ स्वनिमों की ही क्रामात है।

#### ४. ४. १. १

प्रायः यह देखा गया है कि अधिकशतः पहले वकार पर बलाघात पड़ता है। जैसे- काला , काट्- ना , नीली वादि का , काट्- नी पर अधिक बल होने के कारण इन शब्दों का प्रथम स्वर तो दीर्घ है, परन्तु ला , ना , ली वादि के स्वरों में बलाघात हीनता के कारण बहुत कम दीर्घता होगई है।

#### ४. ४. १. २

वकार के उपान्त्य स्वर पर बलाघात न होने के कारण अन्तिम स्वर का प्रायः लोप पाया जाता है। जैसे- राम्, चल् वादि ।

#### ४. ४. १. ३ बलाघात और मात्रा-

वकार से भी बलाघात का सीधा सम्बन्ध है। बलाघात वकार पर पड़ता है। स्वर मात्रानुसार इस्व और दीर्घ हो सकते हैं। बलाघात युक्त होने पर भी दीर्घ स्वर में और भी दीर्घता आ जाती है। दूसरी ओर बलाघात हीन होने दीर्घ स्वर भी कम दीर्घ हो जाता है।

सामान्य वाक्य - मूल ब्रूक लेनी देनी

बलाघात युक्त वाक्य - उस मूल का दण्ड तो मिलेगा ही

दूसरे वाक्य के " मूल " का " ऊ " अपेक्षाकृत अधिक दीर्घता लिए हुए है और साथ में अधिक दृढ़ता भी ।

#### बलाघात और दीर्घ व्यंजन-

कभी कभी स्वर के पड़ोसी व्यंजन पर भी बलाघात

पढ़ जाता है जैसे - 'धम्' से जा पढ़ा '। 'धम्' पर बलाघात होने से 'धम्म' उच्चारण होता है।

कौरवी बोली में द्वित्व की प्रकृति मुख्य कारण बलाघात ही है।

#### ४. ४. १. ४

अन्तिमाक्षर का स्वर यदि दीर्घ हो और प्रथम अक्षर का स्वर यदि ह्रस्व हो, तो बलाघात अन्तिमाक्षर पर पड़ता है।  
यथा - बारिश, किसान, बहच हाना ।

इस नियम का अपवाद भी हो सकता है। यदि शब्द में दो स्वरों के बीच में व्यंजन गुच्छ हो तो बलाघात प्रथम अक्षर पर ही पड़ता है चाहे प्रथम अक्षर का स्वर ह्रस्व और अन्तिमाक्षर का स्वर दीर्घ हो । यथा-

जैसे- पत्ता, तस्मा, परमेश्वर, विद्या ।

४. ४. १. ५ यदि दोनों अक्षरों के स्वर दीर्घ हों तो बलाघात प्रथम अक्षर पर पड़ता है ?

लौंटा, हाथी, आगा, पीका

#### ४. ४. १. ६

बलाघात के कारण किसी व्यंजन की जहाँ दीर्घता हो जाती है वहाँ लोप भी हो जाता है।

मास्टर साहब = माट् साब, मास्साव्

हाबटर साहब = डाक् साब

इस प्रकार बोलियों में बलाघात प्रायः मिलता है। पश्चिमी बोलियों में अधिक और पूर्वी बोलियों में कम होता है।

### ४. ४. २ संगम

#### ४. ४. २. ०

बोलने में एक ध्वनि के बाद दूसरी ध्वनि आती जाती है। कुछ ध्वनियाँ बिल्कुल एक-दूसरे के समीप आती हैं, कुछ ध्वनियों के मध्य स्थान कुछ समय के लिए रिक्त रहता है। एक प्रकार से वाक्य के अन्त में विराम, वाक्यांशों के मध्य अल्प विराम, शब्दों के मध्य अल्पतर विराम और शब्दों के मध्य में भी अक्षरों के बीच अल्पतर विराम रहता है, वस्तुतः उपर्युक्त स्थान पर विराम की विभिन्न स्थितियों का विवेचन ही "संगम" के अन्तर्गत आता है।

जब दो पद या शब्द समीप आते हैं तो पहले पद या शब्द का अन्त्य भाग और द्वितीय पद या शब्द का आदि भाग जुट जाता है। यह मिलन की अवस्था ही संगम-स्थिति है। यह संगमावस्था निम्नलिखित दो स्थितियों में रह सकती है :

१- संधि स्थिति

२- संक्रमण स्थिति

पहली स्थिति में तो ध्वनियों में हेर-फेर अथवा परिवर्तन संभव होता है, जिसका विवरण ४. २. ३. २ में दिया जा चुका है। द्वितीय स्थिति में कोई ध्वन्यात्मक परिवर्तन नहीं होता। संगम की सीमा बिन्दु भी कह सकते हैं।

### संगम-

१- उसे रीफ मत, जान्दे = उसे मत रीफो जाने दो

उसे रीफ, मत जान्दे = उसे रीफ लो मत जाने दो

२- बर्ध विराम या कोमा - संगम

साट नीच्चे गेर दे = साट को नीचे गिरा दे

साट नीच्चे, गेर दे = साट के नीचे गिरादे

फड़ो, मत लिखो = फड़ो लिखो मत

फड़ो मत, लिखो = लिख लो फड़ो मत

३- आन्तरिक संगम

बन्- ना = शैली मारना ( बड़ा बनना है )

बन्ना = दुल्हा

चुन् - ना = चुनना

चुन्ना = चुना को ही दादरी, सिकन्दराबाद, स्याना, हाफुड में " चुन्ना " बोलते हैं वैसे चुन्ना नाम भी रखते हैं।

धुन् - ना = धुन लगना

धुन्ना = देखा रखने वाला

#### ४- वायु संगम-

|         |   |                                                                                                  |
|---------|---|--------------------------------------------------------------------------------------------------|
| हो - ली | = | समाप्त होगई                                                                                      |
| होली    | = | त्यौहार                                                                                          |
| हो- ली  | = | हो चुके                                                                                          |
| होली    | = | जानवरों के बांधों का स्थान                                                                       |
| टो- ली  | = | टोटली ( दादरी वादि में उच्चारण)<br>उठा को केवल " ठा " उसी तरह टोह<br>का केवल " टो " रह जाता है । |
| टोली    | = | ग्रुप                                                                                            |
| पोस- ली | = | ( रोट्टी ) पीकर समाप्त कर लीं                                                                    |
| पोली    | = | साली                                                                                             |
| को - ली | = | कौन ली है                                                                                        |
| कोली    | = | जुलाहा ( हिन्दू- कोरिया )                                                                        |
| सू - ली | = | तैने लेली                                                                                        |
| बूली    | = | सीस की बूली                                                                                      |
| पा - ली | = | प्राप्त कर ली                                                                                    |
| पाली    | = | एक गाँव का नाम तथा पारी<br>वार के लिए भी कहते हैं।                                               |



|             |   |                                                                           |
|-------------|---|---------------------------------------------------------------------------|
| ठों - ली    | = | किसी वस्तु का उठाना<br>प्रयोग - गाजियाबाद, दाबरी,<br>सिकन्द्राबाद आदि में |
| ठाली        | = | बेकार                                                                     |
| सा- ली      | = | मैं रौंटी साली                                                            |
| साली        | = | रिक्त                                                                     |
| सी - ली     | = | नेकर सी ली                                                                |
| सीली        | = | मींगी हुई                                                                 |
| सा - ली     | = | सालना क्रिया                                                              |
| साली        | = | पत्नी की बहन                                                              |
| धन दो       | = | धसा दो                                                                    |
| धन्दो       | = | धधा                                                                       |
| बतासा, ले   | = | बतासों को ले ले                                                           |
| बना, साले   | = | साले बनावो                                                                |
| बाजू बावैगो | = | ( वह ) बाज बावैगा                                                         |
| बाजावैगो    | = | ( वह ) बाजावैगा                                                           |
| वह चलावै ओ  | = | वह चलाता था                                                               |
| वह चल आवै ओ | = | वह चलकर आवै था                                                            |

पीली = पीले रंग की

पीली = संयुक्त क्रिया

सिरका = एक पदार्थ

सिर का = सिर से सम्बन्धित

सहित = साथ

सहित = हित के साथ

मूंग । फली = दो भिन्न भिन्न पदार्थ

मूंग-फली = एक समस्त शब्द

गुलाब-जामुन = फूल और फल विशेष

गुलाब-जामुन = एक मिठाई विशेष

जल - पान = जल पीना

जलपान = नाशना

लाल । पीला = दो अलग - अलग रंग

लाल-पीला = गुस्से होना ( मदावरा )

## ४. ५ विदेशी शब्दों में स्वन- परिवर्तन ( ध्वनि परिवर्तन )

### ४. ५. ०

हिन्दी में अपनी प्रकृति और प्रवृत्ति के अनुसार विदेशी शब्दों को आत्मसात् करने की क्षमता है। हिन्दी ही क्या विश्व की सभी भाषाएँ विदेशी स्वरों को अपनी निजी प्रकृति तथा प्रवृत्ति के अनुसार ग्रहीत कर उच्चरित करती हैं। विदेशी आगत शब्दों के स्वरों में प्रायः कुछ न कुछ परिवर्तन मिलते हैं। यह परिवर्तन- प्रक्रिया भाषा के विभिन्न स्तरों पर होती है : जैसे - स्वन, स्वन प्रक्रिया, रूप स्वनिमात्मक तथा शब्द स्तर पर ।

विदेशी भाषा के सभी स्वन अपनी भाषा में मिल जायें, यह लगभग असम्भव है। कुछ स्वन मिल जाते हैं और कुछ नहीं मिलते । अतएव प्रत्येक विदेशी भाषा से आगत शब्दों में किसी न किसी मात्रा में परिवर्तन हो ही जाता है।

### ४. ५. १ फारसी- अरबी शब्दों में स्वन- परिवर्तन

हिन्दी में सबसे अधिक विदेशी शब्द फारसी अरबी के हैं, भारतीय इतिहास के मध्यकाल में ऐसे विदेशियों का राज्य था जिनकी शासनिक भाषा फारसी थी ।

कभी कुछ दिन पहले तक बहुत बड़ी संख्या में फारसी दाँ मिलते थे उसका कारण इतना दीर्घकालीन, बहुमुखी और गंभीर संर्क ।

भारतेन्दु काल से पूर्व हिन्दी साहित्य में अरबी-फारसी शब्दों के प्रचलित बोलचाल के रूप प्रयुक्त होते थे । बाद में मूल के या कम से कम उर्दू के निकट उच्चारण रखने की चेष्टा की जाती रही है।

अरबी फारसी के अनेक भिन्न स्वनिम हिन्दी में आकर कम होगये। जैसे अरबी-फारसी के । ज़े । । ज़ाल । । ज़ाद । और [ जोय । हिन्दी में केवल । ज । रह गए । [ से । और । स्वाब । हिन्दी में आकर । स । रह गए । तोय । त । का सा होगया । ० । काफ़ । । क । की तरह और । हे । का । ह । की तरह उच्चारण होने लगा । । ऐन । व्यंजन का उच्चारण । व । स्वर की तरह हो गया । हमजा ( व्यंजन ) का उच्चारण भी नष्ट होगया । । क़ । । ख़ । । ग़ । । ज़ । । फ़ । हिन्दी की उपभाषा में बोलियों में क्रमशः । क । । ख़ । । ग़ । । ज़ । । फ़ । हो गए हैं। अर्थ में भेद के कारण कुछ स्वरों को पृथक् स्वनिम स्वीकार कर लिया गया है। । क़ । स्वन को अरबी माना गया है तथा फारसी में भी इसका अरबी उच्चारण प्रचलित नहीं हो सका । हिन्दी और उसकी बोलियों की तो बात ही क्या है। इसलिए पश्चिमी प्रदेश में लोग इसे । क़ । ही बोलते हैं परन्तु पूर्वी प्रदेश में । क़ । उच्चारण कायस्थ जातिवर्गों में ही यत्किंचित् दृष्टिगोचर होता है और अब तो इसका प्रयोग धीरे धीरे कम होता जा रहा है।

डा० हरदेव बाहरी का विचार है कि शिष्ट भाषा में ग्राम्य प्रयोग अपनाने की आवश्यकता नहीं है, वे लिखते हैं कि ' हिन्दी में यह एक विचित्र स्थिति है कि संस्कृत के शब्दों का उच्चारण तो शुद्ध रखने की चेष्टा रहती है किन्तु अरबी फारसी या अँग्रेजी के शब्दों के

उच्चारण को जनमानस के हिन्दी कृत रूप के निकट रखने का वाग्रह रहता है।

अरबी- फारसी के स्वर प्रायः सुरक्षित हैं, परन्तु लिखाई में चिह्नों का प्रयोग कड़ाई सेन होने के कारण कुछ शब्दों में हेर- फेर हो गया है। जैसे-

| फारसी    | हिन्दी |
|----------|--------|
| नमाज     | निमाज  |
| मसजिद    | मसला   |
| मुवाफिक् | माफिक  |

संयुक्त व्यंजनों को स्वर भक्ति लाकर सरल किया- जैसे- क़दर > कदर, हुबम > हबुम

वन्त्य । हा । का । वा । हो गया जैसे

तफ़ादह > तगादा

किनारह् > किनारा

स्वराधानुबन्ध अक्षर का । ह । सुरक्षित रहा जैसे-

दरगाह, मल्लाह, राह

ग्रामीण बोलियों में । व । का । ब ।, । य । का । ज । और । श । का । स । मिलता है। शुद्ध उच्चारण का प्रयोग शिक्षित लोग कर लें हैं।

कुछ अरबी फारसी शब्दावली नीचे दी जा रही है :

| अरबी- फारसी | हिन्दी |
|-------------|--------|
| कागज        | कागद   |
| मजदूर       | मजूर   |
| नक़द        | नगद १  |
| वकील        | उकील   |
| दारखास्त    | दरखास  |
| नज़दीक      | नज़ीम  |
| मुवाफ़्फ़ी  | माफ़ी  |

उपर्युक्त विविध कानों के पश्चात् निष्कर्ष रूप में हम अपने विविध क्षेत्रों को तीन भागों में विभक्त कर तथा उसमें सदैव से व्यवहृत होती जा रही अरबी- फारसी शब्दावली के आधार पर अध्ययन प्रस्तुत कर सकते हैं।

१- रामपुर , मुरादाबाद दोनों ही मुस्लिम जनसंख्या बहुत क्षेत्र हैं जिसमें रामपुर तो मुसलमानों का गढ़ कहा जाता है।

२- दूसरा क्षेत्र बदायूँ, बरेली का है जहाँ मुसलमानों की कम संख्या है। शहरों और कस्बों में मुसलमान अधिक पाए जाते हैं।

१- नक़द से नगद उसी प्रकार हिन्दी में भी क > ग में परिवर्तित हो जाता है जैसे - प्रकट > प्रगट ।

३- तीसरा क्षेत्र बुलन्दशहर का है। यहाँ भी तालसानी और आमानी नबावों की झोटी अनेक रियासतें या जमींदारियाँ रही हैं जिसके कारण मुस्लिमों की संख्या विशेषकर कस्बों में अधिक रही है परंतु गाँवों में हिन्दुओं की ही जनसंख्या अधिक रही है।

१- इसी आधार पर शब्दावली भी तीन भागों में विभक्त की जा सकती है। रामपुर तथा मुरादाबाद की तहसील सम्मिल में अधिकशितः शुद्ध अरबी-फारसी शब्दावली बोली जाती है तथा दूसरे क्षेत्र बदायूँ-बिसौली आदि में रामपुर जैसा उच्चारण नहीं होता। ग्रामीण मुसलमान जो गाँवों में निवास करते उन पर ब्रज तथा कन्नौजी का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

तीसरे क्षेत्र बुलन्दशहर में शहरों और कस्बों में रहने वाले मुसलमान स्त्री और पुरुष दोनों ही शुद्ध शब्दावली बोलने की चेष्टा करते हैं, परन्तु रामपुर के लोगों के समान उच्चारण नहीं कर पाते हैं।

इन तीनों ही क्षेत्रों में हिन्दू और मुसलमानों के पारस्परिक संसर्ग से गाँवों में ब्रज तथा लड़ी बोली और पूर्वी क्षेत्र (बदायूँ बरेली) में ब्रज और कन्नौजी मिश्रित शब्दावली का प्रयोग होता है।

विविध क्षेत्र की बोलियों में अ, इ, उ स्वरों के साथ बड़ी संख्या में गृहीत हुई हैं। साधारणतः उसमें व्यसृत शब्दावली के जब व्यंजन गुच्छ लोड़ दिए जाते हैं तो एकाकारिक शब्द द्वयाकारिक बन जाते हैं और ऐसे शब्द हैं जो प्रत्येक स्थान पर उसी रूप में चलते हैं जैसे-

१- फस्त और हिन्दी (फ-सत)

नम्र

न-जर

जह्

ज- हर

हज्म

ह- जम

हल्क

ह- लक्

गुस्त्

गु- सल

२- दूसरी कोटि में वे शब्द लिए जाते हैं जो दो प्रकार से उच्चारित होते हैं- एक ही व्यक्ति एक साधारण ग्रामीण से बात करने समय इनका द्रयाकारिक उच्चारण करता है और किसी सभ्रान्त व्यक्ति से बात करने समय व्यंजन, गुच्छ-युक्त एकाकारिक उच्चारण करता है । जैसे-

वक्ल्

व-कल्

वर्क्

व- रक्

वर्द्

व- रद्

वर्क्

व- रक्

हुवम्

हु-कम्

तल्म्

त- सल्

गम्

थ- रम्

रस्म्

र- सम्

वर्द्

क- दद्



३- तीसरा वर्ग ऐसे शब्दों का है जो शिद्दात और वशिद्दात दोनों में एक से ही उच्चरित होते हैं। जैसे - मस्त, चुस्त, हुस्न, रुद, शत, गश्त, कंद, पर्वद, रंग, जंग, तंग, जिन्स आदि।

इन शब्दों को कहीं भी चु-सत, म-सत्, ग-शत, जि-नस, जि-तद, जैसा उच्चारण करते नहीं सुना गया है।

इस प्रकार विविध क्षेत्र में अरबी-फारसी की पर्याप्त शब्दावली प्रयुक्त होती है।

### ४. ५. २ अंग्रेजी-

१- अंग्रेजी में कुछ स्वरनिम ऐसे हैं जिनसे हिन्दी स्वरनिमों का मेल खाता है तथा कुछ ऐसे स्वरनिम हैं जो हिन्दी में नहीं मिल पाते । हिन्दी से मेल खाने वाले स्वन निम्नलिखित हैं :

प, ब, क, ग, च, ज, म, न, ल, र, स,

य, व

यद्यपि इन स्वरों को स्थान, प्रयत्न और विधि में यथानुसूल परिवर्तन करके आर हुर शब्दों को बोला जाता है।

२- अंग्रेजी और हिन्दी में असमान स्वन होने पर अंग्रेजी स्वरों को हिन्दी के क्रमागत स्वरों में निकटतम स्वन से उच्चरित किया जाता है।

संघर्षी स्वन- हिन्दी में केवल दो क्रमागत संघर्षी "स" "ह" हैं।

१- ( फ ) अंग्रेजी का दन्त्योक्त अधोण संघर्षी है जिसका अंग्रेजी फेड लिख लोग शुद्ध उच्चारण कर लेते हैं। यह स्वन तो फारसी माध्यम से पहले ही आ चुका था । असावधानी में कम फेड लिख लोग द्वयोष्प्य महाप्राण स्पर्श ( फ ) से उच्चरित करते हैं जैसे - फीस

२- ( व ) अंग्रेजी के वी और डब्लू हिन्दी में केवल व ही रह गए हैं। जैसे - वोट

३- (ज) इस संघर्षी स्वन का आगम तो फारसी से आगम शब्दों में पहले ही से आगया था। इसके लिए अंग्रेजी स्वन ( ) जेड है। कम पढ़े लिखे लोग इसका उच्चारण 'ज' की तरह ही करते हैं जैसे 'जर्जन' 'लेजर' आदि।

४- 'ब' (ह) अंग्रेजी में यह व्योम संघर्षी है। हिन्दी में यह संघोम संघर्षी है इसलिए लोग इसे व्योम से संघोम करके बोलते हैं। जैसे -

हैट, होटल

३- स्पर्शी स्वन- 'टी' अंग्रेजी में यह वन्सूय जिह्वानोकीय स्पर्श ध्वनि है। हिन्दी में इसके स्थान पर 'त' 'ट' दोनों प्रकार के उच्चारण मिलते हैं।

केतली - कैटली, कोट, कप्पान

ड (डि) (ड) इसका भी ह उ का सा उच्चारण मिलता है जैसे नर्जन, गोदाम, ड्राम।

ग्रामीणों की बोली में और भी प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है जिसका परिपरनिगृह्य हिन्दी में प्रवलन नहीं है :

जैसे - समीकरण - कलट्टर (कलेक्टर)

विषय - सिगल (सिगनल)

लम्बर (नम्बर)

लम्बर से - लम्बरदार शब्द (नम्बरदार) के स्थान पर शिकारपुर के पास अधिक चलता है। क्योंकि वहाँ कूटे कूटे बहुत से जमींदार रहे हैं और यह शब्द भी अधिकतर उन्हीं के वातावरण में अधिक चल सकता है।

### ऋजो स्वर-

जिस प्रकार व्यंजनों में बहुत कुछ ऋजो स्वरों के उच्चारण का बहुत कुछ अनुसरण किया है। वहाँ स्वरों में ऐसा नहीं है। ऋजो में स्वरों की संख्या भी तो २१ है। इसलिए हिन्दी में समान स्वरों का अभाव है। ऋजो से वागत स्वरों में स्वन परिवर्तन के कुछ प्रकार नोबे दिए जा रहे हैं।

१- सादृश्य : जनरल ( जर्नल ) गिन्नी ( गिनी )

रसीद ( रिसीट )

२- निजी शब्दों का बिम्ब वागत शब्दों में पाया जाना है। ~~ज~~

लालटेन ( लैंटर्न )

लैम्ब्रस ( लाइम्ब्रस )

कमान ( कमांड )

३- निजी स्वनियात्मक प्रवृत्तियों के कारण । जैसे-

इस्कूल , इस्टेशन , गिलास ( ग्लास )

कपेटी ( कमिटी ) ।

अध्याय : पांच

शब्द-समूह तथा शब्द-संरचना

शब्द :

रूप-विज्ञान की दृष्टि से शब्द 'लघुतम मुक्त रूप' <sup>१</sup> ब्लास के अनुसार 'अविभाजित मुक्त रूप ही शब्द है। ' 'मे' के अनुसार किसी निश्चित व्याकरणिक प्रयोग के लिए निश्चित ध्वनियाँ का संयोजन ही शब्द है जिससे निश्चित अर्थ की प्राप्ति होती है। और अर्थ के स्तर पर शब्द की माणा की लघुतम स्वतन्त्र इकाई कहा जाता है। यहाँ पर अपने विवेच्य दीत्र ( ब्रज तथा लड़ी बोली के संधिस्थलीय दीत्र ) के सामान्य तथा विशिष्ट शब्द-समूह का ही अध्ययन प्रस्तुत करना है, जिससे उस विस्तृत दीत्र की बोलीगत समस्त विशेषताएँ, जो उसकी शब्दावली में सहज रूप से समयानुसार समाहित होती रहती हैं, स्पष्ट हो सकें। दोनों बोलियों की सामान्य शब्दावली एक-सी है, केवल दीत्रीय वाधार पर 'आकारान्त' 'आकारान्त' तथा 'आकारान्त' का अन्तर है। 'हकार' की स्थिति और उसका शब्दों के मध्य तथा अन्त में लोप भी दीत्रीय वाधार पर आश्रित है। दोनों बोलियों की इस सम्मिश्रण प्रक्रिया में कतिपय नवीनताओं एवं विशेषताओं के दर्शन अवश्य होते हैं, जिसे सहज रूप में वाँका जा सकता है। किसी भी बोली में शब्द-समूह का अध्ययन करने पर यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि उसके अन्तर्गत उसकी स्वतः की अर्जित शब्द-संपत्ति किस अनुपात से है। तथा वंश परंपरा से विरासत में मिली शब्द संपत्ति प्राप्त

1. A free from which can not be divided entirely into smaller free forms is minimum free form, or word.  
-Bloch & Trager- Outline of Linguistic Analysis-1942p54
2. \* A word is the result of the association of a given meaning with a given combination of sounds, capable of a given grammatical use. "

हुई है और वह बोली दूसरी की किस सीमा तक कृणी है। शब्दों के प्रकार एवं विभाजन के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद नहीं मिलता है।

#### ५. १ शब्द समूह-

#### ५. १. ० शब्द समूह-

स्व० कामता प्रसाद गुरु शब्द-समूह को पांच प्रकार का मानते हैं। १- तत्सम २- तद्भव ३- कई तत्सम ४- देशज और अनुकरण-वाचक ५- विदेशी ।

डा० धीरेन्द्र वर्मा जी ने उक्त पांच भेदों को तीन श्रेणियों में विभक्त कर दिया है :- (क) भारतीय कार्य भाषाओं का शब्द समूह (ख) भारतीय कार्य भाषाओं से आए हुए शब्द (ग) देशी विदेशी भाषाओं के शब्द । उक्त दोनों विद्वानों में मूलतः कोई अन्तर नहीं है श्री गुरु जी जिस शब्द समूह को "देशज" नाम देते हैं उसे डा० वर्मा जी "देशी" नाम से अभिहित करते हैं। डा० उदय नारायण तिवारी भी उक्त मत से सहमत हैं। डा० बाबूराम सक्सेना ने भिन्न नामकरण किया है :- १- तत्सम २- तद्भव ३- देशी ४- विदेशी ५- देशज ।

डा० सक्सेना ने "देशी और "देशज" शब्दों में पर्याप्त अन्तर माना है। डा० अम्बा प्रसाद सुमन ने "वर्द्धतत्सम" को

१- गुरु, कामता प्रसाद - हिन्दी व्याकरण सं० २०१७ पृ० २३- २५

२- वर्मा, धीरेन्द्र, हिन्दी भाषा का इतिहास, १९४६ ई० पृ० ६८-७४

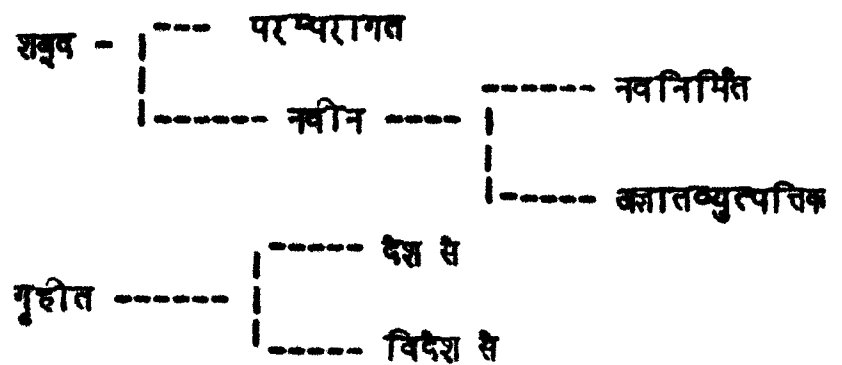
३- तिवारी, उदय नारायण, हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास पृ० २०६

४- सक्सेना, बाबूराम- सामान्य भाषा विज्ञान, सं० पंचम पृ० १२६

स्वीकार न करते हुए लिखा है " वास्तव में देखा जाय तो शब्द-समूह के प्रकारों में " कई तत्सम " को नहीं लेना चाहिए । जो तत्सम से वागे विकसित अवस्था की ओर बढ़ गया, वह तद्भव ही बन गया । जो वस्तु शुद्ध नहीं है, वह कृद ही है। उसमें थोड़ा कृद और बहुत कृद का भेद करके नामकरण ठीक नहीं ।

वाचार्य किशोरीदास वाजपेयी जी भी हिन्दी शब्द-समूह के वर्गीकरण में " कई तत्सम " जैसा शब्द-समूह-वर्ग नहीं मानते<sup>२</sup> ।

डा० भीलानाथ तिवारी ने शब्द समूह का वर्गीकरण इस प्रकार से किया है<sup>३</sup> :



#### (क) परम्परागत-

हिन्दी के परम्परागत शब्द वे हैं, जो उसे अपभ्रंश से उसके जन्म के समय मिले ।

#### (ख) नवीन-

जो जन्म के बाद उसमें आते हैं, वे तीनों प्रकार के हो सकते हैं :-

१- नवनिर्मित- जो दो या अधिक शब्दों के योग-

१- सुमन, अम्बा प्रसाद- हिन्दी भाषा का शब्द समूह और कुछ तत्सम शब्द- सप्त सिन्धु- अक्टूबर १९६३ पृ० १६-२७

२- तिवारी, भीलानाथ, हिन्दी भाषा - प्रथम सं० पृ० २७३- २७४



( रलगाड़ी मासगाड़ी ) से । उपसर्ग- प्रत्यय वादि जोड़ कर या ध्वनि ( मड़मड़ाना ) एवं दृश्य ( चमचम ) वादि के वाधार पर नर बनाए जाने वाले शब्द ।

२- देशज- जो देश में उत्पन्न होते हैं। इन्हें ज्ञात-व्युत्पत्तिक कहा जाना चाहिए । शुद्ध देशज शब्द किसी भी भाषा में बहुत ही कम होते हैं।

३- गृहीत या- वागत - जो दूसरी भाषाओं से लिए जाते हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार वपन विवेच्य ढीत्र की ढीली के शब्द- समूह का वर्गीकरण निम्नलिखित ढंग से किया जा सकता है।-

- १- तत्सम
- २- तद्भव
- ३- देशज
- ४- विदेशी
- ५- स्थानीय

#### ५. १. १ तत्सम-

प्रस्तुत ढीत्र इतना विशाल है कि उसमें नाना जातियों, उपजातियों का निवास है तथा उनके रीति रिवाजों में भी पर्याप्त भेद मिलते हैं। वस्तुतः संस्कृत तत्सम शब्दों का वस्तुस्थ प्रयोग दृष्टिगत होता है। ऐसे शब्दों की संख्या भी कम है। लोक कहानियाँ तथा लोक नीतों में भी संस्कृत तत्सम शब्दों का प्रयोग कम ही मिलता है ( परमात्मा, महात्मा, अन्यायी

विदेशी शब्द कहा जाता है। साधारणतः विदेशी भाषाओं के शब्द गृहीत भाषा में उसकी प्रकृति के अनुसार ढस जाते हैं। बहुत कम शब्द अपने मूल रूप में बोलि जाते हैं। इस सम्बन्ध में डा० माटिया का मत द्रष्टव्य है :-

“ इस प्रकार के शब्द किसी विदेशी भाषा के साहित्य के विभिन्न रूपों व कीशों के माध्यम से नहीं जाते वरन् वे सीधे उस भाषा के बक्ता के भाषाण से लिख जाते हैं और इस प्रकार उनका प्रयोग भी पहले जनसाधारण मौखिक रूप से अपने प्रतिदिन के वार्तालाप में करता है और जब उनमें से कुछ शब्द बहुत अधिक प्रयुक्त होने लगते हैं तो उनका प्रयोग साहित्य में भी होने लगता है और ये शब्द विदेशी शब्द के नाम से अपने मूल ( तत्सम ) अथवा तद्भव रूप में कीश में भी सम्मिलित कर लिए जाते हैं। ये शब्द किसी न किसी रूप में एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रवेश कर लेते हैं अतएव इन शब्दों के लिए “ वागत शब्द ” सम्यक् प्रतीत होता है। ”

के० एल० पाह्लू ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए विदेशी भाषाओं से लिए गए शब्दों के सम्बन्ध में लिखा है :

“ वागत शब्द किसी दूसरी भाषा से लिए हुए वे शब्द होते हैं, जो उस भाषा के बोलने वालों के भाषाण से लिए जाते हैं और उन शब्दों को मूल ( तत्सम् ) रूप में भी ग्रहण किया जाता है और परिवर्तित ( तद्भव ) रूप में भी । संक्षेप में हम कह सकते हैं कि “ वागत शब्द ” किसी दूसरी भाषा से लेकर हम अपने व्यवहार में लाते हैं। ”

विदेशी शब्दों का आगम, एक देश के सांस्कृतिक प्रभाव का दूसरे देश की संस्कृति पर पड़ने के कारण भी होता है दोनों

- १- माटिया, कैलाशचन्द्र- हिन्दी में अंग्रेजी के आगत शब्दों का भाषा तात्विक अध्ययन - १९६७ - हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद पृ० ३१
- २- पाह्लू, के० एल० - फोनेमिक्स- १९५६ पृ० २४२

में शब्दों स्व शब्दावली का वादान- प्रदान अनजाने ही चलता रहता है तथा इस प्रकार की गृहीत शब्दावली उस देश की संस्कृति, वाचार विचार, रीति नीति सभी में समाहित हो जाती है, तथा ऐसी स्थिति में उन आए हुए शब्द निकाल देना नितान्त असम्भव सा हो जाता है। विवेच्य क्षेत्र की बोली में विदेशी शब्दों की संख्या अधिक पायी जाती है। मुसलमानों के अधिक लम्बे समय तक चलने वाले शासन के कारण तत्कालीन बोलचाल के रूप में फारसी और उसके माध्यम से अरबी की शब्दावली काफी संख्या में मिलती है। वे शब्द हमारे जन मानस में फिर इस प्रकार घुल मिल गए हैं कि उन्हें विशेषतया ग्रामीण अशिष्ट व्यक्ति को विदेशीय भी नहीं लगता है। अरबी, तुर्की, तातारी आदि की शब्दावली अधिकतर सीधी न बाकर फारसी के माध्यम से ही हिन्दी बोलियों में प्रविष्ट हुई है। सर्वप्रथम फारसी का प्रभाव दिल्ली के आस पास के क्षेत्रों पर अधिक पड़ा और हमारे विवेच्य क्षेत्र का अधिकांश भाग, भी उसी क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। अंग्रेजी शासन में भी 'रामपुर' एक मुस्लिम स्टेट बनी रही अतः उसके निकटवर्ती जिलों में भी मुस्लिम आबादी का अधिक पाया जाना स्वाभाविक है। फलतः बुलन्दशहर, मेरठ, मुरादाबाद, बदायूँ, बरेली रामपुर में मुसलमान अधिक संख्या में बसते हैं। यही कारण है कि यहाँ की शब्दावली में फारसी के शब्दों की संख्या अधिक मिलती है अपने सर्वेक्षण के आधार पर एक बात यही दृष्टिगोचर हुई कि जो मुसलमान गाँवों में भी रहते हैं उनकी भाषा भी इस प्रकार की शब्दावली से वाक्यान्त रहती है।

मुस्लिम शासन और अंग्रेजी शासन के मध्य पुर्णगाली शब्दावली गृहीत की गई, इधर पिछले १००- १५० वर्षों से अंग्रेजी शब्द

### ५. १. ३ देशज-

डा० बाबूराम सक्सेना<sup>१</sup> के अनुसार "देशज" उन शब्दों को कहा जा सकता है जो आधुनिक समय की बोलचाल में स्वतः विकसित हुए हैं जैसे फड़, गड़गड़, ठंडाई आदि। डा० हरदेव बाहरी "देशज" शब्दों को ही देशी नाम से अभिहित करते हुए लिखते हैं- "देशी वे शब्द हैं जिन्हें जनसाधारण किसी ध्वनि जल्दा व्यापार की दस सुनकर सहज या मनीषैज्ञानिक प्रतिक्रिया के रूप में अन्तः प्रेरणा से अभिव्यक्त करते हैं। ऐसे शब्दों की परम्परा न कार्य है, न कार्यतर वीर न विदेशी, बल्कि शुद्ध देशी है "फटफट" करती हुई गाड़ी को देखा और नाम रख दिया "फटफटिया"।

देशी शब्दों के अन्तर्गत तो भारतीय अन्य भाषाओं के शब्द जो हिन्दी में आकर प्रचलित हो गए हैं रखने चाहिए और हिन्दी के अपने निजी शब्द जो विशेषतः हिन्दी के ही गर्भ से उत्पन्न हुए हैं तथा ध्वनि के अनुकरण आदि के द्वारा निर्मित हुए हैं उन्हें "देशज" ही कहना चाहिए। बोलियों से ऐसे अनेक शब्द निरन्तर आयास बनते रहते हैं पंखों की ध्वनि के आधार पर - फड़फड़ाना, बादलों की ध्वनि से- गड़गड़ाना आदि शब्दों का निर्माण हुआ है। ग्रामीणों में ऐसे शब्द उनकी सामान्य जील चाल में भी निरन्तर पाए जाते हैं। जैसे - खट्ट खट्ट, फट्ट फट्ट, सट्ट सट्ट, गट्ट गट्ट, सर्र ई सर्र, फर्र ई फर्र, भर्र ई भर्र, कटाकट, सटाखट, चट्ट चट्ट, चटाचट, धर्र धर्र, हुर्र हुर्र आदि।

### ५. १. ४ विदेशी आगत शब्द- समूह-

५. १. ४. ० साधारणतया विदेशी भाषाओं से आगत शब्दों की

१- सक्सेना, बाबूराम- सामान्य भाषा विज्ञान

२- बाहरी- हरदेव - देशी शब्द तत्त्व, हिन्दी अनुशीलन, प्रयाग वर्ग ८

निरन्तर प्रयोग में बढ़ते जा रहे हैं जिसको स्पष्ट करते हुए डा० माटिया ने लिखा है कि - " अंग्रेजी की दासता के कारण कितने भारतवासियों ने अंग्रेजी भाषा को जानाया और अंग्रेजी के अनेक शब्द भारत की भाषाओं में इतनी दूर तक घुस गए हैं कि उनका निकाल फेंकना नितान्त असंभव ही है।<sup>१...</sup>

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रदेश विशेष की बोली में विदेशी शब्दावली का भी अत्यधिक महत्त्व होता है। अब अपने विवेच्य क्षेत्र विशेष की बोली में उन विदेशी शब्दों- फारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मनी इत्यादि का आगम कितना तथा किस अनुपात से हुआ है, वर्णन करेंगे।

सर्वप्रथम हम फारसी, अरबी आदि विदेशी शब्दों जिनका भारत के मिलीभूली संस्कृति में महत्त्वपूर्ण स्थान है, वर्णन करेंगे -

#### ५. १. ४. १. ० अरबी फारसी शब्दावली-

फारसी शब्दों का सबसे अधिक प्रतिशत प्रचलन विशेषतया जिला रामपुर में है क्योंकि यहाँ मुस्लिम जनसंख्या अधिक है। इधर बुलन्दशहर, मेरठ, मुरादाबाद, बदायूँ, बरेली में भी मुसलमानों की संख्या काफी होने के कारण इन क्षेत्रों में भी फारसी शब्दावली को अधिक प्रयोग होता है। यहाँ तक कि ग्रामीण हिन्दू जनता भी जो मुसलमानों के सम्पर्क में रहती है वह भी इस शब्दावली का प्रयोग किंचित स्थान परिवर्तित रूप में निरन्तर करती रहती है और उन्हें इस बात का अनुमान तक

---

१- माटिया, कैलाशचन्द्र - हिन्दी में अंग्रेजी के आगत शब्दों का भाषा तात्त्विक अध्ययन - १९६७, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद पृ०

नहीं होता कि हम विदेशी शब्दावली प्रयुक्त कर रहे हैं।

प्रस्तुत विवेच्य क्षेत्र में मुस्लिम बहुल संस्था होने के कारण यह एक ऐतिहासिक तथ्य सामने आता है कि मुसलमान शासकों ने फारसी को अपनी प्रधान भाषा माना था इसलिए यहाँ बसने वाले मुसलमानों की भाषा में यदि अरबी- फारसी शब्दावली अत्यधिक मात्रा में हो तो कोई व्युत्पत्ति नहीं होगी। इसलिए परम्परा से चलती आ रही फारसी- अरबी मिश्रित हिन्दोस्तानी ही आधुनिक युग के मुसलमानों की भी वही बोली प्रधान है तथा उसमें फारसी अरबी शब्दों की प्रचलित संस्था भी बहुत है।

वागे अरबी- फारसी तथा अन्य विदेशी भाषाओं का अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है। अरबी के शब्द भी फारसी के माध्यम से ही आए हैं इसलिए उन्हें पृथक् से नहीं दिया गया है।

#### ५. १. ४. १ अरबी- फारसी शब्दावली-

##### धार्मिक-

कुरान, दीन, इमान, हुदा, इंद, पैगम्बर, मसजिद, रौजा, बीलवी, मुल्ता, फारिश्ता, सेरात, हज, हाजी, गुनाह, गोश्त, फकीर, फतवा, जनाजा, तकदीर, मुबारिक वादि ।

##### प्रतिदिन की शब्दावली-

कुर्ता, पाजामा, परदा, बुरका, सलवार, तहमत ( तहमद् ) गुलबन्द , जुराब, शाल, स्मात, मिर्झ, लिहाफ, रजाई, तकिया इत्यादि ।

वाष्पूषण-

पाण्डव, वाष्पूषन्द, जंजीर आदि ।

बर्तन-

प्याला, तन्दूर, तश्तरी, सुराही, रकाबी ।

भोजन-

कलिया, जरदा, फुलाव, फनीर, मुरब्बा, मसाला, कबाब, गुलाब, रूह, हरीरा ।

फल , मेवादि-

किशमिश, पिस्ता, मुनक्का, शहतूत, सेव, अनार, जंजीर, बालूबुसारा, सब्जी, तरकारी, शलजम, प्याज, तरबूज, पोदीना, नारंग ( नारंगी ) आदि ।

मिठाईं आदि-

जलेबी, बालूशाही, हल्वा ( हलुवा ) कृलफनी, मिथी, शर्बत, शराब, शिकंजी, सिरका, बरफ, हुक्का, फरशी, फर्श आदि ।

फर्नीचर-

कुरसी, तख्त, तख्ता, दिक्क, शामियाना, कनात, सन्दूक आदि ।

### शृंगार प्रसाधन-

सुरमा, सुरखी, शीशा, शीशी, इत्र, हमाम, गुलाब ।

### पेशे-

हलवाई, बजाज, जुलाहा, कसाई, जत्ताद , मजदूर,  
कारीगर, हकीम, दर्जी, सराफ, वकील, दलाल, जहार,  
जिल्दसाज, वावरची ।

### वन्य उपयोगी -

उस्तराठ , जेव, अस्तर, बसिया, दूकान, दूकानदार,  
साँदा, जज, गिरह, कमलाव, चिकिन, रेशमी, महल,  
हवेली, सराय, मौबाँ , किला, मकान, हरम, दातान,  
फैमाना, रन्दा, कुर्जी, सलानी, लगान, जीन, रफाब ।

### विज्ञान और कला-

नजला, जुकाम, लकवा, हैजा, नासूर, कवासीर, नौसादर,  
तैजाव, गुलकन्द, बनफशा, नुस्खा, नब्ज, दूनिया, गुलाबी,  
वासमानी, साद्री, बादामी, शहनाई, साज, कच्चाली, क  
तबला, नौबत, नगाड़ा ।

### प्रशस्ति-

अदालत, कजीर, सजान्ची, मुंशी, बादशाह, नवाब,  
चपरासी, बख्शी, कुर्क, रसीद, मिसिल, वालिग, जुर्म



मुकदमा, कागज, बही, कानून, दरीगा, (दरीगा ) दीवानी,  
फौजदारी, दफ्तर, दरवान, सूबेदार, सरकार, बन्दोवस्त,  
माल, माल गुजारी, तोप, बन्दूक, फौज, सिपाही, तनखाह,  
तलब, तीरकमान, मोहर, मुस्तार, नौकर, नौकरी, संगीन,  
जिरह, बस्तर, मुनसिफ, जमानत, जालसाजी, परवाना, बरी,  
सिक्का, प्यादा, लश्कर, रियासत, नालिश, पायदाद आदि ।

### शिजा-

कलम, कलमदान, सोल्ना, रुबका, दवान, किताब, मसौदा,  
जिल्द, स्त, लिफाफा , सरनामा, हरकारा, कान्तिब ।

### खेल-

शतरंज, मोहर, बाजी, किश्त, बादशाह, वजीर, फर्जी,  
कृष्णी, पहलवान, दंगल, मीजान, मैदान आदि ।

### विभिन्न-

भेदा, कल्ला, बगल, जिगर, बीमार, गरदन, गुरदा,  
दीवान, सरदार, शैख, खलीफा, रईस, मिर्जा, हजरत  
साहब ।

### गाली-

मक्कार, बेशरम, बन्मीन, मूजी, देवकूफ ( बैकूफ ) बदचलन  
( बच्बलन ) नालायक, शैतान, लफंगा, कमवस्त, वैपीर,  
हरामजादा, पाजी, कमीना, शोहदा, बदमाश ।

### जानवर वादि-

शेर, बबर, कबूतर, मुर्ग, मुर्गावी, शिकरा, बाज,  
तोता ।

### बाग-

गुलदस्ता, हजार, नरगिस, वादि ।

### वन्य-

दुजावा, नहर, हिन्द, फाव, दहाय, हजार,  
कोरिया, मोमामा, शहद, बरसा, गुबारा, चर्वी,  
जंग, सरीना, जीना, नपूना, तारीख, कूचा, मुहल्ला,  
देहान, कस्बा, शहर, बादमो, मर्द, मरदाना, जानना,  
रस्म, सुवह, शाम, देख्न इत्यादि ।

### माववर्धक-

शिकायत, रियायत, शरारत, शैतानी, जिम्मा,  
सिकारिश, हौसला, परवाह, परहेज, जोर इत्यादि ।

### ५. १. ४. २ तुर्की शब्द-

हिन्दी में तुर्की के शब्द भी अरबी की तरह फारसी के माध्यम से ही आए हैं इसलिए हिन्दी से इनका सीधा सम्बन्ध भी नहीं रहा । जो मुसलमान बादशाह प्रारम्भ में यहाँ आए थे उनकी मातृभाषा तुर्की थी परन्तु फिर भी अरबी फारसी ही उनकी राज भाषा रही

थी। तुर्की के कुछ बहुप्रचलित नीचे दिए जा रहे हैं :

उर्दू, बहादुर, तुर्क, उजबक, वाका, कलगी, चाकू, कैंची, गलीचा, चकमक, तर्पचा, वेगम, चम्पच, वकचा, चकलूस, मुचलका, लारा, सौगात, बीबी, बुलाक, चेचक, हरावल, बास्द, कपची, कुम्फत, कोतल, नान सलाई, मज्जाक, सच्चा, अयाल, रब्बा, चोगा, तानार, मुगस ।

#### ५. १. ४. ३ पुर्तगाली शब्द-

पुर्तगाली लोग भारत में बहुत पहले आए थे परंतु हिन्दी प्रदेश से उनका विशेष सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सका । यही कारण है जो शब्द पुर्तगाली से आए हैं वे बंगला वादि भाषाओं के माध्यम से ही आए हैं। पुर्तगालियों द्वारा जो वस्तु भारत में लाई गई थी विशेष-तया उनहीं के नाम हिन्दी में पुर्तगाली के अधिक प्रयुक्त हुए हैं। ~~उपरोक्त~~ कुछ शब्द यहाँ दिये जा रहे हैं :-

अलमारी, अन्नास, अलकनरा, बालफि, बाया, इस्त्री, इस्पात, कनस्तर, कमरा, कर्नल, काबू, काफी, क्रिस्तान, गमला, गिरजा, गोमी, गोदाम, चावी, जंगला, लम्बाकू, नीलिया, पपीला, नीलाम, परात, पादरी, पिस्तौल, पीपा, फर्मा, फीला, वर्गा, बम्बा, बाल्टी, बिस्कुट, बेला, बीनल, मार्का, मिस्त्री, मारलौल, यीशू, लबादा, सन्तरा, साया, फार इत्यादि ।

#### ५. १. ४. ४ फ्रान्सीसी शब्द-

फ्रान्सीसी भाषा के शब्द हमारी भाषा में

वधिक नहीं है। डा० सुनील कुमार चटर्जी ने बंगला में फ्रान्सीसी शब्दों की वधिकतम संख्या १० मानी है<sup>१</sup>। डा० धीरेन्द्र वर्मा जी ने हिन्दी में यह संख्या २-४ से वधिक नहीं मानी है<sup>२</sup>। कुछ ज्ञात शब्द ये हैं :-

कार्तूस, कूपन, क्रीज

क्रीजी के माध्यम से और भी कुछ शब्द आगर हैं। जैसे - लैम्प, टेबुल, सूप, फिक्निक, मेम, मशीन, मेयर, वार्ट, जज, मार्शल, मास्टर आदि ।

जर्मन शब्द-

जर्मन जाति का सम्बन्ध हमसे वधिक नहीं रहा इसलिए शब्द भी वधिक नहीं आ पाए फिर भी दो एक शब्द यहाँ दिए जा रहे हैं।

किरगार्टन, हिटलरशाही, नान्सी ( नाजी )  
नाजीवाद, बिल्डज ।

५. १. ४. ५ डच-

तुरूप ( ताश के पत्तों में )

५. १. ४. ६ क्रीजी शब्द-

क्रीजी से भारत का काफी लम्बे समय तक सम्पर्क रहा तथा उनकी भाषा ही यहाँ राज भाषा रही जो आज भी जाने

१- डा० चटर्जी- सुनील कुमार- बंगाली भाषा का उद्गम और विकास-

मुमिका- पृ० २१५

२- वर्मा, धीरेन्द्र - हिन्दी भाषा का इतिहास- सन् १९४७ पृ० ७४

का नाम नहीं लेती। अंग्रेजी शासन में नाना प्रकार के शब्द हिन्दी में प्रविष्ट हुए। कुछ तो तत्सम रूप में और कुछ स्वनि परिवर्तित रूप में प्रयुक्त हुए। विद्वानों ने अंग्रेजी शब्द जो हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं उनकी संख्या तीन हजार से ऊपर ही मानी है हमारे विवेच्य क्षेत्र विशेषतः जिन शब्दों का प्रयोग अधिक होता है उनमें कुछ शब्दों को नीचे दिया जा रहा है :

### धातुओं के नाम-

वतम्यूनियम, जर्मन, सिल्वर, टिन, निकल आदि।

### यन्त्रों के नाम-

ऑन, मोटर, कैमरा, ग्रामोफोन, टेलीफोन,  
रेडियो, मशीन, ट्रांसपारास्टर, मीटर आदि।

### सवारियों के नाम-

कार, टैक्सी, स्कूटर, साइकल, ट्रेन, ट्रक, रिक्शा,  
बस, लारी आदि।

### चिकित्सा सम्बन्धी शब्द-

बस्पताल, वापरेशन, इन्जेक्शन, डाक्टर ( डाकदर-घर )  
कम्पाउण्डर ( कम्प्युटर ) थर्मामीटर, मिक्सचर ( मिक्चर )  
कुनेन, हिस्टीरिया आदि।

### शिक्षा सम्बन्धी-

स्कूल, कालिज, यूनिवर्सिटी, लेक्चर, रीडर, प्रोफेसर,  
प्रिन्सिपल, , बी०ए०, एम० ए०, बी०टी० , बी०एड०  
आदि डिग्रियाँ।

### पोशाक सम्बन्धी-

फैट, कोट, अंडरवीयर, बुशशर्ट, सूट, टाई, जोगरकोट, टीशर्ट, लट्ठा, पापलिन, नाइलन, ड टेरिलीन, फ्राक, पाकिट, जर्जेट, हैंडलु, फेटीकोट, ब्लाउज, जम्पर, कम्पर, जर्सी, मफलर, स्वेटर आदि ।

### न्याय तथा शासन-

कोर्ट, हाईकोर्ट, सुप्रीमकोर्ट, इन्स्पेक्टर, डिप्टी, कलक्टर ( कलक्टर ) अफसर, सम्मन, वारंट, रफ्ट, अपील, बैरिस्टर, मिनिस्टर आदि ।

### प्रेस सम्बन्धी-

प्रेस, टाइप, कम्पोजीटर, आदि ।

### महीनों के नाम-

जनवरी, फरवरी, मार्च आदि ।

### खेल सम्बन्धी-

टीम, हाकी, क्रिकेट, फुटबाल, बालीबाल, मैच, टेनिस, रन, गोल आदि ।

### सेना सम्बन्धी-

कम्पनी, प्लाटून, मेजर, कर्नल, सेफ्टीनैट, मशीनगन, टैंक, बम, पोरछ आदि ।

### पोस्ट वाफिस सम्बन्धी -

पोस्ट वाफिस, पोस्टमैन, पोस्ट मास्टर,  
पोस्टकार्ड, मनीवाडर, रजिस्ट्री, सैविंग बैंक वादि ।

### खान पान- सम्बन्धी-

बिस्कुट, पेस्टी, टोस्ट, वाइसक्रीम, लेमन-सोडा,  
चाकलेट, ब्राडी, वामलेट ।

### कला सम्बन्धी-

वार्ट, ब्रुश, वाटरकलर, सीनरी, फोटो, फिल्म,  
निगेटिव वादि ।

### रूंगार सम्बन्धी-

क्रीम, पाउडर, वैसलीन, स्नो, नेल पालिश,  
लिपिस्टिक, वादि ।

### भवन सम्बन्धी-

गैलरी, हाल, गैराज, क्वार्टर, फुल्लेड वादि ।

### नौकरी पेशे-

अप्लीकेशन, सर्विस, रिपोर्ट, रिटायरड, चार्ज,  
क्लर्क, एजिन्ट, कमीशन, बोनस, धर्म, बिल, वर्जिण्ट ।

### विशेषण शब्द-

बूनियर, सीनियर, फाइन, सुपरफाइन, फैशनेबुल  
वादि ।

### संख्या बोधक-

फस्ट, सेकेंड, थर्ड वादि ।

### व्यय-

हेली, वीकली

### क्रिया-

पास करना, फिलमाना, फेल करना, विक्र  
म करना, हिट, शेव करना, कटिंग करना वादि ।

### कुछ व्यावसायिक शब्द भी हैं जैसे-

कैपिटल ब्लाक वर्क्स, दिल्ली बुक कम्पनी, कानपुर  
शू कम्पनी, रामा हॉजरी स्टोर, रामा बुक  
डिपो, प्रकाश फे, नैनील ।

### भारतीय अन्य भाषाओं के शब्द-

द्रविड़- डोसा, सामर, पिल्ला

मराठी- चालू, बाड़ा, लागू

गुजराती- हड़ताल

बंगाली- उपन्यास, कविराज, गल्प, रसगुल्ला

उड़िया- ऋका

फाबो- सिक्स, डोले, सालसा वादि



### ५. १. ५ स्थानीय शब्द समूह-

इस क्षेत्र की बोली में स्थानीय शब्दों का प्रयोग वत्यधिक संख्या में होता है। स्थानीय शब्दावली में लगभग सभी प्रकार के शब्द जाजाते हैं तदुपव शब्दों संख्या सबसे अधिक है। कुछ विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग भी होता है। ऐसी शब्दावली जहाँ तथा प्रयोग की दृष्टि से विशेष अध्ययन की अपेक्षा रखती है। कुछ शब्द सम्पूर्ण क्षेत्र में प्रयुक्त होते हैं तथा कुछ क्षेत्र विशेष तक ही सीमित रहते हैं। विवेच्य क्षेत्र इतना लम्बा चला गया है कि उसे एक सीमा भाग में प्रतिबन्धित नहीं किया जा सकता है। सुविधानुसार क्षेत्र को हम तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं। १- वह भाग जो जमुना नदी से लेकर गंगा नदी तक चला गया है। २- दूसरा- गंगा से राम गंगा तक का प्रदेश। तथा तीसरा ३- राम गंगा से इतर नैनीताल की तराई भी दक्षिणी पट्टी और पोलिमीत जिले काब बहुत ही थोड़ा भाग भाग जो तराई का क्षेत्र को स्पर्श करता है।

इन भिन्न भिन्न क्षेत्रों में एक ही प्रकार की स्थानीय शब्दावली नहीं हो सकते उसमें विभिन्नताएँ एवं विशेषताएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं। उदाहरणार्थ पोलिमीत में गाय के बड़ड़ा के लिए 'व्यूटा' शब्द चलता है। इस क्षेत्र का सर्वेक्षण करने समय मुझे इस शब्द का प्रयोग अन्य किसी क्षेत्र में नहीं मिला। इस प्रकार की विशिष्ट शब्दावली यद्यपि कम ही है परन्तु कतिपय शब्द इस प्रकार के हैं जो अपनी विशिष्टता लिए हुए हैं। स्थानीय शब्दावली की सूची परिशिष्ट में दी गई है तथा उसी में विशिष्ट शब्दों को भी रखा गया है फिर भी कतिपय विशिष्ट शब्दों को यहाँ दिया जा रहा है :

### विशिष्ट शब्दावली-

- १- वोसरी- ( सरहरा- बड़ी माह ) वर की लम्हा वोसरी  
दूध कू ना लावे । इस शब्द का प्रयोग कुर्जा के पास ही  
एक गाँव में होता है। इस गाँव के जाटों के पूर्वज मेरठ,  
मुजफ्फरनगर से लगभग ५० वर्ष पूर्व से ही यहाँ आकर  
बस गए हैं। इसलिए उनकी बोली में वहाँ की शब्दावली  
जमी तक नष्ट नहीं हो सकी है। 'वोसरी' के अतिरिक्त  
मेरठ में इसे 'तड़को' बोलते हैं तथा इसी की सुर्जा,  
बनूपशहर, बदायूँ आदि में 'सरहरा', 'सरेरा' बोलते  
हैं।
- २- रब्बा- ( तांगा- बैल तांगा ) इस शब्द का प्रयोग अधिकतर  
रामपुर, मुरादाबाद की ( सम्भल और विलारी तहसील )  
में प्रयोग मिलता है।
- ३- रहलुआ- ( तांगा ) इसका प्रयोग कुन्तरी, डिबाई, पहासू क्षेत्र  
तथा दादरी आदि 'रहड़' और घोड़ा तांगे को 'रहड़ी'  
का प्रयोग करते हैं।
- ४- हाजति- ( शींच से पूर्ण फट में शींच आने का भाव उत्पन्न होना )  
( कहों ऐसे कैसे कुसमुसाइइ रहे जो कई इ टट्टी की हाजति  
तो नाई । ) बुलन्दशहर तथा सम्भल, चन्दौसी, गिन्नौर,  
बनूपशहर आदि में ही प्रयुक्त होता है।
- ५- हेलुआ- ( गाड़ी के म्हाँडे के नीचे का भाग जो धरती पर टिक

जाता है। - तथा इसी शब्द को गहवन के वागे का वह जो ठोढ़ी के नीचे रहता जिसे कहीं कहीं "टँटुवा" और "हेलुवा" कहता हैं।

६- वाजत-( चरागाह ) ( इसका शाब्दिक अर्थ संभवतः जो जमीन जोती न जाय अर्थात् चरागाह ) इस शब्द का प्रयोग मैं केवल एक ही स्थान पर सुना है क्तारी के पास सहार ग्राम में ।

७- लैहड़ा- ( एक प्रकार की पोतर ) ऐसी पोतर को लोग "लैहड़ा" पोतर के नाम से पुकारते हैं जिसमें सदैव पानी भरा रहता है और काफी गहराई होती है। प्राचीन समय कुओं के अभाव में बहुत से जानवर उसमें पानी पीते थे तो लोग लैहड़ों कहने थे कि "लैहड़ो जाइर ओरे । लैहड़े के बाघार पर ही लैहड़ा नाम पड़ा ।

८- फाड़े- ( टट्टी के अर्थ में ) चलो मार्ड "फाड़े" फिर आवें । अर्थात् टट्टी हैं आवें । सुर्ज के दक्षिणी भाग में विशेष रूप से प्रयुक्त होता है।

९- तन्त-( टोटिका ) फसलों में रोग फैलने पर लोग बरसान में "तन्त" निकाला करते हैं। ऐसी धारणा है कि इससे रोग माग जाता है।

१०- गौति -(चारा )- यह शब्द सम्भवतः उत्तर पश्चिम की ओर विशिष्ट रूप से चलता है जैसे- "इनको गौति लार दई रे के नाइ ।"

११- लारना - ( डारने के अर्थ में प्रयुक्त शब्द ) "दारि में हरदी लार दे ।

१२- गौतरी- ( दावत ) इसका प्रयोग पीलीभीत, बरेली, बदायूँ में होता है। पश्चिमी क्षेत्रों में कभी प्रयोग नहीं सुना ।

गौतरिया ( महमान ) ये भी उपर्युक्त क्षेत्र में प्रयुक्त होता है।

१४- बूझा- ( गाय का छोटा बड़ड़ा ) इसका प्रयोग विशेषतः पीलीभीत के पूर्वी क्षेत्र के साथ साथ, उचरी क्षेत्र में भी होता है।

#### ५. १. ६ द्विरुक्ति-

एक शब्द को दूसरी बार उसी रूप में उच्चारण करने का बहुत सों को अभ्यास पड़ जाता है और ऐसे शब्द अनाभ्यास ही व्यक्तियों के मुख से निसृत होते रहते हैं। घर- घर, गाम- गाम, द्वार- द्वार, फसा- फसा, लुगाई- लुगाई ( एक हैं गई ) , परन्तु ऐसा देखा गया है कि निरर्थक द्विरुक्ति का व्यापक प्रयोग मिलता है। पानी- पानी, रौटी- राटी , खाना- खाना ( रामपुर- मिथिक ) न्हाये- वाए , फिन्नाब- फिन्नाब , कलम- कलम , स्याई- फ्याई , गाय- वाय , कूआ- वूआ , कुर्सी- फुर्सी, जरसी- फरसी, हुक्का, बुक्का, लोटा- फोटा इत्यादि । इन शब्दों का प्रयोग लोग साधारणतः कहीं भी कर देते हैं।

“ मन्नें चाचा- फाचा से बहुत मनें- सनें करी ही परि वो तो काऊ ऐसे वैसे की सुन्न फुन्न नाइ- बूवन ऐ । ”

इस प्रकार द्विरुक्ति शब्दों का प्रयोग प्रायः गाजियाबाद से लेकर दादरी, बनकौर, सिकन्द्राबाद, बुलन्दशहर, कुर्ना, जनुपशहर, गिन्नौर, सहसवान, विसौली ( बदायूँ ) सम्भल-विलारी (मुरा-दाबाद मिथिक ( रामपुर ) किच्छा ( नैनीताल ) तथा पीलीभीत का उचरी पश्चिमी कोना तक व्यापक रूप से मिलता है।

### ५. १. ७ दुर्वचन ( अपशब्द )

बहुधा बोलियों में दुर्वचनों तथा गालियों का प्रयोग बहुतायत से मिलता है। गालियाँ शिश्चय ही ग्रामीण जनता की अपने वाप की निर्मित की हुई शब्दावली होती है। हम प्रतिदिन गाँवों में ऐसी- ऐसी गालियाँ, स्त्री और पुरुषों के मुँह से सुनते हैं कि उन्हें लिपिबद्ध नहीं कर सकते। यहाँ तक कि उच्चारण करने में भी अधिक लज्जा का अनुभव होता है। किसी के सम्मुख हम उन गालियों को दुहरा नहीं सकते हैं। ऐसे प्रयोग जान बूझ कर किसी के प्रति किए जाते हैं। क्रोध के अवसर पर और कभी कभी स्नेह प्रदर्शन हेतु भी लोग इस प्रकार की गालियाँ निकालते रहते हैं। कभी कभी तो यहाँ तक देखा गया है कि बहुत से व्यक्तियों का तो एक वाक्य ऐसा नहीं होगा जिसमें किसी प्रकार का दुर्वचन भी गाली जैसा गाली का भाव न हो। अनेकों को 'साला' 'साले' कहने की बुरी आदत पड़ जाती है तो बात बात में उनके मुँह इन शब्दों को सुना जा सकता है। 'म्हों पजारे' और 'उवे' शब्द किसी किसी स्त्री के मुँह पर खसा ही रहता है 'ओर जा म्हों पजारे', दीया जोर, दिनकरे, कढ़ी सार, मुसलमानी स्त्रियों में बहुत सी गालियाँ प्रचलित हैं- 'ओर तुम हल हल की कुल्ली बाजाय', 'बल्ला मियाँ तेरे पे बिजली ओर।' 'कढ़ी सार, तथा पुरुष 'उल्लू के पट्टा', 'माँजी के फटेले', 'ओर वो तो फक्की राखिहा है, दाढ़ी जारों, ओर वाय की चाँदि पीछी', 'हरा मीका पिल्ला, तेरी माँ का हरामी, साला बदमाश' कहीं का। 'म्हारे सोइडे के' (दादरी- सिकन्दराबाद, स्याना तथा जौना का वह भाग जहाँ हाफुड़ को स्पर्श करना है।

सम्बोधन शब्दों का अध्ययन जागे प्रस्तुत किया गया है।

## ५. २ शब्द-संरचना-

५. २. ० संरचना की दृष्टि से रूपों को मुक्त रूप तथा वाबद्धरूप दो भागों में बांटा जा सकता है। वे सण्ड रूप जो स्वतन्त्र व्यंजान रूप में बोले जाते हैं, मुक्तरूप कहलाते हैं। इसी प्रकार जो सण्ड रूप स्वतन्त्र व्यंजान रूप में नहीं बोले जाते हैं वाबद्ध रूप कहलाते हैं। डा० उदय नारायण तिवारी ने संरचना की दृष्टि से शब्दों को पाँच भागों में विभाजित किया है :

- |                             |                                                                          |
|-----------------------------|--------------------------------------------------------------------------|
| (१) मुक्त रूप               | राम् घौड़ा , लड़का                                                       |
| (२) मुक्त रूप + वाबद्ध रूप  | लड़के ( लड़क् + ए )<br>घोड़े ( घोड़ + ए )<br>दासता ( दास् + ता )         |
| (३) वाबद्ध रूप + मुक्त रूप  | वपमान् ( वप + मान् )<br>शुपुत्र ( कु + पुत्र )<br>सुपुत्र ( सु + पुत्र ) |
| (४) मुक्त रूप + मुक्त रूप   | गृह- दाह , मुँहजोर ,<br>काम-+ काज ।                                      |
| (५) वाबद्ध रूप + वाबद्ध रूप | संस्कृत - तारतम्य                                                        |

वाबद्ध रूप ही वस्तुतः उपसर्ग तथा प्रत्यय हैं।

“उपसर्ग” तथा “प्रत्यय” रूप में प्रयुक्त रूपिन् मूलतः सामासिक पद भी हो सकते हैं जो वाज घिस- घिसाकर छोटे रूप में दिखाई देते हैं। इस सम्बन्ध में डा० रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल का उद्धरण द्रष्टव्य है :

“ भारतीय वायं भाषाओं में एक ऐसा चक्र चलता है हुआ मिल रहा है, जिससे वाक्य में प्रयुक्त होने वाले कोई कोई दो शब्द सामासिक रूप में जुड़ते हैं और फिर पूर्व अथवा पर भाग के शब्द घिस घिसा कर क्रमशः उपसर्ग एवं प्रत्यय की कोटि में जा जाते हैं। कालान्तर में ऐसी भी स्थिति आ जाती है कि उपसर्ग और प्रत्यय को शब्द से पृथक् नहीं किया जा सकता । कभी कभी यह प्रत्यात्मकता पद- रचनात्मक विभक्तियों में विकसित हो जाती है, और इस प्रकार कल का सामासिक शब्द एक लम्बी यात्रा के पश्चात् केवल एक साधारण पद रहा जाता है। ”

वाक्यध रूपों को दो भागों में बाँट सकते हैं :

१- उपसर्ग- पूर्व व्युत्पादक प्रत्यय

२- प्रत्यय - पर व्युत्पादक प्रत्यय

उपसर्ग तथा प्रत्यय अपने स्रोत के अनुसार स्वदेशी तथा विदेशी हो सकते हैं। स्वदेशी उपसर्ग, प्रत्यय भी मूल शब्दावली की तरह तत्सम, तद्भव तथा देशज में विभाजित किये जाते हैं।

५. २. १ पूर्व व्युत्पादक प्रत्यय अथवा उपसर्ग-

५. २. १. १ तत्सम -

“ अभाव ” का अर्थ बताने वाले पूर्व व्युत्पादक

१- अग्रवाल- रामेश्वर प्रसाद- बुंदेली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन- प्रथम संस्करण- पृ० १७१

प्रत्यय

५. २. १. १ : १ "व"

मूल प्रातिपदिक या धातु

उपसर्ग + मूल प्रातिपदिक

व्युत्पन्न प्राति०

|       |                          |         |
|-------|--------------------------|---------|
| पव्   | व + पव् =                | अपव     |
| काल   | व + काल् =               | अकाल    |
| वेला  | व + वेरी =               | अवेरी   |
| बूक्  | व + बूक् =               | अबूक्   |
| ज्ञान | व + ज्ञान = अज्ञान + ई = | अज्ञानी |
| कृत   | व + कृत =                | अकृत    |

५. २. १. १. २ वन्

वन् - "पीछे" अर्थ का धातुक उपसर्ग

५. २. १. १. ३ वन्

"अभाव" "शून्यता" अर्थ का धातुक उपसर्ग

|        |                |                  |
|--------|----------------|------------------|
| मैल्   | वन् + मैल् =   | अनमैल्           |
| गिन्ती | वन् + गिन्ती = | अनगिन्ती         |
| बन्    | वन् + बन् =    | अनबन्            |
| सुनी   | वन् + सुनी =   | अनसुनी           |
| चाहे   | वन् + चाहे =   | अनचाहे (अन्चाहे) |
| जान्   | वन् + जान् =   | अन्जान           |

१- "वेला" का "वेरा" रूप प्रयुक्त होता है, वही यहाँ ओकारान्त हो गया है।

२- सामान्यतः स्वर से प्रारम्भ होने वाले शब्दों में "वन्" लगता था पर हिन्दी में "वन्" का भी मुक्त प्रयोग मिलता है।

३- चाहे का ही उच्चारण रूप "चाए" है।



### ५. २. १. १. ४ अप

‘अप’ बुरा के अर्थ में प्रयोग

मान् अप् + मान् = अपमान

स्वार्थ अप् + स्वार्थ, अपस्वार्थ + ई = अपस्वार्थी

हरन् (हरण) अप् + हरन् = अपहरन्

### ५. २. १. १. ५ अभि

‘अभि’ अधिक, अतिरिक्त, ओर के अर्थ में प्रयोग

मान् अभि-। मान् = अभिमान्

### ५. २. १. १. ६ क्व

‘क्व’ बुरा, हीन, नीचे, दूर आदि अर्थों में प्रयुक्त

गुन् (गुण) क्व + गुन् = क्वगुन् + ई = क्वगुनी  
(क्वगुणी)

### ५. २. १. १. ७ वा

‘वा’ तक, समेत, ओर, कम आदि अर्थों में प्रयोग

जनम् (जन्म) वा + जनम् = क्ववस् वाजनम्

गमन् वा + गमन् = वागमन्

केवल संस्कृत शब्दों का ही प्रयोग मिलता है।

५. २. १. १. ८ उत्

ऊपर, ऊँचा का अर्थ धीतक उपसर्ग

५. २. १. १. ९ उप

सहायक तथा कीर्जी " " का समानार्थक के  
अर्थ धीतन में

राष्ट्रपति उप + राष्ट्रपति = उपराष्ट्रपती

सभापति उप + सभापति = उपसभापती

प्रधान उप + प्रधान = उपप्रधान

५. २. १. १. १० कु

" बुरे " के अर्थ धीतन में प्रयुक्त

रूप कु + रूप = कुरूप

कर्म कु + कर्म = कुकर्म + ई = कुकर्मी

ठौर कु + ठौर = कुठौर

ढव कु + ढव = कुढव

५. २. १. १. ११ " दुर "

कुरा या कठिन अर्थ धीतन में

गति दुर + गति = दुर्गति

जन दुर + जन = दुर्जन

दशा दुर + दशा = दुर्दशा

५. २. १. १. १२ नि

इसका अर्थ 'विना', रहित, निषेध के रूप में होता है।

|      |                                       |
|------|---------------------------------------|
| डर   | नि + डर = निडर                        |
| धड़क | नि + धड़क = निधड़क                    |
| काम  | नि + कम्म = निक्कम्म + वा = निक्कम्मा |
| रोग  | नि + रोग = निरोग + ई = निरोगी         |

५. २. १. १. १३ निर

नहीं, रहित, दूर, बाहर आदि अर्थों में प्रयुक्त

|     |                      |
|-----|----------------------|
| बल  | निर् + बल = निर्बल   |
| दोष | निर् + दोष = निर्दोष |
| गुण | निर + गुण = निर्गुण  |

५. २. १. १. १३ परा

उल्टा, पीछे के अर्थ में प्रयुक्त

|    |                  |
|----|------------------|
| जय | परा + जय = पराजय |
|----|------------------|

५. २. १. १. १५ परि

पूर्ण, चारों ओर अर्थ में प्रयुक्त

|    |                  |
|----|------------------|
| अम | परि + अम = परिअम |
| जन | परि + जन = परिजन |

१- निवत शब्द अधिक प्रचलित है।

५. २. १. १. १६ वि

भाष, विशेण, दूसरा, आदि अर्थों में

देशी वि + देशी = विदेशी

वाद वि + वाद = विवाद

५. २. १. १. १७ सु

सु - अच्छा अर्थ में प्रयोग

जान् सु + जान् = सुजान

डौल सु + डौल = सुडौल

गंध सु + गंध = सुगन्ध

५. २. १. १. १८ स

सहित के अर्थ में प्रयुक्त

बल स + बल = सबल

फल स + फल = सफल

प्रेम स + प्रेम = सप्रेम

रस स + रस = सरस

बेरी (बैला) स + बेरी = सबेरी

५. २. १. २ लक्ष्मण पूर्वव्युत्पादक प्रत्यय-उपसर्ग

५. २. १. २. १ उ

ऊपर और ऊँचा के अर्थ में प्रयुक्त

तीस उन् + तीस = उन्तीस  
 सठ उन् + सठ = उनसठ  
 बस्सी - हासी उन् + हासी = उन्हासी  
 सवर - हैचर उन् + हैचर = उन्हैचर

#### ५. २. १. २. ३ औ

हीन , नीचे , दूर आदि कर्णों में प्रयुक्त

तार      अव - औ + तार = औतार  
 गुन      औ + गुन = औगुन  
 घट      औ + घट = औघट  
 गढ़      औ + गढ़ = औगढ़ - औघढ़  
 फढ़      औ + फढ़ = औफढ़  
 चक - फक्      औ + फक् = औफक - औचक्

#### ५. २. १. २. ४ क

“बुरा” के कर्णों में प्रयोग होता है।

पूत      क+ पूत = कपूत

मूत      क+ मूत = कमुत - कमुत शब्द उस व्यक्ति  
 के लिए प्रयुक्त जो अपने असली बाप से उत्पन्न नहीं  
 है। ग्रामीण बोली में इसका प्रयोग अधिक होता है।

#### ५. २. १. २. ५ दु

“बुरा” हीन कर्ण यौत्क उपसर्ग

बल      दु + बल      दुबल + वा = दुबला

राज      दु + राज      = दुराज

### ५. २. १. २. ६ नि

• बिना , रहित , निर्बन्ध के अर्थ में

|      |           |                       |
|------|-----------|-----------------------|
| हत्थ | नि + हत्थ | निहत्थ + वा = निहत्था |
| बल   | नि + बल   | = निबल                |

### ५. २. १. २. ७ पर

पहले की पीढ़ी के अर्थ में

|      |                    |
|------|--------------------|
| दादा | पर + दादा = परदादा |
| नाती | पर + नाती = परनाती |
| बाबा | पर + बाबा = परबाबा |

### ५. २. १. २. ८ स

|     |                |
|-----|----------------|
| बूत | स + बूत = सबूत |
| पूत | स + पूत = सपूत |

### ५. २. १. ३ विदेशी पूर्व व्युत्पादक प्रत्यय या उपसर्ग फारसी उपसर्ग

### ५. २. १. ३. १ क्त

यह भूतन्तः क्त० का निश्चयार्थी निपात है।

|                   |                           |                       |
|-------------------|---------------------------|-----------------------|
| मूल प्रा० या धातु | उपसर्ग + व्युत्पादक प्रा० | व्युत्पन्न प्रा०      |
| सीना - साना       | क्त + साना                | = क्तसाना             |
| मस्त              | क्त + मस्त                | = क्तमस्त ( हलमस्ता ) |

१- निसालिस- शब्द का प्रयोग 'सालिस' के अर्थ में ही होता है। सालिस शब्द के लिए प्रयुक्त होना और उसी को लोग 'निसालिस' बोलते हैं।

### ५. २. १. ३. २ वर

इस पूर्व प्रत्यय का व्यवहार 'निश्चय' के अर्थ में होता है।

इसके योग से क्रिया विशेषण व्युत्पन्न होते हैं।

हकीकत वर + हकीकत् = वरहकीकत

असत् वर + असत् = वरअसत्

सुरत वर + सुरत = वरसुरत

### ५. २. १. ३. ३ व

'के साथ' से अथवा 'अनुसार' के अर्थ में आता है

सूची व + सूची = वसूची

दीप्त व + दीप्त = वदीप्त

दस्तूर व + दस्तूर = वदस्तूर

तौर व + तौर = वतौर

नाम व + नाम = वनाम

कील व + कील = वकील

### ५. २. १. ३. ४ वा

साथ या से के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

कायदा वा + कायदा = वाकायदा

जाब्ता - जाप्ता वा + जाब्ता = वाजाब्ता - वाजाप्ता

सऊर - सऊर वा + सऊर = वासऊर

### ५. २. १. ३. ५ वे -

“ बिना ” , “ रहित ” वाचक है ।

|             |                           |   |                 |
|-------------|---------------------------|---|-----------------|
| रहम         | वे + रहम्                 | = | बेरहम           |
| हिमान       | वे + हिमान्               | = | बेहिमान         |
| हज्जता      | वे + हज्जता, बेहज्जता + ई | = | बेहज्जतो        |
| सटके        | वे + सटके                 | = | बेसटके          |
| बड़क        | वे + बड़क                 | = | बेबड़क          |
| बैन         | वे + बैन                  | = | बेबैन           |
| बक्ता - बसत | वे + बक्ता - बसत          | = | बेबक्ता - बेबसत |
| बसर         | वे + बसर                  | = | बेसर            |

### ५. २. १. ३. ६ ता

“ क्माव ” या “ नहीं ” अर्थ धोतक है

|       |            |   |         |
|-------|------------|---|---------|
| परवाह | ता + परवाह | = | तापरवाह |
| इलाज  | ता + इलाज  | = | ताइलाज  |
| क्माव | ता + क्माव | = | ताक्माव |
| वारिस | ता + वारिस | = | तावारिस |

### ५. २. १. ३. ७ हम्

“ साथ ” समता “ के अर्थ में प्रयोग होता है।

|      |                        |   |                    |
|------|------------------------|---|--------------------|
| सफर  | हम् + सफर              | = | हमसफर              |
| दम   | हम् + दम               | = | हमदम               |
| दर्द | हम् + दर्द, हमदर्द + ई | = | हमदर्दी            |
| उग्र | हम् + उग्र             | = | हम उग्र ( हमउग्र ) |



### ५. २. १. ३. ८ सर

“ मुख्यता ” के अर्थ में प्रयोग

|     |          |                    |
|-----|----------|--------------------|
| रुद | सर + रुद | = सररुद            |
| पंख | सर + पंख | = सरपंख            |
| ताज | सर + ताज | = सरताज            |
| नाम | सर + नाम | = सरनाम ( सन्नाम ) |

### ५. २. १. ३. ६ बर

“ निश्चय ” के अर्थ में प्रयोग

|               |            |           |
|---------------|------------|-----------|
| करार          | बर + करार  | = बरकरार  |
| ज्वान         | बर + ज्वान | = बरज्वान |
| वक्त          | बर + वक्त  | = बरवक्त  |
| सिताफ - सिताप | बर + सिताफ | = बरसिताफ |

### ५. २. १. ३. १० बहर

“ निश्चय ” के अर्थ में प्रयोग

|      |            |                    |
|------|------------|--------------------|
| हाल  | बहर + हाल  | = बहरहाल ( बरहाल ) |
| तबील | बहर + तबील | = बहरतबील          |

### ५. २. १. ३. ११ फिस

“ निश्चय ” के अर्थ में प्रयोग

|       |             |            |
|-------|-------------|------------|
| हाल   | फिस + हाल   | = फिसहाल   |
| हकीकत | फिस + हकीकत | = फिसहकीकत |

### ५. २. १. ४ वांग्ल उपसर्ग

हिन्दी में वांग्ल भाषा के केवल पांच शब्द उपसर्ग की भांति प्रयुक्त होते हैं।

### ५. २. १. ४. १ हाफ्

हाफ् - ' बाधा ' के अर्थ में प्रयोग

कमीज़ हाफ् + कमीज़ = हाफकमीज़

### ५. २. १. ४. २ हैड

' प्रधान ' के अर्थ में प्रयोग

मास्टर हैड + मास्टर = हैडमास्टर

बाफिस हैड + बाफिस = हैडबाफिस

माँतबी हैड + माँतबी = हैडमाँतबी

पंडित हैड + पंडित = हैडपंडित

नोट : हैड, डिप्टी, हाफ का ही अधिक प्रयोग ग्रामीण बोली में होता है, बाइस , सब का प्रयोग नहीं होता है, होता भी है तो पढ़ा लिखा वर्ग ही इसका प्रयोग करता है।

### ५. २. २ व्युत्पादक पर प्रत्यय-

व्युत्पादक पर प्रत्ययों की दो भागों में विभाजित किया जा सकता है :

५. २. २. १ स्वदेशी व्युत्पादक पर प्रत्यय

५. २. २. २ विदेशी व्युत्पादक पर प्रत्यय

### ५. २. २. १ (१) तत्सम स्वीदेशी व्युत्पादक पर प्रत्यय

“ वा ” - स्त्री प्रत्यय - इसका प्रयोग केवल तत्सम शब्दों में ही होता है ।

भुत + वा = सुता

(२) बाहु - इससे संज्ञा से विशिष्टा बनाते हैं।

लज्जा + बाहु = लज्जाबाहु

कृपा + बाहु = कृपाबाहु

दया + बाहु = दयाबाहु

(३) जीवी - जीने वाले के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

पर + जीवी = परजीवी

बुद्धि + जीवी = बुद्धिजीवी

अम + जीवी = अमजीवी

(४) तः

मूलत + तः = मूलतः

वस्तु + तः = वस्तुतः

(५) तया -

विशेषण + तया = विशेषणतया

मुख्य + तया = मुख्यतया

(६) ता

जन + ता = जनता

कवि + ता = कविता

|         |      |             |
|---------|------|-------------|
| सुन्दर  | † ता | = सुन्दरता  |
| सम      | † ता | = समता      |
| नवीन    | † ता | = नवीनता    |
| प्राचीन | † ता | = प्राचीनता |

## (७) त्व-

|     |       |          |
|-----|-------|----------|
| सती | † त्व | = सतीत्व |
| कवि | † त्व | = कवित्व |

## (८) दा -

|      |      |          |
|------|------|----------|
| एक   | † दा | = एकदा   |
| सर्व | † दा | = सर्वदा |
| सुख  | † दा | = सुखदा  |

## (९) वा-

|     |      |         |
|-----|------|---------|
| बहु | † वा | = बहुवा |
|-----|------|---------|

## (१०) वतीं - 'वाला' 'कर्म' धं

|        |        |              |
|--------|--------|--------------|
| पर     | † वतीं | = परवतीं     |
| बहु    | † वतीं | = बहुवतीं    |
| निष्कट | † वतीं | = निष्कटवतीं |

## (११) वान- 'वाला' 'कर्म' धं

|     |       |          |
|-----|-------|----------|
| गुण | † वान | = गुणवान |
| धन  | † वान | = धनवान  |
| बल  | † वान | = बलवान  |

(१२) शाली - 'वाला' अर्थ में

बल + शाली = बलशाली  
 भाग्य + शाली = भाग्यशाली  
 शक्ति + शाली = शक्तिशाली

५. २. २. १. २ तद्धित पर प्रत्यय

(१) अंग - इसका सम्बन्ध सं० अंग + क ( ७ प्रा० अंग ७ हि० )  
 अंग से ज्ञात होता है।

दब + अंग = दबंग

सम + अंग = समंग ( संपूर्ण )

(२) 'अंगड़' - 'बड़ा ( अंगी वाला )

बात + अंगड़ = बातंगड़<sup>१</sup>

(३) 'वन्त' - बातों में जोड़ कर भाववाचक संज्ञाएं बनाई जाती हैं।

रट + वन्त = रटवन्त

गढ़ + वन्त = गढ़वन्त ( मनगढ़वन्त )

अन्तु ( वन्त + ऊ ) प्रत्यय भी है जिससे व्युत्पन्न होता है

धूम + अन्तु ७ धुमन्तु ( स्वर-अ० ह्रस्व )

(४) अक् - विशेषणों में जोड़कर संज्ञा प्रातिपदिकों का निर्माण किया जाता है-

ठंड + अक् = ठंडक

१- नोट- बात का मध्य स्वर ह्रस्व हो गया है।

• उक् - का प्रयोग और भी कई जगहों में होता है जैसे -  
घातु से स्थान ( बैठ + उक् = बैठक

ध्वनि से भाव ( मनु + उक् = मनक  
( अनु + उक् = लनक

(५) वज - जन्म लेने वाला " संस्कृत का " व " ही हिन्दी  
में " वज " के रूप में विकसित है जैसे-

पंक + व = पंकव  
पंक + वज = पंकवज  
जार + वज् = जारव  
मनु + ज् = मनुज

(६) अट् - इसका सम्बन्ध सं० " वत् " से ज्ञात होता है।  
संज्ञा तथा क्तुकरणात्मक या वन्ध प्रकार के शब्दों  
के आधार पर संज्ञा व्युत्पादन में प्रयुक्त होता है।

जीव + अट् = जीवट  
तप् + अट् = तपट  
कप् + अट् = कपट

(७) अत् - घातु से भाववाचक संज्ञाएं बनाई जाती हैं।

लित् + अत् = लिखत  
पठ् + अत् = पठत  
सद + अत् = सदत  
वच + अत् = वचत

(८) क्न् - इसके योग से भाववाचक संज्ञा निष्पन्न होती है।

सृज् + क्न् = सृज्जन

चल + क्न् = चलन

क्न - कर्तृवाचक संज्ञा भी निष्पन्न होती है।

ढक् + क्न् = ढक्कन

जाम् + क्न् = जामन ( दूध के जमाने में प्रयोग होता है। )

फाड़ + क्न् = फाड़न

क्न् - इसकी संज्ञा प्रातिपदिकों में जोड़ने से स्त्रीलिङ्ग व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिकों का निर्माण होता है।

सुहाग् + क्न् = सुहागन

(९) क्ल - 'वाला' 'अर्थ में' 'इ' के साथ 'य' 'कृति' के साथ प्रयोग

दड़ि + क्ल = दड़िक्ल - दड़ियल

लठि + क्ल = लठिक्ल - लठियल

(१०) आंघ - इसे संज्ञा या धातु में जोड़ कर भाववाचक संज्ञा बनाते हैं।

सड़ + आंघ = सड़ांघ

चिरा + आंघ = चिरांघ - चिरांघि )

चिर + आंघ = चिरांघ

(११) 'वा' - इसका प्रयोग विभिन्न वर्गों में होता है।

व्यंजान्त निर्लिङ्ग मूल शब्दों में पुल्लिङ्ग शब्द-

स धातु से संज्ञा

पूज + वा = पूजा

फगड़ + वा = फगड़ा

व्यवसाय बोधक संज्ञा से स्थान वाचक संज्ञा

सराफ़ + वा = सराफ़ा

बजाज + वा = बजाजा

संज्ञा से पुल्लिङ्ग विशेषण

प्यास + वा = प्यासा

मूल - भूक + वा = भूका

भूतकालिक कृदन्त प्रेरणार्थक धातु

चिढ़ + वा = चिढ़ा

कर + वा = करा

चल + वा = चला

भाववाचक संज्ञा धातु में जोड़ कर

बन् + वा = बना (बन्ना)

(१२) 'जार्ह' इसकी धातु, विशेषण, तथा संज्ञाओं में जोड़कर

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है।

धातुओं में -

धी + जार्ह = धुवाई (धुलाई)

बो + जार्ह = बुवाई (बुलाई)



### विशेषणार्थे-

कठिन- + - वाई = कठिनाई

चतुर- + - वाई = चतुराई

• ई • रूप में भी इसका प्रयोग होता है

महंगा- + - ई = महंगाई

मला - + - ई = मलाई

बुरा - + - ई = बुराई

रंगा - + - ई = रंगाई

### संज्ञार्थे-

पंडित - + - वाई = पंडिताई

इसके ( वाई ) कुछ संज्ञार्थों में जोड़ने से जातिवाचक संज्ञार्थों का निर्माण होता है।

ठंड- + - वाई = ठंडाई

चोर + - वाई = चोराई ( चुराई )

इसके संज्ञा मूल रूपों में जोड़ने से स्त्रीलिंग संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का निर्माण होता है।

लोग्- + - वाई = लुगाई

(१३) • - वाऊ • - इससे धातु से विशेषण बनाने हैं

उफ्फ- + - वाऊ = उफ्फाऊ

टिक्- + - वाऊ = टिकाऊ

बिक्- + - वाऊ = बिकाऊ

### संज्ञा से विशेषण-

पंडित- + - वाऊ = पंडिताऊ

### धातु से संज्ञा-

पी- + - वाऊ = प्याऊ

( १४ ) वाड़ी-

### संज्ञा से कर्तृवाचक संज्ञा-

सिल- + - वाड़ी = सिलाड़ी

### विशेषण से संज्ञा रूप-

वागे - + - वाड़ी = जगाड़ी

पीछे - + - वाड़ी = फिकाड़ी

( १५ ) - वान्

### धातु से भाववाचक संज्ञा-

उठ्- + - वान् = उठान

थक्- + - वान् = थकान

उड़्- + - वान् = उड़ान

मिल- + - वान् = मिलान

( १६ ) वाना- वाणा, वाना, वानी, वानी, रूप  
मिलते हैं।

वाणा- ( दादरी, सिकन्दाबाद ) - वाना- ( कांता,  
बुलन्दशहर, रामपुर, सम्भल ) ।

वानौ- ( सुजा, डिबाई, वनूषहर )

वानो - ( बिसौली, बदरू, गिन्नौर, बीलीभीत )

वज- + - वाणा = वजाणा ( वजानी )

सिल- + - वाना - वानो = सिलानो

इसका स्थानवाचक रूप भी मिलता है -

राजपूत- + - वाना > राजपूताना

मुंह - + - वाना > मुहाना

तियक रूप-

समधि- + - वाना > समधियाना

सदुवा- + - वाना = सदुवाना

( १७ ) " - वानी - धातु तथा संज्ञा प्रातिपदिकों में जोड़  
कर इससे संज्ञाएँ बनती हैं तथा यह स्त्रीलिंग व्युत्पन्न  
प्रातिपदिकों का निर्माण करता है। यथा-

कह- + - वानी - वानी = कहानी - कहानी

देवर- + - वानी = देवरानी - दयौरानी

जेठ- + - वानी = जेठानी - जिठानी

डाक्टर- + - वानी - वानी = डाक्टरनी

(१८) ' - वाप ' - इससे भाव वाचक संज्ञा बनती है

मिल् - + - वाप = मिलाप

(१९) - वापा - इससे भाववाचक संज्ञा बनती है

राडि - + - वापा = रडापा

बहिन - + - वापा = बहिनापा

विशेषण तथा सर्वनाम से-

बूढ़ - + - वापा - वाप्पा = बुढापा - बुढाप्पा  
( दादरी - सिकन्द्राबाद )

मीट - + - वापा - वाप्पा = मुटापा - मुटप्पा

(२०) - पा :- यह भी मूलतः ' वापा ' का ही रूप है।

पूजा - + - पा = पूजापा

(२१) - वाय् - वा - संज्ञामूल प्रातिपदिकों के पीछे  
जुड़कर स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का  
निर्माण करता है।

पंव - + - वाय् - वात = पंवाय् - पंवात

बहुत - + - वाय् - वात = बहुतायत - बहुतात

(२२) - ' वार ' - वारा, वारी - संज्ञा के पीछे जोड़कर पुल्लिंग  
तथा स्त्रीलिंग संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है।  
कार्य करने वाला अथवा स्थान उसका स्वामी के कार्य का बोध  
होता है।

लोहा - + - वार = लुहार + ई = लुहारी  
 सोना - + - वार = सुहार + ई = सुहारी  
 चाय - + - वा = चमार + ई = चमारी  
 गाम - + - वार = गंवार + ई = गमारी

“ - वारी - ”

भीस - + - वारी = भिसारी

जूवा - + - वारी = जुवारी

“ - वारा ” - धातु के साथ मिलकर भाव वाचक संज्ञा बनाता है-

निबट - + - वारा = निबटारा

कुटक् - + - वारा = कुटकारा

“ - वारिन ” - स्त्रीलिंग

चम - + वारिन् = चमारिन

घस - + वारिन् = घसवारिन

(२३) “ - वाल् ” - स्थानवाचक प्रत्यय

सुसर- + - वाल = सुसराल ( सुसरारि ) बदायूँ

सुसराइ- दादरी- सिकन्दराबाद-

ननिहा - ननसा - + - वाल = नन्साल

(२४) “ - वाला ” - स्थानवाचक

सिव- + - वाला = सिवाला

(२५) “ - वालू ” - क्सेसे विशेषण बनाते हैं -

फगड़- + - वालू = फगड़ाळू

लज्जा- + - वालू = लज्जाळू

(२६) " - वाक् " - इसको धातु में जोड़कर संज्ञा बनाते हैं, जिससे किसी प्रकार के कार्य का बोध अर्थ होता है,

|         |   |   |      |   |          |
|---------|---|---|------|---|----------|
| पढ़े -  | + | - | वाक् | = | पढ़ाव    |
| कट् -   | + | - | वाक् | = | कटाव     |
| चुन् -  | + | - | वाक् | = | चुनाव    |
| बच् -   | + | - | वाक् | = | बचाव     |
| बर्त् - | + | - | वाक् | = | बर्त्ताव |

(२७) " - वावट् " - इस प्रत्यय को धातु में जोड़कर भाववाचक संज्ञाएँ बनाई जाती हैं।

|        |   |   |       |   |        |
|--------|---|---|-------|---|--------|
| कस् -  | + | - | वावट् | = | कसावट  |
| बुन् - | + | - | वावट् | = | बुनावट |
| बन् -  | + | - | वावट् | = | बनावट  |
| रुक् - | + | - | वावट् | = | रुकावट |
| लिख् - | + | - | वावट् | = | लिखावट |

(२८) " - वावन् " - इस प्रत्यय को धातु में जोड़कर भाववाचक संज्ञाएँ बनाई जाती हैं।

|          |   |   |       |   |                  |
|----------|---|---|-------|---|------------------|
| उद् -    | + | - | वावन् | = | उढावन            |
| विद्वा - | + | - | वावन् | = | विद्वावन         |
| पहिर -   | + | - | वावन् | = | पहिरावन - पहरावन |

(२९) " - वास् " - विशेषण सर्व धातुओं के पश्चात् लगकर भाववाचक संज्ञाएँ निष्पन्न की जाती हैं :

|        |   |   |      |   |       |
|--------|---|---|------|---|-------|
| ऊँघा - | + | - | वास् | = | ऊँघास |
|--------|---|---|------|---|-------|

|        |   |   |      |   |        |
|--------|---|---|------|---|--------|
| मीठा - | + | - | वास् | = | मीठास् |
| पी -   | + | - | वास् | = | पियास् |
| मु -   | + | - | वास् | = | मुनास् |

(३०) - वाहट - वाहत् - इससे माधवाच्च संज्ञाएँ बनती हैं।

|           |   |   |       |   |            |
|-----------|---|---|-------|---|------------|
| घबरा -    | + | - | वाहट  | = | घबराहट     |
| फड़फड़ा - | + | - | वाहट  | = | फड़फड़ाहट  |
| गड़गड़ा - | + | - | वाहट  | = | गड़गड़ाहट  |
| भलमनसा -  | + | - | वाहत् | = | भलमन्साहत् |

(३१) ' - इक् ' - इससे संज्ञा से विशेषण बनाते हैं :

|           |   |     |   |           |
|-----------|---|-----|---|-----------|
| मास -     | + | इक् | = | मासिक     |
| विज्ञान - | + | इक् | = | वैज्ञानिक |
| वेद -     | + | इक् | = | वैदिक     |
| धन -      | + | इक् | = | धनिक      |

(३२) ' - इत् ' - संज्ञा या धातु से विशेषण बनाते हैं।

|        |   |   |     |   |        |
|--------|---|---|-----|---|--------|
| हर्ष - | + | - | इत् | = | हर्षित |
| लिख -  | + | - | इत् | = | लिखित  |
| रच -   | + | - | इत् | = | रचित   |

(३३) ' - इन् ' - इससे स्त्रीलिंग बनाते हैं।

|           |   |     |   |            |
|-----------|---|-----|---|------------|
| कुम्हार - | + | इन् | = | कुम्हारिनी |
| साँप -    | + | इन् | = | साँपिनी    |
| तेल -     | + | इन् | = | तेलिनी     |

जुलाहा - + - इन = जुलाहिन  
 चौधरी - + - इन = चौधाराइन  
 ठाकुर - + - इन = ठाकुराइन  
 पुजारी - + - इन = पुजारिन

(३४) \* - इम् - ई इससे संज्ञा तथा धातु से विशेषण और भाववाचक संज्ञाएँ बनाई जाती हैं।

वागे - + - इम् = वणिम ( मविष्य )

(३५) \* - इया \* - संज्ञा से विशेषण बनता है।

मूंग - + - इया = मूंगिया  
 पुरव - + - इया = पुरविया

मूल संज्ञा प्रातिपदिकों के पश्चात् जोड़कर स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का निर्माण किया जाता है।

लठ - + - इया = लठिया  
 खट - + - इया = खटिया  
 लोढ़ - + - इया = लोड़िया ( पैरों में बाँधी की एक गहना )

धातु से विशेषण-

बढ़ - + - इया = बढ़िया  
 घट - + - इया = घटिया

धातु या संज्ञा से कर्तृवाचक संज्ञा -

डोलक - + - इया = डोलकिया - हलकिया  
 फटफट - + - इया = फटफटिया



(३६) " - इवा " - संज्ञा एवं विशेषण प्रातिपदिकों के पीछे लगाकर  
संज्ञा प्रातिपदिकों का व्युत्पादन होता है।

सुख - + - इवा = सुखिवा

दुख - + - इवा = दुखिवा

काला - + - इवा = कालिवा

(३७) - " इत् " - इससे संज्ञा से विशेषण बनाते हैं

बोझ - + - इत् = बोझिल

(३८) - " ई " - इसका हिन्दी में सबसे अधिक प्रयोग होता है इसका  
व्यवहार अनेक अर्थों में होता है।

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग

झोरा - + - ई = झोरी

तेल - + - ई = तेली

विशेषण-

झोटा - + - ई = झोटी

बड़ा - + - ई = बड़ी

संज्ञा- विशेषण धातु से भाववाचक संज्ञा

खेत - + - ई = खेती

दोस्त - + - ई = दोस्ती

सर्वनाम-

वपन - + - ई = वपनी

तुम्हारा - + - ई = तुम्हारी

(३६) ° - ईल् - इसमें पुल्लिङ्ग प्रत्यय - ° वा ° और स्त्री० लि० प्र० = ° ई ° जोड़कर प्रयोग्य विशेषण बनाते हैं।  
 वैसे - ° ईला ° ईली ° स्वतन्त्र प्रत्यय न होकर संयुक्त प्रत्यय हैं।

कृष् - + - ईला = कृषीला  
 शर्म - + - ईला = शर्मीला  
 नोक - नुफ - + - ईला = नुफीला  
 रोष् - + - ईला = रोषीला

(४०) ° - उला - इसको धातुओं में जोड़ते हैं :

टहल् - + - उला = टहलुवा  
 रहल् - + - उला = रहलुवा ( बैल तगा )  
 ( फहासू - डिबाई परगनों - कनूफहहर में प्रयोग )  
 फहल् - + - उला = फहलुवा ( फहरदार )  
 फहर - + - उला = (फहरुवा )  
 चमर - + - उला = चमरुवा ( चमार- चमट्टा-  
 चमरुवा कहते हैं )  
 गाम - + - उला = गमउला ( गांव का )  
 सहर - + - उला = सहरुवा ( शहर का )  
 पार - + - उला = पारुवा ( पार का रहने वाला )  
 हल् - हड़ - + - उला = हरुवा ( हलवाला )

(४१) ° - रर ° - इससे संज्ञा , विशेषण एवं धातु से निर्लिङ्ग विशेषण बनाते हैं। ° वा ° और ° ई ° जोड़कर संयुक्त प्रत्यय ज्ञात होता है।

मामा- + - एर + वा = ममेरा

चाचा- + - एर + वा = जेजेरा

बहुत - भाँत - भुत - + एर + वा = भाँतेरा - भुतेरा

लुट - + - एर + वा = लुटेरा

### व्यवसाय बोधक शब्द-

काम- + - एर + वा + ई = कमेरा - कमेरी

चित्र- + - एर + वा = चितेरा

(४२) " - रंड़ी " संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाते हैं ।

चाक - + - रंड़ी = चकैड़ी ( चाक के पास का बर्तन )

दधि- दही - + - रंड़ी = दहैड़ी ( दही का बर्तन )

(४३) " - ऐत् " - इससे संज्ञा तथा धातु से कर्तृवाचक संज्ञा बनाते हैं।

वाल्हा - + - ऐत् = वल्लैत

लट्ठ - + - ऐत् = लठैत

लढ़ - + - ऐत् + वा = लढ़ैता

(४४) " - एत् " संज्ञा में इसको जोड़कर संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का निर्माण किया जाता है।

लुठ - + - एत् = लुठैल

लुठ - + - एत् + - वा = लुठैला

साँत् - + - एत् + - वा = साँतैला

(४५) " - वी " - संज्ञा मूल० प्रा० के पश्चात् इस प्रत्यय को जोड़कर पुल्लिङ्ग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का निर्माण किया जाता है।

बड़ड़ - + - वी = बड़ुवा

हौर - + - वी = हौरा

( ४६ ) " - वोई " - संज्ञा से पति बोधक संज्ञा

ननद् - + - वोई = ननूदोई

बहन - + - वोई = बहनोई

(४७) " - वोल् " संज्ञा से लघुत्व बोधक निर्लिङ्गी संज्ञा-

साँप - + - वोल् = सँपोल

इसमें " वा " " ई " जोड़कर

साट - + - वोल् - + - वा = सटौला

साँप - + - वोल् - + - वा = सँपोला ( साँप का

बच्चा )

(४८) " - जीना - " जीत " - इसका क्रिया संज्ञा शब्दों में प्रयोग किया जाता है :

समझ - + - जीना = समझाँता

इकला - + - जीना = इकलाँता

पहल - + - जीता = पहलाँता ( प्रथम बार का बच्चा )

बहन - + - जीता = बहनाँता ( बहन का लड़का )

बहन - + - जीत = बहनाँत

“ - बीता ” में ही “ ई ” प्रत्यय के संयोग से स्त्रीलिङ्ग शब्द निर्मित किए जाते हैं :

|        |          |   |                         |
|--------|----------|---|-------------------------|
| बहन-   | † - बीती | = | बहनीती ( बहन की लड़की ) |
| इक्की- | † - बीती | = | इक्कीती ( अक्की )       |
| काठ-   | † - बीती | = | कठीती                   |
| बापु - | † - बीती | = | बपीती                   |

(४६) - बीट , बीट, बीटा, बीटी

|        |            |   |                                               |
|--------|------------|---|-----------------------------------------------|
| भस-    | † - बीट    | = | भसीट ( भसकने वाली बुरी स्त्री के लिए प्रयोग ) |
| सूख-   | † - बीट    | = | सूखीट ( सूखाने वाली )                         |
| पहल-   | † - बीट    | = | पहलीट ( पहली बार बच्चा देने वाली गाय भैंस )   |
| काह -  | † - बीट    | = | कहीटा                                         |
| काजर - | † - बीटा   | = | कजरीटा                                        |
| कस -   | † - • बीटी | = | कसीटी                                         |

(५०) “ - बीतरी ” - क्रिया शब्दों में इसका प्रयोग होता है

|      |           |   |         |
|------|-----------|---|---------|
| बढ़- | † - बीतरी | = | बढ़ातरी |
|------|-----------|---|---------|

(५१) - “ बीड़ ” - इसका संज्ञा शब्दों में प्रयोग किया जाता है।

|        |          |     |   |          |
|--------|----------|-----|---|----------|
| मुँक - | † - बीड़ | † ई | = | मुँकीड़ी |
|--------|----------|-----|---|----------|

|       |        |          |     |   |                       |
|-------|--------|----------|-----|---|-----------------------|
| नीम - | नीब् - | † - बीड़ | † ई | = | निबीड़ी ( नीम का फल ) |
|-------|--------|----------|-----|---|-----------------------|

(५२) " - वीना " धातु में जोड़ कर संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है :

बिछा - + - वीना = बिछीना

सिख - + - वीना = सिखीना

तड़की - तरकी - तड़ - तर - + वीना = तरीना

( कान का गलना )

(५३) " - पा - पी " -

दादरी, सिकन्दाबाद, स्याना, अगीता, बुलन्दशहर, सम्भल, रायपुर में " पा " व्यवहृत होता है तथा बदायूं, बरेली, पीलीभीत में - पी - पबी - पी का व्यवहार होता है।

गोटा - + - पबी = फुटापी ( बदायूं )

बुढ़ा - + - पबी - पी = बुढ़ापबी - बुढ़ापी

(५४) " - फन " इसकी संज्ञा मूल या व्युत्पन्न प्रातिपदिकों में जोड़ा जाता है।

गंवार - + - फन = गंवारफन

त्वड़ा - त्वार - + - फन = त्वड़ाफन - त्वराफन

ढेड़ - + - फन = ढेड़फन ( चमार जाति के लिए ही ढेड़ का प्रयोग किया जाता है तथा कौवा के लिए ढेड़ कहते हैं। )

लड़क - + - फन = लड़कफन

कूट - + - फन = कूटफन

हुट - + - फन = हुटफन

(५५) " - ती " - विशेषण तथा क्रियाओं में जोड़कर भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण किया जाता है।

चर - + - ती = चरती

भर - + - ती = भरती

ज्यादा - + - ती = ज्यादा - ज्यादा

( इतारी, डिबाई, अनुपस्थित में  
बमार जाति के लोग ज्यादा  
या ज्यादा का प्रयोग करते हैं। )

(५६) " - तर " इसे क्रियाओं में जोड़ा जाता है तथा इससे " वाले " का अर्थ प्रकट होता है।

चाँस - + - तर = चाँसतर ( चाँसने वाला दूध  
पीने का गाय घेस का  
ब वच्चा )।

सीस - + - तर = सीसतर - सीकृतर

(५७) " - ड " , " र " - इसमें " वा " ई " प्रत्यय जोड़ते हैं :

ज्वर - + - ड = ज्वरा , ज्वड़ा

दुल - + - ड = दुलड़ा

पाग - + - डी = पाड़ी

दाम - + - डी = दमड़ी

(५८) " - त " वर्तमान कालिक कृदन्त का प्रत्यय जिसमें वा, इ, ए,  
औ , जोड़कर रूप बनते हैं :

लिस - + - त् = लिखत

लिस- + - त - + वा- ई = लिखतवा - लिखती

(५९) " - थ " क्रमवाचक - वा, ई जोड़कर रूप बनते हैं

चौथ - + - वाइ + ई = चौथा , चौथी

(६०) " - कार " - कर्तृवाचक के अर्थ में प्रयुक्त होता है :

जान - + - कार = जानकार

(६१) " - की " धातु से कर्तृवाचक

बैठ - + - की = बैठकी

हूव - + - की = हूवकी

फाप् - + - की = फाप्की

चुस् - + - की = चुसकी

(६२) " - मय " का अर्थ पूर्ण होता है।

दुस - + - मय = दुसमय - दुस में

जल - + - मय = जलमय

(६३) " - रु " स्वार्थिक प्रत्यय । इ , ई " रूप में हैं

गम - + - रु = गमरु ( गम रूप )



इसी एक रूप 'हू' भी हो सकता है - यथा

गम् - + - हू = गम्हू-गबहू ( गारी )

चम् - + - हा = चमड़ा

(६४) " - ल" विशेषणात्प्रक प्रत्यय - इसका संयुक्त रूप ला ( - ल + वा ) ली ( ल + ई ) मिलते हैं।

कल् - + - ला = काला

फिल् - + - ला = फिल्ली

(६५) " - सार - साल " संज्ञा मूल प्रान्तिपदिकों में जुड़ता है

धुड़ - + - सार = धुड़सार

चट - + - सार = चटसार

(६६) " - साला ( ~~साल~~ साला ) - संज्ञा मूल प्रान्तिपदिकों में जोड़ा जाता है

धर्म - + - साला = धर्मसाला

गऊ - + - साला = गऊसाला

(६७) " - हार" - "हारी" - संज्ञाओं में संयुक्त होता है तथा 'वाला' का अर्थ देता है।

पानी - + -हारी = पनिहारी

मनि - + - हार + ई = मनिहार, मनिहारी

लकड़ - + - हार + का = लकड़हारा

### ५. २. २. १. ३ देशज प्रत्यय

जिसकी व्युत्पत्ति ज्ञात नहीं है इसमें उन प्रत्ययों को लिया गया है।

(१) " - क्कू " - वाला-,- नेवाला । धातु में जोड़कर विशेषण बनाते हैं।

पह- + - क्कू = पहक्कू

लह- + - क्कू = लहक्कू

(२) " - क्क्कड़ " - ने वाला " कर्तृवाचक

धातु में जोड़कर विशेषण बनाते हैं जिसका संज्ञा बन् प्रयोग चलता है

पीय - + - क्क्कड़ > पिक्क्कड़

घूम - + - क्क्कड़ > घूमक्कड़

बूम - + - क्क्कड़ > बूमक्कड़

भूल - + - क्क्कड़ = भूलक्कड़

(३) " - कड़ " संज्ञा से संज्ञा तथा विशेषण बनाने में प्रयुक्त होता है ।

कन्ध - + - कड़ = कन्धड़

भूस - भूक - + - कड़ = भूक्कड़

(४) " - वाक् " धातु से कर्तृवाचक संज्ञा

पैर - + - वाक् = पैराक्

तेर - + - वाक् = तेराक्

(५) " - वाटा " स्वनिष्ठात्मक शब्दों के साथ जोड़कर भाव वाचक संज्ञा बनाने हैं।

सन् - + - वाटा = सन्नाटा

सुर - + - वाटा = सुराटा

(६) " - डवल " , - डयल " इसे संज्ञा या धातु में जोड़ कर विशेषण बनाने हैं।

( मिट्टी ) मट - + - डवल = मटिवाल

( सड़ ) सड़ - + - डवल = सड़िवाल

#### ५. २. २. २ विदेशी प्रत्यय

#### ५. २. २. २. ०

विदेशी प्रत्यय हिन्दी बोलियों में विशेषतः

फारसी, अरबी से ही आए हैं। अंग्रेजी के जो

दो एक प्रत्यय आए भी हैं उनका प्रयोग बोलियों

में प्रायः नगण्य सा ही है।

#### ५. २. २. २. १ फारसी प्रत्यय-

(१) " - वन् " इससे प्रायः संज्ञा से क्रिया विशेषण बनाने हैं :

ब्रज में बहुवचन बनाने के लिए - वन

मसल - + - वन् = मसलन

जबर - + - वन् = जबरन

(२) " - जान " - " जाना "

सुर - + - जाना = सुरमाना

रौज - + - जाना = रौजाना

घर - + - जाना = घराना

साल - + - जाना = सालाना

हर्ज - + - जाना = हर्जाना

नज़र - + - जाना = नज़राना

(३) " - जानी " - मूलतः यह अरबी का प्रत्यय है जो संज्ञा से विशेषण बनाने के लिए प्रयुक्त होता है।

वर्क - + - जानी = वर्कानी

तूफ - + - जानी = तूफानी

रूह - + - जानी = रूहानी

जिस्म - + - जानी = जिस्मानी

(४) " - इयत " , " इयत " - मूलतः यह अरबी का प्रत्यय है, संज्ञा या विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाने में इसका प्रयोग होता है।

इन्सान - + - इयत = इन्सानियत

वसल - + - इयत = वसलियत

सैर - + - इयत = सैरियत

काबिल - + - इयत = काबलियत

आदम - + - इयत = आदमियत

(५) " - इश " - यह फारसी प्रत्यय है- घातु विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाते हैं :

मत - + - इश = मालिश

करमा - + - इश = करमाइश

(६) " - इस्तान " - मूलतः फारसी का स्थान ( सं० स्थान )  
है :

पाक - + - स्तान = पाकिस्तान

कन्न - + - स्तान = कन्निस्तान

(७) " - ई " यह बरबी, फारसी से हिन्दी में जाकर तद्भव  
" ई " में विलीन हो गया है :

सुश - + - ई > सुशी

दोस्त - + - ई > दोस्ती

भल - + - ई > भली

सल - + - ई > सली

(८) " - ईन् " इससे संज्ञा से विशेषण बनाने हैं ।

संग - + - ईन् = संगीन

रंग - + - ईन् = रंगीन

शीक - + - ईन् = शीकीन

नमक - + - ईन् = नमकीन

(९) " - कार " हिन्दी की तरह फारसी में भी यह प्रत्यय  
जाया है, इसका अर्थ " करने वाला " है।

काश्त - + - कार = काश्तकार

बद्- + -कार = बदकार

दस्त - + - कार = दस्तकार

सलाह - + - कार = सलाहकार

(१०) - सौर - यह फारसी धातु 'सुर्द' का कृदन्ती रूप है  
और इसका अर्थ है 'साने वाला' ।

घुस - + - सौर = घुससौर

सूद - + - सौर = सूदसौर

लत - + - सौर = लतसौर

रिश्वत - + - सौर = रिश्वतसौर

(११) - गर - फारसी का कर्तृवाचक या व्यवसायसूचक प्रत्यय है।

कारी - + - गर = कारीगर

सौदा - + - गर = सौदागर

जादू - + - गर = जादूगर

बाबू - + - गिर + ई = बाबूगीरी

कुली - + - गिर + ई = कुलीगीरी

(१२) - गार - यह संस्कृत तथा अवैष्णव के 'कार' के अनुरूप  
हो फारसी प्रत्यय है। संज्ञा से कर्तृवाचक  
भाववाचक संज्ञाएँ बनाने हैं।

मदद- + - गार = मददगार

रौज- + - गार = रौजगार

याद - + - गार = यादगार

(१३) " - गाह " - यह फारसी प्रत्यय है यह धातु या संज्ञा में लगता है।

चर - + - गाह = चरागाह

हँद - + - गाह = हँदगाह

बन्दर - + - गाह = बन्दरगाह

(१४) " - गी " - इससे विशेषण , संज्ञा तथा धातु से भाववाचक संज्ञा का निर्माण करते हैं।

जिन्द - + - गी = जिन्दगी

बावार - + - गी = बावारी

गन्द - + - गी = गन्दगी

बान - + - गी = बानगी

(१५) - " गीर " - यह फारसी धातु " गिरफ्तन , ( अवेस्ता- गीरव , वैदिक सं० " ग्रम " लौकिक सं० ग्रह से सम्बद्ध है। " फटने वाला " के अर्थ में प्रयोग होता है।

राह- + - गीर = राहगीर

उठाई - + - गीर = उठाईगीर

जहाँ - + - गीर = जहाँगीर

(१६) - "च" - "करने वाला, चलाने वाला, के अर्थों में प्रयुक्त होता है।

नकल - + - च + ई = नकलची

बन्दूक - + - च + ई = बन्दूकची

(१७) - "ची" - यह तुर्की का प्रत्यय है जो फारसी के माध्यम से हिन्दी में आया है।

मिडिल - + - ची = मिडिलची

अफीम - + - ची = अफीमची

खान - + - ची = खानची

(१८) - "जाद" इसमें - "जा-ई" जोड़ कर पुल्लिंग और स्त्रीलिंग बनाते हैं :

शाह - + - जादा = शाहजाद

हराम - + - जादी = हरामजादी

इसका प्रयोग "जात" रूप में भी होता है

चचा - + - जात = चचाजात

चचाजाद

(१९) - "दा" इसका प्रयोग जाननेवाले के अर्थ में होता है। यह फारसी धातु "दानिस्तान" अवेस्ता - "दा (जानना) का कृदन्ती रूप है।

कदर - + - दा = कदरदा

कानून - + - दा = कानूनदा

जवान - + - दा = जवानदा



(२०) "दान्" यह कारसी प्रत्यय पात्रवाचक पहलवी "दान्"   
 अवस्था "दान तथा संस्कृत" दान से सम्बन्धित है।

कलम- + - दान = कलमदान

फूल- + - दान = फूलदान

चाय- + - दान + ई = चायदानी

मच्छर- + - दान + ई = मच्छरदानी

धूप- + - दान + ई = धूपदानी  
 धूपकण्डके

गौद- + दान + ई = गौददानी

(२१) "- दार" "वाला" के अर्थ में प्रयुक्त होता है। यह कारसी धातु   
 "दाश्तन" (= धारण करना) अवस्था "दर"   
 सं० ( धर की एक कृदन्ती रूप है। इसी संज्ञा सर्व धातु   
 और विशेषण जोड़कर संज्ञा बनाते हैं।

धाना- + - दार = धानेदार

पहरा- + - दार = पहेदार

माल- + - दार = मालदार

जमी- + - दार = जमींदार

चौकी- + - दार = चौकीदार

सरीस- + - दार = सरीसदार

(२२) "- नाक्" = से मरा हुवा । यह कारसी प्रत्यय (सं० नक्   
 ( मूल - नक् ) से सम्बन्धित ) संज्ञा में जोड़ा   
 जाता है।

स्तर - + - नाक् = स्तरनाक  
 लौक - + - नाक् = लौकनाक  
 दर्द - + - नाक् = दर्दनाक

(२२) - बाज् = वाया - करने वाला के अर्थ में प्रयुक्त होता है। यह फारसी धातु 'वास्तन' ( अवेस्ता- बज् , संस्कृत- मज् ) का कृदन्ती रूप है।

चाल - + - बाज् = चालबाजें  
 चाल - + - बाज् + ई = चालबाजी  
 धौसा - + - बाज् = धौसाबाज  
 नशा - + - बाज् + ई = नशाबाजी

(२३) - बान् = रखनेवाला , चलने वाला । यह फारसी प्रत्यय ( सं० बान् ) संज्ञा में जोड़कर संज्ञा तथा विशेषण बनाते हैं।

दर - + - बान् = दरबान्  
 महर - + - बान् = महरबान्  
 बाग - + - बान् + ई = बागवानी

(२४) - बारी = बरसना - इसका सम्बन्ध फारसी धातु 'बारीदन' ( = बरसना , सं० वृण् ) से है।

बम - + - बारी = बमबारी  
 गोला - + - बारी = गोलाबारी

- (२५) " - बीन " - देसने वाला - यह फारसी धातु " दीदन " ( देसना ) का एक रूप है। ज़ैस्ता में यह धातु " बयेन " तथा संस्कृत में " वेन् " - वेण " ( पह-चानना ) रूप में मिलती है।

तमाश - + - बीन् = तमाशबीन

दूर - + - बीन् = दूरबीन

खुद - + - बीन् = खुदबीन

- (२६) " - मन्दू " - यह " वाला " के अर्थ में प्रयुक्त होता है, फारसी प्रत्यय, संस्कृत " मत् " - वन्त से सम्बद्ध है।

खबल - + - मन्द = खबलमन्द

दौलत - + - मन्द = दौलतमन्द

जहरत - + - मन्द = जहरतमन्द

- (२७) " - वर " - " वाला " के अर्थ में प्रयोग होता है। यह फारसी प्रत्यय पहलवी " वर " ज़ैस्ता " वर " तथा संस्कृत " वर " ( मार्गना ) से सम्बन्धित है।

जान - + - वर = जानवर

नाम - + - वर = नामवर

हिम्मत - + - वर = हिम्मतवर

ताकत - + - वर = ताकतवर

(२२) " - वार " - " वाला " अर्थ में प्रयुक्त होता है।

फणील - + - वान् = फीलवान

गाड़ी - + - वान् = गाड़ीवान

हाथी - + - वान् = हाथीवान

कोच - + - वान् = कोचवान

(२६) " - वार " - " वाला " यह " वर " से ही सम्बन्धित है।

सत्ता - + - वार = सत्तावार

उम्मीद - + - वार = उम्मीदवार

माह - + - वार = माहवार

महिने - + - वार = महिनेवार

#### ५. २. २. २. २ ऋजि प्रत्यय-

इस वर्ग में तीन प्रत्यय हैं " ऋज्ज् ", रुज्ज्, इस्ज्, परन्तु ग्रामीण बोलियों में उनका प्रचलन नहीं है। चुनावों के कारण लोग " इस्ज् " का अवश्य प्रयोग करते हैं।

सौसल - + - इस्ज् = सौसलिस्ज्

### ५. २. ३ समास-

#### ५. २. ३. १

सामान्य धातु की पुनरुक्ति से निर्मित समासों में स्वनि- विकार दूसरे संयोगी ~~का~~ अवयव में ही होता है। स्थान- विकार- भेद की दृष्टि में रखकर कुछ नियम बनाने जा सकते हैं :

५. २. ३. १. १ ई, ऊ , ए , ऐ तथा औ > वा , यथा

पीट - पाट

सी - सा = सीना

पी - पा = पीना

कीन - कान = कीनना

चू + चा = चूना - चुवना

लूट + लट = लूटना

दे - दा = देना

फल - फाल = फल होना

बैल - बाल = बैल

ली - ला = लेना

पोल - पाल = पोलपट्टी

५. २. ३. १. २

वा > ऊ , यण

सा - सू = साना

पा - पू = पीना

चाट - छूट = चाटना

मात - भूत = भान

साल - झल = साल ( चमड़ा )

तार - तूर = तार

५. २. ३. २

धातु जब ह्रस्वी कृत हो पुनरुक्ति से व्युत्पन्न समासों में स्थान- विकार द्वितीय संयोगी अवयव में होता है, उसमें -  
आ का आगम हो जाता है।

फिट - फिटा = फिटकर

गिर - गिरा = गिरकर

भुर - भुरा = भूरा - सफेद मट मैला

सुन - सुना = सुनकर

लग - लगा = लगकर

खिल - खिला = खिलकर

चल - चला = चलकर

#### ५. २. ३. ३ समस्त पद संज्ञा प्रातिपदिक

#### ५. २. ३. ३. १

जो समास संज्ञा प्रातिपदिकों की पुनरुक्ति से व्युत्पन्न होते हैं। उन्हें भी स्वनि- विकार दूसरे संयोगी अवयव में देखा जाता है। स्वनि- विकार- भेद की दृष्टि से इसके लिए भी दो नियम बन सकते हैं :

(क) ई, ऊ, ए, ऐ तथा ओ, औ, यथा

बील - बाल = बील ( पक्षी )

पीक - पाक = पान की पीक ( मुरादाबाद )

दूद - दाद = दूध आदि

तेल - ताल = तेल आदि

कोरा- कोरी - लड़कै वगैरा

चोर - चार = चोर आदि

(स) वा ऋ ऊ यथा

लाट - लूट = शीरा - लाट ( शक्कर के पश्चात् शीरा रह जाता है )

माल - मूल = माल आदि - बसों की माल

पाग - पूग = फाड़ी ( बाजकल शादियों में ही वर को पाग बांधी जाती है जिसमें मोर बंधा रहता है। )

साग - सूग = साग भाजी

आलो - ऊलो - आला , नास

५. २. ३. ३. २

संज्ञा प्रातिपदिक की पुनरुक्ति से बनाए हुए ऐसे भी समास उपलब्ध हैं जिनके द्वितीय संयोगी अवयव स्वनि- विकार की दृष्टि से आदि व्यंजन हीन दृष्टिगत होते हैं : यथा

रोटी - ओटी = रोटी आदि

खाट - आट = खाट कौरा

घाई - आई = पहले नै करने के लिए जो वस्तु प्रमाण के रूप में दी जाती है।

फेज - रज = फेज आदि



इसमें अपवाद भी मिलते हैं यदि मुख्य प्रातिपदिक स्वर से आरम्भ होने वाला है तो पुनरुक्ति में "स्" का आगम वादि भाग में ही हो जाता है :

वाटा - साटा = वाटा वादि

वालू - सालू = वालू वादि

ईंट - सींट = ईंट वादि

कुछ अपवाद भी हैं

फूठ - मूठ

हल्ला - गुल्ला

५. २. ३. ३. ३

धातु की ( सामान्य एवं द्वस्वीकृत ) पुनरुक्ति से व्युत्पन्न समासों के दोनों संयोगी अवयवों में वा- तथा - ई के आगम से समस्त पद सँज्ञा बनते हैं। यथा-

लीया - लोइ = लीया लाई

हीना - हीनी = हीन कष्ट

जाना - जूनी = जान पहचान

देखा - देखी = देखा दासी

भागा - भागी = भाग भूग

फिटा - फिटी = पीट पाट

सुला - सुली = सुलाई

लड़ा - लड़ी = लड़ाई

लगा - लगी = लगाई

५. २. ३. ३. ४

विशेषण प्रातिपदिक से व्युत्पन्न समासों में  
दोनों से योगी अवयवों में भी क्रमशः ' वा ' तथा ' ई ' आगम से  
समस्त फल संज्ञा बनने हैं :

तत्ता - तत्ती = गर्म

गर्मा - गर्मी = गर्मा गर्मी

नर्मा - नर्मी = नर्मा नर्मी

५. २. ३. ४ समस्त फल विशेषण

५. २. ३. ४. १

कृदन्त विशेषण प्रातिपदिकों की पुनरुक्ति  
से व्युत्पन्न समास, यथा :

पायी - पायी = पाए हुए

फगड़ते - फगड़ते = फगड़ते हुए

लायी - लीयी = लेते हुए

सोते - सोते = सोते हुए

जागते - जागते = जागते हुए

लाघा - लाघा = लाते हुए )

पाघा - पाघा = पाते हुए ) ये शब्द दादरी, सिक-  
 ) ब न्द्राबाद, गाजिया-

साघा - साघा = साते हुए ) बाद, हाफुड, स्याना

लोढ़टा - लोढ़टा = लेते हुए ) में मिलते हैं।

#### ५. २. ३. ४. २

समस्त पद क्रिया को आधार बनाकर 'यो' के  
 वागम से समस्त पद विशेषण बनते हैं :

लूट्यो = लाट्यो = लूटा - लाटा

लेयो - लायो = लीया लाया

पीयो - पायो = पीया - पाया

सोल्यो - साल्यो = सोला साला

वोल्यो - वाल्यो = वोला वाला

#### ५. २. ३. ४. ३

कृष्ण विशेषण प्रातिपदिकों की पुनरुक्ति में  
 व्युत्पन्न समासों के प्रथम संयोगी अवयव में 'का' के वागम से समस्त  
 पद विशेषण बनते हैं । यथा-

गरमा - गरम = गर्मा - गर्म

नरमा - नरम = नर्मा - नर्म

५. २. ३. ४. ४ " म" वागम से भी समस्त पद विशेषण समास मिलते हैं: यथा

छोटो - मोटो = छोटा-मोटा

टेढो - मेढ़ो = टेढ़ा - मेढ़ा

वफाद भी मिल जाते हैं :

सट्टो - सट्टो = सट्टा - सट्टा

गलत - सलत = गलत सलत

यदि प्रथम संयोगी अवयव के आदि में यदि स्वर होता है तो पुनरावृत्ति में उसके पूर्व " स " का वागम ही जाता है :

बनाप - सनाप = बनाप सनाप

कट - सट = कट सट

उल्टा - सुल्टा = उल्टा - सुल्टा

जलग - सलग = जलग - सलग

बोले - सोले = बोले - सोले

५. २. ३. ४. ५

विशेषण प्रातिपदिकों की पुनरावृत्ति मात्र से

समास - यथा

कासा - काना = कासा कासा ( दाबरी, सिकन्डा-  
बाद, स्थाना, हापुड़)

हरा- हरा = हरा- हरा

पीली - पीली = पीला पीला

टेढ़ी - टेढ़ी = टेढ़ा - टेढ़ा

चार - चार = चार - चार

पांच - पांच = पांच - पांच

२. २. ३. ४. ५

इस सपास जी विशेषण प्रातिपदिकों की पुनरावृत्ति  
से ती व्युत्पन्न होती है, परन्तु पुनरावृत्ति में उनमें  
स्वनि- विकार आजाता है।

ईट - बाट = ईट बादि

भूसा - भासा = भूसा भासा

सीधा - साधा = सीधा- साधा

ठण्डा - वण्डा = ठण्डा - वण्डा

धीसा- धासा = धीसा- धासा

पासा - पूसा = पासा बास

सासा - सूसा = सासा बासा

धासा - धूसा = धासा बासा

भसा - भूसा = भसा - भसा

न्यारी - न्यूरी = कल- सल

५. २. ३. ५ समस्त पद अव्यय-

५. २. ३. ५. १-

ऐसे संज्ञा प्रातिपदिक, जो स्तुकरणात्मक प्रक्रिया के बाधार पर पुनरावृत्ति से व्युत्पन्न समासों के प्रथम संयोगी अव्यय में - वा के आगम से 'समस्त पद अव्यय' बनते हैं, यथा-

कटा - कट = कटाकट

सटा - सट = सटसट

गटा - गट = गटागट

सटा - सट = सटा - सट

५. २. ३. ५. २

संज्ञा प्रातिपदिकों की पुनरावृत्ति से व्युत्पन्न समासों के प्रथम संयोगी अव्यय में - वां - के आगम से भी समस्त पद अव्यय बनते हैं। यथा-

दिनों - दिन = दिनों दिन

रातों - रात = रातों रात

हाथों - हाथ = हाथों हाथ

कानों - कान = कानों कान

बीचों - बीच = बीचों बीच

५. २. ३. ५. ३ -

क्रिया विशेषण प्रातिपदिकों की पुनरावृत्ति से भी समास व्युत्पन्न हो जाते हैं- यथा -

कनै - कनै = पास पास

कदी - कदी = कमी कमी

अवर्ह - अवर्ह = अभी अभी  
 पीछे - पीछे = पीछे - पीछे  
 कद - कद = कब कब  
 जद- जद = जब जब  
 वागे - वागे = वागे - वागे

५. २. ३. ५

कुछ ऐसे भी समास हैं जो क्रिया विशेषण प्राति-  
पदिकों की पुनरावृत्ति तो रखते हैं परन्तु मुख्य प्रातिपदिक द्वितीय संयोगी  
व्यय के रूप में मिलता है और पुनरुक्ति रूप स्वनि-विकार सहित प्रथम  
संयोगी व्यय बनता है। यथा-

वास - पास = वास पास  
 बवाल - बगल = बाल बगल  
 कडीस- पडीस = कडीस पडीस  
 वामुने - सामुने = वामने सामने

५. २. ३. ६

कुछ समासों के दोनों सहयोगी व्यय या तो लगभग  
समान अर्थवाही होते हैं या फिर व्यतिरेकी अर्थ धारी होते हैं।

५. २. ३. ६. १

लगभग समान अर्थवाही उभय पद समास, इसका द्वितीय  
पद प्रायः सुप्त प्रयोग कासा होता है- यथा

काम - बन्धी = काम बन्धा  
 चीन- वस्तु = वस्तु चादि

कपड़ा - लप्ता = कपड़ वादि

पीथी- पत्रा = पीथी पत्रा

दूम - हल्ला = गहने वादि

देल- मास = देल मास

हाता- पाई = मार पीट

५. २. ३. ६. २

व्यतिरेकी कर्णधारी उभय पद समास- यथा

घरा - फटकी = वावाज करना

वावा - जाई = थोड़ा सम्पर्क

उठा - बैठी = उठना बैठना

सट्टा- फिट्ठा = सट्ठा फिट्ठा

लात - पीता = झोझि होना

घर- फटक = घर - फटक

सुक्त - दुक्त = सुत - दुत

५. २. ३. ७

अर्थ की दृष्टि से यहां समासों को चार वर्गों में  
रखा जा सकता है।

(१) प्रथम पद प्रधान समास- काम- धाम, माग-भूग, बीच-बस्त

(२) द्वितीय पद प्रधान समास- काम- चोर , गिरह-कट, ठाक-घर,  
रसोई- घर, मुंह- तोड़ वादि



(३) उभय पद प्रधान समास- चिट्ठी- पत्नी, हात- मुंह, मां- बाप,  
माई- बहन, पाप- पुण्य आदि

(४) वन्य पद प्रधान- समासगत पदों के अर्थ से भिन्न वन्य पद  
प्रधान होता है।

औंघड़ दानीहि = शिव

मक्खी बूस, लीलाधर, बगुला भात आदि

कुछ समस्त पद इस प्रकार के भी हैं कि जिनके संयोगी  
पद अर्थ की दृष्टि से तो भिन्न हैं किन्तु परवर्ती पद के लुप्त हो जाने के  
कारण उनकी स्वतन्त्र सत्ता में भी संदिग्धता आजाती है : यथा

नकटा = नाक - कटा

पढीसी = प्रति - पेशी

लंगोटा = लिंग - फट

यदि इन्हें यांगिक पद नहीं कह सकते तो समास पद  
भी नहीं कहे जा सकते हैं। वे यांग रूप पद कहे जा सकते हैं तथा - ऐसे पदों  
पदों को "उप पद" भी कहा गया है।

समासों का विभाजन, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु,  
द्वन्द्व, अव्ययी भाव और बहुव्रीहि समास के रूप में भी किया गया है।

५. २. ३. ७. ५

हमारे विवेच्य साहित्यगत एक विशेष प्रवृत्ति "फ" के  
वागम की सर्वोदात्तता करते समय अधिकता से मिलती है। रामपुर, सम्भल,  
बिलारी, बुलन्दशहरके मुस्लिम वर्ग में अधिकतर "बू" का वागम विशेष

रूप से दृष्टिगोचर हुआ । इस प्रकार के बहिर्गोचर उदाहरण इस दीर्घ की  
बीली से दिए जा सकते हैं। कुछ उदाहरण यहां दिए जा रहे हैं।

रोटी - फोटी  
साग - फाग  
फड़ - फड़  
किताब - फिताब  
धज - फज  
साना - फाना  
हलुवा - फलुवा  
उल्ला - फल्ला  
देसा - फेसा  
मारा - फारा  
गयीं - फयीं  
जरसी - फरसी  
हुक्का - फुक्का

रामपुर की तहसील मिथिक , मुरादाबाद को संभल  
में ' ह ' की प्रवृत्ति इस प्रकार है :

साना - हाना  
सीना - हाना  
जंगल - बंगल  
दंगल - बंगल  
पीया - बीया  
छूटा - बूटा

इनमें प्रायः अन्त्य पद निरर्थक हैं।

अध्याय : ६

इन्द्रप्रियात्मक अध्ययन

## ६. १ रचनात्मक उपसर्ग तथा प्रत्यय-

६. १. ०

उपसर्ग तथा प्रत्यय वाक्य रूपों के अन्तर्गत स्वीकार किये जाते हैं। "वाक्य" रूप को यदि "प्रत्यय" कहा जाय तो वह पूर्व प्रत्यय ( उपसर्ग ) तथा पर - प्रत्यय ( प्रत्यय ) में बाँटे जा सकते हैं। उपसर्ग और प्रत्ययों का विस्तार से विवेचन पाँचवे अध्याय में किया गया है, जिनमें से बहुप्रयुक्त उपसर्ग प्रत्यय ये हैं :

### ६. १. १ उपसर्ग-

वर्मावर्धक : व- , क- , नि- , निर- इत्यादि

( जैसे वृद्ध, कनकान, कनक, निहता,  
निकम्पा, निरदोष में )

श्रेष्ठतायुक्तक : स- , सु - जैसे - सज्जन, सुराज आदि

हीनतायुक्तक : बी-, क- , दु - जैसे बीगुन, कम्यता, दुबला

नोट : विदेशी उपसर्गों में वर्माव तथा हीनता युक्तक " ना- " ( नालायक )

" व- " ( वृद्ध ) , " ला- " ( लापता ) ; " ब- " ( बहुतमीज ) ।

अन्य उपसर्गों में " गैर- " तथा " हट- " लिये जा सकते हैं।

|               |                                            |
|---------------|--------------------------------------------|
| - आयन,        | चौथरायन, पंडितायन                          |
| - वालू ,      | फगडासू, लज्जासू वादि                       |
| - आला,        | मटियाला                                    |
| - बाव,        | धुमाव, मुकाव, बचाव                         |
| - बावट ,      | थकावट, मिलावट वादि                         |
| - बावना,      | डरावना, मुहावना                            |
| - आवर,        | दिवावर ( प्रदेश की पंढी के लिए )           |
| - बावा,       | दिवावा, बुलावा                             |
| - बाँस,       | वडाँस ( रुकावट )                           |
| - बास         | मिठास                                      |
| - इयत         | लादमियत, हन्तानियत                         |
| - इयल         | वडियल ; मरियत                              |
| - इया         | लटिया, लुटिया                              |
| - इयाना, यथा- | चिचियाना, सठियाना, लठियाना                 |
| - इयारा,      | घसियारा, दुसियारा                          |
| - ई ,         | कहारी , बुहारी, कनस्तरी, रजिस्ट्री, वागड़ी |
| - ईला ,       | रेतीला, कंटीला                             |

|        |                                                      |
|--------|------------------------------------------------------|
| -ईता - | रतीता, कंतीता                                        |
| -ऊ ,   | माई , रट्ट , फिट्ट                                   |
| -ए ,   | लोट , डुकै                                           |
| -एं    | कथारं, बेगमं                                         |
| - एज,  | बन्धेज ( विवाहवादि में नेगी का बांधना या<br>रुकावट ) |
| - एड़ा | वस्त्र <sup>मे</sup> झड़ा , वस्त्रड़ा                |
| - एसा  | वस्त्रसा, सीतिला                                     |
| ७- ऐत  | पटैत, लठैत                                           |

वैर भी वनक प्रत्यय हैं जिनका यहां दिसावाना संभव नहीं है। वरबी, फारसी, अंग्रेजी के भी प्रत्यय लगाकर शब्दावली का निर्माण होता है।

वन्य मुक्त रूपों को निम्नलिखित व्याकरणिक कोटियों में विभाजित किया जा सकता है- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय । सर्वप्रथम "संज्ञा" प्रातिपदकों को ले रहे हैं।

## ६. २ संज्ञा :

संज्ञा प्रातिपदिकों की वन्त्यानुसार इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :

### ६. ३ १. १ व्यञ्जनान्त प्रातिपदिक

#### (१) मूल प्रातिपदिक :

ज्वार- , कुमार- , (कुम्हार) बाकर- ,  
पंच- , तैल- , घर- , बार- , साट- ,  
टाट- , गाय- , बादि  
जिन्स- ६ लट्ठ- , लस-

#### (२) व्युत्पन्न प्राति०

लम्बर - दार - , चम्- आर - , पंच-  
वात- , सी- गत- , तैल- इन् - , जाट-  
इनी , लला- इन् - , कुम्भ - कुम्भ + बार- ,  
कुम्हार + इन - , बादि ।

### ६. २. १. २ वाकारान्त :

#### (१) मूल प्रा०

जाड़ा- , जंघा- , कंधा- , वस्ता , चूरा ,  
माला बादि

#### (२) व्युत्पन्न प्राति०

लौह- वा , गश्- वा , वर्ष- वा - ,  
चाव- वा- , माम्- वा- , भड़- वा- ,

झू - वा , राजू - वा- , घोड़ - वा ,  
 कड़ - हया , गव- हया- , बड़- हया- ,  
 मढ़- हया- , वादि ।

### ६. २. १. ३ ईकारान्त-

(१) मू० प्रा०

नदी- , कहानी- , हाती- , पोती- ,  
 पानी- , सादी- ,

(२) व्यु० प्रा०

होइ - ई- , तेइ - ई- , सारू- ई- ,  
 रोइ - ई- , पंडित- बानी- , सेठ- बानी- ,  
 पंडित००

### ६. २. १. ४ उकारान्त-

(१) मू० प्रा०

रतासू - , भासू- , बक्कू- , जीहू- ,  
 कोल्हू- ,

### ६. २. १. ५ एकारान्त-

(१) जीव- ए , धाव- ए- , पौंउ - ए- ।



### ६. २. १. ६ वीकारान्त

(१) मू० प्रा०

तारी- , माथी- , बनिया - , रस्ती- , वादि

इनका प्रयोग अधिकतर तहसील बुर्जा, तहसील अनूप-  
शहर में होता है। क्योंकि बदायूं, बरेली वादि में वीकारान्त रूप ही अधिक  
चलता है।

(२) व्यु० प्रा०

बैल- वी- , बैद-<sup>१</sup> वी- , व्यूट- वी-<sup>२</sup> ।

### ६. २. २ लिंग निर्णय-

(१) वाक्य स्तर पर

#### ६. २. २. १

(क) जे धाम अच्छी- है । ( ये धाम अच्छा है )

(ख) जे वोट अच्छी है । ( यह वोट ( इमरतमान ) अच्छी  
है ।

(क) वर्ध अच्छी है । ( बैस अच्छा है )

(ख) किताब अच्छी- है । ( किताब अच्छी है )

(क) चाचा अच्छा-है । ( चाचा अच्छा है )

(ख) माला अच्छी-है । ( माला अच्छी है )

१- । शीरगुल । के वर्ध में प्रयुक्त होता है।

२- व्यूटो - बड़ड़ा हात व्यानी गाय का बड़ड़ा को पोलीभीत में व्यूटी  
कहते हैं।

६. २. २. २ संदर्भ मात्र है :

(क) गुन गच्छन् क्व भगाइ देउ । (उन गयीं की भगा दो )

(ख) हन् मेहन् क्व भगाइ देउ । ( इन मेहों की भगा दो )

(१) लिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का लिंग निर्धारण-

संज्ञा मूल प्रातिपदिकों जववा संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों में संलग्न लिंग व्युत्पादक पर प्रत्ययों के कारण लिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के लिंग का निर्णय ही जाता है। यथा-

चाच् + वा ऽ पुल्लिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिक = चाचा

बष् + इया ऽ स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्राति० = बक्षिया

लौङ् + इया ऽ स्त्रीलिंग व्यु० प्राति० = लौङ्गिया

मीच् + ई ऽ पु० लि० व्यु० प्राति० = मीची

ह्रीच् + ई ऽ स्त्री० लि० व्यु० प्राति० = ह्रीरी

६. २. २. ३

संज्ञा प्रातिपदिकों की, व्युत्पादक पर प्रत्ययों के प्रयुक्त होने या न होने के आधार पर दो मुख्य वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

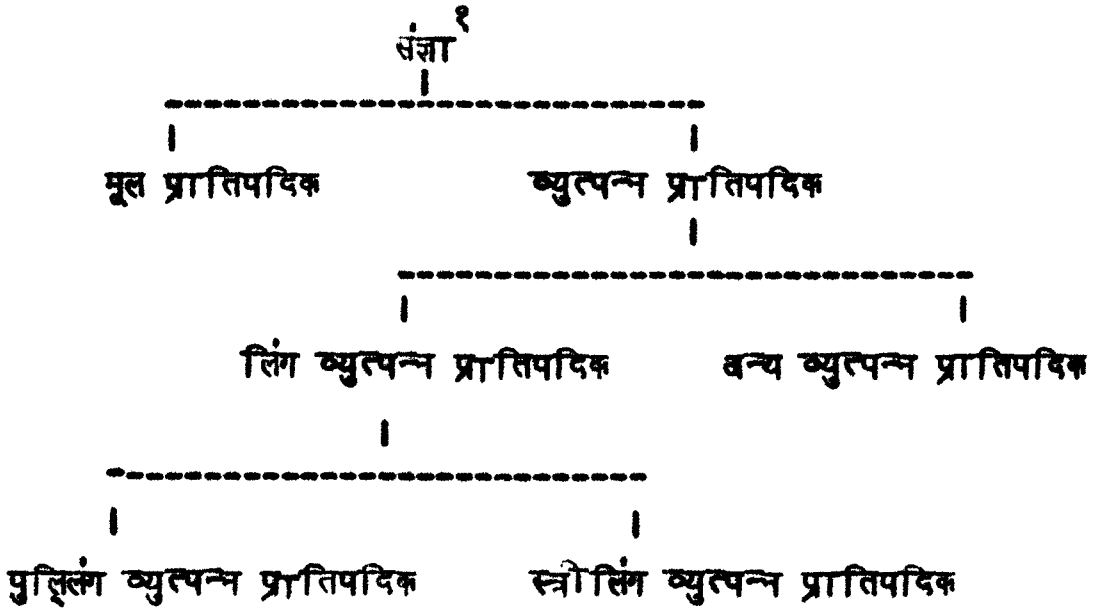
(१) संज्ञा- मूल प्रातिपदिक - इस प्रकार के प्रातिपदिकों में किसी प्रकार का कोई प्रत्यय नहीं जोड़ा जाता है।

(२) संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक- इस प्रकार के प्रातिपदिकों में एक या एक से अधिक संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना करने वाले व्युत्पादक प्रत्यय संयुक्त होते हैं। तथा इन्हें भी दो उपवर्गों में विभक्त किया जा सकता है :

(क) लिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिक

(ख) वचन व्युत्पन्न प्रातिपदिक

उपर्युक्त इन वर्गों उपवर्गों को निम्नलिखित ढंग से दिखाया जा सकता है :



६. २. २. ३ संज्ञा विभक्ति-

जब संज्ञा विभक्तिमय बनानेवाली विभक्ति, किसी संज्ञा मूल प्रातिपदिक अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक में जुड़ती है तो उस विभक्ति से वचन और कारक की एक साथ अभिव्यक्ति होती है।

१- यह तालिका डा० महावीर सराव जैन की पुस्तक - "सुजा तथा बुलन्द-शहर की तहसीलों की बीलियों का संकाशिक अध्ययन - प्रथम सं० १९६७ ई० पृ० ६२ से उद्धृत है।

अपने विवेच्य दीत्र में दो वचन पाए जाते हैं :

१- एक वचन

२- बहुवचन

कतिपय संज्ञा प्रातिपदिक इस प्रकार के भी हैं जो कि दोनों वचनों के आधार पर रूपान्तरित नहीं होते । यथा-

दूध, घी, चन्द्रमा, सूरज, कुशन, राम, रहीम, आदि के बहुत वचन रूप नहीं होते हैं।

१- दादरी, सिकन्द्राबाद, स्याना केन्द्रों में प्रायः दो ही कारक- अविकारी , विकारी मिलते हैं।

२- अन्य दीत्रों में - बदायूं , मुरादाबाद, रामपुर, करली में कहीं कहीं तीन और कहीं कहीं दो कारक ही मिलते हैं। अविकारी, विकारी और सम्बोधन कारक ।

#### सामान्य गठन तात्तिका

संज्ञा विभक्ति की सामान्य गठन तात्तिका का रूप इस प्रकार भी प्रस्तुत किया जा सकता है :

|              | एक वचन | बहुवचन             |
|--------------|--------|--------------------|
| अविकारी कारक | -      | -                  |
| विकारी कारक  | -      | विभक्ति पर प्रत्यय |

उपर्युक्त तात्तिका - दादरी, सिकन्द्राबाद, स्याना और हापुड़ आदि की है।

दूसरे दीत्रों में -

|         | एक वचन | बहुवचन             |
|---------|--------|--------------------|
| अविकारी | -      | -                  |
| विकारी  | -      | विभक्ति पर प्रत्यय |
| सम्बोधन | -      | .. ..              |

उपर्युक्त सामान्य गठन तात्त्विक के निष्कर्षों को इस प्रकार समझा जा सकता है कि दादरी, सिकन्द्राबाद, स्याना में जो अन्तर मिलता है वह द्विमुखी है अर्थात् एकवचन व अविकारी, विकारी एवं बहुवचन अविकारी तथा बहुवचन । विकारी में अन्तर मिलता है। परन्तु अन्य केन्द्रों में त्रिमुखी अन्तर मिलता है अर्थात् एकवचन, अविकारी विकारी, सम्बोधन एवं बहुवचन अविकारी तथा बहुवचन विकारी तथा बहुवचन विकारी तथा बहुवचन सम्बोधन में अन्तर पाया जाता है। इस प्रकार दो प्रकार की सामान्य गठन तात्त्विकाओं में प्रत्येक विभक्ति पर प्रत्यय एक निश्चित स्थान में है जो दादरी, स्याना और सिकन्द्राबाद क्षेत्र में अपने अभाव से तथा शेष अन्य केन्द्रों में अपने अभाव तथा दूसरी विभक्ति से व्यतिरेकी रूप में जाता है।

प्रातिपदिकों के अन्त्य तथा विभक्तियाँ-

दादरी, सिकन्द्राबाद, स्याना केन्द्र में -

इस केन्द्र में प्रातिपदिकों के अन्त्य से विभक्तियाँ में कोई अन्तर नहीं पड़ता है। किसी भी प्रकार अन्त्य हुए संज्ञामूल प्रातिपदिक अथवा संज्ञा प्रातिपदिकों में विकारी बहुवचन विभक्ति पदग्राम ।ओं । जुड़ता है। ( ॐ ) पद ग्राम का एक ही सह पद ग्राम - ओं है।

उदाहरण-

प्रातिपदिक (अन्त्य रूप) । संज्ञा प्रातिपदिक । विकारी बहुवचन । संज्ञा पदग्रामिक  
। विभक्ति । संरचना

|             |          |     |           |
|-------------|----------|-----|-----------|
| व्यञ्जनान्त | कुम्हार- | -ओं | कुम्हारीं |
| व्यञ्जनान्त | झं-      | -ओं | झंओं      |

|           |        |       |          |
|-----------|--------|-------|----------|
| वकारान्त  | जिन्स- | - जीं | जिन्सीं  |
| वाकारान्त | लींठा- | - जीं | लींठाजीं |
| वाकारान्त | बाबा-  | - जीं | बाबाजीं  |
| ईकारान्त  | तैली-  | - जीं | तैलीजीं  |
| ईकारान्त  | देहली- | - जीं | देहलीजीं |
| ऊकारान्त  | कीलू-  | - जीं | कीलूजीं  |
| एकारान्त  | बाबे-  | - जीं | बाबेजीं  |

अन्य शीतों में-

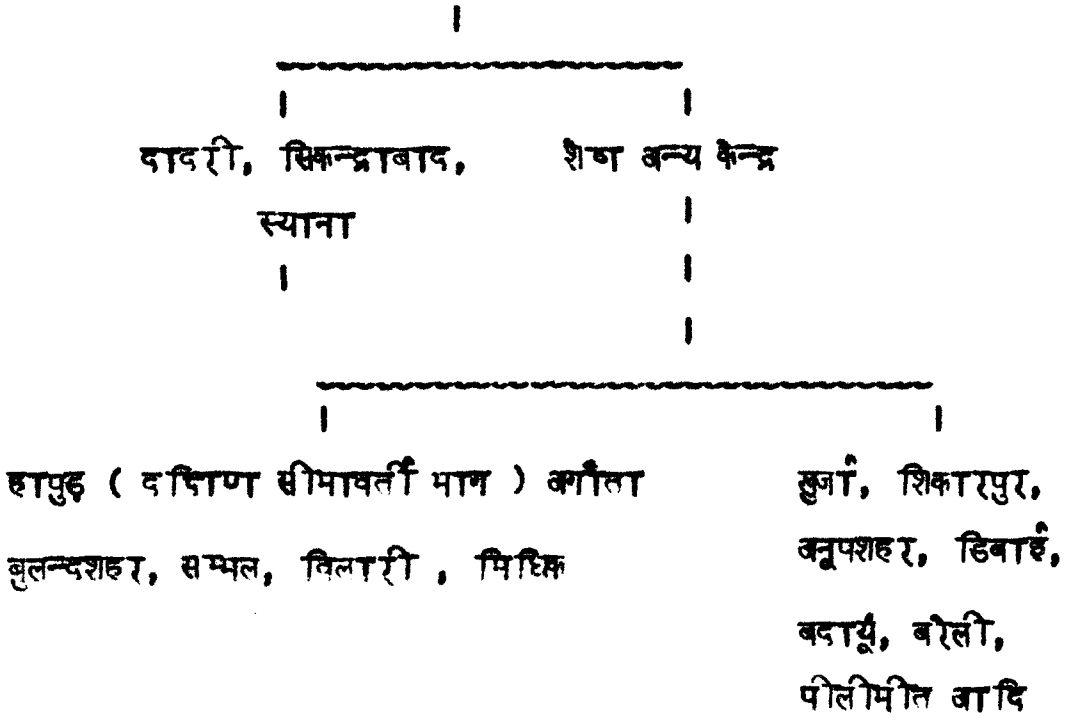
इन केन्द्रों को भी दो वर्गों में विभाजित कर  
सकते हैं :

१- वे जिनमें विकारों कारक बहुवचन और  
सम्बोधन कारक बहुवचन की विभक्तियों के रूप लीया भिन्न हैं इस उपवर्ग  
में बुर्जा तस्लील, शिकारपुर, डिबाई, बबरासा, गिन्नीर, बिसौली,  
बांवल्ला आदि आते हैं।

२- वे जिनमें ईकारान्त के अतिरिक्त अन्य  
सभी प्रकार के अन्त्य प्रातिपदिकों में सम्बोधन बहुवचन पर्यन्तक विभक्ति  
विकारी बहुवचन पर्यन्तक विभक्ति के साथ मुक्त परिवर्तन में वितरित होती  
है इसमें - हापुड़, काँता, बुलन्दशहर, सम्भल, मिथिला आदि को रखा  
जा सकता है।

संज्ञा विभक्तियों के आधार पर समस्त क्षेत्र को निम्न प्रकार से विभाजित किया जा सकता है :

संपूर्ण क्षेत्र



शैव अन्य क्षेत्रों में प्रातिपदिकों के अन्त में लगने वाली विभक्तियों का विवरण देकर तत्पश्चात् उन्हें निम्नलिखित ढंग से वर्गबद्ध किया जा सकता है।

प्रातिपदिकों के अन्त्यानुसार विभक्तियाँ

| प्रातिपदिक अन्त्य | क १ | स २       | ग ३  |
|-------------------|-----|-----------|------|
| व्यञ्जनान्त       | -   | - क् - ओँ | - ओँ |
| अकारान्त          | -   | - व् - ओँ | - ओँ |

|          |   |                 |      |
|----------|---|-----------------|------|
| आकारान्त | - | - वन् - वी      | - वी |
| इकारान्त | - | - वन् - यी - न् | - वी |
| ऊकारान्त | - | - वन् - - वी    | - वी |
| एकारान्त | - | - वन् - वी      | - वी |
| औकारान्त | - | - वन् - वी      | - वी |

१क- यह चिह्न अविकारी एकवचन और बहुवचन एवं विकारी और सम्बोधन एकवचन का चोत्क है।

२स - यह चिह्न विकारी बहुवचन की स्थिति का चोत्क है।

३स- यह चिह्न सम्बोधन बहुवचन की स्थिति का चोत्क है।

उदाहरण-

| प्रातिपदिक अन्त्य | संज्ञा प्रातिपदिक | विकारी कारक | सम्बोधनकारक     |
|-------------------|-------------------|-------------|-----------------|
|                   |                   | बहुवचन,     | बहुवचन, विभक्ति |
|                   |                   | विभक्ति तथा | तथा पदग्राफिक   |
|                   |                   | पद ग्राफिक  | संरचना          |
|                   |                   | संरचना      |                 |

|             |       |                          |                  |
|-------------|-------|--------------------------|------------------|
| व्यञ्जनान्त | चौपाइ | वन् - वी (चौपा-<br>रन् ) | - वी ( चौपारों ) |
|-------------|-------|--------------------------|------------------|

|             |         |                            |                  |
|-------------|---------|----------------------------|------------------|
| व्यञ्जनान्त | कुम्हार | वन्- वी ( कुम्हा-<br>रन् ) | - वी(कुम्हारों ) |
|-------------|---------|----------------------------|------------------|



|           |        |                                                            |
|-----------|--------|------------------------------------------------------------|
| वाकारान्त | जिन्स  | अन् - वॉ ( जिन्सन् ) - वॉ ( जिन्सॉ )                       |
| वाकारान्त | चाचा   | अन् - वॉ ( चाचन ) - वॉ ( चाचावॉ )                          |
| ईकारान्त  | मोची   | अन् - वॉ ( मोचियन् - - वॉ ( मोचियॉ )<br>मोचियॉ,<br>मोचिन ) |
| ऊकारान्त  | कोल्लू | अन् - वॉ ( कोल्लुन - - वॉ ( कोल्लुवॉ )<br>कोल्लुवॉ )       |
| एकारान्त  | चौवे   | अन् - वॉ ( चौवन - - वॉ ( चौवॉ )<br>चौवॉ )                  |

← संज्ञा अविकारी कारक बहुवचन विभक्ति पदग्राम → के निम्न सह पद ग्राम हैं।

- ← अन् → सभी केन्द्रों में ईकारान्त के उत्तरित अन्य प्रकार के <sup>अन्य</sup> अवयव प्रातिपदिकों के पश्चात् लगता है।
- ← वॉ → बुलन्दशहर, अजीमा, सम्भल, हाण्ड, बिलारी आदि केन्द्रों में ईकारान्त के उत्तरित अन्य प्रकार से अन्य संज्ञा- प्रातिपदिकों के पश्चात् । इन केन्द्रों में एक सहपदग्राम ← अन् → के साथ मुक्त परिवर्तन में विनिरित होता है। इन केन्द्रों में 40वर्ग00 ← अन् - वॉ → स्थिति है।
- ← न् → दनौर, बुर्गा, डिगई, गिन्नीर, विसौली आदि केन्द्रों में ई कारान्त से इन प्रातिपदिकों के पश्चात् जाता है।

← यन् → दादरी, सिन्दूरबाद, जौता, बुलन्दशहर, शिकारपुर, हुर्जा  
केन्द्रों में ईकारान्त संज्ञाप्रतिपदिकों के पश्चात् जाता है।

← यौ → हापुड़, जौता, बुलन्दशहर, सम्भल आदि केन्द्रों में ईकारान्त

संज्ञा प्रतिपदिकों के पश्चात् । इन केन्द्रों में इस स्थिति में  
यह सहपदग्राम ← यन् → के साथ उक्त परिवर्तन में जाता है।

← वौ → संज्ञा सम्बोधन कारक बहुवचन विभक्ति पदग्राम हैं।

### ६. ३. सर्वनाम

परम्परागत परिभाषा के अनुसार संज्ञा के स्थान पर बोले जाने वाले शब्दों को सर्वनाम की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। आज यह परिभाषा पर्याप्त विवादोत्पन्न बन चुकी है। पर यहाँ इस विवाद में न पड़कर उन सर्वनामों का विवेक एवं विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है जो अपने विवेच्य क्षेत्र - (पाश्चिम से, वादरी, पिम्पराबाद, कुल्दशहर से लेकर मुरादाबाद सम्मिल, किलारी बंदासो बंदाय के- मिन्नार, मिसीली बरेला के जांक्ला, बहेठा, मालामात गदर तहमाल का वह भाग जो मैनाताल के तराई भाग को स्पर्श करता है तथा रायपुर जिले की मिथिक तहसील तक) के अन्तर्गत निरन्तर प्रयुक्त होते जा रहे हैं।

सर्वनामों के संबंध में एक बात स्मरण रखना चाहिए कि जिस प्रकार संज्ञा रूपों (पदों) में स्त्रीलिंग व्युत्पादन हेतु अनेक शब्द उपलब्ध हैं, वहाँ सर्वनामों में लिंग में परिवर्तन नहीं होता। वे तो सदैव उभय लिंगी होते हैं उनका लिंग निर्णय वाक्य वराकृत पर तथा विशेषण, क्रिया और कभी-कभी चिह्न मात्र से होता है।

६.३.१. लिंग निर्णय - वाक्य स्तर पर

६.३.१.१. विशेषण द्वारा -

(१) मैं तीते छोटी जं (- मैं तुमने छोटा हं।)

(२) मैं तीतो छोटी जं (- मैं तुमने छोटी हं।)

६.३.१.२ क्रिया द्वारा -

(१) तू गो काम क्य करेगी ? (- तू वह काम क्य करेगा ?)

(२) तू गो काम क्य करेगी ? (- तू वह काम क्य करेगा ?)

सर्वभ मात्र से -

६.३. १.३(१) मैं तो हमेशा ऐसे हूँ कहीं ( मैं तो हमेशा ऐसे ही कहीं )

(२) मैं तो हमेशा ऐसे हूँ कहीं ( - स्त्री०वा०- मैं तो हमेशा ऐसे ही कहीं )

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि सर्वनाम शब्दों में लिंग परिवर्तन नहीं हुवा है ।

सर्वनामों के दो रूप(एकवचन - तथा बहु वचन) तथा कारक(अविकारी एवं विकारी) होते हैं ।

६.३. २.१. पुरुषवाचक सर्वनाम तथा उसके पुरुष

६. ३. २.१.१ उत्तम पुरुष

६.३.२. १.२ मध्यमपुरुष

६.३.२.१. ३. अन्य पुरुष

६.३.२. १.१. उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम --

मूल रूप क्यवा व्युत्पन्न प्रतिपादिक - मैं<sup>१</sup> उदा० मैं जाहूँ, मैं जाता हूँ,  
मैं जाऊँ ।

| मूल             | एकवचन    | बहुवचन |
|-----------------|----------|--------|
| अविकारी--। म- । | ।-हैं ।  | ५      |
| विकारी-- । म- । | ।वो- ह । | ५      |

व्युत्पन्न प्रतिपादिक - हम<sup>२</sup>

| मूल म्द ग्राम  | एक व० | बहु० व० |
|----------------|-------|---------|
| अविकारी--।हम-। | ५     | ।-० ।   |
|                | ५     | ।-० ।   |

१-२- मैं तथा हम उत्तम सर्वनामों का प्रयोग प्रायः संपूर्ण क्षेत्र में सिद्धित वर्ग करता है  
तथा ग्रामीण वर्ग में इनके विकारी रूपों का प्रयोग ही अधिक होता है ।

| मूल रूपिक                  | एक व० | बहु० व०                  |
|----------------------------|-------|--------------------------|
| विकारी--।हम-। <sup>१</sup> | ५     | ।-एँ अनु-वर्ने - वर्ने । |

५

संबंधवाक्य सर्वनाम मलक संबंध वाची विशेषण--

| लिंग                         | मलरूपिक | एक० व०   | बहु० व० |
|------------------------------|---------|----------|---------|
| पु० अविकारी-- । मेर- ।       |         | ।-आ-जो । | ५       |
| स्त्री० लि० अविकारी । मेर- । |         | ।-जो ।   | ५       |
| पु० लि० अविकारी । मेर- ।     |         | ।-ए ।    | ५       |
| स्त्री० लि० अविकारी । मेर- । |         | ।-ई ।    | ५       |
| पु० लि० विकारी-।हमार।        |         |          | ।-ए।    |
| स्त्री० लि० विकारी-।हमार-।   |         | ५        | ।-ई।    |

१- हम सर्वनाम शब्द परम्परागत व्याकरणिक रूपान्तरानुसार तो बहुवचन ही माना है परन्तु आजकल इसका व्यवहार तथा प्रयोग एक वचन के रूप में चल रहा है । मैं के स्थान पर हम का प्रयोग अत्याधुनिक लड़के और लड़कियाँ सम्यक्ता सचक प्रदर्शनार्थ बड़ी मात्रा में करते देखे जाते हैं। सामाजिक प्रदर्शनार्थ ही हम का एक वचन रूप में प्रयोग बढ़ा है ।

२- भाई, मौ, म्हारा, हमनु, हमनें, हमन्नें का प्रयोग लगभग संपूर्ण क्षेत्र में होता है ।  
 उदाहरणार्थ - हमारे पैसुनु कूं तुम वों नाजों देत । खुर्जा बु० जहागीराबाद, अनूपशहर, तथा बंदायू बरेली में (नाजों) का परिवर्तन करके बोलते हैं। इसे ही रामपुर सम्मल, किलारी में - हमारे पैसे तुम क्यूं ना देते ? दादरी सिकन्दराबाद हासुड़, स्थाना, जगाँता आदि में हमारे पैसे (पैसे) तम (थम) क्यूं ना देते ? हमन्नें गि काम खीरोऊ करो रे । बंदायू विशाली चंदौसी, आँवला आदि में बोलते हैं ।

६.३.२.१.२ मध्यम पुराण वाचक सर्वनाम--

व्युत्पन्न प्रातिपदिक - त । उदा० मंये । तू काँ जागा ?

(-माई तू कहाँ जायेगा ?)

| मूल पद ग्राम                | एक० व०     | बहु० व०            |
|-----------------------------|------------|--------------------|
| विकारी--।तु- । <sup>१</sup> | ।-ऊ ।      | ।-उम् ।            |
| विकारी ।त-।                 | ।ओ ऐं ओह । | ।- उम् उम् - हैं । |

मध्य पुराण सर्वनाम मूलक संबंधवाची विशेषण-

| मूल रूपिक                            | एक० व०    | बहु० व०  |
|--------------------------------------|-----------|----------|
| पु० लि० वि०- (तेर- ।                 | ।- आ ओं । | ५        |
| पु० लि० वि०- ।तेर- ।                 | । - ए ।   | ५        |
| स्त्री लि० अवि०-। तेर -।             | । - ई ।   | ५        |
| स्त्री० लि० वि०। तेर -।              | । - ई ।   | ५        |
| मूल पद ग्राम                         | एक० व०    | बहु० व०  |
| पु० विकारी (तुम्हार - । <sup>२</sup> | ५         | ।-ओं ए । |
| स्त्री० लि० वि० ।तुम्हार- ।          | ५         | । - ई ।  |

१-।तु-। को यहाँ हम मूल पद ग्राम, आधार पदग्राम या संस्कृत-व्याकरणानुसार प्रातिपदिक भाँ कह सकते हैं। प्रत्येक पद में रहने के कारण ही इसका यह अन्वय नाम पड़ा।

सुमन अम्बा प्रसाद हिन्दी-भाषा-अतीत और वर्तमान, त्रयम संस्करण १९६५ पृ० १६०  
२- तुम्हारों, तिहारों, तुमारों, तुमारे, तिहारे, तुमारी, तिहारी, थारी, थयारी, इत्यादि रूप मिलते हैं। सुविधानुसार इन के प्रयोगविधि को दोत्रानुसार तीन स्थानों विभक्त किया जा सकता है ।

१- जमुना से गंगा नदी तक- इसमें दादरी, सिकन्दराबाद, बनकौर, सुर्जा, बुलन्दशहर स्थाना, अगौता, अनपशहर, डिबाई आदि केन्द्र आते हैं- थारा, थाडा आदि रूप, गाजिया बाद के पास सिकन्दराबाद स्थाना, अगौता का लापुड़ को कुनेवाले माग में मिलता है। शेष तुमाओ तुमार, रूप किराँलोगिन्नों के बंदासी में प्रयुक्त होते हैं। तुम्हारा तुमारा, रामपुर, सम्मल आदि में बरेला में तुम्हारों, तिहारों, तुमारों रूप मिलते हैं। नैनीताल में तराई में तुमारा रूप मिलता है ।

६.३.२. १३ अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम ---  
दूरवती निश्वायात्मक सर्वनाम--

६.२.१.३. १ व्युत्पन्न प्रातिपादिक गु - बु<sup>३</sup>

| मल                  | एक व०  | बहु० व०               |
|---------------------|--------|-----------------------|
| अविकारी-। गु। ।ब-।  | ।- उ । | । - वे ए ।            |
| विकारी -। गु-। ।ब-। | ।- वा। | ।उन् उनन् जाने उनके । |

इस सर्वनाम का विशेषण के रूप में भी प्रयोग होता है किन्तु यह प्रयोग केवल एक वचन के रूप का ही है ।

उदा०      ग्वा (बूढ़ा    ज्वा)      आदमी हैं बुलाए ।  
            गु ( बु )      आदमी माँत हैं बुरों से ।  
            ग्वा आदमी हैं बुलावो (बुद्धाँ - बरेली आदि में)  
            गुधारी तेरी से ?

१- पश्चिमी क्षेत्र में ऊँ ओ का प्रयोग अधिक मिलता है । दादरी सिकन्दराबाद बनकौर स्थाना, अगाँला, हापुड़, आदि में प्रयोग उदा० ऊँ तो कदी कदी हैं मेरे याँ आचा से । ओ आया हा ? रामपुर सम्मल आदि मुसलमानी क्षेत्रों में व का ही प्रयोग अविकाश मिलता है। उदा० वरी बुँ तो हा, सगी चच्ची का लमड़ा नगले वाला तो हा हैं । बू बुलन्दशहर में प्रयुक्त होता है । गु - ग्वा गे, वे, आदि शेष केन्द्रों में प्रयुक्त होते हैं । और साथ ही - गो ने शिकारपुर कुर्जा में अधिक प्रयोग करते हैं ।

निकटवर्ती निश्चयात्मक सर्वनाम --

६.३.२.१.३.२ व्युत्पन्न प्रातिपदिक - गि० जि०, य वो,

मूल

स्क० व०

बहु० व०

विकारी - । ग- । । ज- । । य- । । ब- । । -३ । । - ए ।

विकारी - । ग- । । -ज । । -य- । । व- । । वो आ ज । - इन - उन् ।<sup>१</sup>

६.३.३.० प्रश्न वाचक सर्वनाम --

प्रश्नवाचक सर्वनाम दो प्रकार के होते हैं

प्राणीवाचक या चेतन, अप्राणीवाचक या अचेतन

१- उपर्युक्त तालिकान्तर्गत सर्वनामों के अतिस्मि, इस् इत्, इन, का भी प्रयोग होता है । य- दादकी, दनकौर, सिकन्दराबाद, स्थाना, तथा सम्मल विहारी रामपुर आदि में पाया जाता है। बुर्जा, अनूपशहर, -गे, शिकारपुर बराला, त्रिगौली -जे। कुलन्दशहर - हम, शिकारपुर - इत, दादरी- सिकन्दराबाद आदि में लथे का विशेष प्रयोग मिलता है ।

स्थाना - दादरी - सिकन्दराबाद - य ।



व्युत्पन्न प्रातिपदिक - को, कोन । उदा० को जाबो<sup>१</sup> (कोनवाया)

| मूल                                                     | एक व० | बहु० व०          |
|---------------------------------------------------------|-------|------------------|
| अविकारी - ( क - । । कोन - । <sup>१</sup> । -बो । । -उ । |       | । - बो । । - ० । |
| विकारी - । क - । । कोन - । । -बा । । - ० ।              |       | । - इन । । । २ । |

२- अप्राणोवाचक या अचेतन प्रश्नवाचक सर्वनाम--

व्युत्पन्न प्रातिपदिक - का, कहा

| मूल प्रातिपदिक           | एक० व०         | बहु० व०           |
|--------------------------|----------------|-------------------|
| अविकारी- । क - । । कहा । | । - जा - जाय । | । - जा - जाय ।    |
| विकारी - । क - । ।       | । - बा ।       | । - इन - इन्हों । |

६.३.४. अनिश्चय वाचक सर्वनाम --

१- प्राणी धातुक अनिश्चयवाचक

२- अप्राणी धातुक अनिश्चयवाचक

१- किस, किन्, किण, प्रयोग अधिकांश में दादरी, दनकोर, सिकन्दराबाद हापुड़ का दक्षिणा भाग तथा अर्गाता में होता है।

(II) मान, किका, किसका, आदि रामपुर, सम्मल, विलारी, लुजा आदि में

(III) कोन (क ओन) क ओन को, आदि का प्रयोग गिन्नार, कितौली, आंवला पीलीभीत के उत्तरीय पश्चिमी कोने में होता है ।

(I) का, कहा में, का, पश्चिमी क्षेत्र में तथा मुरादाबाद रामपुर में (कहा) पूर्वी क्षेत्र में रामगंगा से पीलीभीत तक मिलता है ।

काय- शिकारपुर लुजा, जनपद

( ) डिबाई, राजघाट, बबराला, आदि

( ) का - लगभग बरेली रामपुर, सम्मल, आदि को छोड़कर सभी केन्द्रों में प्रयोग मिलता है ।

प्राणी धातक अनिश्चयवाचक सर्वनाम:-

व्युत्पन्न प्रातिपदिक - कोई, कोऊ । उदा० कोई गिरां ऐं (कोई गिरा है)

| मूल         | एक व०      | बहु० व०            |
|-------------|------------|--------------------|
| अवि० । क- । | ।कोई कोऊ । | ।-कोई आऊ ।         |
| वि० । क- ।  | । कोई आऊ । | । आऊन आऊन।         |
|             | आऊ         | यो इसियों इन्हियों |
|             | इसी        | काउसिन             |
|             | इन्हीं     |                    |

अप्राणी धातक अनिश्चय वाचक सर्वनाम -

व्युत्पन्न प्रातिपदिक - ककु, सब, सग । उदा० ककु धरां ऐं)

(- ककु रक्ता है अ

| मूल                              | एक० व० | बहु० व०                  |
|----------------------------------|--------|--------------------------|
| अवि० । ककु- । ।सब- । ।सग- । ।-०। |        | । - ० ।                  |
| वि० । ककु- । ।सब- । ।सग- । ।-०।  |        | ।- कों यों इ्यों अह अर । |

१- उपर्युक्त तालिका में जो रूप निर्मित हुए वे निम्नलिखित हैं :-

कोई, कोऊ, काई, काऊ, किसी, किन्हीं, किसियों, किन्हियों, काइन, काउन, काउसिन काऊ ।

(क) किसी, दादरी, दनकोर का उत्तरी भाग स्थाना, अर्थात्, हापुड़ का दक्षिणी भाग, मुस्लिम बहुत प्रदेश - सम्मल, विलारी रामपुर का तहसील मिमिक तथा चंदांसी की मुस्लिम जनता प्रयोग करती है ।

(ख) कोई, काऊ, कोऊ, माई, किन्हीं का प्रयोग - बुलन्दशहर, शिकारपुर सुजा, डिबाई, अनूपशहर, विसौली तहसील तहसील गिन्नार(बंदायूं) बहेड़ी(बरेली) प्र पोलीभीत में होता है।

२-(क) किसियों, ककुओं, सबों सबह सगले, सिगले, आदि रूप दादरी, दनकोर, सिकन्दराबाद हापुड़ सम्मल विलारी, रामपुर मिमिकत०) नैनीताल तराई का बिल्कुल नीचे का दक्षिणी भाग में प्रयोग होता है।

(ख) किन्हियों, काइयों काउसिन, ककुओं, ककुन, सवियों, सवनसगरे, आदि का प्रयोग- बुलन्दशहर सुजा, अनूपशहर, बंदायूं बरेली में होता है। उदा० काउसिन भई आवा।

काहँ और कऊ का विशिष्ट प्रयोग भी मिलता है जैसे तहसील सुजा में ही - मैं जब कल्लि जाहँ काहँ में जब कल्लि जायाँ कावो । ये दोनों काहँ और काऊ क्रमशः थो - था का अर्थ देते प्रतीत होते हैं ।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम सभी रूपों का विशेषण के रूप में प्रयोग होता है।

#### ६. ३.५ सम्बन्ध वाचक सर्वनाम---

व्युत्पन्न प्रातिपादिक - जो । उदा० जो उम्में कही गो बुरी कही ।

| मूल          | एक व०    | बहु० व०         |
|--------------|----------|-----------------|
| अवि० । ख - । | । - जो । | । - जो ।        |
| वि० । ख - ।  | । - ता । | । इन इन उम्ने । |

#### ६. ३.६ नित्य संबंधी सर्वनाम---

व्युत्पन्न प्रातिपादिक - साँ । उदा० जो सात्ता सो पात्ता ।

(जो साता है सो पाता है)

| मूल         | एक व०    | बहु० व०       |
|-------------|----------|---------------|
| अवि० । स- । | । - सो । | । - सो ।      |
| वि० । ख - । | । - सा । | । - ए इन इन । |

उत्तर पदा में संबंध वाचक सर्वनाम के सहयोगी के रूप में जाता है । जैसे

अधिकारी- जो जानें सो तानें ।

मिकारी- जाके खाए हक ताके गाए गीत

जानें जैसाँ कराँ रे तानें ऐसाँ ई भरो ऐं ।

जैसाँ कन्नाँ तैसाँई भन्नाँ ।

१-।क)ज, जो, जा, जिन्ह, जिन्नें, जा, जानें, जाँ, जाँ, तानें, जाके, तानें, तिनन, तिन, जादि का प्रयोग- सुजा तहसील, शिकारपुर, जूपरहर, तहसील, बंदाय (जिन्नाँ तं जिन्नाँली तं बरेली में आंक्ला और बहेड़ी तथा डोलामात में होता है ।

(ख) जो जे, का प्रयोग पूर्वी क्षेत्र- बंदाय में अधिकता से होता है। इसमें किस्ति नमूनों के आधार पर एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ- अरे मुहँ (मुह) तो गए हैं ज, मैं तोहँ सपि जातऊ जा, लाह में लाहिन जे बुस न सड़े, न बिगरे, जे साँ का तया करी रहे।

(ग) जिन्नें, जिन्नें, उम्नें आदि का प्रयोग पूर्वी क्षेत्र कंता से राम कंता की ओर निरन्तर मिलता है।

(घ) जा, जित, उस, तिस, वे, तिन, आदि का प्रयोग-दादरी, दुकीर, मिकन्द, स्थाना, जगाता, व० शहर, ममूल, कदायी, किलारी, मिमिल (रामपुर) में यत्किन्तिन वित्तन के साथ होता है। उसो, जिस्सो, तिसो आदि दादरी, मिकन्दराबाद, में अधिक होता है।

### ६.३.७ निज वाचक सर्वनाम---

व्युत्पन्न प्राति० - आप । उदा० मैं आप सिमलूंगा<sup>१</sup> (मैं आप संमल जाऊंगा)

| मूल           | एक० व०  | बहु० व० |
|---------------|---------|---------|
| अति० । आप - । | । - ० । | । - ० । |
| वि० । आप - ।  | । - ० । | । - ० । |

आप का प्रयोग पुरुषवाचक सर्वनाम के रूप में भी होता है । परन्तु रहता मध्यम का अन्य पुरुष ही है और जब निजवाचक के रूप में प्रयोग किया जाता है तब आप तीनों पुरुषों आता है ।

पुरुषवाचक सर्वनाम

निज वाचक सर्वनाम

उत्तम पु० < < < < <

उत्तम पु० - मैं आप सिमलूंगा

मध्यमपु० आप कों जाइ रए हैं ?

म० पु० - तू आप सिमलूँ

अन्य पु० - आप जाइ जगो रहत हैं । अ० पु० - धु आप सिमलोगा ।

इससे सम्बन्ध वाचक विशेषण भी बनते हैं

(पु० ए०) अपना, अपना, बहु० व० अपने, अपनी

स्त्री लि० अपनी, अपनी ।

अपना काम आप कर्ना चाहें ।

अपने वर्ग काहें

१- (क) अपना या अपना का प्रयोग - दादरी, सिकन्दराबाद हापड़, स्थाना, अगाँठा, सम्मल, रामपुर आदि में होता है जैसे - अपना तो यू ही हाल रे ईश्वर जाने । अपना खेत जोतने वीरों का नुस्खान है अल्ला मीयां सबको रसते हैं । यह प्रयोग मुस्लिम बहुल में दोनों में सम्मल, रामपुर में मिलिक आदि में मिलता है ।

(ख) अपना, आपना, आपुई, अपनी आदि का प्रयोग सुर्जा, अनपशहर, बंदायं, बरेली आदि में मिलता है ।

### ६.३.८ संयुक्त सर्वनाम --

सर्वनामों की यागिक संरचना निम्नलिखित ढंग से होती है ।

१- संबंधवाचक सर्वनाम । अनिश्चय प्राणीवाचक सर्वनाम यथा :-

जो । कोई जो कोई

जा । काई जाकाई

जा । काऊ जाकाऊ

२- सम्बन्धवाचक सर्वनाम । अनिश्चय परिमाणवाचक सर्वनाम । - ककु । यथा :

जो । ककु जोककु

३- अनिश्चय वाचक सर्व० । अनिश्चय परिमाण वाचक सर्व०

सब । ककु सब ककु

सगु । ककु सगुकु

४- अनिश्चय वाचक सर्वनाम । अनिश्चय प्राणीवाचक सर्व०

सब । कोई सबकोई

सगु । कोई सगुकोई ।

१८ (क) जो कोई, जो ककु या जो कुकु, सब ककु, का प्रयोग -

बुलन्दशहर, सिकन्दराबाद तह० स्याना, अगाँठा, सम्मल, रामपुर आदि में होता है ।

(ख) लुजा के ददाण में चलता है - जो कसू-जो कसू तुम चले जायो ।

(ग) सबककु, सगुकु, सबकोई, सगुकोई, जाकाई, जाकाऊ, जो क कु का प्रयोग बुलन्दशहर, लुजा, अनपशहर, बंदायूं- विसौली, गिन्नार) बरेली आंवला, बहेड़ी आदि में मिलता है ।

सर्वनाम मूलक विशेषण --

प्रश्नवाचक विशेषण - ऐसी, वैसी, जैसी, कैसी, तैसी,

परिणाम वाचक - वि० इतना, इतनी (इत्ना- इत्नी) उतना - उतनी  
(उत्ता- उत्ती), जितना - जितनी (जित्ता-जित्ती),  
कितना - कितनी (कित्ता - कित्ती) ,

संख्यावाचक वि- इत्ते, उत्ते, कित्ते, जित्ते, तित्ते, इतने, उतने, कितने,  
जितने, तितने, कित्तेक, जित्तेक, तित्तेक, जे, केऊ

उदा० जे- जे चाहो ले लेउ ।

केऊ - मांफे केऊ चीज ऐं ।

१-(क) ऐसी, वैसी, जैसी, कैसी तैसी, का तथा इतनी, उतनी, जितनी आदि का प्रयोग  
सुजा, अम्पशहर, तह० गिन्नीर त० विसौली तह० ओवला और बहेड़ी तहसीलों  
में प्रचुरता से मिलता है ।

(ख) ऐसा, वैसा, आदि, इत्ता, उत्ता, कित्ता, जित्ता, इत्ते, उत्ते, कित्ते, कित्तेक,  
जित्तेक आदि का प्रयोग, बुलन्दशहर, उत्तरीमार्ग दादरी, सिकन्दराबाद,  
स्याना, अगीता, हापुड़, सीमा स्थिती भाग, सम्मल, विलारी, रामपुर में मुसलमान  
तथा हिन्दू दोनों ही प्रयोग करते हैं परन्तु कहीं कहीं उर्दू के प्रभाव से च की  
प्रवृत्ति का प्रायः लोप भी सर्वेक्षण करते समय दृष्टिगत हुआ ।

## ६. ४. लिंग

६.४.०. संज्ञा तथा सर्वनाम के साथ लिंग- निर्णय पर भी विचार किया जा चुका है । सामान्यतः पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए - ई- इन, इया, अनी, जी, स्त्री प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है ।

६. ४. १. - ई, प्रत्यय से बने स्त्रीलिंग शब्द -

घोड़ा - घोड़ी  
 क्षीरा - क्षीरी  
 गौरा - गोरी  
 कुम्हार - कुम्हारी (कुम्हारि बनी)

६. ४. २. - इन - नाई - नाइन  
 फुजारी- फुजारिन  
 चमार - चमारिन  
 माली - मालिन

६. ४. ३ - इया, विटौरा- विटौरिया (कन्डे - उपले रसने का स्थान और प्रकार)  
 बुझड़ा - बुझिया  
 चूहा - चुहिया (आवश्यक नहीं स्त्रीलिंग हो )  
 गुम्हाँ - गुंभियाँ (लघुतावाची है) ॥

६. ४. ४- जाती - सेठ - सेठानी  
 जेठ - जेठानी

६. ४. ५ नी, जाट - जाटनी  
 जमादार- जमादारनी  
 मजदूर - मजदूरनी

६. ४. ६. मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में - (सम्भल - विलारी रामपुर) मुसलमान लोग वा लगाकर स्त्री लिंग शब्द बनाते हैं ।

जैसे - सालू - साला, मलिकन- मलिका, साहब - साहबा  
कुछ शब्दों में स्त्रीलिंग - पु० लिंग के रूप पूर्ण अलग होते हैं  
जैसे - नर - मादा, बेटा - बहू, साला - सरंज (सरहज)

#### ६. ५ वचन -----

६. ६. ० संस्कृत में तीन वचन माने गए हैं पर हिन्दी में दो ही वचन व्याकरणों ने स्वीकार किये हैं। एक वचन और बहु वचन वचनों के संबंध में भी पीछे वर्णन किया जा चुका है । कुछ सामान्य वर्णन यहां भी दिया जा रहा है।

६. ५. १. वाकारान्त पु० लिंग शब्दों से बहु० व० -

| एक० व० |   | बहु० व० | प्रत्यय |      |
|--------|---|---------|---------|------|
| घोड़ा  | - | घोड़े   | एक० व०  | बहु० |
|        |   |         | ।       | ए    |

अन्य पुल्लिंग -

|      |   |         |   |     |
|------|---|---------|---|-----|
| साधू | - | साधुवाँ | । | वाँ |
|------|---|---------|---|-----|

६. ५. २ इकारान्त स्त्री लिंग--

|       |   |          |   |     |
|-------|---|----------|---|-----|
| जाति  | - | जातियाँ  | । | वाँ |
| घोड़ी | - | घोड़ियाँ | । | वाँ |

अन्य स्त्री लिंग --

| एक व०   |   | बहु० व०  |   |     |
|---------|---|----------|---|-----|
| चिड़िया | - | चिड़ियाँ | । | वाँ |
| ,,      |   | चिड़ियों | । | वाँ |
| किताब   |   | किताबों  | । | वाँ |
| बहू     |   | बहुवाँ   | । | वाँ |



६. ५. ३ - उन और - न बहुवचन प्रत्यय भी इस दोत्र में बहुत प्रयुक्त हैं ।

उन प्रत्यय लगाकर भी बहुवचन बनाए जाते हैं ।

|                       |          |          |
|-----------------------|----------|----------|
| जैसे - गंवार - गंवारन | गमारन    | प्रत्यय  |
| कुम्हार               | कुम्हारन | कुम्हारन |
|                       |          | उन       |

उदा० 'अभी उन गमारन ते कह देउ कि उल्लंग कूं भगि आवें, नहि तौ बेवारे मारे जाडों बेकार में हं ।

' इन कुम्हारन ते वैसे हं कहीं कि तुम लोग हियां चाकु चका मत् धरों करो, परि गै उल्लू के पट्टा काए कूं मानिगे जब तक कि इनकी धूपरी न कुटि जाइगी ।

अब, फारसी के बहु वचन भी चलते हैं जैसे -

|                             |               |
|-----------------------------|---------------|
| फारीक - फारीकैन (अरबी शब्द) | प्रत्यय<br>ऐन |
| वालिद - वालिदेन             | ऐन            |
| साहब - साहवान               | वान           |
| मकान - मकानात               | वात्          |
| पटवारी- पटवारियान           | वान           |
| कागज - कागजात               | जात           |
| देह(गांव)- देहात            | वात           |
| हाकिम - हुक्काम             | वाम           |

## ६. ६ कारकीय परसर्ग

६. ६. ०. संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रूप जो वाक्य के किसी अन्य शब्द से अपना सम्बन्ध प्रकट करे, उसे विद्वानों ने कारक की संज्ञा प्रदान की है। कारक संबंधों को स्पष्ट करने के लिए न० के से आदि जिन शब्दांशों का प्रयोग किया जाता है, उनके लिए परसर्ग अथवा अनुसर्ग शब्द का प्रयोग मिलता है, जो कि पोस्ट-पोजीशन का शाब्दिक अनुवाद कहा जा सकता है।

वस्तुतः परसर्ग बाबद रूप है, इसलिए इनका मुक्त- रूप में कभी प्रयोग नहीं होता, अपितु ये संज्ञा, सर्वनाम, तथा विशेषण के विकारी कारक रूपों के पश्चात् उनमें संयुक्त होकर आते हैं।

६. ६. १- परसर्गों को मुख्य दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है -

- १- रूपान्तर सहित
- २- रूपान्तर रहित

६. ६. १. १ - रूपान्तर सहित :-

सम्बन्ध अर्थ धोतक परसर्ग अपनी अग्रगामी रूपमिक संरचना से व्याकरणादि संबंध प्रकट करने के लिए लिंग तथा वचन के अनुसार विभज्य होते हैं।

(सम्बन्ध अर्थ धोतक मूल रूपिक के दो सह रूपिक हैं -)

।क। यह अल्प विकृति के पश्चात् आता है।

।२। अन्य आता है।

लिंग तथा वचन के अनुसार सम्बन्ध अर्थधोतक मूल रूपिक के इन सह रूपियों में विभक्तियां जुड़ती हैं।

-----१

----- ।      स्क्वचन      । बहु वचन  
-----

पुल्लिंग । - आ    ओ    औ    । - ए

-----  
स्त्रीलिंग ।      ई      ।      ई  
-----

यथा--

श्याम । का बकड़ा

श्याम । के बकड़े

मेरा बकड़ा

मेरी बकड़ी

मेरे बकड़े

श्याम । की बकड़ी (बकिया)

मेरी बकड़ी

१- (१)।वा) दादरी, सिकन्दराबाद, हापुड़, याना, अर्गाता, बुलन्दशहर मुरादाबाद (सम्भल, विलारी) रामपुर (मिलिक) में प्रयोग होता है ।

(२)।ओ। विशेषतया पूर्वी क्षेत्र गंगापार- बंदायं -(बबराला, तहसील गिन्नौर, सहसवान, विसौली, बरेली -(वांवला, बहेड़ी) पीलीभीत का उचरी भाग जो मानचित्र में प्रदर्शित किया गया है का प्रयोग बहुलता से होता है - यहां पर कन्नौजी की ओकारान्त प्रवृत्ति स्पष्ट देखी जा सकती है ।

(३)।औ। इसका प्रयोग - लुआं, डिबाई, अनूपशहर, आदि में होता है ।

६.६. १. २ रूपान्तर रहित :-

सम्बन्ध धोतक परसर्गों को छोड़कर अन्य कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदाय, उपादान, अधिकरण, अर्थ धोतक परसर्ग रूपान्तर रहित होते हैं

।ने। यह कर्ता का भाव प्रकट करता है :- यथा

श्याम ने

मैंने

। कर्म तथा सम्प्रदाय अर्थ धोतक ।

।कू। ।कं। इनका प्रयोग दादरी, सिकन्दराबाद, स्याना, बुलन्दशहर, शिकारपुर, डिबाई, अनूपशहर, बंदायं- गिन्नौर, बिसौली, आंवला बहेड़ी तथा सम्मल, विलारी, मिलिक, आदि में कहीं । क । तो कहीं।कूं। होता है । बंदायं का उदाहरण प्रस्तुत है - 'कलो म्हाँ जोन्न कूं तो हैंग ओ ऐ ।' लैउ जि थदई हें रौटी विकारा की तुमारे सान कुं ।' जहांगीराबाद (अनूपशहर) चौदे चोरी कुं गए ।' वा कुं रेहडी में क्यूं ना बिठा देता । दादरी- सिकन्दराबाद में प्रयोग । 'दवाई साने काबी गैट टैम होगिया ।' सम्मल में प्रयुक्त वाक्य । गोविन्दा कू खूब पढ़ाया । मिलिक (रामपुर) समस्त व्यञ्जनानात एवं स्वरान्त पश्चात् ।कू। अथवा ।कूं। का प्रयोग होता है ।

श्याम कू

हम कू

मोंकूं

याकूं

। है । अर्गाता, हापुड़, गाजियाबाद आदि में -

। ए । दादरी, अगाँठा में अन्य व्यंजनों के पश्चात् तथा लुजाँ दनकोर, अनूपशहर,  
डिबाई आदि में स्वरों के पश्चात् ।

यथा :

दादरी -

|     |   |   |             |
|-----|---|---|-------------|
| किस | । | ऐ | किसै        |
| किस | । | ऐ | किसै        |
| उस  | । | ऐ | उसै (उस्सै) |

लुजाँ, डिबाई आदि में -

|    |   |   |     |
|----|---|---|-----|
| या | । | ऐ | याऐ |
| वा | । | ऐ | वाऐ |
| मो | । | ऐ | मोऐ |

। नै । अनूपशहर, लुजाँ, बंदायं, बरेली आदि में

|        |   |    |         |
|--------|---|----|---------|
| उनन्   | । | नै | उन्ननै  |
| विनन   | । | नै | विन्ननै |
| बालकन् | । | नै | बालकननै |

। ऐं । लुजाँ, अनूपशहर, विसौली, आंवला, बहेली आदि में - अन्य व्यंजनों के पश्चात्

|       |   |    |        |
|-------|---|----|--------|
| हम    | । | ऐं | हमै    |
| हमन्  | । | ऐं | हमननै  |
| तुमन् | । | ऐं | तुमननै |

कारण तथा अपादान का अर्थ प्रकट करने वाले परसर्ग -

सू, सै, सें, ते, तै, तें आदि

।सू से । का प्रयोग - दादरी, सिक्न्दराबाद, अगाँठा, सम्मल आदि में होता है ।

जैसे - मेरे सू तो उसी फेलैई लड़ाई चल रही है ।

जहांगीराबाद - बागे सू आइगई चाँती

विसौली - अपनी किताब सू चाँ न पढ़ो करो

शिकारपुर - मामा से कल्लिई तो मैंने भई ऐ कि तुम बाई से रुपिया क्यों नाओ लैत ?

। ते ते । का प्रयोग - खुर्जा, डिबाई आदि में होता है - जैसे

विसौली - 'सारे कुं लट्ठ तें माइडारांगो । '

खुर्जा - 'उन किताबन तें ई क्यू पढ़िलेउ, नई तो या साल पास -फासउ, नाइ होउगें, या ते तो क्यू सेो ई मालिक पर रई ऐ कि तुम नाइ होउगें पास । '

अधिकरण का अर्थ प्रकट करने वाला परसर्ग

। में ।, । पे ।, । पर ।

खुर्जा - बाके घर में ई घुसों पीरो ऐ ।

सम्मल - 'अउते पै ई सामान क्यूँ ना रस आया क्यूँ आया ऐ मगा ।

सिकन्दराबाद- युं बोझा तो कल्लू के सिर पर ई पड़ गया ।

बंदायं - वो भिड़िया वो सो रोज़ वा पे ते खिरिया मांगो करे, पर बाके कानन में जुबं न रैंगो करे ।

### ६. ७ विशेषण

६.७ जिस शब्द से संज्ञा के अर्थ की सीमा निर्धारित होती है, उसे विशेषण कहते हैं। उदाहरणार्थ - धीरा बकद, कह देने से पूरी बेल जाति में केवल धीरे बेल का ही सीमित अर्थका बोध होता है। सभी जातिवाचक संज्ञाओं के साथ विशेषण इसी प्रकार सीमा निर्धारित करता है। व्यक्ति वाचक संज्ञा के में विशेषण अनेक विशेषताओं में एक को लेकर सीमा निर्धारित करता है, जैसे- नेहरू जी महान् (नेहरू जी महान) में नेहरू जी विविध गुणों अथवा विशेषताओं वाले व्यक्तित्व को केवल महान् तक सीमित कर देते हैं।

६.७.

कैसा, कौनसा, कितना कितने (मात्रा तथा संख्या) किसका कहाँ का, कब का आदि प्रश्नों के उत्तर विशेषण शब्द द्वारा प्राप्त हो सकते हैं जैसे, कैसा (कैसा) लोड़ा रे ? छोटी होरा, मली होरा, कारी होरा आदि स्त्री लि० मली होरी छोड़ी होरी आदि ।

कौना - कौनसा लमडा रे ? पहला लमडा, दूसरा, तीसरा लमडा आदि । कितनी - कितनी गँह तुमरी टपरिया में भवो ? मन मर बिकर रा लाह देउ । कितने (कितने) लमड़े वां खड़ें ? किसका लोड़ा ? बा-ब राम का लोड़ा उठै खड़ा रे । कहाँ के डोर ? जंगल के डोर गिह मारत बताओ तो मला कब की रे ? पुराने जमाने की इमारत रे ।

१. ६. ७ अर्थ की दृष्टि से विशेषणों के भेद :-

- १.१ - गुणवाचक विशेषण
- १.२ - परिमाण वाचक विशेषण
- १.३ - संख्या वाचक विशेषण
- १.४ - सम्बन्ध वाचक विशेषण
- १.५ - सादृश्य वाचक विशेषण

६.७.१.१ - गुणवाचक विशेषण :- जिससे किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण अभिव्यक्ति हो जैसे - बढ़िया, अच्छा, बुरा आदि ।

६.७.१. २ - परिमाणवाचक विशेषण :- इससे परिमाण या मात्रा का बोध होता है जैसे, इत्ना, कितना, जितना, इतना, कितना, जितना आदि

६.७.१. ३ - संख्या वाचक :- इससे निश्चित, अनिश्चित संख्याओं का बोध होता है जैसे - पाँचवा, तिहाई, चौथाई, एक, चार, छः, आदि । (समूह प्रकट करने वाली संख्या) पौड़ी, गंडा (कारक समूह) दर्जन, कोड़ी, (बीस) सैकड़ा (क्रम का बोध - दूसरी, तीसरी, )

गुणात्मक - दुगुनी, चांगनी, अठगुना ।

अनिश्चित - दसियों, बीसियों, आदि

६.७.१.४ - सम्बन्ध वाचक वि० - जो तथा इसी के रूप जिस आदि से सम्बन्ध प्रदर्शित किया जाता है ।

१. ५ - सादृश्य वाचक विशेषण - इसमें सा, जैसा, ई प्रत्यय लगाकर जैसी, ऐसी, वारं परोखा आदि शब्द रहते हैं ।

६.७.२ प्रयोग की दृष्टि से विशेषण भेद :-

६.७.१ विशेषण विशेषण :- अच्छों खोरा राज घाँताईं घाँताईं हात म्हाँ थोईं लेत्वे ।  
वो अच्छों भिडुका भजो बोलन चालन काँ ( तहसील बिसौली- बंदायूं)

६. ७. २. २ - विशेषण - विशेषण :- माँत सपसूरत, कम सपसूरत । <sup>(१)</sup> झाऊ ते माँत अपसूरत ऐ । इस प्रकार ये विशेषण किसी दूसरे विशेषण की विशेषता प्रकट करते हैं ।,



६.७. २. ३ - विधेय - विशेषण - इसको समानाधिकार विशेषण भी कहते हैं ।  
संज्ञा के गुण, धर्म, परिचय आदि भी इससे व्यक्त किए जाते हैं जैसे-  
पक्का आम मीठा होता है ।

६.७. ३ रचना की दृष्टि से विशेषण भेद --

६. ७. ३ (१) मूल विशेषण शब्द :- यथा, अच्छा, बुरा, मर्दा आदि

६. ७. ३ (२) वे विशेषण जो प्रत्ययों या परसर्गों से निर्मित होते हैं :-

यथा :- फगड़ालू, पढ़क्क, मोहन का घर आदि

६. ७. ३ (३) उपसर्ग निर्मित विशेषण :- दुबला, निबला, बेसता, बेकसर आदि

६. ७. ३. (४) समासनिर्मित विशेषण :- अथमरा, बलहीन, आदि

६. ७. ३ (५) पदबद्ध विशेषण :- जल्दी- जल्दी भागता बधु / रोवति पई लुगाई आगे  
ई जाइ रहि है । '

६. ७. ४. सभी शब्द- भेदों से विशेषण बनाए जा सकते हैं ।

६. ७. ४. (१) विशेषण प्रयोग संज्ञा : त कतिपय संज्ञा शब्द अपने मूल रूप में ही विशेषण  
वत् प्रयोग में आते हैं । जैसे -

बड़ा भंगी है । (बड़ा निकृष्ट व्यक्ति) संत कबीरदास, विभीषण  
जयचन्द आदि । 'वो तो निरा बैल है ।' निपट गंवार, ग तो साव  
झिलकूल भीम हैं । इसमें बैल और भीम विशेषण का काम करते हैं ।

(२) अनेक विशेषण शब्द, संज्ञा शब्दों में उपसर्ग, प्रत्यय और अन्य शब्द  
संयुक्त कर निर्मित किए जाते हैं :

(क) उपसर्ग तथा संज्ञा :- - प्र - प्रसिद्ध, परवल (प्रवल)

६. ७. ४. २१. निर - निगुनी, निरफा,

दुर - दुरजन

इसी प्रकार और भी उपसर्ग लगाकर बहुत से शब्द दोत्र में प्रयुक्त होते हैं ।

(ख) संज्ञा और प्रत्यय :- एक - सैनिक, इन - कसाइन,

६. ७. ४. २. २. छं- कसाई । आदि ।

६. ७. ४. २. ३. (ग) समास निर्मित विशेषण :- संज्ञा के आरम्भ और अन्त में दोनों में अन्य शब्द जोड़कर विशेषण बनाए जाते हैं ।

धर्मात्मा, दुष्टान्त, दूरन्देसी, दुष्टदार्ह आदि ।

६. ७. ४. २. ४ (घ) संज्ञा शब्दों में सा जोड़कर तुलना के अर्थ में विशेषण निर्मित

किए जाते हैं - जैसे- चांद सा मुसड़ा, काका की - सी दाढ़ी

कारों- तों भिन्ड, तए - सों कारों रूख(रूई) सों नरम

बिच्छू को - सों डंकु आदि ।

६. ७. ४. २. ५ (च) सरीखा, समान, बराबर आदि संज्ञा के साथ जोड़कर विशेषण का काम करते हैं । जैसे - 'गु तो तेरा बापु सरीखों है' । 'बरे ।

पगल तू यू क्युना सिमिलता अक् माभी बी तो मा कोई बरोबर होवे' । 'तवे के समान काड़ा और भांडा रे, हं तू सब अपणो मन में

सिमिलीजो । (इस प्रकार के वाक्य अधिकतर दादरी, सिकन्दराबाद हापुड़, स्याना, अगीता आदि में प्रयुक्त होते हैं)

६. ७. ४. २. ६ (छ) संज्ञा का संबंध कारकीय रूप भी विशेषण होता है - जैसे अक्को की लाट, पांडवों का किला आदि ।

सर्वनाम से विशेषण उच्चम और मध्यम पुरुष सर्वनाम को जोड़कर सर्वनाम के सभी भेदों का विशेषण वत प्रयोग होता है । 'गु तो बिलकुल गधा है ।' 'तुम कौन सी किताब चें ?' 'कमी-कमी गंगा पार बंदायूं में इस प्रकार का भी प्रयोग मिलता है । 'बरे साब । तुमारे बाई बात मला कबज भुलाई जाति ऐं ।'

६. ७. ४. ३ क्रिया से विशेषण :- इससे कौ विशेषण कृदन्तीय विशेषण कहलाते हैं । ये कई प्रकार के होते हैं जैसे -

६. ७. ४. ३. १ (१) वर्तमान कालिक कृदन्त -- धातु में ता लगाकर जैसे- वो तो रम दिला हा न, रोचा, खाचा, पीचा अरु लड़ता हुआ हं मर गया (दादरी - सिकन्दराबाद हापुड़ आदि में )

६. ७. ४. ३. २ (२) मृत कालिक कृदन्त :- आ, ई, ए, लगाकर ( 'डबडबाईं भईं बांसिन तें जैसें मैंने गु देखी तो कहन लगों कि गया बसत फिर कबज हात नाह आवे ।' (खुर्जा, डिबाई, राजघाट, अनपशहर, गंगापार में भी इस प्रकार का विशेषण प्रयोग मिलता है)

६. ७. ४. ३. ३ (३) क्रिया के सामान्य रूप में - बाला - वारों वादि जोड़ कर विशेषण बनाए जाते हैं -  
खानेवारीं, पीनेवारीं, कमानेवारीं, इसी प्रकार खाऊ कमाऊ लड़ाऊ आदि ।

६. ७. ४. ४ अव्यय - प्रत्यय जोड़कर तथा कुछ अव्यय शब्दों का प्रयोग मल रूप में ही विशेषणवत् होता है । जैसे- बाहर से बाहरी, भीतर से भीतरी वादि उसणों तो इसका बांर का बांर मल्लिक निकाड़ा । कुव और रूप्ये नीं चें । 'बां कोई आदमी होचा तो, तो बताचा नी ।' (इस प्रकार के वाक्य दादरी सिकन्दराबाद अगांता हापुड़ आदि में प्रयोग पार जाते हैं ।

कतिपय विशेषणों से भी दूसरे प्रकार के विशेषण बनाए जाते हैं ।

(१) संख्या वाचक विशेषण से क्रम वाचक, आवृत्ति वाचक समुदाय वाचक, प्रत्येक वाचक विशेषण बनाए जाते हैं ।

दो से - दुगना, दसरा, दो- दो आदि

६. ७. ४. ५ (२) निश्चित वाचक का अनिश्चित संख्या वाचक भी तरह प्रयोग :-

६. ७. ४. ५. १- पूर्णांक संख्या वाचक विशेषण में ओ जोड़कर जैसे- तीनों, पाँचों आदि ।

हैं- से समूह का दौघ कोता है जैसे- ' बीसियों बार इन लुगाइन ते कही कि गीत मति गावो करो परि गि मला कौन की सुन्ति हैं, जितो ऐसी मस्ताय रहें हैं । (प्रयोग- कुजाने दनकौर, डिक्काई, आदि)

छोटी संख्या में - दसों द्वारा लिया जाइ गर हैं ।

बड़ी संख्या- सैकड़ों, हजारों, लाखों आदि

६. ७. ४. ५. २- निश्चित संख्या के साथ एक जोड़कर - ' जैऊ देसो लाला। जादा चबर - चबर करिबे की तो कहु जरुरति हति नाएँ, ठिक्काई हिया ते कोहँ दस एक कोस ई होइगी, जादा नाएँ उरपत चौँ ओ। (कुर्जा -व

६. ७. ४. ५. ३ - दो निकटवर्ती पूर्णांक संख्या लगाकर - जैसे- हबी तो पाँच हूः रूप्ये से काम निकाड़ ले, आग्ये फिर की फिर देखी जागी, क्युं जाताएँ प्रयोग - (गाजियाबाद के निकट मारीयत)

६. ७. ४. ५. ४ ४- अनिश्चय के लिये एक और जाये में अनुमात की संख्या का प्रयोग जैसे- 'स्काय दिन में ही बु आ जायेगा हतत हतमीनान तो करों।' (रामपुर मिलिक) ।

पाँच, सात, दस - पन्धर आदि का प्रयोग मिलता है ।

६. ७. ४. ५. ५ - एक का प्रयोग अनिश्चय के अर्थ में - जैसे- एक आव्वाँ अरु दसरा जीव्वाँ यू अच्छा गरदिआव काट रक्ता, कदी एकाध मिलट तो चैन से बैठने दें ।

इस प्रकार का भी प्रयोग सर्वेदाण के समय मिले -

जैसे- 'तरे साह । अप्पकी ताँ लातहँ दसरी है मरणा मेरी क्या हस्ती हँ जो मैं आपका मुकाबिला करूँ ।' (तहसाल मिमिल- जिला रामपुर)

'वच्छे - अच्छेक हप्पनँ एक- दसरे ते (आप समै) लड़त मर्ते देखें हँ ।' (सुजाँ)

६. ७. ४. ५. ६- सब बहुत, आदि का प्रयोग विशेषणवत् बहुवचन के साथ होता है ।

सब गुड़ गोबर हँ गजों र । (किताँली)

६. ७. ४. ५. ७- निश्चित परिमाण बोधक संज्ञाओं में बहुवचन प्रत्यय आँ लगाकर ने से अनिश्चित बोधक हो जाते हैं - जैसे- पैर (तलिहान) में मर्नाँ अनाप विस्तिरौँ परौँ र, वा चमरियाईँ ते कह देउ जाइकेँ सिलो किलो बीन लखेगी नईँ तो गि ठेरौँ नाज ओसैं ईँ जाइगो ।

(सुजाँ ददाण-)

६. ७. ५. ० - विशेषण पद बंध :- ऐसा पद समझ जो विशेषण का कार्य करे विशेषण पद बन्ध कहलाता है ।

१- आमोन् - (आमों) के ओफर ते नबी मईँ डार मला चोँ न गिरती ।

२- मेरे नैक बाहिर रहबे में ईँ तुम पै कतु बीजुरी परि नईँ ।

३- गु तो सिलैटी रंग की लदपर को कुताँ फहने मखो बो ।

४- तुमारे गो इबे कौ बखत सब नाइ रह्या ।

५- उन्ननें वो मांत दिनन्ते तेह पिजा ई मई लठिया निकारी और फिर,  
ऐसी छलाह के सब गाकु ई तमासे आइ गया ।'

६- अरे वो सामणो दीवाड़ा लगी हुई घड़ी दिखाई ना देती ऐसा अन्धा ।

जिन वाक्यों के नीचे रेखाएँ प्रयुक्त हैं यदि उन्हें खंड खंड कर के देखें तो कोई विशेषता नहीं दिखाई देगी और यदि इनको समग्र रूप से देखें सभी विशेष्य की विशेषता प्रकट होगी । अपने विवेच्य क्षेत्र की बोलियों के आधार पर ही यह विशेषणों का विवेचन किया गया है ।

## ६.८ क्रिया

६.८.० हिन्दी भाषा - भाषी प्रदेश में अनेक क्षेत्रीय उच्चारणों तथा बोलियाँ बोली जाती हैं, जिनके क्रिया- पदों में, काल, वाच्य, अर्थ, पुरुष, वचन, तथा लिंग- सूचक रचनात्मक पदार्थों का विधान रहता है, प्रत्येक क्रिया पद, इनमें से एकाधिक विशेषताओं को लिए रहता है ।

६-८.१ हमारे विवेच्य- क्षेत्र की क्रियाएँ रूप रचना की दृष्टि से दो वर्गों में विभाजित की जा सकती हैं ।

१- सामान्य, २- यौगिक

उक्त दृष्टि से कोई एक क्रिया- पद निम्नलिखित किसी एक वर्ग में रखा जा सकता है :-

१- धातु (शून्य विभक्ति - प्रत्यय के साथ)

२- धातु । वचन- पुरुष- द्योतक विभक्ति प्रत्यय ।

३- धातु । लिंग वचन द्योतक कृदन्तीय प्रत्यय ।

४- धातु । कृदन्तीय प्रत्यय । सहायक क्रिया ।

उपर्युक्त रचनात्मक तत्त्वों का विस्तार से विचार अपेक्षित है।

## ६. ८. २ धातु

विवेच्य क्षेत्र की बोली की धातुओं को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

६. ८. २१. स्वरान्त

६. ८. २.२ क्जनान्त

### ६.८. २१ स्वरान्त

मूल एवं यांगिक दो वर्गों में बांट सकते हैं । सामान्यतः धातुएँ दीर्घ स्वरों में अन्त होती है :

#### स्वरान्तः मूल

##### निरनुनासिक स्वर

##### अनुनासिक स्वर

जा

पी

फै- फो(रोटी पोनाया सनना)

खो (खोना)

सीं

टें (तेज करना)

खीं

#### स्वरान्तः यांगिक

प्रेरणार्थक प्रत्यय - आ अथवा - वा तथा नाम

धातु प्रत्यय - या से जुड़ने वाली

चब् । आ - चबा चब। वा - चबा

कर । आ - करा कर। वा - करा

६.८. २.२ मूलव्यंजनान्त -- इन धातुओं का मूल स्वर ह्रस्व एवं दीर्घ, दोनों ही प्रकार का हो सकता है, यथा --

।पाटा(-पाटना) ।काटा, ।डाल। (- फेंकना) ।भाँका(- घुसेटना)

।बोरा,(- डुबाना) ।गिरा, ।कला, ।करा, - आदि ।



ह्रस्वाकृत व्यंजनान्त धातुरें :-

ये धातुरें दो वर्गों में विभाजित हो रही हैं

व्यंजनान्त - मूल धातुओं की ह्रस्व रूप, यथा :

- । साध सध । - साधना - सधना
- । लीय लिय । - लीपना - लियना (गोबर से लीपना)
- । पीस पिस । - पीसना - पिसना
- । पूर पूर । - भरना = भर जाना
- । पोंछ पुंछ । - साफ करना - साफ हो जाना

स्वरान्त मूल धातुओं के ह्रस्व रूप, यथा

- । पी पिब । - पीना
- । गा गब । - गाना
- । कू कुव । - कूना
- । खो खुब । - खोना
- । सी सिम । - सीना
- । कह कज । - कहना
- । पै पब । - रोटी पीना - बनाना

ह्रस्व एवं दीर्घ अथ पुति धातुओं के धातु स्वरां के बीच संधि-नियमों  
की स्थापना इस प्रकार की जा सकती है ।

|       |   |
|-------|---|
| आ     | अ |
| इं, ए | इ |
| ऊजो   | उ |
| ऐ     | ह |
| औ     | उ |

परिनिष्ठित हिन्दी में इन ह्रस्वाकृत धातुओं से बने क्रिया रूपों का प्रायः  
अभाव है। इनके कर्मवाचीय अर्थ 'मिथ्यक्ति' का अर्थ हिन्दी में संयुक्त क्रियाओं ने ले लिया  
है । विशेष्य क्षेत्र में इन धातु रूपों का प्रयोग अत्यधिक है ।

गब् । वा गब्बा (- गाने वाले)

गब् । ब् गब्ब (- गाने वाला -वाला-दोनों लिंगों में)

गब् । अ इ या गबइया (गानेवाला)

गब् । आहँ गबाहँ (गाने का पारवर्त्मिक )

गब् । आ उ त गबाउत (गवाना)<sup>१</sup>

१- गबाउत - पाली भाषा से एक उदाहरण प्रस्तुत है ।

जा काँ सुनि लेते कि जो गावत अब्बो है वासे जबज्जपी गबाउते ।

“जोताँ सधुर मारि मारि कें गबाउत ऐ ।”

६. ८. २. ३ क्रिया के दो रूप -

अकर्मक

सकर्मक

जिस क्रिया में कर्म का अभाव हो उसे अकर्मक क्रिया कहा है जैसे

“ वह गयो ”

जिस क्रिया में कर्म रहता है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं । जैसे

“ वो घर गयो ”

६. ८. ३. सहायक क्रियाएँ

कतिपय सहायक क्रियाएँ ऐसी भी हैं जिनका कार्य, कर्ता, या कर्म का भार संभालने वाला प्रधान क्रिया को सहयोग प्रदान करना ही है। कार्य- पद्धति के आधार पर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है ।

६. ८. ३.१- विभिन्न अर्थों एवं कालों की अभिव्यक्ति में सहयोग प्रदान करने वाली क्रियाएँ - हैं, हो, हैं, पर हैं सभी लिंग, सब विभक्ति - द्रव्य के साथ होती है । इनका प्रयोग कभी- कभी प्रमुख क्रिया के रूप में हो जाया करता है जैसे -

गु पड़ो है - वह विद्वान है (प्रमुख क्रिया)

गुन्नें पड़ो है - उसने पड़ा है (सहायक क्रिया)

६. ८. ३.२- जा, हो, इन क्रियाओं का सहयोग भी भाषा को प्राप्त हुआ है। ये कर्मवाचीय अर्थ को प्रकट करने के लिए तथा अपने तिङन्तीय एवं कृदन्तीय प्रत्ययों के साथ प्रयोग में आता है ।

६. ८. ३. ३- ये सहायक क्रियाएँ स्वतन्त्र अर्थ के अतिरिक्त कभी-कभी प्रमुख क्रियाओं के साथ मिलकर उनमें नवीन अभिव्यञ्जना समाविष्ट कर देती हैं। अतः मुख्य एवं सहायक क्रियाओं से परियुक्त होकर संयुक्त क्रियाओं का रूप धारण कर लेती हैं।

यहाँ प्रथम वर्ग की ही सहायक क्रिया के रूप में गृहीत करेंगे।

६. ८. ३. १. १- वर्तमान कालिक रूप--

| एक वचन,          | बहुवचन |
|------------------|--------|
| उत्तम पु० हूं ऊं | हैं ऐं |
| मध्यमपु० है ऐ    | हो ओ   |
| अन्य पु० है ऐ    | हैं ऐं |

वैद३. १. २ भूत कालिक रूप-

| एक० व०                                     | बहु० व० |
|--------------------------------------------|---------|
| तानां पुरुषः था हा ओ, धै है ए <sup>१</sup> |         |
| हत्तुओ                                     | हत्तए   |

१- ओ- का था और ए का थे के रूप में प्रयोग - दक्षिण पूर्वी क्षेत्र में होता है तथा बंदायूं में तथा बरेली में इसका प्रयोग बहुलता से होता है एक उदाहरण दृष्टव्य है - गु ओ लो रो ओ करे मैं जि भली भई मेरो हात पक्यओ । ”

मे लओ लो ओ (में गया लो था) आदि इस संबंध में परिशिष्ट में नमूने देले जा सकते हैं।

६. ८. ३. १. ३- भविष्य कालिक रूप --

| एक० व०                       | बहु० व०              |
|------------------------------|----------------------|
| उत्तम पु० होऊंगा हंगा        | होयंगे होयेंगे होयें |
| मध्यम० पु० होगा होवेगा होयगा | होंगे होवेंगे होयंगे |
| अन्य पु० होगा होवेगा         | होंगे होवेंगे होयंगे |

ये रूप सहायक क्रिया के समान आते हैं परन्तु ये एक धातु रूप न होकर दो धातुओं के संयुक्त रूप हैं । इनमें प्रथम अंश तो होऊँ, होवें, हो, हों आदि हैं, तथा दूसरे गा, गे । इस प्रकार इनमें भविष्य का भाव जोड़ने वाली सहायक क्रिया गा, गे, ही हैं । ये गा, गी केवल हो के रूप में साथ ही नहीं अपितु अन्य सभी के साथ (जैसे -- सायेगा - करेंगे) आते हैं ।

वस्तुतः ग वाले रूप यद्यपि दो धातुओं से बने हैं परन्तु अवगण का योग प्रत्ययवत् होता है इसी कारण ये रूप संयुक्त न होकर न माने जाकर मूल माने जाते हैं ।

६. ८. ३. १. ४- सम्भाव्य वर्तमान :-

| एक० व०                  | बहु० व०                |
|-------------------------|------------------------|
| उत्तम पु० होऊँ          | हों, होयें, होएं       |
| मध्यम पु० हो, होवे, होए | हो, होओ, होवो,         |
| अ० पु० हो, होवे, होए    | हों, होयें, होए, होयें |

६. ८. ३. १. ५ सम्भाव्य भूत

| एक व०          | बहु० व० |
|----------------|---------|
| सभी पुरुष होता | होते    |

इसे भूत सम्भाव्यार्थ या सम्भाव्य भविष्य भी कहा गया है ।

## ६. ८. ४ काल रचना --

काल तीन - भूत, वर्तमान, भविष्य किसी भी काल की क्रिया

पूर्ण या अपूर्ण हो सकती है। क्रियार्थ ( ) की दृष्टि से क्रिया निश्चयार्थ सम्भावनाार्थ, आशार्थ, संदेहार्थ, संकेतार्थ आदि कई प्रकारों का हो सकता है।

रचना की दृष्टि से काल दो प्रकार के हैं- मूलकाल, यौगिककाल।

मूलकाल - जिसमें सहायक क्रिया का प्रयोग न हो। केवल मूल क्रिया (तिङन्त या कृदन्त) हो जैसे - तुम आओ। वह बला।

यौगिक काल-- जिसमें कृदन्ताय या तिङन्ता रूप में मूल क्रिया हो तथा सहायक क्रिया भी हो जैसे - बर्ष आया है। मैं जाता था।

## ६. ८. ४. १ - वर्तमान निश्चयार्थक --

एक व०

बहु० वचन

उत्तम पु०    हं    ऊं (पाऊं)

हैं हैं (पाएँ) जी हैं- जाएँ)

मध्यम पु०    है    ए (जाए जायें जा है)    हो ओ

अन्य पु०    है    ऐ    हैं    ऐं

## ६. ४. २

भूत निश्चयार्थक कृदन्त से निकसित इसमें पुरुष भेद नहीं होता वचन तथा लिंग के अनुसार रूप बनते हैं।

पुल्लिंग एक वचन

पुल्लिंग बहु वचन

हा हा

है

मिला मिला

आए, गए, दिए, लिए,

स्त्री लि० एक व०

स्त्रीलि० बहु० वचन

होई हैं (ली, आईं)

होई हैं (ही, आईं दी)

६. ८४. ३ भविष्य निश्चयार्थ कृदन्त से विकसित --

|        | पुरुलिंग |                | स्त्रीलिंग |                     |
|--------|----------|----------------|------------|---------------------|
| पुरुष० | एक० व०   | बहु० व०        | एक० व०     | बहु० व०             |
| उ० पु० | जाऊँगा   | जायेंगे        | जायेंगी    | जायेंगी             |
| म० पु० | आएगा     | आवेंगे, आजाँगे | आएगी       | आवेंगी              |
| अ० पु० | आयेगा    | आयेंगे         | आयेगी      | आवेंगी <sup>१</sup> |

६. ८. ४. ४ वर्तमान आशार्थ --

एकवचन - जा,

बहु० व० आशार्थक -- जाओ, साओ, पाओ, (उदा० जाओ, साओ, पाओ  
सोज करो)

बहु० व० आदर सूचक-- जाइए, साइए, पाइए, सोइए, और आराध करिए ।

भविष्य आशार्थ -- कृदन्त से विकसित

| एकवचन                | बहुवचन               |
|----------------------|----------------------|
| करियो, जइयाँ, पाँयो, | करना, देना, पीना आदि |

६. ८. ४. ६ भूत सम्भावनाार्थ कृदन्त से विकसित-- इस काल की रचना धातु के पश्चात् दो विभक्तियों के योग से होती है अथ विभक्ति वृ- त) और दूसरी विभक्ति के रूप में वचन तथा लिंग के अनुसार सामान्य भूत निश्चयार्थ काल वाचक विभक्ति का भी विभक्तियाँ जुड़ती हैं ।

| पु० लि० | एक० व० | बहु० वचन० | स्त्री० लिंग | एक० व० | बहु० व० |
|---------|--------|-----------|--------------|--------|---------|
|         | साता   | साती      | साते         | साती   | साती    |
|         | पीता   | पीती      | पीते         | पीती   | पीती    |

१- दादरा- सिक्कराबाद स्थाना में- आवेगा तथा अन्य दोनों में- आवेंगी चलता है ।

### ६- ८. ५ याँगिक (संयुक्त) काल

६- ८. ५. १- वर्तमान कालिक कृदन्त । सहायक क्रिया

- १- वर्तमान अपूर्ण निश्वायार्थ - वह करता है
- २- भूत अपूर्ण निश्वायार्थ - वह करता था (वह करता हुआ)
- ३- भविष्य अपूर्ण निश्वायार्थ - वह करता होगा - वह करती होगी ।
- ४- वर्तमान अपूर्ण सम्भावनाभू- यदि वह करता हो तो,
- ५- भूत अपूर्ण सम्भावनाभू- यदि गु करता होता ।

६- ८. ५. २ भूत कालिक कृदन्त । सहायक क्रिया ।

- १- वर्तमान पूर्ण निश्वायार्थ - वो करी है ।
- २- भूत पूर्ण निश्वायार्थ - वो करा था
- ३- भविष्यपूर्ण निश्वायार्थ - वह करती होगी ।
- ४- वर्तमान अथवा भूतपूर्ण सम्भावनाभू- अगर गु करी होय
- ५- भूत पूर्ण सम्भावनाभू - अगर वु करा होता ।

इसका तथा भविष्य निश्वायार्थ तिङन्तों इस का वर्णन पहले किया जा चुका है ।

६. ८. ६ क्रियार्थक संज्ञाएँ --

६. ८. ६. १- क्रियार्थक संज्ञाओं के निर्माण में प्रधान प्रत्यय --

- व -, - न -, - ० -, (शून्य) ये सभी मूल तथा याँगिक धातुओं में जुड़ते हैं ।

ब- एक वचन में ही लागे बने क्रिया पद प्राप्त होते हैं । इसका प्रयोग

कारक - संबंधों का स्पष्ट करने के लिए अधिकता से किया जाता है--



| एक० व०    | बहु० व० | उदा०                                   |
|-----------|---------|----------------------------------------|
| मल बो     | ।       | साइबो पाइबो जच्छो होतो ।               |
| भिकारी बे | ।       | नायिबो, पाइबो कहं जच्छो होत्वे ?       |
| मूल बो    | ।       | रहबो तो आवान है ।                      |
| नो        | ।       | रहना है तो रजो नइ तो भागि जा           |
| जा        | ।       | जहां बच्चों का रहणो जहां भूतों की रटाण |

बे-- अबे तेरे लाले ने तो मेरा सबी काम बिगाड़ दिया ।<sup>१</sup>

“साबे के काजें लिआजा ।”<sup>२</sup>

कबो साबे की बी सलसन्ध है ।<sup>३</sup>

(कमा खाने का मा पता है)

न-- महायक क्रियारें विशेष रूप से जो इस प्रत्यय से बने क्रिया पदों के पश्चात् प्रयोगों में आती है -

ला, जा, आ, दे, आदि

यथा-- गुल्यलेन आवतु -- वह उसे लेने आता ।

बो जान लगी -- वह जाने लगा ।

आके घर आंतरी खान जात ओ-- उसके घर दावत खाने जाते हो ।

-नं-- यह प्रत्यय मूल तथा याँगिक, दीर्घ और ह्रस्वाकृत सभी धातुओं में जुड़ता है ।

हमें केऊ कुआ तापे पुजवा हनें । (हमें कहीं कुएं उतरे पुजवाने हैं।)

१- सम्मल - मुरादाबाद) में प्रयोग

२- भित्तौली (बदायुं) में प्रयोग

३- खुजा (बुलन्दशहर) में प्रयोग ।

नों -- का प्रयोग इधर बहुत होता है ।

मोंय जानों हैं

तोंय खानों रे के नाइ

अरे बुतो रोटी खानों बी भुल गियो ।

(ओ ओ तो रोटी खाना भी भुल गया)

बो, नों और णा का दौत्रीय विवरण ।<sup>१</sup>

६-८-१२. क्रियाथक परा का एक तीसरा वर्ण है जिसका कृदन्तीय प्रत्यय शून्य कहा जा सकता है । ये क्रिया भू भो भूल एवं विकारी, इन दो रूपों में रहे जा सकते हैं

|        |         |         |
|--------|---------|---------|
|        | एक ० व० | बहु० व० |
| भूल    | खानो    | ।       |
| विकारी | खार     | ।       |

भूल रूप का प्रयोग संयुक्त क्रिया- पद- रहता तक ही सीमित है जैसे-

जब उनें खां जाओ वइए -- (जब उन्हें वहां जाना चाहिए)

यह भूतकालिक कृदन्त प्रत्यय - शून्य से भिन्न अर्थ रखता है क्योंकि भूत कालिक रूप गओ बनता है न कि जाओ ।

माई रे खूब दूध पियाओ कर तिए ।

(उसी को खूब दूध पिलाया करती है।)

विकारी रूप-- जाए ते सबई काम विगारि जात ऐं ।

जाऐं ते सबई काम विगारि जात ऐं ।

इनके अनुनासिक और निरनुनासिक दोनों रूपों में प्रयोग मिलता है ।

१- णा, का प्रयोग दादरी, सिकन्दराबाद, हाथुड़ स्थाना, आंता में मिलता है ।

उदा० रहणा है तो रहां नई तो अणणा काम दिक्खो ।

२- रहना- बनारस, बुलन्दशहर, अजमेर का ऊपरा भाग, सम्मल, विलारी भिमिक

३- रहवो और रहनो, इन दोनों का प्रयोग, बुध शहर के नीचे, सुजा, अजमेर डिबाई, राजमाट, बबराला, बिसौला आंता रामनगर बहेडा, पीलाभात

नोट:- इसी दौत्रीय विवेक के आधार मानाचित्र प्रस्तुत किया गया है ।

१. ८. ३. ४- क्रियार्थक मञ्जा का एक वीथी रूप भी परिगणित किया जा सकता है जैसे-

हमें दौड़ा जावति-- हमको दौड़ा जाता है  
हमें दौड़ावना आगत-- हमें दौड़ाना जाता है ।

१. ८. ६४ - क्रियार्थक विशेषण के यहां कुछ ही प्रत्यय लिए जा रहे हैं

“हैं” जो क्रियार्थक मञ्जा का विकारो रूप है, उसके बाद परसर्गों का अभाव रहता है । संयुक्त क्रियापद रचना में ये प्रयोग सहायक होते हैं जैसे --

जे लौड़ा तो हमें सच्ची पत्नी तो सारें जात ।  
(ये लड़के तो हमें सच्चा पत्नी तो लाये जाते हैं )

हम बाह्र हियाँ बुलारें रेत ।  
(हम उसे यहां बुलार लेते हैं )

६८- ६५ ३- यदि एक ही कर्ता से दो क्रियापद जुड़े हो तो प्रथम हुई क्रिया को पूर्व कालिका क्रिया कहते हैं । इसके दो आधार हैं - केवल धातु रूप तथा धातु । परसर्ग रूप - है हैं ।

गु कारि आयो (बह करके आगया)

कर्म वाच्य एवं भाव वाच्य ---

कर्तृवाच्य के अतिरिक्त कर्म एवं भाववाच्य क्रियापदों का प्रयोग भी खब चलाता है ।

काट- कट (लृत्स्वाकृत)

मैं लकड़ी काटत हूँ ।

लकड़ी काटत रे

सी तरह कर्मवाचीय अनेक रूप बनते हैं

बसात, दसात इत्यादि ।

हो सहायक क्रिया के भाग में आव प्राचीन अर्थ की अभिव्यक्ति भी होती है ।

जहाँ तो खूबई खवाई होती  
( वहाँ तो खूब ही खाना खिलाया जाता है )

आतो कैये ऊँ बलिबो होय भाई

दे० = प्रेरणार्थक क्रिया :-

सामान्य धातु के ह्रस्वीकृत रूप में - आ अया वा जोड़ कर यौगिक धातु का निर्माण किया जाता है ।

आ - नै -- सामान्य  
अव - नै - ह्रस्वीकृत  
अवा - नै- प्रेरणार्थक (प्रत्यय)  
अववा - नै - प्रेरणार्थक (विधतीय)

दशक देख धातु

|                  | सामान्य | प्रेरणा (प्रथम) | प्रेरणा (विधतीय) |
|------------------|---------|-----------------|------------------|
| वर्तमान          | देखत    | दिखावत          | दिसवावत          |
| भूत              | देखी    | दिखाओ           | दिसवाओ           |
| भविष्यत          | देखिअँ  | दिखाइअँ         | दिसवाइअँ         |
| क्रियार्थकता     | देखनै   | दिखानै          | दिसवानै          |
| परिकालिक कृदन्त  | देख     | दिखा            | दिसवा            |
| भावनात्मक वृत्ता | देखी    | दिखाई           | दिसवाई           |

कुछ यांगिक धातुएँ नाम (संज्ञा अथवा विशेषण) शब्दों में लुप्ती कृत रूपों में - या प्रत्यय जोड़कर बनाई जाती हैं और फिर इनको रूप- रचना आ धातु की तरह चलती है उन्हें नामीकृत कहा जाता है । जैसे

धातियाना - धातें करना

जुतियाना - जुते मारना

लतियाना - लातें मारना

मुटाना - मुटियाना (मोटा होना)

हाथियाना - हाथ में मरना

#### ६. ६ अव्यय

६६. ०. सामान्यतः अव्यय का शाब्दिक अर्थ है कि जो व्यय न हो, व्याकरण में व्यय का अभिप्राय परिवर्तन से है । संस्कृत के अन्तर्गत उन शब्दों को अव्यय कहा गया है, जिनके रूप लिंग, वचन, कारक के अनुसार नहीं बदलते । इस परिभाषा का आधार रूप है, हिन्दी में स्थिति कुछ भिन्न है। एक ओर तो कुछ ऐसे अन्य शब्द भी (जैसे-बुढ़, पारो आदि ) हैं जिनके रूप नहीं बदलते परन्तु दूसरी ओर कुछ अव्यय भी ऐसे हैं जिनके रूप बदलते हैं, जैसे - नत्थू मगा - मगा आया, राधा भर्षा- भर्षा आई । अथवा सर्वेश लेटा हुआ पड़ रहा है; शर्मिला लेटी हुई पड़ रही है। इसी स्थिति को लक्ष्य कर हिन्दी में अव्यय भी परिभाषा रूप पर आधारित न कर यदि कार्य पर आधारित करें तो कोई अत्युक्ति न होगी । यहां पर हम अपने विवेच्य क्षेत्र के आधार पर अव्ययान्तर्गत क्रिया- विशेषण, समुच्चयबोधक, विसमयादिबोधक और सम्बोधन आदि का अध्ययन प्रस्तुत कर रहे हैं ।

अव्यय निम्नलिखित कार्य करते हैं :-

६. ६.१ - वे क्रिया की दिशा, स्थान, समय, परिमाण रीति, तादृश्य कारण, तुलना, बल, और उद्देश्य आदि बताते हैं ।

६६. २ - कुछ अन्य शब्दों, उप वाक्यों अथवा वाक्यों को जोड़ते हैं इन्हीं को अब तक समुच्चय वाक्य क्रिया विशेषण कहा जाता रहा है ।

६. ६. ३ -- कुछ अन्य अव्यय, विस्मय, हर्ष, आदि का भाव व्यक्त करते हैं, इन्हें भी अब तक विस्मयादिसोधक कहा जाता रहा है ।

६. ६. ४ - कुछ अन्य अव्यय सम्बोधन का द्योतन करते हैं इन्हें ही संबोधन कहा जाता है ।

६. ६. ५ - कुछ अन्य अव्यय, अवधारण, बल, निषेध तथा स्वाकार व्यक्त करते हैं ।

अब सभी अव्ययों (क्रिया विशेषणों) का अर्थ एवं कार्य की दृष्टि से निम्नलिखित रीति से विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है ।

६. ६. १-१-१- दिशा अर्थ द्योतक स्थान वाक्य अव्यय-

एक अव्ययों (क्रिया विशेषणों) का निर्माण दिशा- सूचक मूल प्रतिभादिक इ धे उ गे त् में --

इ - उ - जि - कि - उपसर्गों के जुड़ने से होता है ।

इधर - अर्थदोतक : इ । इ गे त् उ धे इ उ गे इत् इ उ धे

उधर - अर्थदोतक :

उ - । - उ धे त् उ ध धे उत्

जिधर अर्थदोतक : जि - । - इ धे त् जि उ धे जित्

किधर अर्थदोतक : कि - । - उ धे ओ त् कि उ धे कि उ धे कित्

इस वर्ग के अव्यय दोनानुसार एक प्रकार हैं-

|                      |                        |                                                                                              |                                             |
|----------------------|------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------|
| परिनिष्ठित<br>हिन्दी | दा० विक्रान्ता०, स्या० | शिमला०, जहांगीराबाद ।<br>अनूपहर, ब० शहर ।<br>सुजो, उडवाँह, विवाली ।<br>बदायि, आक्ला, बहेरी । | मुरादाबाद<br>बम्बल, विलारी<br>रामपुर, मिमिक |
|----------------------|------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------|

|      |                   |                    |                   |
|------|-------------------|--------------------|-------------------|
| इधर  | । इ० धे, इ० गे    | । या लंग (इधर) इत  | । इत् (इधर)       |
| उधर  | । इ० धे - उ० गे   | । वालंग (उत। कं)   | । उत् (उधर)       |
| किधर | । कि० धे - कि० गे | । कालंग - कित। कं  | । किधर (कित। कं)  |
| जिधर | । जि० धे - जि० गे | । जालंग - जित - कं | । जिधर (जित - कं) |

नोट-- इत, जित, कित, उत् में परसर्ग रामपुर मुरादाबाद, बुलन्दशहर, में बोला जाता है।

इसो जोन का वाक्य स्तर पर विवेचन :-

(१) इ इ धे उ इ धे देख के तू के लेगा, जा रुड़के जा, जि ई- तिश्ये की बात बना बन के पढ़ा अपना उल्लू सादा कर लेवे और तो कुछ काम है ईना

उपर्युक्त वाक्य दादरी, सिकन्दराबाद, स्थाना, अगाँठा हापुड़ आदि का हापुड़ आदि का यत्किंचित स्वनिमात्मक प्रकारान्तर से प्रतिनिधित्व करता है ।

(२) या लंग वालंग (इत उत्तक) देखि में त का लेगी जा भागि जा, जालंग तालंग की बात बनाइ बनइ के पढ़ा अपना उल्लू सीधों कर लेवें और तो कुछ काम है ई नाइ (हतुई नाइ)

उपर्युक्त वाक्य बुलन्दशहर, लुना, डिबार्ह, गिर्नाला, बन्दासी, आवंला बहेड़ी आदि का प्रतिनिधित्व करता है ।

(३) इधर - उधर (इत उत्तक) देखि के त क्या लेगा, जा क्ला जा, जिदर फिदर की बातें बना, दू के पढ़ा अपना उल्लू सादा कर लेवे और तो कुछ काम है ई ना ।

उपर्युक्त वाक्य मुरादाबाद, सम्मल, विलासी, रामपुर मिथिक तहसील का तथा साथ ही मुस्लिम बहुल जोनों का प्रतिनिधित्व करता है ।

६. ६१. २ स्थान वाक्य अव्यय--

यह सामान्यतया सर्वनामों या अन्य क्रिया विशेषणों पर आधारित होते हैं। इस वर्गान्तर्गत यहा, वहां, जहां, तथा, कहाँ, अर्थात् क्रिया विशेषणों का निर्माण विद्यमान सूचक मूल प्रतिपादिक - अहां जां हां में भिन्नार्थक उपसर्गों के जुड़ने से होता है ।

इस वर्ग के अव्यय (क्रिया विशेषण) इस प्रकार हैं ।

(यहां । दादरी विक्र० अर्गांत

(वां । सम्मल, बिलारी, मिलक, नैनी०

।हियां। शेष स्थानों पर

कहां । कहां उठे। दादरी, विक्रन्दराबाद और स्थाना

।वां । सम्मल बिलारी, मिमिक, नैनी०

(कहां । शेष स्थानों पर

जहां । जहां । दादरी, विक्रन्दराबाद, स्थाना, अर्गांत और हापुड़

।फां । शिकारपुर

।जां । शेष स्थानों पर

तहां । तहां । दादरी, विक्रन्दराबाद

।तहां । स्थाना, अर्गांत, हापुड़, सम्मल, बिलारी, मिमिक

।तां । शेष स्थानों पर

कहां । कहां । दादरी, विक्रन्दराबाद, स्थाना, अर्गांत, हापुड़,

। कां । शेष स्थानों पर

जागे । अगे जागे। दादरी, विक्रन्दराबाद, हापुड़ में

।आगे । स्थाना, अर्गांत

।आल्ले अगैला। जहांगीराबाद, बदराला, गिनौर, गिर्गौला, बांक्ला, बहेठी, पीलीभीत

।आगे, अगारे, अगारा। शेष स्थानों पर ।

पीछे । पीछे - पाछे। दादरी, विक्रन्दराबाद, स्थाना, अर्गांत, हापुड़

।पीछे पिछारे। कुलन्दरहर, शिकारपुर, सुर्जा, बंदौली, मालभीत,

।पिछारे पीछे। अनपहर, बदराला, गिनौर, गिर्गौला, बांक्ला

।पीछे । सम्मल, बिलारी, रामपुर (फिरिया)



ऊंचा ( ऊंचा ऊंचा ( दादरी, सिकन्दराबाद, स्थाना, अगाँठा, हापुड़

(ऊंचा ( पुं० शहर, मुरादाबाद, (सम्भल, किलारी) रामपुर ।

(ऊंचा । शेष स्थानों में ।

(ऊपर । दादरी, सिकन्दराबाद, स्था० अगाँ० हापुड़

।ऊपर। शेष क्षेत्रों में ।

नीचे । नीच्ये। दा०, सिक० स्था० अगाँ० दा०

।नीचे । शेष क्षेत्रों में ।

भीतर । भीतर । दा० सिक० स्था० अगाँ० हा०

।भीतर । शेष क्षेत्रों में

बाहर । बाहर । दा० सिक० सु०

।भार । पु० शहर, दा० शि०

।बाहर- बाहिर। शेष क्षेत्रों में ।

पास । धारे । अगाँ०

।ढिंगा-ढिंग। हा० पु० शहर सु०, अनप० तथा गंगा नगर भी

।फारे । सु० अनप० बब० वडा०

।पास। दा० तिलन्दा०, स्था० कुलन्दशहर तथा शेष क्षेत्रों में भी शिद्धित वर्ग  
में प्रयुक्त होता है ।

इर । इरि । सु० अनप० बब० विस० आँव० सम० बिला० मिमक, बहे० पाली० आदिम

।इर । ेण क्षेत्रों में

६- ६. १. ३ समय वाचक क्रिया - विशेषण-

इस वर्ग के क्रिया विशेषणों में से अब जब, तब, कब अर्थात् बोधक क्रिया विशेषणों का निर्माण समय (काल) सूचक मूल प्रतिपादिक ।ब। में भिन्नार्थक उपसर्गों के जुड़ने से होता है। इनमें आज कल परसों तरसों (नरसों), अब, तब, जब, कब, आदि में --

पश्चिमी क्षेत्र में शौड़कर को बहुत बड़ा अन्तर नहीं मिलता । दादरी, सिकन्दराबाद, हापुड़, स्याना, अगाँत, आदि में रूप बदल जाते हैं । जैसे दादरी, सिकन्दराबाद, स्याना, हापुड़ आदि में - जब रू, कब कू, जब जद तथा फिर फेड़ फेर और भहले फेले आदि में परिवर्तित हो जाते हैं कभी कभी, भी का बी हो जाता है ।

१- कभी का कदा रूप केवल दादरी, सिकन्दराबाद, स्याना, हापुड़ आदि तक ही सीमित है । परन्तु जेला भी बी हा बोला जाती है । मई का नहीं गया ।

२- चम्पल, किलारा मिर्ज़ा (रामपुर) में मुसलमान व्यक्ति कभी का कभी ही उच्चारण करते हैं ।

३- बु० शहर, सुबाँ अमरशहर बबराला, गिन्नौर, किराँला, बाँकला, बहेडी तथा पालाभीत में कभी शिक्षित वर्ग तथा कबऊ नार्मीण जनता में अधिकृत होता है । हाँ के आधार पर मानचित्र निर्मित किया गया है ।

परिमाणवाचक अव्यय --

परिमाणवाचक स्वरित सन्तान्त्रीय विशेषणों का प्रयोग परिमाणवाचक विशेषणों का भाँति भी होता है ।

बहुत । बहुत । बु० शहर, अम० किला० मिलिक

६. ६.१४

धणा - धना! दा० सिकन्द० स्या० अगाँ० हा०

भाँति। शेष क्षेत्र में तथा ऊपर के क्षेत्रों में भी विशेषतः ग्रामीण क्षेत्रों में मिलता है ।

सब । सब । अमरशहर क्षेत्रों में

थोड़ा । थोड़ा । बु० शहर अम० किला० मिलिक

। थोड़ा । बु० शि० अम०

थोरो- थोड़ी । गिनार, किला, बंदो० आव० पोली०

।थोड़ा। दा० मि० स्या० हा० आ०

कुल । कुल कुल । कुल (दा० निक०) स्या० आ० सम० किला० मिलक०

।क। शेष क्षेत्र में ~~मिलक~~

सब । सब । समस्त क्षेत्र में

।सग। बु० डिवा०

और। अर- होर। दा० निक०

।और। शेष सभी क्षेत्रों में

कम । कम । समस्त क्षेत्र में

कुल । कुल । दा० निक० स्या० आ० हा०

।मगला - मगला।

।मगला - मगला।

।म - मगले- मगले- पारे । समस्त क्षेत्र में केवल बु० शहर को छोड़कर

। मगरे, मग

।समाम। बु० शहर

तनक । तनक। दा० निक० स्या० आ० हा० बुजा

।जरा। बु० शहर सम० किला० मिमिक

।तनक। शेष क्षेत्र में

ज्यादा। ज्यादा। बु०

।जादा। शेष समस्त क्षेत्र

। जादे।

### ६. ६. १. ५ रीतिवाचक अव्यय

जब क्रिया विशेषण की रूप तालिका में उर्दूनामीय विशेषण आते हैं तो रीतिवाचक अर्थ की अभिव्यक्ति करते हैं। उनका विशेषण T के अन्तर्गत हो चुका है। उर्दूनामीय विशेषणों के अतिरिक्त धीरे अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए दादरी, किन्दराबाद, खाना, आँता, हापुड़, चम्पल, किलारी मिलिक में। धारे। तथा अन्य केन्द्रों में। धीमे। या धामें। और तेज अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए। तेज। सर्वत्र प्रयुक्त होता है।

### ६- ६. १. ६ सादृश्य या समानवाचक अव्यय

इसके अन्तर्गत सादृश्यता अर्थ धोतन हेतु सा समान शब्दों का प्रयोग लगभग सभी क्षेत्रों में होता है। मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में बराबर तथा ग्रामीण क्षेत्रों में बरबरा बराबर शब्दों का प्रयोग होता है। बनिस्वत शब्द भी मुस्लिम क्षेत्रों होता है।

‘वो कऊँ वाकी बरबरा है जाहंगी मला।

‘अरे भैया। उस रमजानो की बनिस्वत तो वो सगा चच्ची की लाँडो करीमन ई अच्छी है।’

### ६. ६. १. ७ कारण वाचक क्रिया विशेषण :-

इसमें में बाँरे वजह से शब्दों का प्रयोग होता है। कर, से पर से भी अभिव्यक्ति हो सकती है।

हो गन्ने खाकर ही तो बामार पड़ गया है

(बामार पड़ने का कारण गन्ने खाना है)

गु तेज बुलार में खुब बड़बड़ाइ रओ रे।

इस प्रकार सभी क्षेत्रों में इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग होता रहता है।

## ६६. १. = बल बोधक अव्यय

किया जात पर बल देने के लिए । ई हा । का प्रयोग किया जाता है । इसका अर्थ - ठीक, वही आदि होता है यह वही उदाहरण है पुराने वाला वही तो है जो रोज चार्ज उठाता है ।

### ६. ६२ समुच्चय बोधक :-

कुछ अव्यय शब्दों, उपबन्धों, उपात्तियों और नाम्यों का जोड़ते हैं वे समुच्चय बोधक कहलाते हैं ।

अर्थ के आधार पर इसको चार उपवर्गों में विभक्त किया जा सकता है ।

६. ६२. १ संयोजक - बोधक :- । और । केवल दादरा और त्रिकुटराबाद में गजरा के खाने (जर होर जर और) को जोड़कर सभी दोत्रों में प्रयोग होता है ।

६६. २. २ प्रतिरोध बोधक :- । लेकिन तथा । मगर । ये भी सभी दोत्रों में व्यवहृत होते हैं । उदा० अगर थोड़ा कुं कुड़ा द, मगर फुद तो जागा लेकिन टांग टट जायगा ।

६६. २. ३ आश्रय बोधक । कि । के । । क इनका समस्त दोत्रों में व्यवहृत होता है ।

६. ६. २. ४ विभाजक बोधक :- पद ग्रामिक दृष्टि से जानेन्तर वागिक रूप है । इनमें कुछ सौतेला क्रम रूप में और कुछ सुनर्धित रूप में है ।

संज्ञित क्रम रूप :-

जा - तो

देने - जेने

### पुनर्घटित क्रमः:-

चाहे - चाहे

न - न

का - का

या - या

### ६. ६. ५ निषेधात्मक :-

निषेधात्मक क्रिया विशेषण । ना, नाई, नई । क्रिया से यह ले आकर निषेधात्मक अर्थ प्रोत्तित करते हैं । जैसे :-

ना मई । मम्मे तो तेरी किताब रुई डा ना, साम्राह ज्युं तु राइ मोल लेता फिर ।

मत । का मा प्रयोग मिलता है - जैसे - बाके सेत में पानी लगाइवे कूं तु तो जइयो मत । लगभग सभी जोरों में मत का प्रयोग मिलता है ।

### ६. ६. ५ स्वकार बोधक:-

स्वकार की स्थिति में ।हां । शब्द का प्रचलन लगभग हमारे समस्त विवेच्य जोत्र में होता है । इसके साथ साथ हम्मे । का प्रयोग भी समस्त जोत्र में परिव्याप्त है । जैसे - तु कल्लि बर्य - कर्ध लेवें कू बैलान का पँठ में गयो ओ क्कु ऐसी हं मालिक सी मई मोइ ज्हां ।

हम्मे माई । नयो तो ओ सरि बर्य तो मिलेई न फिर ज्हां का करता ।

६. ६. ३. विमयादि बोधक:- । हं, ओहो, वाह, शाबान, दुहाई, हाय, जी, अच्छा । का व्यवहार लगभग सभी जोरों में होता है ।

प्रश्नवाचक : क्या । का प्रयोग पंजाब के साथ होने पर इसे विभाजक बना देता है जैसे - माहँ रोटी रोटी ई, क्या छोटी क्या मोटी ?  
 अनुधारणात्मक सम्बन्ध वाचक अव्यय । तो । यथा -

तुम नहीं गए तो मुझे जाना पड़ा ।

घृणा तथा विरक्ति व्यंजक विस्मयादिवोधक अव्यय -

कि, कीं कां, थू थू दूर - दूर, राम- राम् आदि आते हैं । और इनका प्रयोग लगभग समस्त क्षेत्र में होता है ।

अनुसार सूचक अव्यय - इन शब्दों का प्रयोग अकेले या अन्य किसी क्रिया के साथ होता है - कांव कांप, बड़ बड़, थय थय, ध्य ध्य आदि ।

अध्याय :७:  
-----

वाक्य-रचना  
~~~~~


७.०० वाक्य रचना

७.००

भाषा की ईकाई ही वाक्य है। यह इकाई अल्पतम रूप में शब्द मात्र भी हो सकती है जो एक स्वन-युक्त हो, जैसे वा । भाषा प्रवाह में स्वन यदि लघुतम इकाई है तो वाक्य दीर्घतम । वाक्य की वीर से चलें तो दूसरा स्थान उक्त्वाक्य वीर फिर पद बन्ध है। लघुतम इकाई स्वनिम से वाक्य की वीर चल सकते हैं। वस्तुतः भाषा एक अविच्छिन्न प्रवाह है और इस प्रवाह में ही विराम के स्थानों पर हम लिखित रूप में विराम चिह्नों का प्रयोग करते हैं। एक निश्चित सुर- लहर के साथ वाक्य बोला जाता है, उचित सुर- लहर विहीन वाक्य ठीक उच्चरित हुए भी अटपटा लगता है।

७.१ पद-क्रम तथा पद - अन्विति-

जिस प्रकार पद में "स्वनिम" तथा "रूपिम" का सुनिश्चित क्रम रहता है उसी प्रकार वाक्य संघटन में भी पदों का पूर्वापर क्रम निश्चित रहता है। व्यर्थपरक बलाघात के कारण पद-क्रम बदल भी सकता है।

(हम) सबेरीं होत ई उनके ढीरूं गए । कै । बरात में चली ।

। ई । (ही) यहां बलात्क निपात है जो बल चाहने वाले रूप (पद) या पदों के ठीक बाद प्रयुक्त किया जाता है।

पद- वन्धति-

लिंग- वचन- वन्धति-

भरी बड़ड़ी

भर बड़ड़े

भरी बड़ड़ी

७. २. पद- वन्ध (फ़्रज़)

७. २. १ संज्ञा पद-वन्ध

संज्ञा का विस्तार करने वाले ही पद (संज्ञा पद वन्ध) कहलाते हैं, वस्तुतः यह विशेषण वाक्यार्थ ही करता है, यही कारण है हमने विशेषण के साथ ही इसका विवेचन किया है :

वामीन के बोझ से नबी भई डार भस्ता चाँ न गिरतो ?

गु तो सिलैटी रंग की लहर की कुर्पा पहने मवी वो ।

(उदा०) तेल पिवाई भई लठिया निकारी
उनन्ने

७. २. २ क्रिया पद बंध

क्रिया पद बंध में दो या दो अधिक क्रियाएँ समाहित रहती हैं ।
जिनमें प्रथम क्रिया तो प्रधान मुख्य क्रिया होती है और द्वितीय गाँण मुख्य क्रिया या सहायक क्रिया होती है। तीन क्रियाओं से निर्मित ऐसी भी संयुक्त क्रियाएँ होती हैं, जिनमें प्रथम क्रिया प्रधान मुख्य, दूसरी क्रिया गाँण मुख्य तथा तीसरी सहायक क्रिया के रूप में आती है । कभी- कभी बोलियों में चार- चार क्रियाएँ भी प्रयोग में आ जाते हैं तब ऐसी स्थिति में सहायक क्रिया भी संख्या तो बढ़ती नहीं है और अन्तर्वेदी क्रियाओं में ही प्रधान मुख्य, तथा प्रधान गाँण आदि के रूप में प्रयुक्त होती है प्रधान मुख्य क्रिया से इतर गाँण मुख्य क्रिया अनेक हो सकती है ।

१- प्रधान मुख्य क्रिया प्रायः कृदन्त, संज्ञा का विशेषण के रूप में आती है और काल-स चक के रूप में सहायक क्रिया आया करती है। कभी- कभी जब सहायक क्रिया नहीं होती है तो ऐसी स्थिति में जो गाँण मुख्य क्रिया होती है वही काल- सचक अभिव्यक्ति देती है जैसे-

गु उठि कै चलो ।

गु उठिकँ चलो गजो

गु उठिकँ चलो गजो ऐ ।

चलो प्रथम वाक्य की सकाकी क्रिया है, लेकिन दूसरे और तीसरे वाक्यों क्रियाएँ संयुक्त हैं । उठि कै चलो और उठि कै चलो गजो तथा उठि कै चलो गजो ऐ, तीनों में पर्याप्त काल- सूचक अन्तर आ गया है। इनमें चलना प्रधान मुख्य क्रिया है । गजो और गजो ऐ इसी से सम्बन्ध हैं। अतः क्रिया पद बंध में प्रधान मुख्य क्रिया का अर्थ ही शासन करता है ।

२- क्रिया पद बंधों के अर्थ के आन्तरिक पदा को बिना समझे क्रिया पद बंध और
एकाकी क्रिया में अन्तर समझ पाना कठिन सा है । जैसे-

परनिष्ठित हिन्दी

बोली

मुंह जोड़ने को तो होगया

म्हां जोन्न को तो है गजो(बिसौली)बंदायू

वह तुम्हारे घर पर होगया

जो तुम्हारे घर पे तो हंगजो(बिसौली)

प्रथम वाक्य की क्रिया होगया (हंगजो) वास्तव में क्रिया पदबंध है,
कार्यक होना क्रिया ही अर्थ की दृष्टि से प्रधान है। गया तो कुछ अपनी छवि करते हुए
केवल मृतकाल की ओर संकेत कर रही है । यदि मूल अर्थ की दृष्टि से देखा जाय तो
हुआ या होगया में को अन्तर नहीं दृष्टि गोचर होता । हो गया क्रिया की गया क्रिया
ने अपनी निजी अर्थ त्याग दिया है। वह मुंह जोड़ कर गया इस प्रकार के अर्थ की
अभिव्यक्ति नहीं हो रही है। इसीलिए होगया या है गजो क्रिया पद बंध है ।

दूसरे वाक्य में वह तुम्हारे घर होगया इसका अभिप्राय है कि वह घर
पर होगया होकर चला गया । इसमें होना और जाना दोनों क्रियाएँ पृथक्-पृथक् हैं ।
हो होकर क्रिया का हो संज्ञित रूप है जो क्रिया गया की विशेषता प्रकट कर रही
है तथा विशेषण का भी काम कर रही है ।

३- क्रिया संश्लिष्टावस्था में भी आ सकती है जैसे- लाया इसमें होना आना नामक
क्रियाएँ संश्लिष्ट हैं । लाया का अर्थ है - लेकर आया

हिन्दी की शैलीय बोलियों में क्रिया पदबंधों का अधिकता से प्रयोग
होता है। ये क्रिया पद बंध ही मुहावरों के रूप में बन जाते हैं जैसे- कपूर गुजरना,
गुल दिलना आदि ।

क्रिया पद बंधों को, जो दो क्रियाओं द्वारा निर्मित किए जाते हैं, कृदन्तानुसार उन्हें पांच भागों में विभाजित किया जा सकता है ।

- १- वर्तमान कालिक कृदन्त
- २- भूत कालिक कृदन्त
- ३- पूर्व कालिक कृदन्त
- ४- अपूर्ण क्रिया- धातक कृदन्त
- ५- पूर्ण क्रिया धातक कृदन्त

१- प्रधान मुख्य क्रिया वर्तमान कालिक कृदन्त रूप में एक सहायक क्रिया

१-१- वर्तमान कालिक कृदन्त । कल वर्तमान काल में

	एकवचन	बहुवचन	लिंग	दोत्र
उत्तम पु०	मैं चल हं	हम चलें हैं	हैं पु०	दा० सिकड़ा०
„	„	„	„ (स्त्री)	स्या० बु० शहर
मध्य पु०	तू चलें हं ऐ	तुम चलो हों	(पु०)	„
„	„	„	(स्त्री)	„
अन्य पु०	ऊ चलें है	ओ चलें है	पु०	„
„	„	„	(स्त्री०)	„

पूर्वी दोत्र । बंदायूं, विसाईदी। गिन्नार) बरेली (आंवला, बहेड़ा) पीलीभीत
का पूर्वांचल, मुरादाबाद (चंदासी)

१-१- वर्तमान कालिक कृदन्त । कलनो वर्तमान काल में

पुरुष	एकवचन	बहु व०	लिंग
उ० पु०	मैं चलत ऊं	हम चलत हैं	पि०)
	मैं चलित ऊं	हम चलित हैं	(स्त्री०)

म० पु०	त चलत्वे	तुम चलत ओ (पु०)
११	तू चलित्ये	तुम चलित ओ (स्त्री०)
ब० पु०	जु चलत्वे	जे चलत ऐं (पु०)
	जि चलित्ये	जे चलित ऐं (स्त्री०)

उत्तर पूर्वी क्षेत्र- (मुरादाबाद (सम्मल, विलारी) रामपुर (मिलिक तहसील)

पुरुष	एकवचन	बहुवचन	लिंग
उ० पु०	मैं चलता हूं	हम चलते हैं	पु०
११	मैं चलती हूं	हम चलें हैं	स्त्री०
मध्य पु०	त चलता है	तुम चलते हो	पु०
११	त चलती है	तुम चलो हो	(स्त्री०)
अन्य पु०	बु चलता है	बो चलते हैं	(पु०)
	बु चलती है	बो चलती है	(स्त्री०)

१-२- वर्तमान कालिक कृदन्त । चलना (भूतकाल में) पश्चिमी क्षेत्र

ब० पु०	मैं चलै हा हो,	हम चलै हे	पु०
	मैं चलै ही ह	हम चलै हां ह	स्त्री०
म० पु०	तू चलै हो	तुम चलै हे	पु०
	तू चलै ही	तुम चलै ही	स्त्री०
	ऊ चलै हो	ओ चलै हें	पु०
	ऊ चलै ही	ओ चलै हां	स्त्री०

इस क्षेत्र की मुख्य क्रिया लिंग- वचन के अनुसार नहीं बदलती हैं वरन् एक सी रहती हैं ।

पूर्वी क्षेत्र

	एक व०	बहु० व०	लि०
उ० पु०	मं चलत ओ	हम चलत ऐ	पु०
	मैं चलति हँ	हम चलति ऐं	स्त्री०
म० पु०	तु चलत ओ	तुम चलत ए	पु०
	तू चलति हँ	तुम चलत ऐं	स्त्री०
अन्य पु०	जे-जु चलत ओ	जे चलत ए	पु०
	जि चलति हँ	जे चलत ऐं	स्त्री

उत्तर पूर्वी क्षेत्र - इस क्षेत्र में ओर पश्चिमी क्षेत्र कोई विशेष परिवर्तन नहीं है पश्चिमी क्षेत्र का चल हा- यहां आकर चलता हा हो जाता है ।

२- वर्तमान कालिक कृदन्त । (भविष्यत काल में)

इसके अन्तर्गत तीनों क्षेत्रों की भविष्य कालीन क्रिया में कोई अन्तर नहीं होता है परन्तु प्रधान क्रिया में उकारान्त, आकारान्त ओकारान्त में अन्तर आता है ।

१- मैं देखता रहूँगा पश्चिमी क्षेत्र
मैं देखती रहूँगी

२- मैं देखत रहूँगा पूर्वी क्षेत्र
मैं देखत रहूँगी

३- मैं देखता रहूँगा उत्तर- पूर्वी क्षेत्र
मैं देखती रहूँगी

२-२ वर्तमान कालिक कृदन्त । रहना (भूत काल में) तीनों दोंनों का एक-एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है ।

मैं देखता रहा - रह्या

तू देखता रह्या

पश्चिमी दोंन

ऊ देखता रह्या

मैं देखतु रजा

तू देखतु रजा

पूर्वी दोंन

गु जा, देखतु रजा

मैं देखता रहा रह्या रिजा

तू देखता रहा रह्या रिजा

उत्तर- पूर्वी दोंन

बु देखता रहा रह्या रिजा

२-३ वर्तमान कालिक कृदन्त रहना (वर्तमान काल में)

मैं देखता रहं

तू देखता रहं

पश्चिमी दोंन

ऊ देखता रहं

मैं देखता रहूं

तू देखता रहें

उत्तर- पूर्वी

बु देखता रहें

मैं देखतु रहत ऊं

तू देखतु रहत्वें

पूर्वी दोंन

जा देखतु रहत्वें

प्रधान मुख्य क्रिया का भूत कालिक कृदन्त गाँण मुख्य क्रिया एक सहायक क्रिया

मैं चल्या गया हो

हम चले गए है

पश्चिमी द्रोत्र

तू चल्या गया हा

ऊ चल्या गया हा

मैं चला गया ओ

तू चला गया ओ

पूर्वी द्रोत्र

तू चला गया ओ

जो चला गया ओ

मैं चला गा हा

तू चला गा हा

उत्तर पूर्वी द्रोत्र

जु चला गा हा

पश्चिमी द्रोत्र में पर्व कालिक क्रिया का 1-3। प्रत्यय नहीं मिलता है चलि का कल मुलि का भूल आदि ।

३- सामान्य क्रिया रूप में प्रधान मुख्य क्रिया । गाँण मुख्य क्रिया । सहायक क्रिया

मैं चलना चाऊ हूं

तू चलना चार हं

पश्चिमी द्रोत्र

ऊ चलना चार है

मैं चलना चाहत ऊं

तू चलना चाहत ऐ

पूर्वी द्रोत्र

जो जु चलना चाहत ए ।

मैं चलना चाहूँ हूँ

तू चलना चाह है

बु चलना चाह है

उत्तर पूर्वी क्षेत्र

४- प्रधान मुख्य क्रिया पूर्ण क्रिया- चोतक कृदन्त के रूप में । गाँण मुख्य क्रिया ।
सहायक क्रिया

मैं विसं गहे सड़ा ऊँ

तू विसं गहे सड़ा ऐ

ऊँ उसे गहे सड़ा ऐ

पश्चिमी क्षेत्र

मैं उसे गहे सड़ा ऊँ हूँ

तू उसे गहे सड़ा है

बु उसे गहे सड़ा है ऐ

उत्तर - पूर्वी क्षेत्र

मैं वाइ गहे सड़ा ऊँ

तू वाइ गहे सड़ा ऐ

जा वाइ गहे सड़ा ए

पूर्वी क्षेत्र

पूर्वी क्षेत्र में जहाँ पूर्ण क्रिया चोतक कृदन्त के रूप में अनुनासिकता पाई जाती है वहाँ पश्चिमी क्षेत्र दादरी, सिकन्दराबाद, स्याना, आदि में नहीं पाई जाती है जैसे- गहे - गहे ।

५- अपूर्ण क्रिया चोतक कृदन्त के रूप में प्रधान मुख्य क्रिया । गाँण मुख्य क्रिया ।

कर्म वाच्य क्रियाएँ :-

पूर्वी दोत्र

पु० स्क० व० कर्म- वासुं कामु करत नाइ बने
 बहु० कर्म- वासुं काम करत नाइ बने
 स्त्री० ए० कर्म- वासुं कामु करत नाइ बने
 बहु० कर्म- वासुं काम करत नाइ बने

पश्चिमी दोत्र

पु० स्क० व० कर्म- उस्ये कामु करत नाइ बने
 बहु० व० कर्म- उस्ये काम करत नाइ बने
 स्त्री० स्क० व० कर्म- उस्ये कामु करत नाइ बने
 बहु० कर्म- उस्ये काम करत नाइ बने

उपर्युक्त दोत्रों का संयुक्त क्रियाजने में - बने, बने तिङन्त रूपिणी क्रियाएँ हैं। इन पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता अपितु वक्तव्यों के अनुसार रूप परिवर्तित रहता है ।

६- संज्ञा । क्रिया

मैं खाना खायाँ करन

तु खाना खाओ करि

गु खाना खाओ करै ।

७- विशेषण । क्रिया पद बंध

आपके आराम करने का समय समाप्त हो चुका

मेरे बाहर जाने के उत्साह पर पानी पड़ गया ।

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित विशेषण पद बंधों में उनके समग्र रूप को देखने से ही विशेषण की विशेषता का पता लगता है खंड- खंड करके नहीं लगता ।

तीन क्रियाओं का संयोग- प्रधान मुख्य क्रिया
गौण मुख्य क्रिया । गौण मुख्य क्रिया ।

एक० व० मैं कस्सी तेई मार डार सकत ऊं

बहु० व० हम कस्सी तेई मार डार सकत हैं

तू कस्सी तेई मार डार सकतु ऐ

पूर्वीं क्षेत्र

तुम कस्सी तेई मार डार सकत ओ

गु जी कस्सी तेई मार डार सकतु ऐ

ग्वे कस्सी तेई मार डार सकत हैं

पुल्लिंग में कस्सी तेई मार डाल सकूं

स्त्री० लि० मैं कस्सी तेई मार डाल सकूं

पश्चिमी क्षेत्र

पु० लि० तू कस्सी तेई मार डाल सकै

स्त्री० लि० तू कस्सी तेई मार डाल सकै

पु० लि० ऊ कस्सी तेई मार डाल सकै

स्त्री० ऊ कस्सी तेई मार डाल सकै

पश्चिमी क्षेत्र में क्रिया पद बन्धों का कर्ता के लिंग के अनुसार रूप नहीं बदलता ।

२- स्वनिमात्मक ही क्रियाओं का संयोग

करा - धरा,

ढेड़ा - झाड़ा

देखा - माला

पीजा - पावा

भगते- भुगतारें (हम तो भैया भुगतें भुगारें परे हैं)

१- क्रिया पद बंध संघटन में अधिक से अधिक पांच क्रियार्थक तत्त्व हो सका है जो एक विशेष क्रम में विशेष स्थानों पर आते हैं ।

रचना की दृष्टि क्रिया शब्द के पांच रूप होते हैं ।

धातु (खा) क्रियार्थक (ाना) पूर्ण (खाया) अपूर्ण(खाता) भविष्य (खाएगा)

२- क्रिया पद बंध संघटन :-

१	२	३	४	५
शब्द कोशीय	रजक	वाच्य सचक	सक-वर्ग	ह- वर्ग
(को)	(र)	(वा)	(स)	(ह)

३- इन पांच तत्वों के अतिरिक्त दो और तत्व हैं । सकते हैं जो साधारणतः स्थान मुक्त होते हैं । ये दो तत्व हैं :-)१) निषेधक (न, नहीं मत)

(२) अवधारक(अर, मात्र, ही, तो, भी तक)

एक दो उदाहरणों से स्पष्ट किया जा सकता है जैसे- ही:-

साधारणतः १-२, ३, ५, के बाद आ सकती है एक के बाद खा ही लिया जा सकता है, २ के बाद - खा लिया ही ३- के बाद, खा लिया जा ही, (५- के बाद खा लिया जा सकता है ही ।

दूसरा उदाहरण - नहीं :- १-३, के पहले आता है । अन्यत्र नहीं है जैसे

नहीं खा लिया -----, ३ के बाद पह के - खा लिया नहीं -----।

कोशीय क्रिया (प्रथम स्थान) इस स्थान पर कोई भी क्रिया आ सकती

है ।

२- रजक (द्वितीय स्थान) इस स्थान पर :- लेना, देना, जाना, पढ़ना, लगना, डालना, पहुँचना, टक्कना, देखना, पड़ना, बैठना, दिवाना, लाना, उठना, गुजरना मरना, पाना, डूबना, रखना, चलना, करना, जलना, मिलना, बनना आदि ।

इनने मुहावरों का निर्माण होता है । जैसे कर गुजरना ,
ले डूबना, आ मरना आदि ।

३- वाच्य सूचक (तृतीय स्थान) इस स्थान में जाना क्रिया का प्रयोग होता है ।
हिन्दी में जाना क्रिया के दो प्रकार होते हैं जाना-१- जाना २- वाच्य सूचक जाना
के ठीक पहले आने वाली क्रिया हमेशा अपने पूर्ण वृद्धन्तीय रूप में होती है जैसे- खाया
जाता है । जाना (वाच्य सूचक) का पूर्ण रूप गया ही होता है। सामान्य जाना के
दो रूप होते हैं - जाना और गया, किन्तु वाच्य सूचक जाना के पहले आने वाली जाना
क्रिया का पूर्ण रूप जाया ही होता है। जैसे जाया जाता है ।

४- सक- वर्ग (चौथा स्थान) सकता, सका, चुकता, चुका, रहा, चाहिए, ये क्रियाएँ
चौथे स्थान पर आती हैं । सकना और चुकना बद्ध क्रियाएँ हैं और ये कोशीय क्रिया
के स्थान पर काम नहीं नहीं कर सकतीं । अन्य सभी क्रियाएँ कोशीय क्रिया के स्थान
पर कार्य कर सकती हैं ।

७. २. ३ अव्यय पद बन्ध-

कभी कभी एक अव्यय शब्द द्वारा भाव अनेक शब्दों द्वारा प्रकट किये जाते हैं- जैसे

राम । ऊपर । है ।

राम । छत के ऊपर । है ।

राम । मकान की छत के ऊपर । है ।

राम । सामने वाली मकान की छत के ऊपर । है ।

ऊपर स्थानवाचक अव्यय है तो उसके स्थान पर प्रयुक्त सारी शब्दावली भी अव्यय ही स्वीकार करनी होगी जिसकी हम अव्यय पद- बन्ध कह सकते हैं।

७. ४ वाक्यों में रागात्मक तत्त्व

वाक्यान्तर्गत रागात्मक तत्त्व का अत्यधिक महत्व है। सुर- लहर के माध्यम से वाक्यों में लाघाणिक व्यंजनों का समा-वेश उत्पन्न किया जा सकता है। स्वर, लहर, बलाघात द्वारा ही यत्किंचित रूप से अंकित किया जा सकता है। वाक्य के साधारण कथन को स्पष्ट करने वाला सुर लहर अवरोही होता है यथा-

इब तू कदी बी इधे कू ना आवेगा = कभी भी इधर की
नहीं आवेगा ।

अब तू ताता पानी लख्यो = ताता पानी लाना

लेकिन प्रश्न का संकेत स्पष्ट करने वाला संकेत अवरोह अवरोह से विलुप्त भिन्न है :

तू छतारी की पैठ कू चलेगी ?

नई माई = नहीं (साधारण कथन)

तू छतारी की पैठ कू चलेगा ?

नई = क्या नहीं चलेगा ?

कभी कभी ऐसे भी वाक्य होते हैं जिनमें प्रश्न की अपेक्षा आश्चर्य की प्रभावता दिखाई देती है। यहां सुर- लहर विलम्बित कह सकते हैं जैसे-
हाय देया । अब कैसे होइगी ?

कभी- कभी प्रश्न सूचक शब्द होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से वाक्य सामान्य ही रह जाता है । विलम्बित स्वर लहर यहां भी मान सकते हैं।

जब ती ते बीस कहा कहें ।
 --- --- - --- --- ---

वाक्यों का बलाघात युक्त प्रयोग भी किया जाता है।

जैसे-

मैं आज गांव जाऊं = क्या मैं गांव जाऊं ?

मैं आज गांव जाऊं = क्या मैं आज गांव जाऊं ?

मैं आज गांव जाऊं = क्या मैं आज गांव जाऊं ।

उपर्युक्त वाक्यों में जाऊं, गांव तथा मैं (स्वयं) की गांव जाने की क्षमति मांगी गई है। इस प्रश्न में क्षमति का अवसर भाव समाहित है। इस प्रकार सूर लहर के आधार पर सामान्य, प्रश्न सूचक और विस्मय सूचक आदि वाक्यों का गठन किया जाता है।

७. ३. लोकोक्तियाँ

लोकोक्तियाँ का जनजीवन में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। नित्यप्रति के जीवन में उत्साह व स्फूर्ति प्रदान करनेवाली ये लोकोक्तियाँ, कदाचित् स्व मुँहारे निश्चय ही महान योग प्रदान कर हमें प्रेरणा भी देते हैं। सभी बोलियाँ में लोकोक्तियाँ पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं।

विवेच्य क्षेत्र में जो पश्चिम से पूर्व लगभग २७५ मील तक फैला है और २०-२५ मील चौड़ा है, उसमें नाना प्रकार की लोकोक्तियाँ प्रचलित हैं। हम पर पुस्तक से भी कार्य हो सकता है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत फैले हुए मुँहारे व लोकोक्तियाँ का संकलन निश्चय ही महत्वपूर्ण कार्य हो यह मुस्लिम बहुत क्षेत्र होने के कारण उर्दू, फारसी और अरबी से मिश्रित लोकोक्तियाँ का प्रचलन भी अधिक पाया जाता है। मैंने कुछ लोकोक्तियाँ का संकलन किया है। उदाहरणस्वरूप निम्नांकित हैं-

१. चिराग बची करना।
२. चिराग से चिराग जलाना।
३. कलनी में डाल शाय है उड़ाना।
४. शाय सी दाढ़ी।
५. भण्डाफोड़ करना।
६. ये पैदी का छोटा।
७. फूट कर कुप्पा होना।
८. चोली दामन का साथ होना।
९. मुँठ नारना।
१०. फाड़ फूँक करना।

११. राई नोन उतारना ।
१२. पीठ दिखाना ।
१३. कमर कसना ।
१४. जौल दिखाना ।
१५. कचूमर निकालना ।
१६. बाड़े हाथ लेना ।
१७. ये मुँहें जोर मसूढ़ की दाह ।
१८. वणो मुँह मियां मिट्टू बनना ।
१९. नाक रगड़ना ।
२०. नाक कटना ।
२१. सुर में सुर मिलाना ।
२२. हाथी पर मुंग दलना ।
२३. सड़ी से चोटी एक करना ।
२४. सड़ियां रगड़ना ।
२५. पाँव पड़ना ।
२७. दाँत निपोरना ।
२८. मुँहों पर ताव देना ।
२९. बैठे-बैठे कबखी मारना ।
३०. कलेजा मुँह को जाना ।
३१. पेट में पाँव होना ।
३२. जंघे को जोरू होना ।
३३. ज्वार का घड़ा होना ।
३४. जटकल पञ्चू लगाना ।
३५. मैस के आगे बीन बजाना ।

विवेच्य दोत्र मै प्रयुक्त कहावतें

कहावतें

१. अँडुआ को लटूठ ।
२. अँधी में काना राजा ।
३. अँधी तेरी भैया आर्या है ।
४. अँधे की खोंपो ।
५. अँधा बाँटे रेवड़ी फिर फिर अपनेनु देय ।
६. अँधेर नगरो चोपट राजा ।
टका सेर माजो, टका सेर खाजा ।
७. अँसुआ न फँसुआ, मैस के से नथुआ ।
८. अकल के पोहे लटूठ लिख फिरे ।
९. अकलि पे पत्थर पड़िगे हैं ।
१०. अकल बढ़ा के मैस ।
११. अकल से खुदा पहचाना जाता है ।
१२. धारे वंजु उलाहते खेतो ।
१३. अकेला बना क्या भाड़ फोड़े ।
१४. अगहन हँडिया रंघेन ।
१५. अकड़ो की हँडिया फूटो तो फूटो
कुत्ता की जाति पहचानो ।
१६. अड़गयो पांसी (अड़ो की, पांसी)
१७. अड़ुआ (सड़ुआ) नाती,
पड़ुआ खेत ।

अर्थ

- बेतुका काम करना ।
मूर्खों में से एक कुछ चतुर ।
मूर्ख को हर बात का प्रमाण दी ।
बेअंदाज का काम ।
हेर फेर कर अपने लोगों को
लाम पहुँचाना ।
पूर्ण अव्यवस्था होना ।
व्यर्थ में खटना और नाक फूलाना ।
बुद्धि को तिलांजलि देना ।
अकल मारी गई ।
शक्ति से बुद्धि का बढ़ा होना ।
बुद्धि से ईश्वर को पहचानना ।
व्यापार में धैर्य और खेतों में फुर्ती ।
अकेला आदमी कुछ नहीं कर सकता ।
दिन शीघ्र समाप्त हो जाना ।
हानि तो हुई पर असलियत जानी ।
कठिन काम पढ़ना ।
साहू का नाता और पड़ुआ का
खेत । जहाँ पानी नहीं पहुँचता ।
बैभरोसे के होते हैं ।

१८. अति को फूलों सँजनी डार
पात से जाय ।
अति करनेवाला नाश को प्राप्त
होता है ।
१९. अथजल गगरी विलसत जाय ।
वीक्षा बादमी इतराकर चलता है ।
विनय्यायी गाय से भी धी की बाशा ।
नया-नया शोक करनेवाला ।
२०. अनव्यानी को धीव बांधत ।
दानै-पानी की बात ।
अपना-अपना स्वाधी सिद्ध करना ।
२१. नई नाइन बांस को नहन्नन ।
अपना काम अपने परिश्रम से होता है ।
२२. अन्न जल की बात ।
अपनी वस्तु ही दोषपूर्ण होना ।
२३. अपनी-अपनी ठपली अपनी-
अपनी राग ।
अपना काम अपने आप ही ठाक होता है ।
२४. अपने ई मरे स्वर्ग दिखाई देत ।
आलस और नोंद किसान को नष्ट करते हैं ।
अपनी वस्तु ही दोषपूर्ण होना ।
चोर को खोसी नष्ट कर देती है ।
२५. अपनीई दाम खोटी तो परखिया
की का दोष ।
बेरागी की लोभ नहीं होना चाहिए ।
विधवा की हंसी नष्ट हो जाती है ।
२६. बापु काज, महाकाज ।
दूसरे के मरौसे बैठने से तो जोवित्त ही
मर जाना अच्छा है ।
२७. आलस-नोंद किसान को नष्ट करते हैं ।
चोर को खोसी नष्ट कर देती है ।
बेरागी की लोभ नहीं होना चाहिए ।
विधवा की हंसी नष्ट हो जाती है ।
२८. आस बिरानी जै करे,
सौ जीवत ही मर जाय ।
नकद नस देकर कानून मो निकालना ।
२९. उधार मांगे और देखे पासंग ।
समय पर अपना ही बादमी काम वाताँह ।
३०. अपनी से अपनी परायी सौ सपनी ।
अपने पुत्र को प्यार करना तथा दूसरे के
पुत्र को आवारा समझना ।
३१. अपनी पूत परायी ढटींगर ।
अपनी हठ पूरी करने के लिए अपनी की
ही हानि करना ।
३२. अपनी टैक भुंजाई ।
अपने ही हाथ काम पूरा होता है ।
३३. अपनी करना पार उतरनी ।

३४. आंखि देखि मन्सी नाह सार्ह आंखीं से देखकर ही विश्वास होता है ।
जाय ।
३५. अपनी हात, जगन्नाथ अपने हाथ का काम ही सर्वप्रथम
की मात । होता है ।
३६. और न कोई बैदित जो स्वयं आचरण न करके दूसरों की
बैगन बुरे बतायें । सीख देना ।
३७. अल्ला देह खाने कुं । मुष्क खाने के मिले तो कमाने कौन
तो कुतका जाय कमाने कुं । जाय ।
३८. बीसर बूकी डोमरो गावे गानेवाली जब पुर से बूक जाती है
सरग पताल । तो बेसुर होकर बेताल गाने लगती है ।
३९. बीड़, गड़रिया, नाऊ । आड़, गड़रिया और नाऊ अपना भेद
जि भेद न दिगै काऊ । किसी की भा नहीं बतलाते ।
४०. अमरोती साह के आयी । अमर होकर केई नहीं बाया ।
४१. आंख फूटी, पार गई । विपत्ति का कारण दूर है पर
विपत्ति भी दूर होजाता है ।
४२. आंखि देखि कुआं में गिरी । जानबूझकर हानि करना ।
४३. आंधो की आम, सस्ती वस्तु भी और लाभदायक भी ।
गुठली के दाम ।
४४. अबई तो बेटो बाप के हैं हैं । अभी कुछ नहीं बिगड़ा ।
४५. जाई लच्छमी मति ना करौ, जाई हुह सगाई की न लोटाओ, हर
मति कऊं क्वारौ रह जाय है कि कहीं फिर ऐसा संयोग न हो ।
बाबा जो ।

४६. बाईं बकू-कखसौ काम,
कई बकू-गयो काम ।
४७. बाईं बाईं, दे गई फाई ।
४८. आप मरे जा परलै होय ।
४९. जाते न जावे,
लामछा गाल बजावे ।
५०. जागि रोज ले गई ।
गर कण्ठा कबहुं न दे गई ।
५१. जाठौ गांठ कुम्भित ।
५२. जातुर सेता, जातुर भोजन ।
जातुर हरिये बेटा व्याह ।
५३. जोगन में नौका, और
परन्दन में नौका ।
५४. जाये गाँव दिवारा, और
जाये गाँव धार ।
५५. आप गह तो गर
मेरे हारामन कुंज ले गर ।
५६. आप नियां गते,
बार जड़े दरवेत ।
५७. जा बरव नौक हार ।
५८. आप ताने दे पेड़ गिनने ।
५९. जाय थे हरि भजन की
बोटन लौ कपास ।
६०. जासई जात, गिनारि गई
सास ।
- जितने बादमा लौ उतना हो काम
बढ़ जाता है ।
काम से जो बुराने के छिप्र प्रयोग होता है ।
नरने के बाद कुं मा होता रहे ।
क्यों की बात करना ।
अपनी स्वार्थ का ध्यान रखना ।
पहुत बालाक और चतुर व्योक्त ।
सेता, भोजन और लूका के व्याह
में शोभता करने चाहिर ।
गुरुधर्म नाई और पाशियाँ में नौका
पहुत बाताक लोते ।
कार्य में सहयोग न होना ।
स्वयं भा जाना और दूसरे को व तु
भा ले जाना ।
जो बुद्ध मांगता है, व दूसरे को
क्या देता ।
जानबूककर जासई बुजाना ।
अनने काम से मतलब ।
उद्देश्यपूर्ण कार्य न करके किता अन्य
कार्य में लग जाना ।
आरा में हो प्राण पले जाना ।

६१. आहारे व्याहीरे लज्जा मोहन और लेन देन में संकोच नहीं
न मारे । होना चाहिये ।
६२. इतने को फाँफि न बजो लाभ से हानि अधिक ।
उतने के मजोरा टूटि गए ।
६३. हमिलों के पचा पे पेटि के मोज करना ।
चाँट साउ ।
६४. उंगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना । गले पड़ जाना ।
६५. जोखरी में मुँह दयो तो जब काम कसा को हो तैयार होगए
चोटन ते काहर । तो फिर डर किसका ।
६६. उठो पैठ आठरूँ दिन लगति । अवसर हाथ से नहीं जाने देना चाहिए ।
६७. उपार देउ और बैरु लेउ । उपार देकर मांगने पर दुश्मनी मानना ।
६८. उल्टा चौर कोतवाल को डाँटे । चोरो और साना जोरी करना ।
६९. ऊँट की चोरी ठूँका ठूँक । बड़े काम चोरा क्षिपे नहीं होते ।
७०. ऊँट की नारि में बकरिया । बैमेल जोड़ निलाना ।
७१. एक हैं धेलिया के बट्टा बट्टा । सब एक से मिल जनना ।
७२. एक दिना महमान,
दूसरे दिन सहमान,
तीसरे दिना ह्वान ।
फिसो के यहाँ अधिक दिन
तक खातिर नहीं हो सकती ।
७३. एक नाक दो झोंक,
काम बनेगी ठोक ।
शुन ठोक है, काम हो जायगा ।
७४. एक पास दो गहना,
राजा वर के सेना ।
एक पदा में दो ग्रहण पड़े तो अशुभ
होता है ।
७५. एक प्याना में दो तलवार । एक वस्तु पर दो का अधिकार नहीं होता ।
७६. एक हर हत्या, दो हर पाप । सेती के सम्बन्ध में कहा गया है ।
तीन हर सेती, चोहर राज ।

७७. ऐरा केरा नल्लू ऐरा । जोई भी साधारण मनुष्य ।
 ७८. जोका मज्जा, वैय कितान । ये चारों विधाओं के कारण हैं ।
 वाहू पैल और सेत मसान ।
 ७९. बाबाद की बूझी कितान और ज्वार बूझने से नाश होजाता है ।
 छार की बूझी पंदरा ।
 ८०. छटा (चिरों) उंगरिया पे कितों भी जान न जाना ।
 नाहें मृतत ।
 ८१. छठ की छंडिया स्कई बार बेइमानी स्क ही बार ही होता है,
 मड़त ए । बार-बार नहीं ।
 ८२. छई से कुम्हार गया पे नांइ कलने से काम न करना ।
 मड़त ।
 ८३. जोरिया पे पाग नांथि जनिकारों पर वस्तु का होना ।
 जान्नुर ठाडुर ।
 ८४. करना मगड़े । छोड़ दे अपना काम छोड़कर दूसरे के कगड़े में
 पांथिर पाय । पड़ने से शानि होता है ।
 नांथि मोट दुगाका साथ ।
 ८५. कम छौटि वाच परि साद साद से फसल अच्छा होता है ।
 साद । न छोटे ।
 ८६. करन छान केता करे । जीवन के जोई भी काम सफल नहीं
 जान मरे के सुता मरे । हो पाता ।
 ८७. करी नन का, हुनौ ककरी । अपने मन का करना और अपनी सुनना ।
 ८८. क्योई की कालनो और छेड़े यादना का नुस्खान करने में सभी
 छेरा साइ जान । करते हैं ।

८९. काऊ को बऊ, कोऊ बुरा नीयत को सहायता करना ।
बरा बदलवावे ।
९०. डाक का फूल कीकर का छट्ठ केवल देखने में ही सुन्दर, गुण कुछ भी नहीं ।
९१. काटिबो होड़ दबो तो बिना भय दुनियां में काम नहीं बनता ।
फुकारत हैं जाबो ।
९२. कारो कबरो कबू तो करो । मुंह से कुछ तो कहो या कुछ करो ।
९३. कुठोर काटी सुसुर वाहणी । किसी लज्जाजनक बात को किसी के सामने
प्रकट व किया जा सके और बिना प्रकट
किये काम भी न चल सके ।
९४. करँटा को की दोड़ अपनी सत्मा में रखा ।
मिसौरा (विटौरा) पे ।
९५. साबे को पूत, लड़िब को मतीजे सब मतलब के यार ।
९६. साहबे कुं राहतो, मुफ्त में खाना ।
चंदा देवे कुं नहतो ।
९७. ठाछो नाहन मुँहे पटा । निठला बादमी खर-उखर की बात करता ।
९८. नद्वि वाई न पजम्मा उतार लेउ कार्य होने के पहले से ही प्रबन्ध करना ।
९९. तेलिन ते का घोबिन धाट, कोई किसी से कम नहीं ।
वाके मँगरा वाके छाठ ।
१००. नंग बड़े परमेसर से । बेशर्मा को ईश्वर से भी बड़ा मानते हैं ।
१०१. नानी की सोगात और किसी की वस्तु और कोई दूसरा ही
बेटो बांटती फिरे । खरात करता रहे ।

१०२. जा घर नारं बहला, बिना बड़े-बूढ़े के गृहस्थी नष्ट हो जाती है ।
सो बरु डिंगल डिंगा ।
१०३. जाट, भित्तारी, भिड़हरा, जाट, भित्तारि शकुन नहीं मानते ।
बार न जाने कुवार ।
१०४. दतिला ससम की हंसी अधिक बात करनेवाले पर कोई भी
न सुनी । विश्वास नहीं करता ।
१०५. छुंटा पे पूंछ नांछ मुकीकन क छुंटे पुर एक भी बेल के न होने पर भी
की जेठ मरै फिर । उनके मुंह से लगाने को बहुत सा मुक्ति कार्यों
को लिये फिरना ।
१०६. खेती ससम सेती । खेती अपने आप करने से अच्छी होती है ।
१०७. परदेसी की प्रीत, स्थायित्व न होना ।
मोल की तापनी ।
दियो कोजा माहिं,
नहि मयो आपनी ।
१०८. जात की चमरिया , दुकी गंदगी करना ।
उत्सनु ओर साह जाई ।
१०९. एक तो गिलोय और स्वयं बुरे और फिर बुरा को हो संगत
नीम पे चढ़ी । करना ।
११०. जेठ की व्यानी लौखटी कोई कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व शीघ्र
असाढ़ में परि गई भन्न । बाधाएँ उपस्थित हो जाना ।
१११. खाने कुं मैं जोर मेरा माई, खाने को स्वयं भी अपने लोग भी और
करिबे कुं गिरवरा नाई । काम करने के लिए अन्य लोग ।
११२. भूत विधा नल्लई, भूत-प्रेत विधा और पहलवानों थोड़े
बारह वर्षी चल्लई । दिन ही चलती हैं ।
११३. तुम जानौं, तुम्हारी कुछ भी करने को स्वतन्त्र ।
काम जानै ।

११४. दे दस्त मैं बाग जमाओ भगड़ा कराके जल हट जाना ।
 घूर सड़ो ।
११५. सेर पर को लोखटो, बढ़-बढ़ कर बातें करना ।
 सवा केर को मुँह ।
११६. तुक्क न तोरना । कुछ भी न करना ।
११७. बसत टरि जाता समय व्यतीत होने पर की बात रह जाती
 बात रह जात ।
११८. सूत न कपड़स, बिना काय प्रारम्भ किये ही व्यर्थ
 कोइरयन ते छठम छठा । मैं फंकट बढ़ना ।
११९. गोलो तीन पेड़ पे, मुसीबत से अलग भागना ।
 बण्डा नो पेड़ पे ।
१२०. मैसि पे बीक, कलोलो कसकसाया। व्यर्थ मैं हो कुसमुसाना ।
१२१. जैसा गंदो सको, समो प्रष्ट ।
 तेसेई ऊत पुजारी ।
१२२. गधा नाह रंगटाओ । हेर फेर से बात मानना ।
१२३. गाड़ोवारे को नारि गाड़ोवान को स्त्रो हमेशा दुखा रहती है
 जनम दुखिया ।
१२४. घ्यो न सायो तो कुप्पाई कुछ तो लाभ उठा हो लेना ।
 बजाओ ।
१२५. जबई पेड़ पसर हूँ निकरी, कान प्रारम्भ करते हो बाघार्य जा जाना ।
 तबई मिड़ियन लई धेरि ।
१२६. मुँह मुड़ावत ई औरे परे । कान के प्रारम्भ मैं बाधा पड़ना ।

१२७. जारि-जोरि बरि जाइगी,
माछ जमाई लाइगी ।
१२८. देवी दिन काटे,
पण्डा परचो मांगै।
१२९. जो क्षितारा वोहो
ढौला के संग ।
१३०. रहे तो रहंवा रीटी खाय ।
जाय तो रहंवा के ले जाय ।
१३१. सुतेमन तो भोतेरो ऊं,
परि हौंका का खसम के हाड़ ।
१३२. गुथरु बाजु न कल्ल,
जामे दे दे पुन्ना ।
१३३. बाढ़ि हो ख खेत लाइ,
उपाय कहा कोजिये ।
१३४. मारि जूट मेहरा पे बैठ्यो,
होई-होई होय ।
१३५. सब दिन बंगे,
त्योहार के दिन नंगे ।
- अपने धन से स्वयं लाभ न उठाना ।
- चुपचाप या शान्ति से जीवन यापन
न करने देना ।
- बदमाशी का क्या विश्वास ।
- बेचारा रहंवा जीवन भर कमाता
ही रहता है ।
- वस्तुओं के अभाव में कला अधूरी हो ।
- दो मालिक वाला मकान शीघ्र नष्ट
ही जाता है ।
- रक्षा करने वाला हो जब भदाक
बन जाय तो रक्षा सम्भव नहीं ।
- जिससे जबरदस्ती से काम कराया
जाता है वह ठीक नहीं होता ।
- वक्त पर काम न होना ।

अध्यायः

उपसंहार

८. ०० उपसंहार

८. १. १ बहुरूप

भाषा सर्वदाण में संधि-स्थलीय बोलियों के महत्व की प्रतिपादित किया है। प्रारम्भ में ही भाषा सर्वदाण के सन्दर्भ में बोली और भाषा के अन्तर को स्पष्ट किया गया है। बोली किस प्रकार अपने संकुचित धरे से निकल कर भाषा का रूप धारण करती है और जब कई बोलियाँ एक दूसरे की सीमाओं का अतिक्रमण करती हैं तब किस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो जाती है इस बात पर भी विचार किया गया है। बोलियों के पारस्परिक बोधाम्यता के अनुपात की भी चर्चा की गई है कि कितनी आनुपातिक बोधाम्यता अथवा अबोधाम्यता के आधार पर एक बोली दूसरी बोली से पृथक् हो जाती है। कैसे विभिन्न बोलियाँ संधि-स्थलीय अब उपबोलियों का निर्माण करती हैं।

८. १. २

विवेच्य क्षेत्र के सम्बन्ध में काफी विस्तार से विचार किया गया है तथा साथ ही जार्ज ग्रियर्सन के सर्वदाण से लेकर आज तक कार्य करने वाले विद्वानों के "ब्रज और लड़ी बोली के क्षेत्र निर्धारण" पर पूर्णरूपेण विचार किया गया है। जार्ज ग्रियर्सन, डा० धीरेन्द्र वर्मा और प्रभु दयाल मीत्तल द्वारा इन दोनों बोलियों के मानचित्र अपने ही विवेच्य क्षेत्र की सीमाओं के साथ ही प्रदर्शित किए गए हैं। एक ही मानचित्र में प्रदर्शित करने के कारण एक साथ ही और एक ही दृष्टि में सीमाओं के सम्बन्ध में हुए परिवर्तनों पर ध्यान केन्द्रित हो जाता है। विवेच्य क्षेत्र

का मानचित्र भी प्रस्तुत किया है।

विवेच्य क्षेत्र को भौगोलिक, प्राकृतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी यत्किंचित विचार किया गया है। और उसका क्षेत्र फल तथा विस्तार भी दिया गया है।

८. २

दूसरे अध्याय में संधिरसा पर स्थिति जिलों की बीलियों के महत्व पर प्रकाश डाला है। रामपुर, बदायूं, बरेली, मुरादाबाद, पीलीभीत, नैनीताल, मेरठ, बुलन्दशहर जिलों की बीलियों के सम्बन्ध में राजकीय गजटियर्स में दिये गये विवरण के सन्दर्भ में प्रत्येक जिले की बीली पर पृथक्-पृथक् संक्षेप में अपने सर्वेक्षण के आधार पर विवरण प्रस्तुत किया गया है।

८. ३

तीसरे अध्याय में सर्वेक्षण की कार्य पद्धति के सम्बन्ध में विचार किया गया है साथ ही सर्वेक्षण करते समय नाना कठिनाइयों की भी यत्र तत्र चर्चा करते चले हैं। सामग्री संकलन में सुझाव के साथ किस प्रकार रहकर कार्य को सुगम बनाया जा सकता है। सामग्री-संकलन में किस प्रकार बाधाएं उपस्थित होती हैं और शोधार्थी को बाधाएं और कठिनाइयों को जीत कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना पड़ता है।

८. ४

चतुर्थ अध्याय में स्वनिमात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया

गया है। उसके अन्तर्गत स्वर- स्वनिम तथा उपस्वनों का वितरण, स्वल्पा-
न्तरयुग्म, सन्ध्यकार अनुनासिक स्वर, स्वरानुक्रम, स्वरानुक्रमों के साथे,
उनका दौत्र गत विवरण, स्वरानुक्रम तथा श्रुति शोर्णिक से विशेषण
प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय के दूसरे भाग में स्वनिमों का वितरण
तीसरे में अक्षर- निर्धारण तथा चौथे में बताघात तथा संगम पर विचार
किया गया है। इस अध्याय में ही अन्त में अंग्रेजी, फारसी, अरबी शब्दों
में स्वन परिवर्तन पर विचार किया गया है। अरबी फारसी मिश्रित
शब्दावली का विशेष अध्ययन इस दौत्र में किया जा सकता है। क्योंकि
यह दौत्र मुस्लिम बहुत जनसंख्या वाता है। इस दौत्र में परिब्याप्त उक्त
शब्दावली को लेकर बागे भी कार्य किया जा सकता है।

८. ५

शब्द समूह तथा शब्द संरचना के अन्तर्गत शब्दों के तत्सम
से लेकर विदेशी आगत शब्दों पर विचार किया गया है, विदेशी शब्दावली
के अन्तर्गत अरबी, फारसी, तुर्की, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, डच और अंग्रेजी
है। स्थानीय शब्दावली, दुर्वृत्ति, अपशब्द आदि शब्द संरचना में पूर्व
व्युत्पादक प्रत्यय (उपसर्ग) व्युत्पादक पर प्रत्यय और समास पर विचार
किया है।

८. ६

रूप प्रक्रियात्मक अध्ययन के अन्तर्गत रचनात्मक उपसर्ग
तथा प्रत्यय, संज्ञा, सर्वनाम, लिंग- निर्णय, वचन, कारकीय परसर्ग,
विशेषण क्रिया तथा अव्ययों पर संरचनात्मक दृष्टि से विवरण प्रस्तुत
किया गया है।

८. ७

वाक्य रचना के अन्तर्गत, पदक्रम पदान्वित तथा पदाधिकार के साथ ही साथ संज्ञा पदबन्ध, क्रिया पद बन्ध, अव्यय पद बन्ध आदि पर विचार करते हुए लोकोक्तियाँ, मुहावरे और वाक्यों में रागात्मक तत्व के सम्बन्ध में भी प्रकाश डाला है।

८. ८

परिशिष्टान्तर्गत बीली- झूल , मानचित्र, दीत्रीय नमूने, स्थानीय विशिष्ट शब्दावली तथा सहायक वस्तुओं को सूची की प्रदर्शित किया गया है।

८. ९

उपर्युक्त पर विराम दृष्टि से विचार की तो स्पष्ट ही जायेगा कि किस प्रकार दो भाषाओं या बीलियों के संगम से उत्पन्न समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। इस विशाल विवेच्य क्षेत्र में परिब्याप्त नाना प्रकार की शब्दावली, कहावतें, मुहावरे तथा रुढ़ि शब्द को एकत्र किया जा सकता है। यद्यपि मैंने इस सामग्री को एकत्र किया है और उसमें से कुछ परिशिष्ट में दे दी है। स्थान- स्थान पर विवेच्य क्षेत्र के मान चित्र भी प्रस्तुत किए गए हैं।

परिशिष्ट

परिशिष्ट - १

प. १. ०० बोली- भूगोल-

भाषा में द्वीत्रीय विशेषताएं सदैव रहती हैं। ये विशेषताएं स्वनिम, रूप तथा शब्द तीनों द्वीत्रों में पायी जाती हैं। एक शब्द विशेषण के ही द्वीत्रीय उच्चारण पाये जाते हैं।

बोलीगत ये विशेषतायें सम्वाक् रेखाओं द्वारा प्रदर्शित की जाती हैं। इस दृष्टि से भाषा का भूगोल बिल्कुल सीधा सम्बन्ध है। अभी इस दृष्टि से अध्ययन अपनी प्रारम्भिक अवस्था में है। यहां हम अपने विवेच्य द्वीत्र पर आधारित विशेषताओं के आधार पर कुछ मानचित्र प्रस्तुत कर रहे हैं जिनका विवरण इस प्रकार है :

प. १. ०१ स्वनिमात्मक स्वरूप-

एक शब्द विशेषण में उच्चारणगत विभिन्नताओं के होने से स्थानीय उच्चारण सम्बन्धी अन्तर स्पष्ट हो जाता है। एक ही स्वन किसी विशिष्ट स्थानीय उच्चारण में पड़कर नवीन उच्चारण धारण कर लेता है। कभी-कभी तो यहां तक देखा गया है

कि एक ही शब्द विभिन्न स्थानों पर कई कई रूप धारण कर लेता है। यदि हम उच्चारणगत अन्तर को स्पष्ट करने वाले कुछ उदाहरण लें तो शीघ्र ही इस प्रकार तथ्य उद्घाटित होगा कि एक मूल पद्धति के ही ये अनेक प्रकार के संशोधन हैं और इस दृष्टि से प्रत्येक क्षेत्रीय बोली में अपनी निजी विशेषताएं तथा विशिष्टताएं समाहित रहती हैं।

प. १. १

मानचित्र १ में 'ण' और 'न' के स्वनिमात्मक रूप कोष प्रदर्शित किया गया है। अपनी विवेच्य क्षेत्र को प्रस्तुत मानचित्र में दो भागों में विभक्त किया है। क्षेत्र के उत्तरी भाग में 'ण' का उच्चारण होता है। इस पर निश्चय ही भरठ की कौरवी बोली जो इस क्षेत्र के निकट है स्पष्ट प्रभाव पड़ा है तथा शेष संपूर्ण क्षेत्र में 'न' ही उच्चारित होता है। इस 'न' के उच्चारण में और शुद्ध ब्रज के उच्चारण में भी अन्तर है क्योंकि ब्रज क्षेत्र में 'न' में भी अधिक अनुनासिकता का पुट रहता है। जैसे - नानो को 'नानो' का उच्चारण करते हैं।

प. १. २

मानचित्र २ में क्रियार्थक संज्ञा शब्द 'रहना, रहणा' 'रहनी, रहवी' को प्रदर्शित किया गया है। सम्पूर्ण क्षेत्र तीन भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में निश्चय ही 'ण' स्वन का स्पष्ट प्रभाव है। दादरी, सिकन्द्राबाद, स्थाना, गुलावटी आदि में 'रहणा' का ही प्रयोग मिलता है। दूसरे भाग में 'रहना' है इसका मुख्य कारण है। मुस्लिम बहुत क्षेत्र। क्योंकि मुसलमान 'ण' का उच्चारण नहीं करते। तीसरा क्षेत्र है अत्यन्त विशाल है तथा उसमें भी कहीं 'रहवी'।

बीर कहीं "रहनी" और कहीं "रहनी" का उच्चारण होता है। रहनी वाला क्षेत्र में "रहबी" का भी प्रयोग चलता है। "रहबी" में ब्रज बोली का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित हो रहा है।

प. १. ३

मानचित्र तीन में सम्प्रदान कारक के लिए के स्थान पर क्षेत्रगत कितनी विषमता दृष्टिगोचर होती है। प्रस्तुत मानचित्र में परसर्ग, लिए "अथवा" के लिए "कैलेंय" या लेंय "तथा" के ताई" के प्रयोग द्रष्टव्य हैं। उत्तरी पश्चिमी तथा पूर्वोत्तरी क्षेत्र में "लिए" या "के लिए" का प्रयोग होता है तथा दूसरी ओर सुर्जा, अनूपशहर, डिबाई, राजघाट आदि में लेंय या कैलेंय का स्पष्ट रूप से प्रयोग होता है। इसी क्षेत्र में कहीं कहीं ताई या कैताई का भी प्रयोग मिलता है। उसका कारण यह है कि अधिकतर प्राचीन रीत-रिवाज या रुढ़ि-परम्परा के कारण पूर्वी या अर्थात् ब्रज क्षेत्र की लड़कियों की शादियां प्रायः पश्चिम में ही करते हैं और पश्चिम वाले भी अपनी लड़कियों की बादी अपने से भी पश्चिम में करते हैं। इस प्रकार जो लड़की २० वर्ष तक जिस स्थान पर रहेगी, वहां को बोली के उच्चारणगत और भाषणावयव धीरे धीरे उसी ओर झुक जाते हैं। उनके बच्चों की बोली अपनी मां की निजी बोली से अवश्य प्रभावित होती है। इस प्रकार वहां की बोली में एक प्रकार की सांख्यता स्वतः ही आजाती है। सुर्जा, शिकारपुर जहांगीराबाद, औरंगाबाद, अनूपशहर, डिबाई, राजघाट, रामघाट आदि में "लेंय" अथवा "कैलेंय" का प्रयोग होता है,। इधर बदायूं के बबराला, इस्लामनगर, गिन्नौर, बिसौली आदि, बरेली के आंवला

आदि में "कैताई" का प्रयोग किया जाता है। सम्भल, बिलारी, रामपुर में "लिए" का ही प्रयोग मुस्लिमानी क्षेत्रों में होता है।

प. १. ४

मानचित्र ४ में "कू-को", तथा "कू-का" का स्थान भेद से अन्तर दिखाया गया है। दनकौर से लेकर बुलन्दशहर के ऊपर होते हुए, तथा मुरादाबाद के सम्भल, बिलारी, तहसील मिलक, में "कू-को" परसर्ग का प्रयोग होता है। दूसरी दक्षिणी क्षेत्र के- बुर्जा, अजमेर, राजघाट, गिन्मौर, बिसौली, बांवेला, बहेड़ी में "कू-का" का प्रयोग होता है। स्पष्ट है "कू-का", परसर्ग ब्रजक्षेत्र में प्रयुक्त होते हैं तथा उत्तरी क्षेत्र के "कू-का" में अनुनासिक प्रभाव नहीं है। इस पर सड़ी बोली का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

ख प. १. ५

मानचित्र ५ में प्रश्नवाचक सर्वनाम क्या के अनेक रूपों का प्रयोग विविध प्रकार से क्षेत्रगत विशेषताओं से युक्त होकर आता है। जैसे- पश्चिमी क्षेत्र में "के" का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ- "वे तू यां के लिए" (वे तू यहां क्या लेता है ?) दूसरे उत्तरी क्षेत्र में इसका रूप - "क्यू" होजाता है। इस पर मुसलमानी प्रभाव स्पष्ट है। उदाहरणार्थ- "तू क्यूं ना आया मैं कितनी देर नमाज कू होगी" (तू क्यों नहीं आया भाई कितनी देर नमाज के लिए होगई)।

तीसरा क्षेत्र दक्षिण पूर्वी है- इसमें "क्यों" का चर्चा "क्यों" में प्रयोग करते हैं। उदाहरणार्थ- "चर्चा" कहा जाके ताई सपड़ी चर्चा नाह लायी। (क्यों भाई उसके लिए अमरुतु क्यों नहीं लाया ?)

एक ही शब्द के अनेक भेद रूपान्तरित होकर उच्चरित होते हैं।

प. १. ६

मानचित्र ६ में हिन्दी सर्वनाम शब्द कुछ के लिए प्रचलित शब्द, स्वर विपर्यय के साथ कुछ का प्रयोग केवल पश्चिमी भाग तथा बहुत थोड़े उत्तरी भाग में होता है। सम्पूर्ण दक्षिणी एवं पूर्वी क्षेत्र में 'कुछ' शब्द का ही प्रचलन है- जैसे - मीसें कुछ नाई आवतु ? यह प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से स्वर विपर्यय कारण उत्पन्न हुई है तथा सम्पूर्ण ब्रजक्षेत्र में 'कुछ' का ही प्रयोग होता है उसका भी प्रभाव पड़ा है।

प. १. ७

मानचित्र ७ में भूत कालिक सहायक क्रिया 'था' के लिए प्रचलित अनेकानेक रूपों का वितरण देखा गया है। अपने विवेच्य क्षेत्र के दादरी, सिकन्दराबाद, स्थाना, हापुड़, कौता आदि में 'था' के स्थान पर 'हा' का प्रयोग होता है। उत्तरी क्षेत्र में मुसलमान लोग 'हा' के साथ था का भी प्रयोग करते देव देते गए हैं। दक्षिणी तथा पूर्वी क्षेत्रों में - दनकौर, सुरजा, शिकारपुर, अरूप शहर, डिबाई, राजघाट, बबरासा, गिन्नीर, इस्लामनगर, बिसौली चंदौसी, आवता, बहेड़ी में सर्वत्र 'ओ' का 'था' के स्थानापन्न प्रयोग होता है। बहेड़ी में कहीं कहीं 'था' का भी प्रयोग सुनने में आया। 'ओ' का प्रयोग अधिक व्यापक है। उदा० 'गु ओ सोचलो गजी' (वह था सोचता गया) ।

प. १. ८

मानचित्र ८ में भूतकालीन 'हु' क्रिया के अनेक वितरण जैसे हुवा, भयो, भवी आदि मिलते हैं। विवेच्य क्षेत्र को चार भागों में विभाजित किया गया है जिनमें इनकी क्षेत्रगत स्थिति को समझा जा सकता है।

१- दादरी, सिकन्दराबाद, स्थाना, हापुड़, अगाँठा में हुवा या हुवा का प्रयोग होता है।

२- सम्मल विलारी, मितक में किच्छा में हुवा का प्रयोग होता देखा गया है।

३- बुलन्दशहर से नीचे सुर्जा, अरूपशहर, डिबाई, राजघाट तक भयो का उच्चारण होता है तथा पूर्वी क्षेत्र में सर्वत्र 'भवी' रूप मिलता है।

४- पूर्वी क्षेत्र के इस 'भवी' पर निश्चित रूप से कन्नौजी का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

प. १. ९

मानचित्र ९ में वर्तमान कालिक सहायक क्रिया 'है' के वितरण को क्षेत्रगत प्रदर्शित किया गया है। संपूर्ण क्षेत्र को दो भागों में बांटा जा सकता है पश्चिमिरी भाग में 'है' का प्रयोग होता है तथा दक्षिणी पूर्वी भाग में सर्वत्र 'है' के स्थानापन्न 'ह' का प्रयोग प्रचलित है। 'गु वाह रओ ह' इत्यादि। इसमें 'ह' के ई लोप को प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई दे रही है केवल 'ह' स्वर ही अवशिष्ट रह गया है।

प. १. १०

मानचित्र १० में स्थान वाचक अव्यय- इधर उधर के अनेक वितरण क्षेत्रगत विशेषताओं एवं परिवर्तनों के साथ प्रदर्शित किए गए हैं :

१- दादरी सिकन्द्रा ० स्थाना में- इधे - इंगे , उधे- उंगे आदि का प्रयोग होता है, सम्मल- रामपुर में इधर- उधर फारसी प्रभाव के कारण बोल जाते हैं। कहीं कहीं इतक- उतकू के भी विरल प्रयोग मिल जाते हैं।

तीसरे क्षेत्र में - लुर्जा, अद्वपशहर तक यालंग, वालंग, इतकू- उतकू तथा पूर्वी क्षेत्र में भी यही स्थिति सर्वत्र मिलती है। परिशिष्ट में जो नमूने संकलित हैं उनसे इस बात को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

प. १. ११

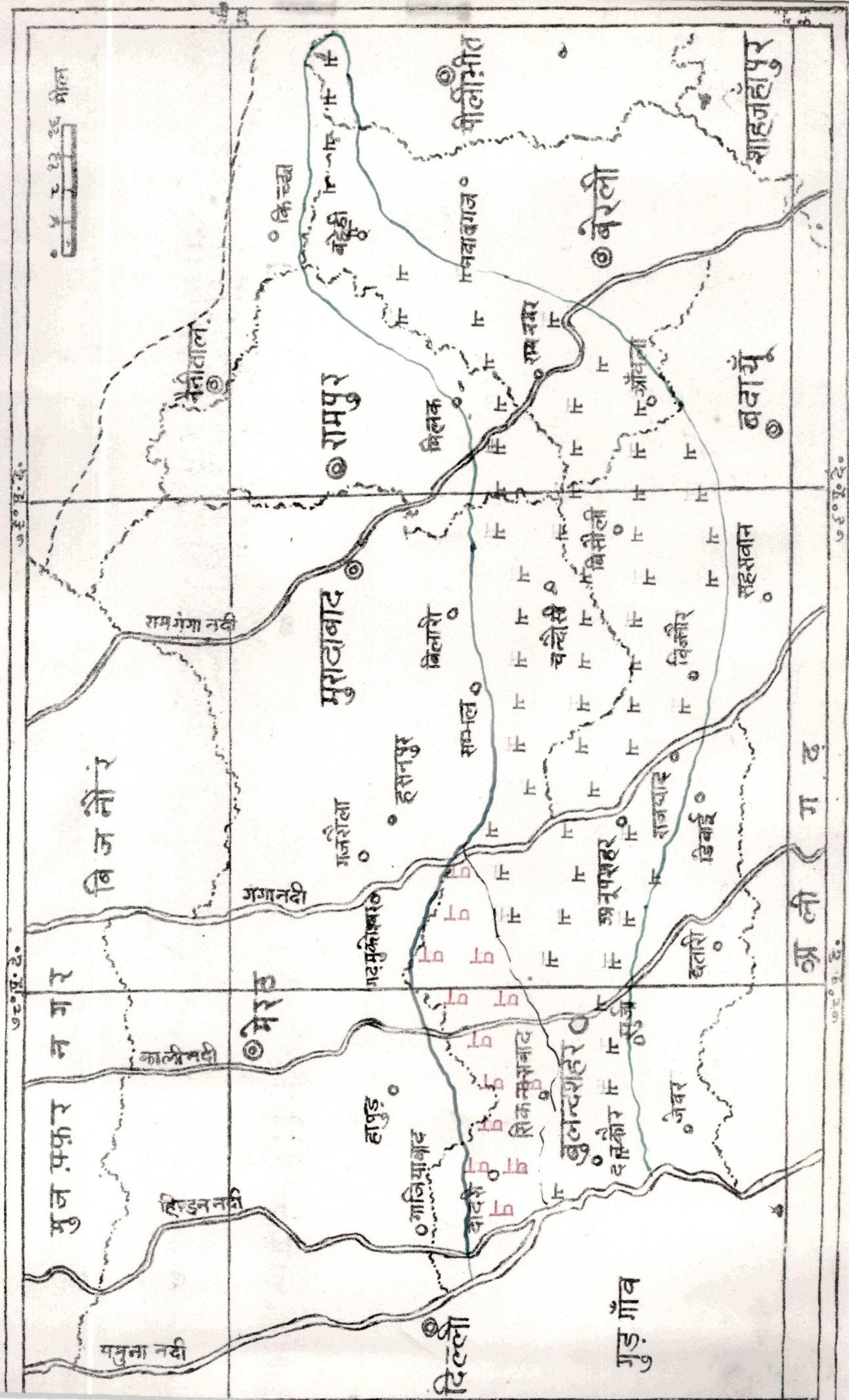
मानचित्र ११ में समयवाचक अव्यय कभी के अनेक रूपों को प्रदर्शित किया गया है। जैसे कभी का - कबो , कदो , दूसरी और भी का बी अल्प प्राण रह जाता है।

पश्चिमी क्षेत्र 'दादरी, सिकन्द्रा० आदि में कभी का कदो और कबो का भी प्रयोग होता है। परन्तु 'भी' अकेली का बी रूप ही सर्वत्र प्रयुक्त होता है। मुरादाबाद, रामपुर आदि में कभी बी आदि का प्रचलन है। दक्षिणी क्षेत्र पूर्वी क्षेत्र में 'कभी' के साथ 'कबऊ' का प्रयोग अधिकतर होता है।

जैसे- मैं कभी नहीं गया । का मैं कबल नाह
गयी । इत्यादि ।

प. १. १२

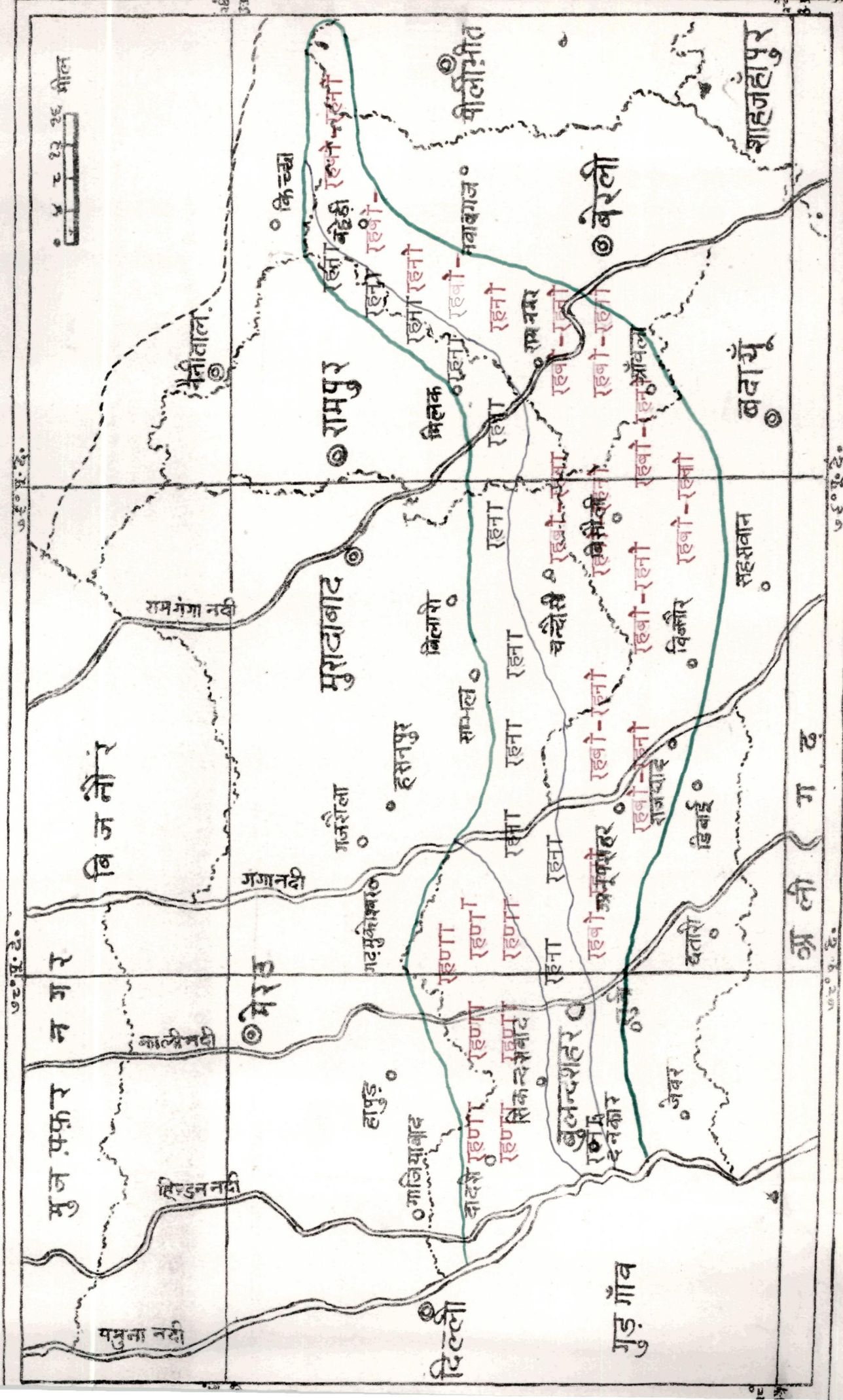
मानचित्र १२ में समुच्च्य बोधक अव्यय कि के कीक
वितरणां को दिखाया गया है। पश्चिमो क्षेत्र- दादरी, सिकन्दरा०
आदि में "कक" रूप चलता है। मुरादाबाद रामपुर में "कि" रूप
चलता है तथा अवशिष्ट दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र में "कै" का रूप ही
चलता है। उदाहरणार्थ - १कक यार यू ती तेरी बड़ी मुंडी बात है -
२- उसने कही कि आज तो जुम्हा है। ३- उन्हें कई कै देखा
मझ्या याह चाँ मार जी ? ।



७६° ५०' द०

७६° ५०' द०

७६° ५०' द०





० ५ १२ २५ मील

७२° ५०' २०"

७२° ५०' २०"

७६° ५०' २०"

७६° ५०' २०"

मुज पफर

नगर

बिजनौर

कालीनदी

हिन्दुनदी

यमुना नदी

मेरठ

जगानदी

गजरोला

हसनपुर

मुरादाबाद

रामपुर

मैनीताल

किच्छा

लापुड

गाजियाबाद

दिल्ली

बिलारी

सामल

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

कु

को

० २ ४ ६ ८ १० मील

७८° ५०' ३०" द०

७८° ५०' ३०" द०

७८° ५०' ३०" द०

७८° ५०' ३०" द०

मुजफ्फर नगर

बिजनौर

कालीनदी

हिन्दनदी

यमुना नदी

मेरठ

जगानदी

रामगंगा नदी

पैनीताल

गजशेला

हसनपुर

मुरादाबाद

रामपुर

गालियाबाद

तापुड

दिल्ली

बिलारी

सामल

मिलक

किच्छा

नईसी

पीलीभीत

सिकन्दरगढ़

बुलन्दशहर

दुमका

बरेली

सिद्धी

बलिया

बलिया

बलिया

बलिया

बलिया

बलिया

बलिया

जेवर

खतारी

डिबई

बलिया

बलिया

बलिया

बलिया

बलिया

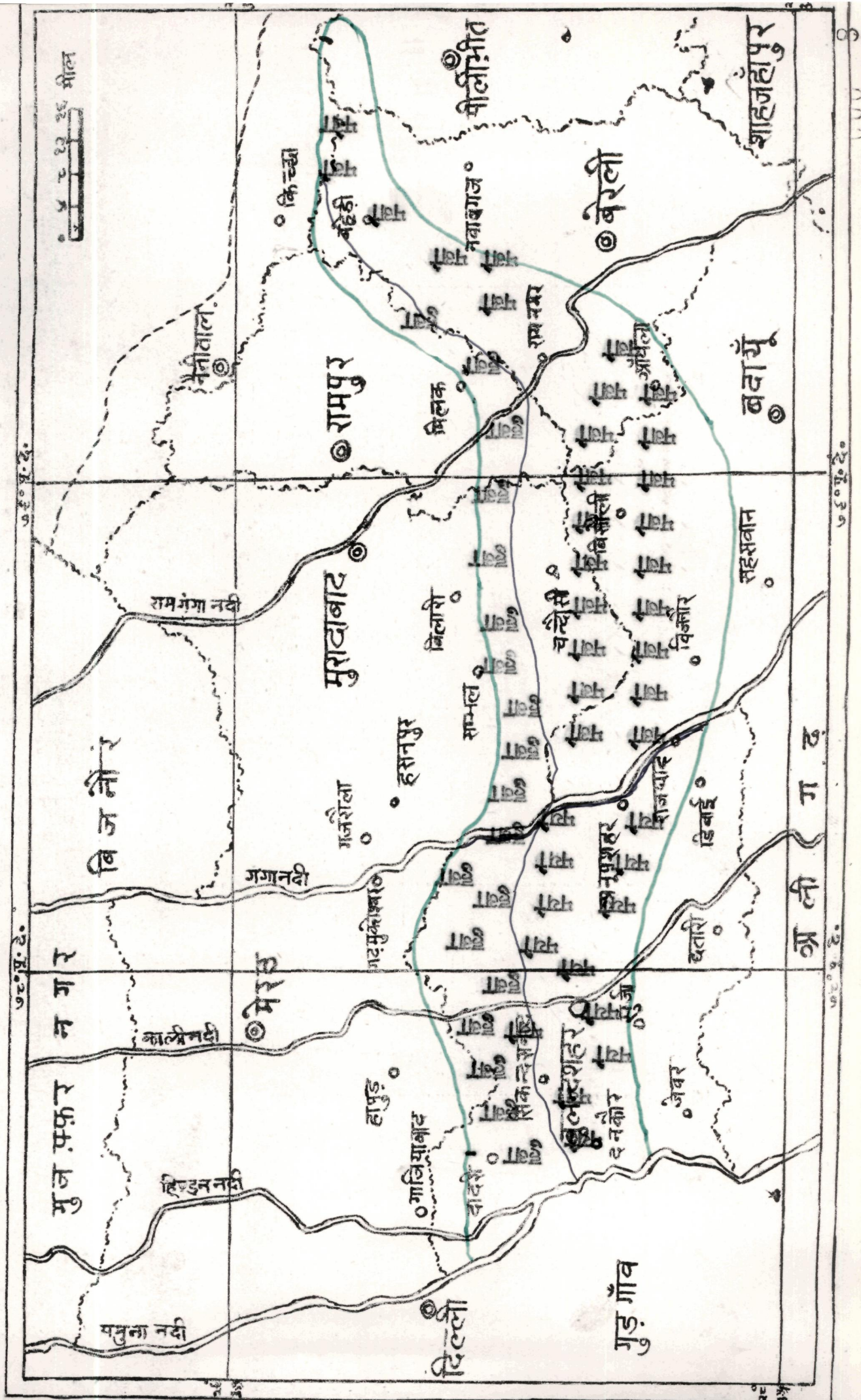
बलिया

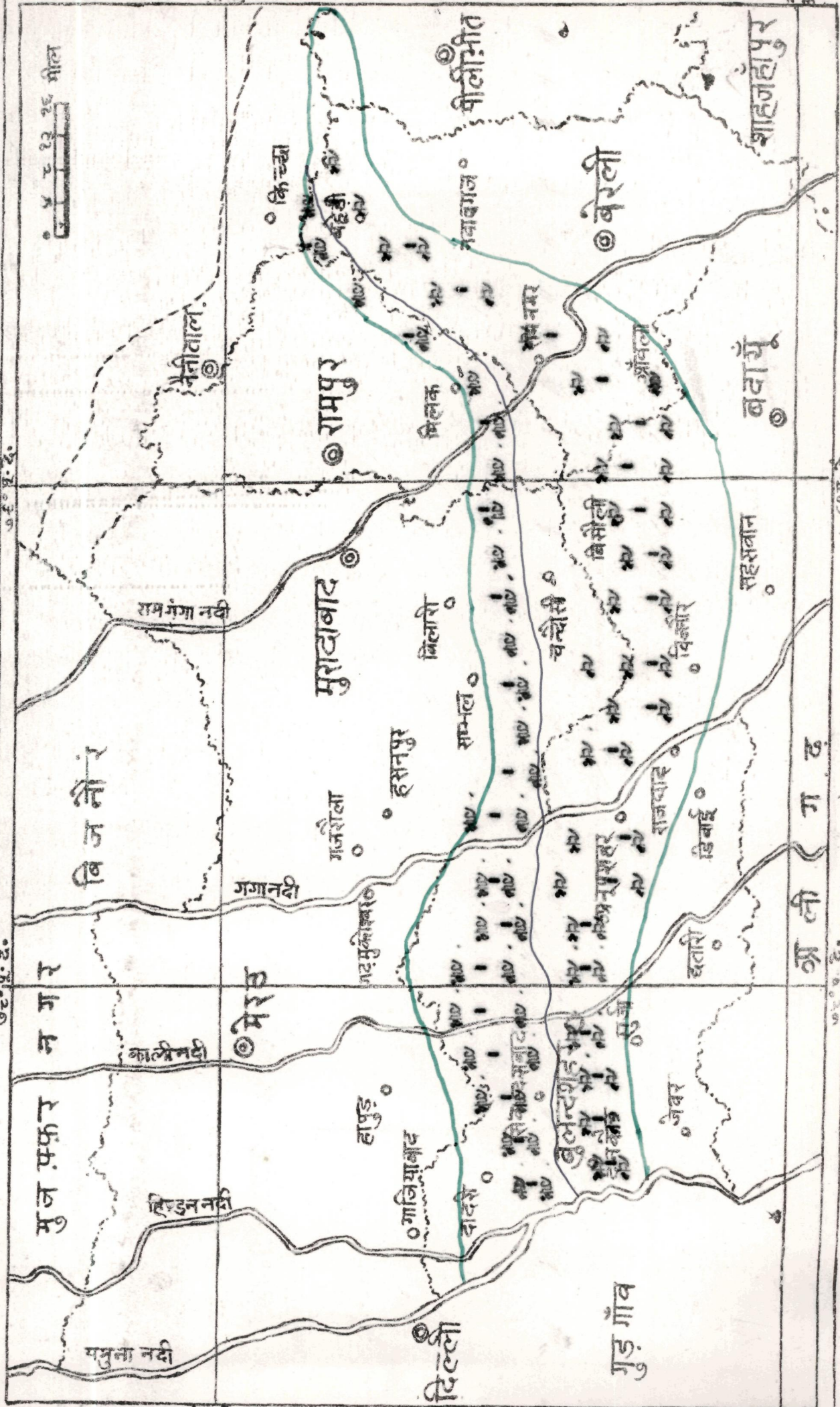
सहस्रान

बदायूं

शाहजहांपुर

अलीगढ़





० ५ १० १५ २० २५ मील

मुजफ्फर नगर

विजयनगर

कालीनदी

हिन्दन नदी

रामगंगा नदी

मेरठ

गजशैला

गगानदी

मुरादाबाद

हापुड

गजियाबाद

दिल्ली

हसनपुर

बिलारी

सामनल

बिलक

रामपुर

मवादाज

पीलीभीत

बनरली

बिसौली

चन्नीसी

राजवाड़ा

डिबाई

जवर

सहसवान

बदायूँ

शाहजहापुर

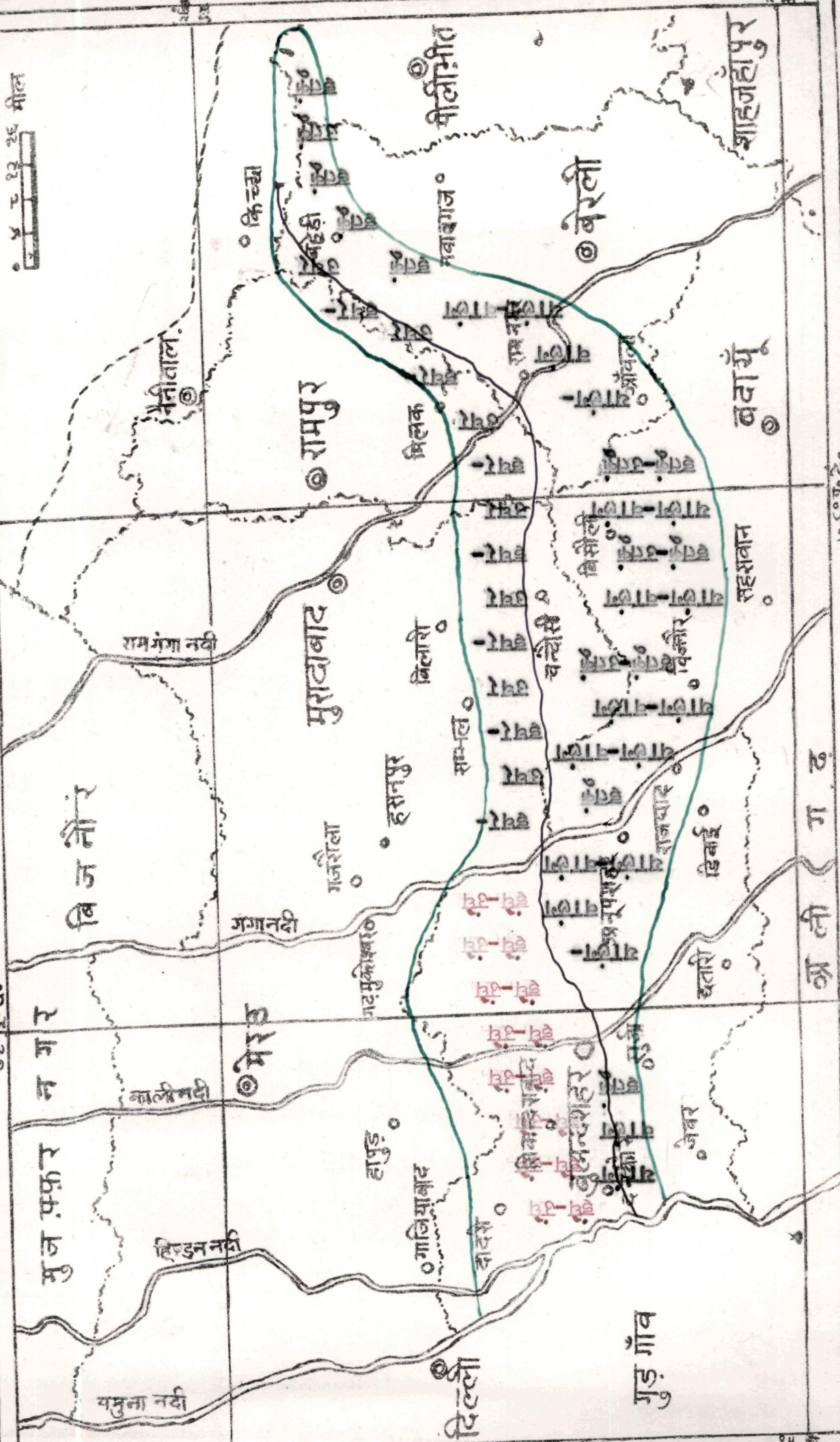
गोमती

गुड गाँव

० ५ १० १५ २० २५

० ५ १० १५ २० २५

० ५ १० १५ २० २५ मील



सूचक

गांव - मदनपुर, कंदासी, ये चार माल- लोधाराजपूत शोध कर्ता और
सूचक में एक वाता

शोधकर्ता - सेती- किसानों की बाबत ई कछु सुनाइ देउ ?

सूचक - साब । हम कछु नाइ जान्त ।

शौ० क० - तुम कछु भी तो जानते ही होगे ? कछु तो आता ही होगा ।

सूचक - ऐसी आवति ऐ, कै, वामें हरु नाइ छिदतु करीं है गई ऐ । ऐसी तो हम जान्त हैं ।

शौ० क० - आप ऐसी ही सुनाइ देउ कैसे जमीन जोतत ओ ।

सूचक - तो अब धोरौऊ सुनावो जातवें जब हरु चलें तब ।

शौ० क० - तो बिना हर ऐ नाइ सुनावोगे ?

सूचक - गि उरे उसरि आए ऐं यामें, पटु लिया लगावो । पट्टीवारी लें अइयो काऊ की।
कसी ते मार देउ मांटे- मांटे । ऐसी ई आवति ऐ हम पे और तो कछु जान्त
नारें ।

शौ० क० - और कछु नावो जान्त बिल्कुल ?

सूचक- और ऐसी जान्त ऐं कै यामें गैवनी बे देंय कै गैहं, बाजरा बसेर देंय कै घान ।

स्काथ हरैया समा फया बइ देउ । मक्का बइयो यामें यामें, कछु धारे से में
समा डार देउ ।

सूचक - दादरी

१- सड़े - सड़े टांग बी अकड़गीं ।

२- एक तो सड़ा ई ऐ लेन में मैं सड़ा होके के लड़गा ।

३- कौई लेन बी देता ओ ।

४- एक पिच्चाणवें लगते ऐं ।

- ५- के बेरा कां लगरा रें ? (जाट स्त्री)
 ६- टिकट म्हारा बी लेले अरु पीसे बी लै लीयो (स्त्री)
 ७- कांण गा रें म्हारे बीच्य में बोल्यो ?
 ८- एक दो हों थो लेबी लें तुम चहए दस कट्टी ।
 ९- वाओ चर्लें हापड़ कुं चर्लें निकड़ के ।

सिवारी के पास धनारी त० अनपशहर से पश्चिम- उत्तर और बु० शहर
 से पर्व में स्थित

बस स्टैंड पर की परस्पर वार्ता

- १- वागे हँ आइ लगे रें हर - फिर के ।
 २- लेन कहाँ देरें अगल्ले जो रें ।
 ३- पांच पैसा फिरगे इनमें सुं ।
 ४- फिरगे तो जभी जब आगे कुं सरके ।
 ५- चाइ सगरी दुपहरी सड़ रहो तोऊ टिकट न मिले ।
 ६- वागे कं तो बड़े थोरे घने ।
 ७- ये गड़बड़ कर रए रें अगल्ले वाले ।
 ८- ये करवट में होके आ जाऐं ।
 ९- हयें उयें सुं आके लग जाऐं हर बेरी ।
 १०- मिल तो जाती लेन बन जाती तो ।
 ११- और गाड़ी बनाइ के कहाँ भेसके रें साब ।
 १२- ओन्नई, टिकट करते तो घबलक न होती ?
 १३- लेन सुं लेंय तो सब को वार मांत जल्दी आ जाय ।
 १४- अच्छी बुलाई बने तुम जो रस्ताऊ रोकिलई ।
 १५- वागे सुं सड़े रें थक्कम थक्का दे रें रें ।

त० सहस्रवान जि० बंदायूं - सूचक - बासदेव

तो एक बरौ तो तुमने साइ लौ तीन बरे वाई के ताई रहन दये ।
 ऐं अच्छा । फिर वा के बाद में वैं जाई अपनी चुके । वाने कई कछू करौ ऐ
 बिल्लो वाने कई चार बरे करे ऐं एक बरौ मने साई लयो तीन बरे तू साइलै ।
 तो वाने कई ला । तो वाने तीनों बरे ए सो साइ लर । जाके बाद में वाने कई
 के अब ई पेट मरि गवौ ए के अबई और साउगी । अबई पेट न भरौ होइ तो मे
 ताई साइ लेउ । तो वाने कई के ला तेताई साइ लगौ तू इत्ती बात करि रहै
 ए तो, तो वाने अपनी मो बगलिया साइ लई । वाने कई त नैं क्यों सैतानी करी
 वो अगेला को नली जा रहै, तो वो अगेला बड़ी तो आगे जाइ के एक कस्सी
 सोदि रयो ओ । तो वाने कई के आजु तो बड़ा अबरु तुमारौ पेट हंरयो ऐ
 बिलैया । आजु का साई ले ओ ए ऐसो त नैं तो, वाने कई साइ का लयो ए तीन
 बरे साए ऐ अपनी एक बगलिया साई । के तोऊ ऐ साऊ । तो वाने कई के
 तू मोइ का साइ लेइगी एक कस्सी के मारे तेरे से टुकड़ा कर देगौ । तो वाने कई के
 अच्छा । तो बु कस्सीए भापु रहणै फट्ट एक वाऊ ए साइ रावौ ।

त० सम्भल, ग्रा० हेवतपुर (मुसलमान स्त्री)

हम ना जा रए कइ बीं
 कां कं जा रा य ?
 ओ लाला । लइयो पानी ।
 पानी ऐ निरा पेट में ।
 इचा बसेरेगा
 इधें कुं ला ।
 इंगवो, पक्कों में सेरेई होवे ।
 ओ अबी आई ना
 अपनी मांकू ना लाया रौटी तू ?
 ओ कां को जा रए ओ ?
 उनौ नं किछी देर करी ऐ
 ले इस सीसी को भर ले पानी से ।
 देख तो सई जाके का हो गया ऐ
 जमाना बी सराब आगया तो फिर क्या ऐ ?
 क्यं लिये फिरै घर रक्खै अपने को
 हमनें मुसीबत भरी
 में देख के वाऊं गे पवा साले
 दस्त ऐं पेट आंर मूं चल रये ऐं दोनौ
 गिर जागा मैये तू ।
 अरे क्या हो गया
 ऐसा जागा टोपी ओड़ के भगा भगा
 रस्ते में भक लगै खालीयो जाके
 अरे कोई आं उताल लेगा
 चल निकर, निकर तो जान्दे ।

त० मिलिक, जिला रामपुर

बू कुरान शरीफ किब से पढ़न लगा ।

उसकी कइ पे तो रोज़ कोई न कोई आता रहवे ।

नाम- सुन्दर जाति वहीर, नगला, त० विलारी जिला मुरादाबाद

- १- सही बात ऐ जो बिलकुल
- २- कैसेई पक्षि लेउ लैं कांकू जा रए ओ
- ३- का माए संग हुज्जत करोगे
- ४- लैं लेउ मेरी काए जामें
- ५- गाम्मे तो नाँ कैत हैं
- ६- कां जाइ रवो ऐ
- ७- काम से जाइ रवो वैं ।

ग्राम - बड़राजपुर, तहसील जांवला बरेली

- १- जेई कहत हैं ओर तो कछु नाइ कैत
- २- जो बड़ो ओर ताई ऐ ।
- ३- गौतरिया जाइ गर हैं यारो ।

त० सम्मल - साँधन गांव २ मी० सम्मल से

बिरादर तो साब न हिया रही न हुवा ।
 अरे । हां का खास कजैत ऐ ।
 बिन्नी दजा ।
 जो लैं गयो बार पे रुपया गाँठि लगाइके
 का मत्लब ऐ
 कैसे सुतर - सुतर करऐ जाँ ।
 जंगल फिरने गयो जब
 छुटवा ते कोई मत बल नाइ
 जो मेरे फाँरे गयो ओ ।

लौडिया ऐ मेरी बरबबर
 तोह ते तो मैं कैरयो ऊँ
 मैय्या माँकं मरवामें हैं
 जोह जाति ऐ मेरी
 जल्दा जो बुलाए रस हैं रामदयाल

ग्राम गढ़ी - त० सम्मल

जे तो हमबार कुब्ज आदमी हैं
 ये तो खुद बीं गईं
 जायु फिकर ते जगते रहते जाँ तुम न होते तो ।
 हमते तो हमारे समझी ने नाय नाइ करी ।
 जाँ माने उठी ना वा बसत दण्डी चल जाती ।

--

बिजलीपुर - दो मील पर्व कुर्जा बुलन्दशहर

वाम्य

१- हल ले जा तो नाइ तू हा ।
 अब तक क्या कर रयो ऐ घनी देर हो गई ।
 तू तो मलै माणस कबी का गया जा हत्ती घनी देर कर ली ।

चंदोसी

किराजो तो लैहँ लजो - हिन्दू लोग
 किराया तो लैहँ लिया - (मुसलमान लोग)
 नाइ देउ - मन्देउ ।

हियैरें ई बैठि जाव कदि कै ।

बैकार कार कं जान्यो ।

पैसा तो बैकार जान्यो ।

गि आपकी गैर कादा बात ऐ ।

गु तो मने लै लखो ऐ ।

बढ़ हमांए से लै लखो ।

हमाइ खुब भई

हमएँ तो लल्ला मिले नाय ।

चम्पिच ई ले लेउ हात चाँ सान्त ओ ?

मुगरी बंते - मुडेरीपर से

जबो तो मैं कै रिया भूँ ।

चीका मिट्टी

पसीना जो है पाइन में चुचावन लागो ।

हिन्से ई आग आग चलो

चल डरु कार को ।

कोई लरिकाओ जवाल

सो विचारों रोइ रजो ऐ ।

सराय - सोमपाल सिंह, मुरादाबाद से दक्षिण में -

ठाड़ो ओ नं जो ।

हाल बाल तो चाय मिल जाय गाड़ी ।

वाइं लैइं तो अब तक गुमला बैठी रहेगी ?

बैठे रहियो, बैठे रहियो उठि कै मति बइखो ।

वा पार नाय रुकत वाग रुकेगी गाड़ी जो ।

परगना तहसील अनपशहर

नाम- प्रकाश सिंह, जाति- सिख, ग्राम- देवकरनपुर उर्फ बकैया- त० अनपशहर
जहांगीराबाद से २ मील - पूर्व - पश्चिम ।

चौदे चोर चोरी कं गए । अगरै बाइ गई आंधी । तो गु चोर
एक पाखे के नीचे खड़े हैं गए । आंधी सं पाखीं गिरां तो सात चोर दबके
मर गए । सात अगरै कुंल दये तो तीनन नें चीती सटक् गई । तो फिर
आगे कं चार चले गए । उनमें सं दो अन्न तनुआं कढ़ेरे की खाइ गई । एक
नदी, एक गाम कं लोट आयो, तो उनके जो और साथी ए उन्नं पूछी कहाँ
बात ? उन्नं कही पाखे नें मारे सात । कैसे- कैसे बाची व तीनन सटक् गई
चीती । हरे रे की । दो अन्न खाइ गई ननुवा कढ़ेरे की । एक नददी में
गिरां, में घर कूं आइगो ।

सूचक का पता

नाम - दुर्गाप्रसाद

ग्राम- सुनारखेड़ा

त० पिलिक

जिला- रामपुर

सैती संबंधी - परिचर्चा ।

सुबे उठ जाने के बाद मैं हमने जो अपना हल नया, जूर में जोतने लगे ।
जोती के बाद मैं दोपहर तक अपना हल चलाया । चलाने के बाद जब बी
पटेल पटैला मुकरा करके, पटैला- बटैला लगाके जब फारिंग होगए अपने घर
आए । फिर आने के बाद फिर बेलों को पानी फिलाया, नमाया, घास
खिलाई, उसके बाद मैं अपना -न्हाये - धोए, और फिर खाना -बना खाया,
घंटे दो घंटे अपने आराम किया, फिर अपने कई चारा काटने चले गए काट
करके लाए एक दौ फेरा, उसकी कुदटी काटी, कुदटी काटने के बाद उनके
फिर डारो, बेलों ने खाईं साम को अपने ठोर जो हैं अपने अन्दर बांध दिए
बांधने के बाद मैं सुबे को फिर बोई काम रहवता हूं फिर उसके बाद
उठे, न्हाये, धोए, उसके बाद मैं फिर हल ले गए ।

सूचक का पता

जिला - बंदायूं - तं गिन्नार ।

एक ब्राह्मण बड़ा गरीब जो । वाकी बैजरी नें लिखो वाको
एक परचा और कई के लें जाउ जाइ और बजार में बेचि जाओ गु- ए सो कलदर
बजार कं और रस्ता में देखन लगे वा परचाए कि यामें वामनी नें का लिखो ऐ । उसमें
लिखो भवो मिलो कं - देखा मंया । दक्ष की माता, सुक्ल को पिता, और बनी को
मह्या, और बिगरी को यार, जोरु जोर की, और पैसा गांठ को, ना किरी और
की । (कां गाइ रहें ऐ जो । ग गावंगी अब, अवहं नाइ, पुरों कर लेउ या किस्सा ए)

तो कोई एक सैर के बासाय को बेटा जाओ तो उन्में देखो परचा
देख हैं तो उन्में कई का कीमत ऐ इसकी ? उन्में कईके सो रुपया । सो रुपया । सो वाको
उन्में तो सोऊ रुपया दे दए । वो जो वो क्लो गजो सुससरि, वाकी बऊए सधुरारिं
हं समझे । तो वो क्लो क्ल क्लो निकरें तो पहले पाँचे मॉनि के हियां । व्हां बागी
बगीचा में, वाकी मॉनि के नांकर - जाकर, वे सिपाईं जी माली रहत ए बाग में । तो
वा बाग में कूजा ओ, वो व्हीं ओ सो बैठि गजो । तो उन्में मालिन से कई के मालिन
जो किन को बागु ऐ त तो कई के फलाने - फलाने को बागु ए । वो हमाइ मॉनि
ऐ । तो उससे कह जाओ के तेरो मह्या जाओ ऐ वच्छा । मालिन नें हं सो जाइके कई
क तुमारे मह्या बंठे ऐ बाग में - फुलवारि में । उन्में कई क हमारी मह्या आवेगो तो
सवारी सिकारी हुंगी और फाँज- फाँज सिंगरो आवेगे वाके सेग । हमारी मह्या कोई
सो- वेंने ऐ, राजा ऐ - बासाय ऐ । तो उन्में कह नां । तो उन्में चार रोटी
बिफरा की पेय के दे दई मालिन को और चार गन्ठा धवदये पिवाज के । तो उन्में
कई दे दइये कोई भूको पिवासो होइगो तो नाम लेके जाओ ऐ । तो कोई सो मालिन
हैं के रोटी जाई राजा के बेटा के हिया पाँची अपने बगीचा में और उन्में कई । लेउ तुमाई
मॉनि नें ये सानकं दे दओ ऐ । उन्में देखी तो बिफरा की रोटी, जिने न पोहे- बरघ
सात ऐ, घास, फाँज, तो और वो गन्ठा कुम्हे भये धरे ए पिवाज के । उन्में कई क वच्छा ।

फिर उन्हीं एक हड़िया वा मालिन पै मंगार्ह कोरी, कुम्हार के पै कुम्हार के पै ते
हड़िया मगायें के उन्हीं कुआ की मनि के नीचे गढ़डा खोदो और वो राटी और गन्ठा
वाह में धर दये और ऊपर ते लगाइ दखो पारो । उन्हीं कहि कि धरती माता में तोह
साँपे जातऊं जो, जो लाह में लाटू न जि कुसे न सड़े, न विगरे, जि ऐसी की तैसी
धरी रहें ।

वहा ते गु ए सो चल् दये । चला चल, चले निकरें तो वो यार के
लियां पाँचे । यार के लियां पाँचे तो उन्हीं जाउ बैठना दह कि- जाओ बैठो- बैठो
साब । सान- बून कूं क्य जाऊं । वे ए सो बोले चले जाउ के जाओ । बैठारि के उनको
हुक्का- पाना दे गए । गए मकान का फां गु बैठे ए, वा मकान में बेटी को नालसा
आरु टंगओ सुंटी पै, तो वो सुंटी हार को लील रहि ही । वे ए सो चल् दये वहां ते
होड़ के, कउ मँचोद दोणु लागेगो कि चुराइ लंग ओ हार ऐ । वे ए सो लांठि के
बाए कि यार हमारे कितगये ?

फिर मुजां ते जाइ के वे अपनी सुसरारि ममें पाँचे । वऊ ए हं
सुसरारि में । तो पाँचे वहां तो का देखें ? जब राति कूं सब सोइ गए तो बऊ पाँची
एक साधू के ढिंगा । जाको यारानी ओ साधूते । चाँकि गु पाँचा हं बड़ी देर करि के
सो वा साधू ने वाकी काटि लहं नाक, वाने जाइके हल्ला मचाइ दखो के चलिओ रे
मेरे आदिमी न मेरी नाक काट लहं ऐ । राजा को बेटा ओ सो पकल लजो । उन्हीं
हं सेर सोची क परचा की बात ठीक हं निकरी सबु ।

सूचक का पता :-

ग्राम - चकिया सलारपुर, त० सम्मल, १५ मील पश्चिम सम्मल से हयनपुर से ६ मी०

उत्तर - मुरादाबाद

नाम- जयपाल हिन्द (बढ़ई)

एक गरीब आदमी के दो लड़के थे । एक का नाम था गोविन्दा और एक का नाम था स्मरत । गोविन्दा बहुत गरीब था । और उसके मां बाप उसको छोड़ कर मर गए हैं । उन्होंने अपनी गुजर बढ़ी दुश्किल के साथ करी । कुछ दिन के बाद पढ़ाने में, लिखाने में काफी कोसिस करी । कुछ दिन के बाद जब गोविन्दा पढ़ गया, तो उसका मैय्या अपनी सादी कर के लाया । उसकी बहू का नाम सावित्री था । सावित्री बहुत सीदी हो थी । बाले चाल भी अच्छी ही उसने अपने देवर के व्याह में काफी रुपया खर्च करा । खर्च करने में उसको कोई फाहदा उसका ना मिला । सावित्री ने अपने देवर से कहा तुम नाँकरी पर चले जाओ । गोविन्द नाँकरी करने के लिए चला गया जब नाँकरी पर पहुँच गया हा तब कही जाके उसे अराम मिला ।

सचक का पता

सहस्रवान जिला बंदायूं

तो एक लड़का आ । अच्छा । तो उनके लड़का आ । तो अपनी बकरियां चुगान के काजें जाओ का आ । तो बीस बकरियां ई वाकी । तो एक दिना की बात ए कि एक मिड़िया आ कैहक ते चाईं साऊं कै तेरी बकरियनु साऊं रे । वाने हिसाब ते पक्षी वाते, वाने कइके मिचाईं वां पक्षि रयो ऐं ? वां साइ रयो ऐ । मैं अपनी मैनि ते पक्षि आऊं, तो वाने कइके अच्छा । आज तो तेई माफकी दई अपनी मैनि ते पक्षि आ तो । वो पूछन के तई गओ घरे । वाने कई मैनि री मैनि । एक मिड़ियां पक्षि रओ ऐ कै तेचाईं साऊं कै तेई बकरियनु साउ । वाने कई जा नौ कह दो जो आजु कहुना सार्वे, कल्लि के लेंय सवाइ दंगे बकरियानु । तां बोलो कै अच्छा । वो लोट गओ । तो वाने मर्न कर दई सो चलो जाओ । तीसरे दिना फिर जाओ । वाने कइके तेचाईं साऊं कै तेई बकरियन्नें साऊं । वाने कई कै वाप सै पक्षि आऊं । बाप के लेंय पूछन आजा तो बापू नै कई कै जा कहु मत सवइये, सारे की माइ डारोंगों जाइके ।

सचक का नाम - प्रकाश सिंह, गांव, देवकरन पुर उर्फ बफेड़ा तहसील अनूपशहर
जिला बुलन्दशहर

- १- हम पे तो बाकी मैन्ति ना करी जाइ तुम करौ तो कल्लेउ
- २- पचास पोत तो कहँ ऐ सुन केहँ नाइ देयं ।
- ३- पचास पोत के के आयाँ ऊं साट में ते उठि केहँ नाइ देयं
- ४- गि ऐं सा हमारे बड़े बूढ़े, इनकी सकलि देखि लेउ उठि के ना आवें पाम ना देयं नैकऊ ।
- ५- मइया बाजु हेँहँ आराम करौ, सवेरे ई चले जइयो, अरे मइया ज्ञानी जी तो अपने ई आदिमी ऐं हमारी और उनकी घर की सी ई बात ऐ ।

वाता

हमनेँ रात कूं ताऊन सु कहँ के तुम कहाँ सोए करे ओ, उन्ननेँ कहँ होइया बारे घेर में, सवेराँ होत ई उनके ढौरें गए के बरात में चलो, ताऊन केन लगे के तुमारी बरात में पैन्ट- फेन्ट वारेन की इजजत होए, हमारे बाबा केन लगे के तुमकूं पैन्ट- वैन्ट पैरा दंगे, तब तो राजी रआँगे । जो केन लगे के मै तो जाऊं नाऊं, तुमाराँ कोई धिंगराँ ऐ । जादाकरौ तुम मेरे लौंडा की बरात में भज्जइयो ।

- ७- अरे । इन वालकन ते काए कूं लेंग थेंग कर रयाँऐ
- ८- अरे । दै दाइ के एक लेग परी लेंग थेंग कन्ने में ई का पराँ ऐ ।
- ९- जानें हर की मूँठ पकल लई दे काए कूं मूक मरेगाँ ।
- १०- अब तो मुंसी जी यामें हेँहँ जाइगाँ दै चार मन तुम जो मूँठ पकल लई ऐ ।
- ११- नाज तो चाँम नो ढाड़ौ ऐ, जो एक पानी ओरु पाँ जातो तो ।

१२- हमसू मुंसी खार खाइ रौंरे पानी ई नाइं देइ । स्कु पानी और दे दे तो अट्ठाईसा
में ई कैरी ओ ।

१३- अब तुम देखि लेउ डाहरी के हार में कैसी गैहूँ डाड़ो रे । साब सब पानी भी
माया रे ।

ग्राम - बंडिया, किच्छा के पास- जिला नैनीताल यहां पर एग्रीकल्चर फार्म होने
के नाते प्रान्त के अनेक भागों के लोग यहां मजदूरी करने के लिए आते हैं ।
अपनी बोली तथा यहां की स्थानीय बरेली से मिलकर दूसरी ही बोली बनाते
हैं । उनमें दोनों के तत्व बराबर बने रहते हैं ।

अरे मुई (मई) तो गए ऐं जे ।

पानी पीयो तो पीलो मई ।

में नालऊं (में न्हा लूं) ।

किच्छा फार्म नैनीताल

इव फसल वसल कैसी होरी है ।

तेरे धान बोबे छः

कितने दिन होइगे तेरे कूं ह्दर ।

पांछ है महिन होगे है ह्सन ।

हसनपुर मुरादाबाद

में किह रहा था ।

मैंने थोड़े ई करा ।

आप का कर रवा

हमारो यू काम कर दो

वच्छा बु बी तो कुछ कह रिया होगा ?

तुम बीं तो बड़े बनन लग रए हो ।

मैं मुदाबाद कल ही तो कपड़ा लेन गया हा तबी क्युना कह दी ती, ऐसा क्या तेरे पै कढ़ाव पर रिजा ।

मुरादाबाद - गांव सरकरा त० विलारी जि० मुरादाबाद
चाँहान ठाकुरों की बोली

१- वा का करि रए ऐ ।

२- का मौकों गारी देरौ ऐ ।

३- का साराँ मोइ ठाकुर ना समझौ -

४- का गाजर मली समझ रबौ ।

बमारों की बोली

१- चौँ मझ्या तेरे कित्ता नाज हो गया ।

२- बो गया

३- पियनोवारों नाइ मझ्या ।

४- ठिमाई के अट्टे सुन पे बैठे तो पल्लंग सूं - रामफल के मामा बाइ रए ।

सम्मल से ५ मीं उत्तर

दवाई साने को बी गैद टैम हो जागा (मु० स्त्री)

इधै से तो साफ हो जागा (सास - सम्मल)

गे कद्दया । दे दया बाग को पानी - फांसियां जाति के लोग मुसलमानों से भिन्न प्रकार बोलते हैं ।

बजरिया में ते धैसे न बाप ? (सम्मल)

चकिया सलारपुर - त० सम्मल - मुरादाबाद सम्मल से १५ मी० पश्चिम
हसनपुर साहड़ हिन्दी-

कहा करि रख्यो है ?

बर्ष को गौति लारदी जी ।

(बैल को चारा डाल दिया जी)

वारि में हरदी लार दें (डार दें) आर चुल्हे में उपरा लगाय दे ।

बरे मुण्डे कित्थों नू जा रहा ।

(बरे लड़ने कियर जा रहा - वे जाट जी पंजाब से यहां आकर बस गए हैं उनकी बोली)

मेरे कन्ने चैंटी नै कट्ट लिया

(मेरे कान में चींटी नै काट लिया)

१- पाहिने बाह गए ।

२- रोटी सवाह लावो ।

बरे वासे कह दी जो हुक्का भर लाये ।

कहां को जार रहा है ?

बरे वो किया बड़ा वाला टेला । गया तो हा - गया तो था ।

गांव - सराय - उत्तर - पूर्व विलारी - मुरादाबाद

कच्चा नाय कर रयो ।

गर न काट लई नाइ ।

कहा है गर कच्चा नाय भर ।

दुद वे पैसा चाच्यार पैसा की मजूरी करे साव

लागे ना लागे तुम का करोगे साव ?

रांटी वे लई के नाइ पई ।

पानी लाग्योई नाइ फसल कहां से है जाय ।

दिसा मैदान गर ऐं वो बराती लोग ?

सम्भल सास

हिन्दी

चारों तरफ गांव ऐं धारे - धारे ।

देहात के गांव है ।

उस्से मैंने कही क्या है । (मुसलमान)

ना भई वस्तोप अगेला ऐ ।

ग्राम - मवई - पश्चिम - सम्भल से मुसलमान

अरे कां । गया ?

वाँसे ही कर रहा है

य तो कोई बात नाय ?

जब के बी ना सीदा हुआ जबी पानी पड़ गया

तू भी तो सीदा हुआ जबी पानी पड़ गया

तू भी तो टल ई निकल जागा

देखती रह्यो ।

साम - शाम

सुबह - सवेरा

मांडा - आटा गुंधा (हिन्द लोग)

गुंदा - आटा गुंधा - (मुसलमान)

नाँला - नैवला

टुकरिया - टोकरी

मुक्लावा - गौना

टपका -- आमों को निचोड़ कर तथा पकार कर बनाया जाता । अचानक आ पड़ता के अर्थ में भी आता है ।

यार वो कहाँ से आ टपका ।

टपकना - गिरना के अर्थ में ।

छल वल्द = छल वैल (चंदौसी से ५ मी० पश्चिम)

हमें रिक्से में बिठा के आप चला गया (मुसलमान स्त्री)

डैढ़ मन तोल्ही ती आठ जाने कम बीस की आर आठ जाने छिए रिक्से वाले ने

बहजोई = मुरादाबाद

अस्सी पैसे का टिकट होरिया है साव । एक रुपया बीस पैसे और मांगता है ।

दो बाईं सिकड़ हैं ।

जगै है (जगह है)

बड़िया वरप (बढ़िया वफ़ा)

बई बैठि जावो (वही बैठि जावो)

अब मज्जहवो (अब मत जाना)

नगला - इस्लाम नगर के पास बंदायू

सगुन्नु हं इकटे करि कै चर्लै ।

गाड़ी हं लेट ए बाजू ।

हल्लजो - हल किया

कागद के दाम - (कागज के दाम)

विनारैन का भाव बड़ो तेज ए ।

सिगरे बादमी बैठे हैं यां ।

खान के ताई - खाने के लिए

आइ रहें ए नाइ अबहं गाड़ी

हम तो नाँ कम रए हैं क मौसा रह गए ।

बहजोई - मुरादाबाद

पल्लंग निकर जा

माँतेरे जायंगे पल्लंग के ताई ।

इतकूं भम्मरि परैगी चढ़िबे के ताई

अब तक गाम्मे पाँवि गए हो से

पाइनु चलते तो ।

जामें बीचु नारें जाँ जग्गें देखि लेउ ।

बंदासी

कामरि लेन आए हम ।

हियाँ बड़ी देर रुकी गाड़ी ।

त० बहेड़ी - बरौली जिला

वाता--

हां मझ्या का बतामें , हल्ल ले गए, हल्ल सेत में टूटि गयो ।
 कामकां कलु नाइ मयो, बेकार में ही मारे गए जाजु । डंगरिया हं दै
 सौ मकी मरी जाइ रहं हैं । बरसाई नाइ मई । अब जाइ रए हें मझ्या,
 थौड़ी सी घास- फास लावेंगे चलिकें । अब सन्जार्ह कूं बैठिगें, अब नाय
 बैठिगें ।

वार्तालाप^१

- शोधक-- उनमें से भी कुछ हिस्सा मिला ।
- सूचक - कौन सी दुकान में से ।
- शो० - वही जो अमा बता रहे थे ।
- सू० - कुछ भी नहीं दिया ।
- शो० - क्या कह दिया ।
- सू० - याँ कहे कि मेरे पास कुछ है नो, नहीं देता ।
- शो० - और जमान में से जो रुपया मिला, कितना था ।
- सू० - तीन सौ रुपये दिये सिर्फ़ मैंने जो बताए है न ।
- शो० - कितने को बेचा है सब ।
- सू० - छब्बीसों को, और उनमें से तीन सौ रुपये दिये सिर्फ़ ।
- शो० - और कुछ भी नहीं दिया ।
- सू० - बप्पन तोले सोना हा, न उसमें से दिया कुछ । घर को जो बीज ही चार पांच छः हजार जो दुकान में जमा ही, चार मेंस ही, गाड़ो ही । न दुकान में से हिस्सा दिया और जो चार मेंस ही न साफ़े को, उनमें से बेचो रहे, लाते रहे, उनमें से कुछ ना दिया ।
- शो० - अच्छा, वे फटि या- बटिया फिर कहां गई ।
- सू० - बुनी जा, सब बेचते रहे, लाते रहे, वे ई । हम याँ कहते रहे अब कोई बात नहीं । माईसाब हैं, कोई धोका थोड़ेई करेंगे । अच्छा मास्टर जी । तुम्हें सच्ची बताऊँ, माईसाब ने तो वहां धोका किया, वज्र ने यहाँ धोका दिया । बुनी जी! इस ओरत ने यहां धोका दिया । अच्छा, कुछ बात नहीं मास्टर जी, याँ कोई बात नहीं । जो बीतो सो बीतो । इस हमारा घरवाली को जो नाजायज बात

१. सूचक- ओमपाल सिंह, ग्राम- गैसपुर, दादरी और सिकन्दाबाद के बीच में जिला कुलन्दशहर ।

हुई इसका कुच्छ पता नहीं चला । सच्ची बताऊं तुम्हें ।

शौ०- रामेश्वर दयाल को ही वजह से ऐसा हुआ ।

सू० - कुच्छ भी नहीं पता नहीं चला कि हैं मामला ए । गदिये
की बात सुनाऊंगा तुम्हें मैं ।

उसके बाद हम सट्टे का काम करें हैं ए । उसमें
चा पांच पेटो चांदो को बेचो । तुम्हें सुनाऊं ।

शौ० - अच्छा ।

सू० - ऐसेई कोई सालभर में छः हजार रुपया कमाया । सुनो,
कुच्छ बात नहीं । अबी अपना पढ़ि बी घर, पढ़ा बी
दिए । एक दिसे मेरा बेन मे दानगर रहे हमारे । वो
जाई । उसकी सोने का रामनवमी ई साढ़े ने तोले की ।
नास्टर जा । अब देखो, नुस्सान की बात बताऊं तुम्हें क
अच्छा, इसकी मों ने क्या काम करा ऊ । हमारे बहन ने
क्या काम करा के इसे देदो रामनवमी । वे घर में गोल
होता है न, उसमें सोने की रामनवमी गेहुंजी में धर दई ।
जब बुबह को जरूरत पड़ी के आटा पिसवाली तो उसने भर
के टोन में जैसे गांव में लौंवे नारं टोन, उसमें गेहुं भर के
दे दिये । वक्की पे चले गए पिसने । जब जो आटा गेरनेवाला
हा, उसने निकाल लई । बताओ, साढ़े नौ तोले का रामनवमी ।
काई पन्थरे सौ क सोले सौ का माल हा । कोई बात नहीं,
शाम की पिस के जब वो आटा बी जागया । जब वो रुई
जारई । रुई के लाली, वो रामनवमी दोजो मेरो । वामे
हात छाल के देखा तो वामे कहों ।

कहानी^१

एक दुर्गरिया ई इकली । ना, बाके वालो जो, ना बच्चा जो । जो वो रोओ करे लौफ जो सबेरे, कि हे भगवान । के तो मोड़ धरु धेरा दे, के दे मोड़ मोति, दोहन में ते स्कु काम करि । देखियो । ऐतेई में बाका प्रार्थना परनेपुर के हियो पाँचो, श्री किशन महाराज के हियो, और श्री किशन महाराज कजी सिपासन डारुओ । उन्ने श्री किशन महाराज ने नारद जो बुलाए । उन्ने कई के देखियो । कौन भगत् सताओ ऐ, के कोई गाइ सिंग ने पछारी ऐ, के कोई सांडू बाधात्मा किन्ने सताओ ऐ, देखियो । जाइके । उनको काओ, उन फल्ल भारत में तोनी लौज में फिर आवत ए नारद मुनी । तोनी लोक में फिरजार, देखि जाए, के तो कोई नाओ । देखि का, कब वो दुर्गरिया रोइ रह ऐ । उन्ने कई कि बुढ़िया माता क्यो रोइ रह ऐ तू ॥

के रोइ का रहै जे, के मोपे कोई बालो नाइ, बच्चा नाइ, में इकलो जे सो रोइ रहै के । के तो मोहु मोति मिल जाइ के धरु धेरा मिल जा ।

तो तू साठि बस्स का, तो पूँ करेगी कौन । जो तेरे बच्चा पैदा ऐ जाइ । तोकुं धरु धेरा कौडः न करेगी और न तेरे बच्चा पैदा होइ । तो के मोहु मोति मिल जाइ । दोनों कामनु में ते एक काम ऐ जाइ ।

दे ए सो नारद मुनी श्री किशन महाराज के हिया पाँचे । उन्ने कई, नती किशो ने सताओ, न किसी सिंग ने गाइ पछारी । एक बुढ़िया ऐ । देख दुर्गरिया । उन्ने कई से - से रोइ रहै ऐ, के तो पाइ मोति दे देउ, के बाजी धरु धेरा देउ ।

उन्नन कई जाउ मिलेओ धरु धेरा ई ।

१. सूचक - बेनीराम जाति अहेर, ग्राम - फैजपुर बैरा, तहसील बिसौली, जिला बदायूँ।

क्या जान बजो, के उसको वाको, वस जजैई हात्
पक गजो, दुलारया को, समके । जय बजो कार वोर जादा रोवे ।
उन्ने कई जि मला मई मेरो हात् पगजो, वाको पानी कोऊ देवा
नाह ।

पन्धरे दिन के बाद उसको हात् पकै फूटो, फूटो
ओ सो वाने निकरो मिहुना ॥ जाह रई हे समके में ॥ मिहुना
निकरो सो उसो तो वो मिहुना ओ । जिसा तरे वो हात् वो सो
दवा-फवा लगाई सो ठा हे गजो । उन्ने एक शिरिया ले लई,
दुकारिया नै । वाको दूध पिजाओ करे सूब डटिके । मिहुना ओ
सो सूब अच्छी हे गजो । तो वाफि ज्वानि तुलि गही वो ओ सो
जम्मा के निकरो । जि अच्छी मई के मही लागन को जम्मा
हे रजो हे । वाने रई तो के घर पेरा तो हे गजो हे बोल
वाला को । तो फिर, गो वो जो रही करे, तो पालो करे,
सूब हे गजो अच्छी ।

देसिये । इह बास्साय के सेरफना में पैले सोम्बरु
रही जातुओ । बेटा अपने बाप परसन्दि वर को करतु ई । उसो
हे सादो रीतु ई, समके । सोम्बरु ओ वाके बास्साय के यां ।
जुरे दुनियों के राजा ओ भूप, दुनियों चलो निकरति हे । तो वो
मिहुना पोली । उन्ने कई के, जम्मा रो, जम्मा । के सोम्बरु
फलानी-फलानी जग्गो राजा के हियां जुरो हे, में ऊं देसि आवती ।
उन्ने कई के तरे बाप को छाड़ा जारो, जाति को मिहुना, राज नै
पेट पे पाउं धड़जो तो पिन्व सेना हे जाहगो तो में जाऊ करम
को नाह रउंगो ।

विवेच्य दोत्र की विशिष्ट शब्दावली

दसैक	लाडला - उतावला
वाम - पाँधा विशेष	लीजना
गैल - रास्ता	घोका
मोदटा- मोटा	मीक
औघड़ - बेढंगा	मक
सौना - सोना	अधी- अमी
नी-	धूंगट
गूठा- अंगठा	धुंद
साढ़ - असाढ़	अक्की
ससबू - सुसबू	तुमारा
कट्ठा -	में बी ती (में भी था)
तम - तुम	गुब्बा - गुब्बा
बलावे (बुलावे)	तुजे- तुफे
अपसूरत	पाँदा - पाँधा
ठा - उठा	जीब- बीभ
चलाक - चालाक	नई- नहीं
दसूता - दो सूत वाली	वाज - वाफ
धनरु - धनुष	समज - समझ
नाज- अनाज	साज -
कत्रिरु - इक्कीस	होट
क्यावन - इक्यावन	दपेर - दोपहर
धेला - अधेला	दाइना - दाहिना
मठाई - मिठाई	ना धोकर- (नहा धोकर)
विंदी, माथे पे लगाने की	ननियाल- ननिहाल
धांस - राँब जमाना	यां - यहां

वां - वहां

वऊ - बहू

पैलवान - पैहलवान

साव - साहब

सुराई-

दुलन - दुलहन

जा रै ते- जा रहै थे

कचैरी- कहहरी

पैन - पहन

भागवाण - भाग्यवान

माणस - मानस

पिलशण - पेन्शन

पाकिस्ताणी -

नूण- नमक - निमक

नौमा- नौमी

पेड - पेड़

पडोसी - पड़ोसी

अकड़ - अकड़

बड़ा - बड़ा

डाढ़ा - डयाढ़ा

हाइ - हड्डी

चपड़ासी - चपरासी

सुन्हरी

रहैस- हियायश

रहैवै - रहती है

लहास - लाश

लहेर - लहर

बकमल -

नौ कला - अनौला

बग्धी

पश्चिम - पच्छिम

भिच्छा

गज्जक

बुज्जे - पूड़े

मदठा - दाढ़

गन्ना - गाड़ा

तुपफाण

सब्बा - नौया

अम्पड़

नम्मा - ६ वां

धुरा - गंवार

नुक्ता - (पते की बात)

कत्का- कार्तिकी

कप्तेन

जम्मा - जमुना

कुन्वा

जम्माई

सुस्मी

मिस्पत - बृहस्पति

कस्वा - कस्ती

तस्मा
 बक्सा
 सठयाणा- सठियाना
 जुत्याना-
 ज्योनार- दावत
 सिकार्- एक दवाई
 चर्चा
 भुर्ता
 गर्दा
 सयार्- श्रद्धा
 कर्पा- कृपा
 सर्वस- सरविस
 पग्ला
 घग्ला - घुटाला
 खुज्ला
 कत्सा- वर्तन पानी का
 गम्ला
 परली
 क्वार
 ग्वाल
 स्वाव
 दास्सी
 क्षिणा- क्षिपाय
 हम्बई- हां भाई
 कुसतौ - कुसतौ
 कुच्यइये - कुच चाहिए
 मास्साब- मासाब

मल्ले- मारले
 भादरी - बहादुरी
 मांत - बहुत
 मतरे - बहुत रे
 वेउता - लड़की का लड़का
 समे- सब हैं
 पिक्ता
 अगहण
 धीमर- कहार
 पाम- पैर
 गमार
 सामण
 सुणा मांगे - सुनावेंगे
 मिलट - मिनट
 चिमली - चिमनी
 लील- नील
 लिलाम - नीलाम
 लौनी - मक्खन (खुर्जा में भी प्रयोग)
 मोण्णी- मक्खन
 धौब्बी - धौबी
 गिण्खा - ग्या, गा गस्- ग्ये - गे
 गर्ह - गी- गिरगी
 रहया - रहा
 लिवाया - लिया
 करा- किया
 चल्या - चला
 देणा चाहा- देना चाहता

वरसण लाग्या

काढ़- निकाल

कय- कव

जद- जड़

तद् - तब

हव- अब

अक- कि

कधा - कही

न- यों

क्युं- क्यों

ज्य- ज्यों

इकर- इस तरह

कुकर किर- कैरी

जुकरे- जौ

क्यु कै- क्योंकि

ओड़ - ओर

घोटे - ओर

गेल- साथ

इये, उये- यहां वहां

का- कहाँ

वो - वहां

इधर, उधर-

अर, होर- और

पर, लक्, लो- हक

नीं- नहीं

ईं - ~~कहीं~~ ही

बी- भी

तरा- तरह

ऊपर- ओवे, रे

अरे, मन्ना

काह - किसी

कासा- धातु विशेष

खरा- खुदे

खोल - पानी खोलना

धाम- धूम

धरा - धड़ी

चाक- कुम्हार का चाक

चाक- विवाह पर रीति रिपाज

झाक- कलेऊ

बन्जर - ऊसर

बिगर - बिगड़

वधर - एक विशिष्ट जाति

बूरा - बुरा

बैरवानी- स्त्री

मया- हुआ

भूबरिया - भूमरिया

निव्या - समाप्त

निस्पत - रिश्वत-

बह्यां - मां

मददो - मेदो

मदह्यां - मेंगपड़ी

मकली - हुबकाई

मफली - बीच की

माढ़- चावल का पानी

माज - वर्तन साफ के

मोड़ - मोर - बहो मोरना

रए - रहे

रेवेवा - रहता था

लइग- तरफ

लोट- लैट जाने के - नोट

नोट- लोटना

लगा - किसी काम का प्रारम्भ

सकेरना - क्षाम - भगाड़ लगाना

सुख- लाल- लाल सुख

सौति- सौति

अज्ञान बक-

आठ

हन्नाप

उचा

किला

कुवाड़ - किवाड़

कैड़ा - कड़ा

खैस- सूत का कपड़ा खुर्चा- बु०

घणा- बहुत

चल्ली- छलनी

चून - आटा

चौकसा - अच्छा

छौकसा- हिलका

जनावर - जानवर

जरीमाना

जबरदस्त

दूम- जेवर

हमहल्ला - जेवर

टोइटा- घाटा

टोटिका-

टोह- खोज

उरपांच- ऊरपांक

त्ता- त्ता

तड़के

तमाक

तावड़ा - भरपट

तिवहार- त्याहार

दलैल - झिल

दिमाक - वि० अ०

दौज-

धुप्पल

नारि- गरदन

वक्कड़ - बानूनी

बगड़ - अंगन

बड़गिया - घुरुगया

बल्लय- कैल

वाढ़ी - बढ़ई

बांडा - ईस

विजार - सांड

बोबा - दीदी

बोबा- धन दौलत

बेकफ

बूटा - पांथा

व्या- विवाह

मुण्डा - दुरा- भांडा

याउठा - बुरा)

माह- माघ
 महिना - महिना
 मैङ्का - मिङ्का - मैङ्क
 मैक- पीहर
 रपटन - फिसलन
 लत्ता- कपड़ा
 शैत- शहद
 सुम्बार- सोबवार
 सूधा-
 सज- सहज धीरे
 हाक- बावाज
 ग्यारे- वारे, नरे
 उन्नवास- हस्तार
 फज्जाज - जहाज
 मस्हर- - मशहूर
 टाल- घंटा
 बगाह- फैंक दें ।
 सौड़- रजाई
 सिंढा = बिसैरना
 झोल- झीलना
 कीड़ी - चोंटी
 दुवाली - देखली
 म्हेस- भैंस
 नाइ- गरदन
 पहाण- पहचान
 पुणमासी-
 व्यांत- व्यवस्था- पहासू- हस्तरी

बाल्ला- बाला- बाल- गीला
 ठाठे- तगड़े
 लात- पांव
 हौ का- हुक्का
 वाण- वान- रस्सी
 वार- देर
 चांदणा- प्रकाश
 कोम्या- नहीं
 दुवाई- दवाई
 मिनोई - बहनोई
 जुअस - जवाब
 आरकस- आलस
 बीजना- पंखा
 वैड़नी - वैश्या
 मगर कछोस- बहाना किया है
 मा मई - आपत्ति - मृत्यु
 मोलुवा - कुल्लड़
 कच्चा - पार साट के
 ररकि - खिसकना
 रासों - फड़ड़ा
 रेवारों - बटे- शंट - सामान
 रेहपटों- तमाचा
 रोज- रुलाई
 लाडनी - लाइ
 सई सांभ - साम में पहले ही
 सपड़ी - अमरुद
 साजो- सावित

सिर्दोस - जल्दी

सुधि- सबर

सोटि- कड़ी

सोहड़- नाश

हत्या- आफत

हार- सैत

हेलुआ- बरसात में बड़ी नदी में मरी नाव का कीठा के

लिए छोड़ देना- जाओ तो हेलुआ खिलवा में ।

गढ़न के नाचे का भाग और गाड़ी के माहंडे के नीचे
का भाग हेलुआ कहलता है।

हवा- भूत - प्रेत के लिए

ढेणस - टिन्डे

गलथनी - बैलों की नाथ में बांधते हैं ।

मुक्कीना- बैलों के मुंह से लगाने का

बडुवा- बिना बहिया हुआ बैल

कुछ मिश्रित शब्दावली विशिष्ट

अंगा- सं० मोटा रांटी पाटी भी कहते हैं

वत- दसरी जगह

अपुठारों - कि० वि० स्वतः

अफरु गई - सब पेट भरना

अवार- अवेर- देर

आतें - कू० - ऊबाहुआ- परेशान

बोढ़ना- दुपट्टा

उक़ोर - मोड़ का खेना

उज्जीतों- प्रकाश

और सं० पदा

आवर- सं० नई व्याख्य गाय

बोटपाई- उपद्रव

बोड़ो- वि० गहरा

कटज- (कू)

कपट- कपटाई

कीकबो- चिल्लाना

कुत्का- भुयगां अंगठा

कोड़ुआं - चक्कर

सटका - चिन्ता

सडेरा - सण्डहर

सडेरा- सानी का बत्तन

सन- दाण - समय

सांद- संदक

घोंदू- गीदड़

चकचांदा- हल्लत - वाफात

बु० शहर

जंगी - बहुत बड़ा

ज्वारों - बेलों की जोड़ी

जंगरा - गाय का छोटा बछड़ा

फिकना- संतुष्ट होना

टपका - आप

टीम- मस्तक

टांगला- टंगा - रुपया

उरगजों - बान्सुष्ट ठनगन करना

डवका- सन्देह

डोल डाल- चांद- मोका

तीती - गीली

तोरु- फैसला

थोक- वर्ग

दगरो - राह

दांड- पुलिस की दांड पड़ना

बिज्व- निश्चिन्त

पंगति- दावत

पुंगा- उपद्रवी

पस- पस

पीड़ि- तना

फरिया- लहंगा

बंजु- व्यापार

बदटा - शीशा

बटा- बड़ी रस्सी

निरा - बिल्कुल

वालि- वारि

इकिली -

घरुघेरा- घर घेरनेवाला

ऐतेह - इती में

मिंघासन - मिंहासन

सताजो- सताया

पक्षारी - पक्षाड़ा

वस्स- वस

हियां- यहां

पांचे- पहुंचे

मवो- हुवा

ववो - वो

पग्गजो - पक गया

क्षिरिया - बकरी

वास्साय - बादशाह
 सैरफना- शहर
 सांम्बर - स्वयंवर
 परसन्दि- फसंद
 डाढ़ी जारों- गाली
 जोन्न- जोड़ना
 चों - क्यों
 हम्मार- हमारे जैसा
 हज्जु- हज
 थारु- थाल
 होप- फूल
 आमसन- गहना

विशाली

गाम्मे- गांव में
 हम्मे - हां माई
 विच्चा- वाचा
 गोंतरिया-
 पैर- - खलिहान
 कैत ऐ - कहते हैं
 हुज्जत - भगड़ा
 लोथ- आटे की
 किसी- उस भी
 विन्नी - उसने
 हन्ने- इसने
 रवों- रवों
 कह- कहीं

मुई - मुई वहीं
 नालजं - न्हालूं

सम्भल

वालिय- पिता
 वच्चा - पिता
 साला- मांसी
 मिलिक- दैत
 ककै - चाचा- ताऊ
 मको- पीहर
 साफा- मुड़ासो
 पन्हैया- जूता
 फसलानों- दहेज के प्रति विशिष्ट अर्थ
 पल्ला- छोटी टोकरी
 बर्घ - बैल
 बिरादर- बिरादरी
 हियां- हवा
 कजैत- असली मालिक
 मतबल- मतलब
 सुता- सुतर- टुकर- टुका
 जगल फिरना- विशिष्ट अर्थ
 फौर- पास
 बरब्बर- बराबर
 कुळ- विना पढ़ा लिखा
 समधी - लड़के - लड़की का सुसर
 हमार - हमारे

पल्लंग- दसरी और
 मम्मार- मीड़
 दुदुवै- चाच्चार
 मजरी- मज़दूरी
 दिसा - मैदान
 धौरे- धौरे- पाय- पास
 दहात- गांव
 बाँसेई - बेकार
 भाड़ा- बाटा गुथना
 माढ़ा- माढ़ना
 मुक्लावा - गाना
 टपका- आम
 चुंगान- चुगाने का
 काजें- फिर
 तेचाई- तेरे लिए
 मिचाई- मेरे लिए
 मँनि- बहन
 लैइ- लिए
 करीं - कड़ी
 थौरौऊ- थोड़ा
 हरु- हल
 डरेग उले
 पटुलिया - सुहागा
 समा- अनाज एक प्रकार का
 हे - थे
 गरीब
 गुजर

ही - थी
 करा- किया
 वामनी - आज की बुबाई
 बनी- हज्जत बनी हुई
 विगरी
 जौरु- स्त्री
 जौर- ताकत
 विफरा - बेफ़ाड़
 गन्ठा- पिआज
 फां- जहाँ
 मुवाँ- वहाँ
 दिगां- पास

पीलीभीत

जाट- शत्रुता
 ओसर- अनव्याई गाय
 सपट - सोपटा
 फांकर- सूखी फाड़ी के कांटे
 ढपिअल- मोटा
 तेहा- कोष
 बेंदु- हत्था
 डींगर - जू
 गिलगैरिया - गिलहैरिया
 कुरिमाग कुन्वा
 लीख- गांठी की लीक
 मनचारिन - मना चारों- बु० शहर
 विरानाँ- बेगाना - पराया

चुरिया- बिहिया - चुड़ी बीहिया

जुन्हैया - सज्ज- चांद- सरज)

जबज्जती

चमरिजो- चमारि

बंग- मंगी

ढे - ढेरने

मान्न- मारने को

कन्स- मिन्नत

खुन्स- दुश्मनी

कुटइवे- पिटवाने

गमदटा- गंवार

चाँतगा- चबूतरा

घेर- जानवरों के रहने का स्थान

सिङ्क- जानवरों के रहने का स्थान

दनकाँर - परगना

नियार- चारा

नियारदास- बेवकूफ

जौडरी- ज्वार

चरी- चारे का ज्वार

गुरवनी- गेह बना

गोजाई - गेह जाँ

तीमन- साग

तरकारा- साग

आमा- अमिया

लेजा लाँजी- चिड़ाने के लिए

लाँजो- सँटाई

कैरी- बिना ठुली की आकी

बम्बा - राज वहा- बम्बी

गूल- नाली

दपरिया- छोहा खेत

काँनिया- कौटा खेत

आजत- चरा गाह

लैहंडा - पोखर का नाम

लैहंडाँ - फुंड

बन्ना- एक पेड़ की किस्म

बकाइद - एक पेड़ की किस्म

हुलिया - छोटी की कटोरी

झोला- फल का कटोरा

दादरी

कैवेरा - क्या पता

काँण- कान

पीसेबी

कटटी - इकट्ठी

निकड़-

गोसे- मेड़ा- उपरा

खोड- लड़ावनी- लड़ावनी

नेही - मुड़ी

बुहारी- फाड़ू

बोखरो- रुड़को- खरहरा

मैन्ति- खुशामद

पोत- वार

धिंगरो- जबरदस्ती

डोरे- पास में

कन- कन्ह

मज्जइयो - मत जाना

लेग्लेंग- भगड़ा

एक लंग परो- अलग

डिमाई- डिवाईंग वि० अ०

इर- फिर- लाँट फिरकें

अगल्ले- आगे के

फिरंगे - लाँटंगे

सिगरी- सब

थोरे घने- थोड़े बहुत

करवट - बगल

इधे- उर्ध्व- उधर- इधर से

हरवेरी- दरवार

मेर - मर्क- भेज सकें

वाँन्नाई- और नहीं तो वि० अ० आश्चर्य व्यक्त करना

भांत- बहुत

पोहे- जानवर

धक्कधक्का-

ढोर- जानवर

नाल- बैलों की नाक में पड़ने वाली रस्ती

डगरियां - बैल

बरसाई- अनाज की साना

सन्जाई - शाम

हिंगोटा- जानवरों की नजर न लगे

चाददे

अगरि- आगे

पाखे- आगे

पाखे- दीवार

तानन- तीनों

दोअन्ने- दोनों ने

कढेरे - जाति

नददो-

बाँचो- बीती बितना

हचरे की

होहाए- तुलै हुए

जान्दे- जाने दे

बरो- बड़ा

चुके- चुगकर

विल्लो- विलैया

सैतानी

अगेला- वागे

मुड़ेला - बैल के सिर में

बाधने की रस्ती

सम्पल

गैटटेम

साला

बजरिया- छोटा बाजार

बर्थ- बैल

गाँति- चारा

लारदे- लारदे

उपरा- कंडा

कन्ने- कान

कट्ट- काट

इचं- इतना

उत्तै- उत्ता

किरी- कितना

साढ़े - आधा

हा- था

पीलीभीत

लुटिया - बड़े लोटा को कहते हैं

उद्द

अर्रा- अरहर

मुरी- मसड़

आ गि- अगि

मिलौठा- सिल

गौतरी- दावत

गौतरिया- रिश्तेदार

मचवा- खाट के पाये

त्खड़ी- तराजू

मिलक- रामपुर

मुवे- प्रातः काल

पटेला- सुहागा, मेहरा

मुकरा- खोलकर

फारिग- समाप्त

खाना- बना

ढोर- जानवर

अनुपशहर

होज्जाजा- हट जाओ

सिल्ट आस- निपट आए

लौद- वनसुटी- अरहर की लकड़ी

लौद- का महिना

चन्दर - कल दिए चमारों की बोली

किराऊ- किराया

मन्देउ- मत दो

गैरकादा-

लल्ला- लड़का

हिन्से - यहां से

झोरी-

चम्मिच

मुगरी- मुडेंरी

चीका मिट्टी-

सराय आवला

हालचाल- शायद

आगू- आगे

पीलीभीत

कसीफल

भाटा- बैंगन

कुम्हडा - फेठा

बद्धा - बेल

गोरु- पोहे- ढोर

व्यूटा- बड़ड़ा

गुरुआ - महराजा स्त्री के लिये

महतिआ - मालहार

बढ़िया- मुठिया

लड्डू - बेल हांप

बटुआ- बड़ी पतीली

कस्सी- फावड़ा

लौद- अरहरह की लकड़ी

लौद- माहना

चलामनी- दूध बिलोने का बत्तन

दुहावनी- दूध निकालने का बत्तन

कहरिया- मिट्टी का घड़ा

थारी, कटोरा, बैला, गडई, गिलास, चीमटा, बेलन, तवा, चूला, पत्तीली, चमटिया

पुरुजा- छोटी मलसिया

सकौरा- कर कली- करबरी

घमड़ा - खमड़ा - करवा - सूरख वाला)

नांद- मिट्टी की बड़ी

कमोरा- मांट - बडक कडा

वान्टी- बाल्टी

लेजू - रस्सी - नैजू भी कहते हैं ।

जेवरी- रस्सी

कटिया - कटरो - पडिया- पड़रा

मुंडेला- बेल के लिए रस्सी

मुच्छीका, बेलों के लगता है

सेंटा- नाक पहनने का आभूषण

मुंड - सरक में का मुंड

सेंटा- सरकन्डा

पतेला- पतेल के पूरा

बांड- सरकंडे की

मूज- रस्सी वाली

बान- रस्सी का बान

दिबिया- छोटा दीपक मिट्टी के तेल की दिबिया

परगना पहास- ग्राम- सहार

डुलक- पेड़ की चौटी

पीढ़- पेड़ का तना

गुहलहदा- टेनी

कंजर बंजर - शरीर का एक एक पुर्जा

वारक्स- वालस

घुटेलो- घोट्ट की मार मारना

भिन्नास- स्त्री मार मारना जिससे अधिक कष्ट होता हो ।

मूंड- मंडना- ठगना- या बाल साफ करना)

खुरीला - खंडा

नाह- गैह वर्गारा बौने वाली (नाह)

नजात- बांस का

करवा- कुंदासा सो फारे के ऊपर की तरह

फाना- पीछे लगता है हल के

कीली- हंस में लगाने वाली

नारा- जो जवा में लगता है

जौता- जवा में लगने वाला

YEnglish

Bloch & Trager, Outline of Linguistic Analysis- 1942

Census of India- 1961 , Vol. I Part II-C(11) Language
Tables.

District Gazetteer - Vol. IV - Meerut, 1904

Vol. V - Bulandshahar- 1903

Vol. XIII- Bareilly, 1911

Vol. XVIII- Pilibhit, 1909

Vol. XV - Budaun, 1907

- Rampur, 1911.

Gleason, H.A. - An introduction to Descriptive Linguistics
Revised edition, Holt, Rinehart and Winston
New York.

Gray, L.H. Foundations of Language

Grierson, A.G. Linguistics Survey of India, Vol. IX
Part I - 1916

Hockett, C.F., A Manual of Phonology, Waverly Press
Inc. 1955.

Lennard Bloomfield, Language - New York, Henry Holt and
Company

Mario Pei, Story of Language.

- Pike, K.L. Phonemics- University of Michigan, 1947.
- Prasad, Bishwanath, Linguistic survey of Sadar Sub-division
 of Manbhum and Dhalbhum - Bihar Rastra-
 bhasa Parishad, Patna.
- Sapir, E . Language, 1949- Selected writings of
 Edward Sapir.
- Weinreich, V. Languages in Contact- Mouton & Co. 1963

पुस्तक-सूची - हिन्दी

डा० अग्रवाल, कैलाशचन्द्र , शोसावटी बोली का वर्णनात्मक अध्ययन
लखनऊ विश्वविद्यालय , सन् १९६४

डा० अग्रवाल , रामेश्वर प्रसाद, बुन्देली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन,
विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाश, लखनऊ
सन् १९६३

डा० उम्रैति, मुरारी लाल , हिन्दी में प्रत्यय और विचार , विनोद
पुस्तक मन्दिर, आगरा, प्रथम संस्करण

डा० गुप्त, ओम प्रकाश, मुहावरा- मीमांसा, बिहार राज्य भाषा
परिषद्, पटना , सन् १९६०

गुप्त, कृष्णानन्द , बुन्देली कहावत कोश, सूचना विभाग, सं० १९८८

गुरु , कामता प्रसाद हिन्दी व्याकरण, सं० २०१७

वचतुर्वेदी, रामस्वरूप आगरा बिले की बोली , हिन्दुस्तानी
स्कैडेमी, इलाहाबाद

चतुर्वेदी, सीताराम, भाषा लोचन , हिन्दी साहित्य कुटीर
बनारस , सं० २०१०

अन्वाटुज्याँ, सुनीति कुमार भारतीय कार्य भाषा और हिन्दी
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली सन् १९५७ ई०

डा० जैन, महावीर सरन, बुलन्दशहर एवं सुरजा तहसील की बोलियों
का सांस्कृतिक अध्ययन, १९६०

श्री जैन, माई दयाल, हिन्दी शब्द-रचना, भारतीय ज्ञानपीठ
प्रकाशन, प्रथम संस्करण - १९६६

डा० तिवारी, उदय नारायण, भाषा शास्त्र की रूप रेखा,
भारती मण्डार, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण

तिवारी, उदय नारायण, भारत का भाषा सर्वेक्षण (ग्रियर्सन)
खण्ड १, भाग १, प्रकाशन शाखा
उत्तर प्रदेश सन् १९५६ ई०

डा० तिवारी, उदय नारायण, हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास,
भारती मण्डार, प्रयाग, प्रथम संस्करण
सं० २०१२ वि०

डा० तिवारी, मोलानाथ भाषा विज्ञान, किताब महल प्रकाशन,
इलाहाबाद, तृतीय संस्करण - १९६१

डा० तिवारी, मोलानाथ हिन्दी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद
सन् १९६६

अद्विवेदी, देवीशंकर भाषा और भाषिकी, लक्ष्मी नारायण
अग्रवाल कागरा, सन् १९६४

प्रसाद, विश्वनाथ "य" और "व" का रागात्मक निरूपण,
भारतीय साहित्य, अप्रैल १९५६

- डा० बाहरी, हरदेव, देशी शब्द तत्त्व, हिन्दी क्लृप्तिलेख, वर्ण
८, अंक ४
- डा० बाहरी, हरदेव, ग्रामीण हिन्दी बोलियाँ, किताब महल,
इलाहाबाद, सन् १९६६
- डा० बाहरी, हरदेव, हिन्दी उद्भव विकास और रूप, किताब
महल, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९६५
- डा० माटिया, कैलाशचन्द्र माटिया, ब्रजभाषा और लहरी बोली का
तुलनात्मक अध्ययन, सरस्वती पुस्तक सदन
वागरा
- हिन्दी में अंगीजी वागल शब्दों
तात्त्विक अध्ययन, हिन्दुस्तानी स्कैडेमी,
१९६७
- हिन्दी में अक्षर और शब्द की सीमा
(डी० लिट् थीसिस (पाण्डुलिपि)
- अ० रावत, चन्द्रमान, ब्रज में भाषा का विकास, ब्रज साहित्य
मण्डल, मथुरा
- सर्वनाम एक नवीन विवरण, भारतीय साहित्य,
वर्ण ७, अंक १
- अ० वमन, धीरेन्द्र, ग्रामीण हिन्दी, १९५०, साहित्य मन्त्रालय लि०
प्रयाग

- डा० वर्मा, धीरेन्द्र ब्रजभाषा, हिन्दुस्तानी एकेडेमी उत्तर प्रदेश,
इलाहाबाद, सन् १९५४
- डा० वर्मा, धीरेन्द्र , हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तानी
एकेडेमी, संयुक्त प्रान्त , प्रयाग, सन् १९४६
- वाजपेयी, किशोरी दास (वाचार्य) कुछ शब्दों के अर्थों में सामूहिक
प्रम, नई धारा वर्ग १४ अंक ८-१०
- शर्मा, शिवलाल स्टलस, जिला बुलन्दशहर, जिला मेरठ
- सबसेना, बाबूराम सामान्य भाषा विज्ञान, सन् २०१३, हिन्दी
साहित्य सम्मेलन , प्रयाग
- डा० सहल, कन्हैयालाल राजस्थानी कहावनें, बंगाल हिन्दी मण्डल,
कलकत्ता - १ प्रथम संस्करण
- डा० सिंह , जमर बहादुर भाषाशास्त्रीय सामग्री संकलन, हिन्दुस्तानी
भाग २६ अंक १-२
- डा० सिंह, जगदेव बांगरू की ध्वन्यात्मक संरचना, सप्त सिन्धु,
मई, १९६३
- सुमन, अम्बा प्रसाद, हिन्दी भाषा का शब्द समूह और कुछ तन्त्रम
शब्द, सप्त सिन्धु अक्टूबर १९६३
- हिन्दी भाषा वर्गीकृत और वर्तमान , विनीत
पुस्तक मन्दिर, आगरा, प्रथम संस्करण,
हिन्दी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप,
१९६७, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

۱- اس مقالے میں ۱۸۵۷ء سے لیکر ۱۹۵۷ء تک کے اردو گیتوں کا تنقیدی جائزہ لیا گیا ہے۔ موضوع کی اہمیت یہ ہے کہ اول تو اس موضوع پر ابھی تک کوئی سیر حاصل مطالعہ نہیں ہے صرف چند مضامین ملتے ہیں دوسرے زمانہ حال تک اردو گیتوں کو یا تو قابل اعتنا ہی نہیں سمجھا گیا یا اس سرمائے کو اردو کے شعری سرمائے کا ایک اہم جز مانا ہی نہیں گیا۔

۲- واقعہ یہ ہے کہ اردو میں گیت اتنا ہی قدیم ہے جتنا ہندی میں۔ شیرانی نے اپنی کتاب "پنجاب میں اردو میں حیات اللہ انصاری نے اپنے مضمون شہید اردو میں اور وزیر آغا نے اپنی کتاب اردو شاعری کا مزاج میں اس پہلو پر روشنی ڈالی ہے۔

۳- اردو میں گیتوں کا سلسلہ برابر ملتا ہے۔ رفتہ رفتہ جب غزلوں کو زیادہ اہمیت حاصل ہوئی اور اس میں عجیب اثرات بڑھنے لگے تو اس خالص ہندوستانی صنف پر اتنی توجہ نہ رہی مگر ہر دور میں گیت برابر لکھے جاتے رہے اور آخر انیسویں صدی میں مغرب کے اثرات مستحکم ہونے کے بعد پھر اس صنف کی طرف میلان بڑھا اور آج گیت کی صنف ایک مقبول صنف سخن ہے۔

۴- مقالے کے پہلے باب میں گیت کی تعریف کی گئی ہے اور اس سلسلے میں اردو کے علاوہ انگریزی اور ہندی کے مستند نقادوں کے خیالات سے مدد لی گئی ہے۔ گیت میں گہرے ذاتی جذبے ترنم اور اختصار پر خاص زور دیا گیا ہے۔

۵- دوسرے باب میں لوک گیت کی روایت کی طرف اشارہ کیا گیا ہے جو صرف ہندی گیتوں کی ہی نہیں اردو گیتوں کی بھی بنیاد ہے اور دونوں زبانوں کے مشترک سرمائے کی نشاندہی کرتی ہے۔ لوک گیت ہماری مشترک تہذیب کا ایک قیمتی حصہ ہیں ان میں ہمارے سماج کا دل دھڑکتا ہے اور ہمارے رسم و رواج کے نقش و نگار جلوہ گر ہیں۔ ان میں ادب کے کوشمے بھی ہیں اخلاق کے موقع بھی اور سماج کی بدلتی ہوئی کروٹوں کا آئینہ بھی۔

۶۔ تیسرے باب میں ابتدا سے ۱۸۵۷ تک اردو گیت کے ارتقا کی نشاندہی کی گئی ہے۔ ۱۸۵۷ اب ہماری سیاسی تاریخ ہی میں نہیں ادبی تاریخ میں بھی ایک نئے موڑ کی علامت مان لیا گیا ہے۔ جب مغرب کے اثرات سے ہمارے ادبیات میں ایک دور رس تبدیلی کا آغاز ہوا۔ ان تین بابوں کو مقالے کا تمہیدی حصہ سمجھنا چاہئے۔

۷۔ چوتھے باب میں ۱۸۵۷ سے بیسویں صدی کے آغاز تک کے گیتوں کا جائزہ لیا گیا ہے۔ واجد علی شاہ اور امانت کی کوششوں سے گیت کو اور فروغ ہوا اور پارس کمپنیوں نے اپنے ڈراموں میں گیتوں سے خاص کام لیا۔ ان ڈراموں کے گیت ادبی نقطہ نظر سے زیادہ اہمیت نہیں رکھتے مگر گیتوں کی مقبولیت میں ان کا حصہ ضرور ہے۔ بہادر شاہ کے گیت ادبی خوبیاں رکھتے ہیں اور برج بھاشا کی روایت سے گہرے رشتے کو ظاہر کرتے ہیں۔ واجد علی شاہ نے موسیقی کی دھنوں کا زیادہ لحاظ رکھا ہے ادبی حسن کی طرف بہت کم توجہ کی ہے۔

۸۔ مغرب کے اثر سے ادب کو زیادہ وسعت اور آزادی ملی۔ شاعرانہ جذبہ عشق و محبت کے لیے بھی نئے افق تلاش کرنے لگا۔ فطرت سے ایک نئی لگن شروع ہوئی اور قومیت کا ایک رومانی تصور ابھرا۔ انگریزی شعرا کے تراجم نے غنائی شاعری کی طرف عموماً اور گیتوں کی طرف خصوصاً متوجہ کیا۔ مغرب نے ہندوستان کو اور اسکی پوری تاریخ کو نئے سرے سے دریافت کرنے اور اس سے ایک نئی محبت کرنے کی طرف مائل کیا۔ مخزن کے دور کے شاعروں اور ادیبوں کے یہاں ایک نئی مشرقیت ہے جو مغرب کے اثر سے آئی ہے یہ اقبال اور چک بست کے قومی توانوں ٹیگور کے اثر سے رومانی نظموں اور شعر منشور ادب لطیف کے تجربوں میں ظاہر ہوتی ہے یہ سارے اثرات بالاخر عظمت اللہ خان کے غنائی تجربوں میں ظاہر ہوتے ہیں جنکے یہاں ہندی اور انگریزی دونوں کا نمایاں اثر ہے اور جنکی گیت نما نظموں کو بعض لوگوں نے گیت مانا ہے۔ عظمت کا کارنامہ بڑی اہمیت رکھتا ہے اور اس لئے ہم نے پانچویں باب کا آغاز انہیں کے شعری سرمائے کے تجربے سے کیا ہے۔ اس دور میں اندر جیت سرما کے کارنامے کی بھی اہمیت ہے اور حفیظ جالندھری نے تو اردو گیت کو کچھ امتیازی صفات بھی دیے ہیں۔

۹۔ چھٹے باب میں میراجی اور ان کے معاصرین کا تذکرہ ہے۔ میراجی کو ہندو دیومالا ہندی زبان اور ہندی مزاج سے گہری واقفیت تھی۔ وہ اپنے دور کے سب سے بڑے گیت کار میں اور انکا اثر دوسرے گیت کاروں پر بھی گہرا ہے۔ وہ گیت کی روح کو سمجھتے تھے۔ ان کے گیتوں کو دیکھ کر تعجب ہوتا ہے کہ مبہم نظمیں لکھنے والا میراجی ایسے مکمل اور ہر اثر گیت بھی لکھ سکتا ہے جن میں جذبہ ایکہ بلسختیلر صلت (Controlled Passion) رکھتا ہے۔

۱۰۔ اس دور میں گیت کے موضوعات میں بھی بہت تنوع ہوا اور معاشرتی۔ معاشی اور سیاسی مسائل کو بھی گیت کا موضوع بنایا گیا مطلبی فرید آبادی اور مقبول احمد پوری اس دور کے اہم گیت کار ہیں۔ آزادی کے بعد گیت کی مقبولیت اور بڑھتی ہے اور اب ایسے شعرا کی تعداد زیادہ ہو جاتی ہے جنہوں نے یا تو گیتوں کے علاوہ مجموعے شایع کیے ہیں یا جنکے شعری کارنامے میں گیتوں کی اہمیت دوسرے اصناف سے زیادہ ہے۔ اس دور میں پاکستان میں گیت کو ہندوستان سے زیادہ فروغ ہوا ہے۔

۱۱۔ ساتویں باب میں ان شعرا کے گیتوں کی طرف بھی اشارہ کیا گیا ہے جنہوں نے دراصل دوسرے اصناف سخن یعنی نظم یا غزل میں بھی شہرت حاصل کی ہے مگر یا تو منہ کا مزا بدلنے کے لیے یا گیت کی بڑھتی ہوئی مقبولیت کو دیکھ کر یا کسی خاص جذبے کے زیر اثر گیت بھی لکھے ہیں۔ اقبال۔ جوش۔ حسرت۔ جگر۔ مجاز۔ فیض۔ مخدوم وغیرہ اس زہل میں آتے ہیں۔ اس باب کا مقصد یہ دکھانا ہے کہ گیت مجموعی طور پر اردو شاعری میں کس قدر مقبول ہو گیا ہے۔

۱۲۔ جدید دور میں فلموں کو بڑی اہمیت حاصل ہو گئی ہے۔ اگرچہ فن کا یہ میڈیم ابھی تک تجارتی اغراض کا شکار ہے مگر اس کے ادبی امکانات بھی ارباب نظر سے پوشیدہ نہیں۔ فلموں میں گیتوں سے ایک خاصہ تاثر پیدا کیا جا سکتا ہے اس لئے گیتوں کی فلم میں اہمیت مسلم ہے۔ ہمارے بعض اچھے شاعروں نے بعض بڑے اچھے گیت لکھے ہیں۔ آرزو۔ شکیل۔ ساحر۔ مجروح کے نام اس سلسلے میں لیے جا سکتے ہیں اس باب میں صرف چند اشارات پر اکتفا کی گئی ہے کیونکہ فلمی گیتوں کا سرمایہ خاصا بڑا ہے اور اس پر علاوہ تنقید ہو سکتی ہے اور ہو نی چاہئے۔

۱۳۔ گیتوں کے موضوعات کا علاحدہ جایزہ لینا بھی ضرور معلوم ہوا تاکہ ان موضوعات میں جو ارتقا ملتا ہے وہ واضح ہو جائے۔ نوین باب سے یہ واضح ہو جاتا ہے کہ گیت نے کسطرح روایت پر اکتفا نہیں کی بلکہ تجربے بھی کیے ہیں اور بہت سے موضوعات کو اپنے دامن میں سمیٹ لیا ہے۔

۱۴۔ دسویں باب میں گیت کی فنی خصوصیات پر پھر روشنی ڈالی گئی ہے اور اسکی سادگی - سلاست - غنائیت اور اختصار اور اس میں صوتی آہنگ کی اہمیت پر خاص زور دیا گیا ہے۔

۱۵۔ حرف آخر کے نام سے گیت کی موجودہ مقبولیت کی وجہ بیان کی گئی ہے اور مستقبل میں اس کے امکانات کی طرف اشارہ کیا گیا ہے۔ نیا گیت حال کے ایک خاص میلان کی نشاندہی کرتا ہے جس میں خاصے امکانات پوشیدہ ہیں۔

۱۶۔ ادب میں ماہ و سال کی حد بندی قطعی نہیں ہوتی۔ اس لیے ہم نے مناسب سمجھا کہ اس مقالے میں ان گیت کاروں کا بھی جایزہ لیے لیا جائے جنہوں نے ۱۸۵۷ء کے لگ بھگ لکھنا شروع کیا اور اب تک لکھ رہے ہیں مقصد یہ ہے کہ موجودہ دور کی پوری تصویر سامنے آجائے اور یہ بات ثابت ہو جائے کہ اس دور کے شعری سرمائے میں گیتوں کو کتنی اہمیت حاصل ہو گئی ہے۔

۱۷۔ مقالے کے تین ضمیمے ہیں۔ پہلے ضمیمے میں گیتوں کے ان مجموعوں کی فہرست ہے جنکا مطالعہ کیا گیا ہے۔ دوسرے میں اردو ہندی انگریزی کی ان کتابوں اور رسالوں کی نشاندہی کی گئی ہے جن سے مقالے میں مدد لی گئی اور تیسرے میں گیتوں کا ایک مختصر انتخاب دیا گیا ہے تاکہ گیتوں کے ارتقا کی رفتار اور ان کے معیار کو سمجھنے میں مدد ملے۔

T. 779

AGRA UNIVERSITY

Notification No. Res. ³ ~~4~~ of 1968

It is hereby notified that the Executive Council of the University which met at Agra on March, 23, 1968 resolved that the Ph.D. degree be awarded to the following candidates on the basis of the respective thesis submitted by them for purpose:-

Sl.No.	Name of the candidate	Subject & Degree	Title of thesis
1.	Manohar Lal Gaur	Hindi -Ph.D.	Brij tatha khari boli ke Sandhiisthaliya kshetra ka bhash-sarvekshan.
2.	Labh Singh	Psychology. Ph.D.	Patterns of Educational and Vocational interests of Adolescents.
3.	Raja Ram Jaipuria	Economics. Ph.D.	Industrial Efficiency in relation to Fatigue, Rest Pauses, Personnel Management and job Satisfaction with particular reference to textile industry at Kanpur.
4.	Surendra Nath Dwivedi	Economics. Ph.D.	Cooperative Banking in U.P.
5.	Dharam Veer Singh Jauhari	Economics. Ph.D.	Social and Economics Welfare services in Uttar Pradesh since independence.
6.	S.P. Nagendra	Sociology. Ph.D. (I.S.S.)	The Concept of Ritual in Modern Sociological theory.
7.	Smt. Manorama Gupta	Education. Ph.D.	Problems of Higher Secondary Schools of Agra District.
8.	Km. Usha Rani Keppor	Chemistry. Ph.D.	A Study on the Biochemical Properties of copper as Caeruloplasmin enzyme in Bovine Plasma and serum.
9.	Onkar Nath Agarwal	Chemistry. Ph.D.	Biochemical Studies on Phosphorus Utilisation.
10.	Sunil Roy Chowdhury	Chemistry. Ph.D.	Influence of Hormones on Chemistry and Metabolism of Lipids in the Genital Organs.
11.	Dipendra Nath Chaturvedi.	Chemistry. Ph.D.	Electro and Viscometric Studies on the Coagulation of some Lyophobic sols and verification of Bhattacharya's equation.
12.	Kartar Srivastava	Zoology. Ph.D.	Induced Hypothyroidism and sexual Development in pre-puberal Male and Female Rhesus Monkeys.
13.	Ravindra Kumar Singh Chauhan.	Botany. Ph.D.	Metabolic and Nutritional Considerations of Blight of Gram (<u>Cicer Arietinum</u> L. caused by <u>Ascochyta Rabiei</u> (PASS) Lab.
14.	Jagdish Swarup	Botany. Ph.D.	Studies on fungi causing seed disorders in some umbelliferous spices.

Contd....

S1. Name of the candi- No. date	Subject & Degree	Title of thesis
15. Mahesh Chandra Sharma	Botany - Ph.D.	Ecology of Soil Microfungi of Yamuna Ravines.
16. Prakash Bahadur	Botany - Ph.D.	Studies in the physiology of Rust of Gram (<i>Cicer arietinum</i> L.)
17. Prahlad Narain Tandon	Mathematics-Ph.D.	Studies on the Flow of Viscoelastic Non-Newtonian Fluids..
18. Ambika Prasad Dwivedi	Mathematics-Ph.D.	On Dual and Triple Integral Equations.
19. Krishan Lal Sahni	Vet.Sc. -Ph.D. (Physiology)	Studies on Quality, Preservation and Fertility of Semen of Sheep and Goat.
20. Hem Chandra Pant	Vet.Sc. -Ph.D. (Physiology)	Studies on Biochemical and Microbial Activities in Rumen of Dairy Animals.
21. Ishwar Chandra Datta	Vet.Science-Ph.D. (Physiology)	Studies on the Physiology, Bio-Chemistry and Endocrinology of the Uterine Cervix.
22. Krishna Murari Sharma	Vet.Science-Ph.D. (Ani.Nutrition)	The Utilization of Calcium from Dicalcium phosphate and Bone Meal as influenced by varying levels of groundnut cake and Maize Feeding.
23. Sushil Kumar Srivastava	Technology -Ph.D.	Studies on Regeneration Techniques & Effluent Disposal of Ion-Exchange Process in Indian Sugar Industry.
24. Rajendra Bahadur	Technology -Ph.D.	A Study of the optimum conditions for the production and separation of some Indian essential oils and their constituents.

SENATE HOUSE,
AGRA
Dated March 27, 1968

(M. G. Gupta)
REGISTRAR

Dated, March 27, 1968

Copy of the Notification forwarded to:-

1. The Superintendent, Printing and Stationery, U.P. Allahabad for publication in Part IV of U.P. Government Gazette. (Encl. 1)
2. The candidates concerned with a copy of thesis and a copy each of the examiners' reports. (Encls. 2)
3. The respective Head of the Institution where the candidate had done research work. A copy of the thesis of the candidate concerned at No. above is sent herewith. (Encl. 1)
4. The Librarian, Agra University Library, Agra (Encl.),
5. The Registrars of Universities in India.
6. The Secretary, University Grants Commission, Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi-1.
7. The Secretary, U.P. University Grants Committee, Allahabad.
8. The Secretary, Ministry of Education, U.P. Government, Lucknow.
9. The Secretary, Ministry of Education, Government of India, New Delhi.
10. The Director, National Archives, New Delhi-1
11. The Editor, University News, Inter-University Board, Rouse Avenue, Near Hardinge Bridge, New Delhi.
12. The National Library, Belvedere, Calcutta.
13. The Connemara Public Library, Egmore, Madras.
14. The Central Library, Town Hall, Bombay.
15. The Deputy Registrar (Admn.), Agra University.
16. The Superintendent, Press & Publications Department Agra University Agra with a copy of summary of the thesis for publication in the Research Journal (Science) (Encl. 17)
17. The Incharge, Statistics Department, Agra University, Agra.

S. V. S. 29/3/68
Deputy Registrar (Confidential Unit
of Research)

For Registrar

[Signature]

[Signature]